# শ্রীরামচরিত মানস



# পোহ্বামী তুলসাদাস

অরণ্যকাণ্ড, স্থন্দরকাণ্ড, কিন্ধিন্ধ্যাকাণ্ড,

অধ্যাপক শিব<del>প্রশীন কিন্তা</del>পাধ্যায় কর্তৃক ক্ষান্তবাদ

বস্থমতী শাহিত্য-মুন্দির

১৬৬ ন° বহুবাজার ষ্ট্রীট, কলিকাতা ১২ প্রকাশক ও মুদ্রাকর শ্রীশশিভূষণ দত্ত বস্তুমতী প্রেস, কলিকাতা

# দ্বিতীয় ধণ্ডের সূচীপত্র

| विय <b>व</b>                           | পৃষ্ঠা | <b>रिव</b> न्न                                  | পূচা      |
|--|--------|---|-----------|
| অৰুণ্যক†ও                              |        | কিছিল্যাকাণ্ড                                   |           |
| মক্সাচরণ                               | >      | মঞ্জাচরণ  | २≽        |
| জয়স্তের কুটিলতা                       | >      | শ্রীরামের শহিত হহুমানের শাক্ষাৎ                 | 45        |
| অন্তি-মিলন                             | ર      | শ্রীরামের সহিত স্থগ্রীবের মিত্রতা               | 90        |
| গীতা-অনস্বা মিলন ; অনস্বার পাতিব্রভ্য- |        | স্থাীবের নিজ-ছঃখ বর্ণন                          | 9)        |
| ধৰ্ম্ম কীৰ্ত্তন                        | 9      | বালি-বধ-প্রভিজ্ঞা; ব <b>ন্ধ-লক্ষণ বর্ণন</b>     | ৩২        |
| বিরাধ বধ, শর <del>্ভজ-প্রসজ</del>      | ¢      | স্থগ্রীবের বৈরাগ্য                              | <b>્ર</b> |
| শীরামের রাক্ষ্ণ-বধের প্রতিজ্ঞা         | \$     | বালি-স্ত্রীব যুদ্ধ ; বালি-বধ                    | ৩৩        |
| স্থভীক্ষের ভক্তি; অগন্ত্য-মিলন         | ь      | তারার বিলাপ ; শ্রীরামের ভারাকে উপদেশ            | 48        |
| শ্ৰীরামের দণ্ডক বনে প্রবেশ             | ۵      | শ্বগ্রীবের রাজ্যাভিবেক                          | 98        |
| জটায়ুব সহিত সাক্ষাৎ                   | >      | বৰ্ষাঋতু বৰ্ণন                                  | ૭૯        |
| পঞ্চবটা বনে বাস; রাম-লক্ষণ সংবাদ       | >      | স্থগ্রীবের উপর শ্রীরামের স্বসস্তোব ; সন্মণের তে | ক্লাৰ ৩৭  |
| স্পূর্ণথার বিবরণ                       | >>     | শীরাম-স্থগ্রীব সংশদ                             | ৩৮        |
| <b>थत-म्यणामि वस</b>                   | >>     | গীভার সন্ধানে বানর-সৈম্ভ প্রেরণ                 | ৩৮        |
| স্পূৰণার রাবণের নিকট গমন               | >8     | ভপবিনীর সহিভ বানরগণের সাক্ষাৎ                   | وه        |
| সীতার অগ্নি প্রবেশ ও মায়া-সীতা        | >¢     | বানরগণের সমৃত্র-ভটে গমন                         | 80        |
| মাগীচের বিবরণ ; মারীচ বধ               | 36     | সম্পাতির সহিত বানরগণের কথোপকণন                  | 8 0       |
| গীতা হরণ ও গীতা-বিদাপ                  | >9     | সমৃদ্ <del>ত-লঙ্ব</del> নের যুক্তি              | 80        |
| ঘটায়ুর সহিত রাবণের মৃদ্ধ              | 74     | জাম্বানের হতুমানকে উৎসাহিত করণ                  | 8२        |
| শ্রীরামের বিলাপ ; জটারুর প্রসম্ব       | >>     | শ্রীরাম- <b>গুণ-মাহাজ্য</b>                     | 83        |
| কৰ্ম উদ্ধার                            | २०     | -   |           |
| শৰরীর প্রতি স্কুপা                     | ২১     | কুন্দর কাও                                      |           |
| নর্মবিধ ভক্তির উপদেশ                   | २>     | মুক্তাচরণ                                       | 80        |
| ্রাদের বির <b>হ</b>                    | રર     | হয়্যানের সাগর লব্দন                            | 80        |
| পশা সরোবরে গমন                         | ২৩     | হতুমান্-সুরসা সাক্ষাৎকার                        | 88        |
| নারদ-রাম সংবাদ                         | ₹8     | नकार्यम्, नकियेर्थं, रुष्ट्यात्मव नकाव श्रास्य, |           |
| <b>এ</b> রাম-মাহাত্য প্রবণের মহিমা     | ঽঀ     | লছার শোভাবর্ণন                                  | 43        |
|  |        | इष्ट्रबान्-विकोयन गश्यान                        | 84        |
|  |        | অশোকবনে গীতাকে দেখিয়া হত্ত্বানের ছঃধ:          |           |
|  |        | রারণের সীভাবে ভর প্রদর্শন                       | 84        |

| <b>विष</b> त्र                            | পৃষ্ঠা       | ৰিব <b>র</b>                                   | পৃঞ্চা          |
|---|--------------|--|-----------------|
| গীভা-জিজটা সংবাদ                          | 86           | রামচজের শরে রাবণের ছক্তে-মুকুটাদি কর্ত্তন      | 9.0             |
| শীভা-হছযান্ সংবাদ                         | 86           | মন্দোদরীর রাবণকে পু-র্বার উপদেশ ;              |                 |
| অশোক্ৰন ছার্থার                           |              | ও রাম-ষহিমা কীর্ত্তন                           | 94              |
| चक्तकूर्यात वर्ष                          | 40           | অক্সের লঙ্কা-গমন                               | 96              |
| মেঘনাদ কর্তৃক হতুমানের নাগপাপে বন্ধ হইরা  |              | রাবণ-অঞ্চল সংবাদ                               | 9 9             |
| রাবণ-সভার গমন                             | <b>e&gt;</b> | রাৰণকে মন্দোদরীর পুনঃ উপদেশ দান                | ₽8              |
| হতুমান্-রাবণ সংবাদ                        | 4>           | त्राय-चळक गरवान                                | ₽4              |
| লহা-দহন                                   | £10          | <b>ৰুদ্ধারম্ভ</b>                              | P-4             |
| रङ्गात्मत्र नीष्ठांद निक्छे निवास ग्रहन   | <b>¢</b> 8   | মান্যবানের রাবণকে উপদেশ দান                    | ₽≥              |
| সাগর-শব্দনানন্তর সকলের প্রভ্যাবর্ত্তন     | <b>e</b> 8   | লক্ষণ-মেখনাদ যুদ্ধ                             | >∘              |
| ম্ধু <del>ৰন-ডল</del> ; পুঞীৰ-মিলন        | et           | লক্ষণের শক্তিশেল                               | ><              |
| वित्राय-रुष्ट्यान् गःवाप                  | **           | হশ্বমানের স্থবেশ-বৈগতে স্থানয়ন                | ><              |
| ৰানর-সেনা সহ ত্রীরামের সমুদ্রতটে আগমন     | 49           | কালনেমি-রাবণ সংবাদ                             | ৯২              |
| मॅ <b>ट्स्नामत्री</b> -त्रादण সংবাদ       | 46           | মকরী উদ্ধার                                    | <u>&gt;د</u>    |
| রাবণকে বিভীবণের উপদেশ                     | er           | কালনেযি-উদ্ধার                                 | 30              |
| ব্লাৰণ কৰ্ম্বক বিভীৰণের অপশান             | હ૦           | ভরতের শরে হত্তমানের মূর্চ্ছা                   | >8              |
| বিতীবণের শীরামের চরণে শরণ গ্রহণ           | 60           | <b>७</b> द <del>७-१इ</del> गान् <b>न</b> श्चाम | ≥8              |
| সমূদ্র উত্তরণের প্রামর্শ                  | હ૭           | শ্রীরামের বিলাপ                                | <b>3</b> ¢      |
| রাবণের দুভের আগমন ও লক্ষণের লিপি          |              | হস্থমানের প্রভ্যাবর্ত্তন                       | 24              |
| <b>লইয়া</b> প্ৰভিগ্ৰন                    | 8&           | কুম্বকর্বের জ্বাগরণ                            | 24              |
| দৃভের রাবণকে উপদেশ ও লক্ষণের লিপি দান     | 48           | কুম্বকর্বের রাবণকে উপদেশ দান                   | ಶಿ              |
| সমুদ্রের উপর এরামের ক্রোধ ও সমুদ্রের তব,  | ৬৬           | বিভীষণ-কুম্ভকর্ণ সংবাদ                         | 26              |
| <b>ब</b> ेदांम- <b>थ</b> ण माराचा         | <b>69</b>    | কুম্বকর্ণের যুদ্ধ                              | 29              |
|   |              | মেঘনাদের যুদ্ধ ও শ্রীরামের নাগপাশ              | >00             |
|   |              | स्थिनोर्द्धत्र युक्क ध्वःत्र ७ स्थिनोत्र वय    | >0>             |
| <b>লহা</b> কাণ্ড                          |              | রাবণের যুদ্ধ ধাত্রা                            | >० <del>२</del> |
| মুক্লাচরণ                                 | 62           | রাক্স-বানরের যুদ্ধ                             | 200             |
| সেতৃ-বন্ধন                                | 69           | <b>লন্ম</b> ণ-রাব <b>ণের</b> যুদ্ধ             | >∘€             |
| জীৱাম কৰ্তৃক ৱামেশ্বৰ-প্ৰতিষ্ঠা           | 90           | রাবণের মূর্জ্ডা; রাবণের যক্ত ধ্বংস             | >02             |
| নাগর- <b>উত্তরণ</b>                       | 4>           | শ্বাম রাবণের যুদ্ধ                             | >•9             |
| স্থুবেল পর্বতে অবস্থান ; রাবণের ব্যাকুলতা | 93           | বিভীষণের প্রতি রাবণের শক্তি-ক্ষেপ              | >>>             |
| ক্লাখণের প্রতি মন্দোদরীর উপদেশ            | 45           | রাবণ-বিভীবণের যুদ্ধ                            | >>>             |
| রাব <del>ণ-প্রহল্প</del> সংবাদ            | 29           | त्रायण-स्थारानत यूक, त्रायराज मात्रा-व्यक्ति   | >><             |
| অংখন পৰ্বহতে চজোখন বৰ্ণন                  | 949          | খোর যুদ্ধ ; রাৰণের মূর্চ্ছা                    | 220             |

| <b>विस्त</b>                                   | गृक्षा            | विषय्र   | পৃষ্ঠা        |
|--|-------------------|--|---------------|
| ত্রিজটা-সীভা সংবাদ                             | >>8               | শীভার রাম-দেবা   | 787           |
| রাবণ-বধ  | <b>&gt;&gt;</b> ¢ | সন্তান-জন্ম ; অ যাধ্যার রমনীরতা                                | >8<           |
| মব্দোষরী-বিলাপ; রাবণের অক্টোট ক্রিয়া          | >>9               | স্নকাদির রাম-স্কাশে আগমন                                       | <b>&gt;8¢</b> |
| বিজীবণের রাজ্যাভিবেক                           | 776               | রাম-স্কাশে হ <b>ছ্</b> মান্ কর্ত্ত ভরতের প্রশ্ন <b>ভিভা</b> সা | >86           |
| <b>হত্ত্</b> মানের সীভা-স্যীপে গ্র্মন          | 225               | শ্রীরামের প্রজাগণকে উপদেশ                                      | >8>           |
| শীভার আগমন ; অগ্নি-পরীকা                       | 466               | শ্ৰীয়াম-বশিষ্ঠ সংবাদ  | >6.0          |
| দেৰগণের তব ; ইজে র স্থা-বর্ষণ                  | ১২১               | নারদের রাম-স্কাশে আগমন ও গুব                                   | >68           |
| ত্রদার তব                                      | ><>               | হর-পার্ব্বতী সংবাদ   | >62           |
| দশরণের আগমন                                    | <b>ર</b> ્ર       | কাক ভূষুপ্তির উপাথ্যান   | >68           |
| रेट्स्प्र चर                                   | <b>ે</b> રર       | शक्टछ्द्र टर्भाष्ट   | >48           |
| মহাদেবের তব                                    | <b>&gt;२</b> ७    | কাক ভূবুশুর নিকট গরুড়ের রাম-কথা শ্রবণ                         | >46           |
| বিভীবণের প্রার্থনা                             | 328               | কাক ভূবা্তির নিজ পূর্ব্ব জন্ম কথা বর্ণন                        | >64           |
| <b>ৰিভীয়ণের বানরগণকে বন্ধ, অলঙ্কা</b> র বিভরণ | <b>५</b> २६       | রামের মহানতা   | >61           |
| রাম সীভা লক্ষণের অযোধ্যার গমন                  | ३२७               | কলি মাহান্ম্য কীৰ্ত্তন   | >9•           |
| শ্রীরাম-লীলা মাহাদ্য                           | <b>५२</b> १       | গুরু-অপমান ও শিবের শাপ   | 398           |
|  |                   | क्रजाहेक   | >96           |
| <b>উত্তর</b> কাণ্ড                             |                   | শিবের নিকট ক্ষমা ভিকা  | >94           |
| ম <b>ক্লা</b> চরণ                              | :22               | জ্ঞান ভক্তি নিরূপণ   | >9४           |
| ভরত-বিরহ ও ভরত-হ <b>ত্ন</b> মান্ মি <b>ল</b> ন | ১২৯               | জ্ঞ:ন-দীপক   | 292           |
| <b>এ</b> রাম-ভরতাদি মিলন                       | ১৩২               | ভক্তির মাহান্ম্য কীর্ত্তন                                      | 142           |
| রামের রাজ্যাভিবেক                              | 3 <i>0</i> 8      | গৰুড়ের সাভ প্রান্ন  | ১৮৫           |
| চারি বেদের শুৰ                                 | ১৩৬               | মন-ব্যোগ   | >540          |
| महादश्यत्र साम-छन                              | ১৩৭               | ভক্ন-মাহাম্ম্য   | >68           |
| ৰানরগণ ও ওহকে বিদায় দান                       | ১৩৮               | রামারণ-মাহাম্য   | ) P-8         |
| द्राय-द्रोक्य वर्गन                            | 280               | তুলসীদাসের দীনভা ও <del>ফল ফ্র</del> ভি                        | >>6           |

# শুদ্ধিপত্ৰ

| পৃষ্ঠা     | দোহা            | চৌপাই         | वरुद                                  |   |
|------------|-----------------|---------------|---------------------------------------|---|
| <b>b</b> - | ১২              | ၁             | <b>चक्कोन तमः महः ••</b>              | •••温斯 司句•••                             |
| ১২         | >9              | <b>E</b> TT   | কোটি ইংশ্নণ                           | <b>स्का</b> ष्टि केवलाम                 |
| 29         | ೨೦              | >             | শুন বাম বযুপতি•••                     | •••ৰাম ৰঙ্গতি•••                        |
| ૨૨         | 20              | œ             | মোর দরশন কলও এ অপার অসুপ              | মোৰ গবশন-কণ এ অপাব ও অসুপ               |
| ₹₫         | 8≥,≰)           | <b>ં</b>      | ৰাজা কৰ শক্তিশহা হক্ষা কৰেন জা'য়     | मांका करवः ••                           |
| २क         |                 | <b>দোৰ</b> ঠা | •••কৰিয়া পৰল বেৰা পান                | ···कविण श्वण (यदा <b>পান</b>            |
| <b>ు</b>   | ٩               | >             | •••हि व्यक्ति (पाव बरन करन अर्थ्यन    | •• मृहि व्यक्तिविं•••                   |
| •          | •               | 3             | ক্ষিপেন নিজ দেহ তা'ব কৰে প্রশন        | কৰিখেন নিজ কৰে ভাৰ দেহ প্ৰশ্ন           |
| 28         | 70              | Ċ             | •••মিহা চৰণে তাঁৰ কৰিল সৰে পমন        | नविदा हदान छै। दिः                      |
| ૭૯         | >>              | <b>ં</b>      | •••कन ना विभक्ष वस भिक्षत ना वादवाद   | क्ति व। विशव्य नवः • •                  |
| ¢5         | ৩৭              | 8             | •••বেঘন চতুৰ আৰু সকল গুণ নিচন্ন       | ···হউক চড়ুৰ আৰ সকল ওপানিলয়            |
| 60         | 8२              | >             | ••• আসিলেন খ্যাগজি সাগ্ৰের এ-পায়     | •••সাপ্তের এই পার                       |
| ৬৩         | ഗ               |               | •••विना व्यवासहै कान क्लि-स्नना•••    | •••ভালু কপি-দেনা                        |
| ৬৫         | ૯૭              | >             | ∙∙•ছিলেন রাম ∰টাকা ভালে তাঁৰ সেইক্ষণে | ः-वित्नन बिवाय ग्रिका∙••                |
| ৬৭         | ৬০              | -             | শুনিলে আৰুৰে ভৰিবে ভবেৰে নিধি বিনা জল | वान ···कविद्य छदयव•••                   |
| 98         | >> 4)           | œ             | হ্লাহল-নিশিত নিশিত কৰ-আসাৰি           | ∙∙•নিনিভ কৰ আসাৰি'                      |
| 95         | ₹₹(◀)           | 8             | ৰাবণেৰ পুথী ছাহ জ্জু এক কপি কৰে-      | ∙∙•कूष वक क्षि∙∙•                       |
| ৮৮         | 8२              | 8             | चड मारची                              | •••माव्या                               |
| ಎ೦         | ৫৭              | > পাৰ্ট       | কা ( ৩ৱ লাইন )—কলে তাঁহার৷ অভিশশাভে   | ··· • তাঁহাৰ অভিশাসাতে • •              |
| 200        | ৮২              | >             | छिक दा चन विश                         | ७८व थम कि विधिष्रः ।                    |
| 509        | ьa              | 54            | ক্রেন্ডে শাহ্ম···                     | ····                                    |
| •          | •               | •             | ज् <b>वप्रत गी</b> न···               | कृष १७                                  |
| 204        | ৮৭              | >             | हान करा छाट्ट क्छ…                    | चान करवः • •                            |
| २००        | 90              | >             | •••নিশিভ শায়ক•••                     | •••নিসিত শারক                           |
| 220        | •               | <b>€</b> *    | ···ফোলণ্ডের ধানি বক্ষেয়া শুনি        | ৽৽৽রক্ষেঃর। শুনি'৽৽৽                    |
| ১১২        | 58              | 8             | বৃদ্ধি বলেডে মকে পেরে'ও হারা'তে নারে  | • |
| 223        | ৯৬              | 8             | •••कावा वन वांति हात                  | •••वांवि हात्र•••                       |
| 358        | <b>ब</b> ष      | 8             | ···লকণ-প্ৰতি দোৰে                     | •••मन्दर्भाकः••                         |
| •          | •               | ৬             | •••क्क्षा निशय्न•••                   | •••क्रगानिवादन•••                       |
| ১১৬        | >0>( <b>▼</b> ) |               | कांक्रिलम् निदव कृषः वहवावः ः         | काहित्सम भिरुग्ग                        |
| ১২০        | 204             | ٠,5           | ब्राक्त वहन निरवः ।                   | व्यञ्च सहसः • •                         |

| পৃষ্ঠা      | <b>ৰোহা</b>              | চোপাই    | बक्र   | 94  |
|-------------|--------------------------|----------|--|---|
| ১২০         | POR                      | स्य      | <b>वि' (वह १८७</b> ००                          | वर्षि' (तक काळ                              |
| ১২২         | >>>                      | ၁        | •••ছেৰিয়া শিভাৰ শ্ৰতি বিভৱেন বৃঢ়কান          | ···ছেবিহা শিভাৰ প্ৰতি বিভবেন সৃচ্ আন        |
| 528         | >>8(4)                   | ર        | •••কেশ্ৰী সমান মন থাক' ক্সন-কাণ্ডাৰে           | ···কেশৰী সমান থাক <sup>*</sup> জন-মন-কাজাৰে |
| ১২৫         | >>७( <b>४</b> )          | 5        | •••কুণা-নিদানের                                | •••कुणा निवादमय                             |
| <b>३२</b> ৫ | 22R(4)                   |          | না পাৰে কৰিছে প্ৰেম-ৰূপে কিছু                  | না পাৰে কহিছে•••                            |
| ১২৯         |                          | (M) T    | শোভাগাৰ-শীভবাগ                                 | শেভাগাৰ পীতবাস                              |
| >>>         | <b>৩(</b> %)             | ၁        | উত্তরদিকে করে সর্মুপানন-ভোষা                   | •••मवय्•••                                  |
| 508         | <b>৮(</b> 奪)             | ~=       | •••बानीर ( अर                                  | বিত্ৰই আশীষ, আশাস্ হইবে।                    |
| ১৩৬         | <b>১২(≰)</b>             |          | •••क्रुणानियान                                 | •••कुर्शानिशन                               |
| •           | •                        | **       | ৰে চৰণ যুগে হে বয়েশ বান                       | সে চরণ যুগে…                                |
| 204         | >8(4)                    | ર        | •••ॡथं मधूक (महस्रवः••                         | •••न्द्रव मन्त्रवा                          |
| ১৩৮         | ٥٤                       | ર        | পৰম প্ৰীতিৰ মনে…                               | ∙••প্ৰ`ভিন সনে•••                           |
| 282         | २२                       | <b>೨</b> | শতেপ্ৰিচধৰাহিত প্ৰতিনিয়ত                      | •••ৰহিত প্ৰতি নিয়ন্ত                       |
| 585         | રહ                       | 5        | नायम मनक चामिः • •                             | ( मर्खप्रहे नवक, मवक हहेरव )                |
| \$8\$       | 8२                       | ၁        | ••• শাষার শহুশাসন কাছ-মানে যানে বেই            | •••काव-मान-••                               |
| 500         | 8¢                       | ર        | त्वाव नाव मात्र <b>च</b> ैद्यः •               | মোর লাস নাম ধ'রে· · ·                       |
| 565         | 89                       | 3        | ···নিব্দিত শাল্পেডে বেদ কি পুৰাৰ খডি           | •••পুৰাণ স্বক্তি                            |
| >७६         | œ                        | >(পাৰ্চী | ri) · · · खन्द कमःलव मब् ( ८क्षम मब् ) भानकावी | ,   |
|             |                          |          | ভ্ৰম <b>্বৰ</b>                                | ণ ···(প্ৰেৰ মধু) পানকাৰী···                 |
| 563         | 82                       | >        | প্ৰভূব বৃচি <b>ত</b> -কথা                      | ···চবিত্ত-কথা···                            |
| 89¢         | ৫৬                       | 5        | মারা-জানিভ বহু গণ•••                           | মায় -জনিত•••                               |
| 200         | GA                       | ર        | নারণের মনে শুনি' উপজে কক্ষণা অভি               | छनि' नावत्तव मत्न छेनत्वः •                 |
| 704         | <b>৬৮(</b> ≇)            |          | ८का  | সো  |
| 368         | ` ₽>( <b>4</b> )         | 3        | •••দেখিবারে সেই সব                             | • • • स्मिशाव• • •                          |
| ১৬৯         | 58(₹)                    | >        | •••কহিল ভৰানী ৰাণী সহ অতি অঞ্বাপ               | •••क्कि खर्गान गंभिः••                      |
| >90         | ১০৬(ৰ)                   | 5        | •••রে অভাগা জানহীন ঋাত্ম-অভিমানি               | ···জানহীন আৰু আজু-অভিযানি                   |
| ১৭৬         | ১ <b>০</b> ৭( <b>খ</b> ) | 8        | •••চরাচর-প্রির নাথ শঙ্কর নতি পার               | ···চৰাচৰ-প্ৰিন্ন নাম···                     |
| 240         | >> a( <b>4</b> )         | 8        | • • बाँ। जन-मधीरव निष्य कारनव मोला निवाद       | •••দীপে নিভায়                              |
| 568         | ) \$\delta \(\epsilon\)  | ર        | ···লোভৰূপী মহাবায়ু কভু না ভা'ৰে নিবায়        | •••কভূ ন। ভা'ৰে নিভার                       |
| ১৮৭         | <b>১</b> ২২( <b>গ</b> )  | 3        | •••७क मनकामि इद्र•••                           | •••७क मनकावि•••                             |

জন্তব্যঃ—গ্রন্থের মধ্যে সর্ব্বত্রই, "কৌশিকী" "কৌশিক" হইবে; "শানক" গ্রনক" হইবে; এবং "আশীষ" "আশীষ" হৈবে।

# অরণ্য কাণ্ড হইতে উত্তরকাণ্ডের নির্ঘণ্ট

|   | পৃষ্ঠা | त्माम त         | जेनार    |                                     | পূঠা             | त्यामा त        | ोनाह |
|---|--------|-----------------|----------|-------------------------------------|------------------|-----------------|------|
| ভা  |        |                 |          | শহিংসাই প্ৰম ধৰ্ম                   | 240              | 520 <b>4</b> )  | >>   |
| অপ্তঃ-বাম মিলন                                  | ъ      | >>              | Œ        | শক্ষ কুমার বধ                       | on               | 59              | 8    |
| অগ্নি-পথাকা, শীতায়                             | ১২০    | 209             | ٩        | জা                                  |                  |                 |      |
| শল্পি-প্ৰবেশ, সীভাৰ                             | 50     | २२              | 8        | चात्रमन, सन्बद्धव                   | ১২২              | >>>             | >    |
| व्यक्षम-वायम मः वाम                             | 99     | 24              |          | चाठवन, नोरहव                        | 290              | 500( <b>4)</b>  | œ    |
| অঞ্ন-বাম সংবাদ                                  | ь¢     | ٥٩              | ર        | আচব•, বন্ধুৰ                        | <b>ુ</b> ર       | <b>&amp;</b>    | >    |
| অঞ্নকে বামের বিদার দান                          | ১৩৯    | ১৬              | 8        | আচারবান্ কে গ কলিকালে,              | 595              | ઝવ( <b>ય</b> )  | ၁    |
| व्यक्तपत्र निर्देशन                             | 99     | >9/◀)           |          | আমার প্রিয় আমার দাস                | ১৬৬              | ৮৫( <b>*)</b>   | 5    |
| व्यक्षत्वय वायनस्य छेन्द्रम्                    | 99     | >>              | 5        | "আমি আমাৰ" "ভূষি ভোষার,"            |                  |                 |      |
| व्यक्तपत्र अवशं श्रम                            | ঀ৬     | ১৬(শ্ব)         | ) >      | এই মায়া                            | 50               | 58              | >    |
| শক্তিমিশন                                       | ર      | ર               | >        | <b>ર</b>                            |                  |                 |      |
| শক্তিৰ ক্ষৰ                                     | ၁      | 3               | >        | ইস্ৰন্ধিত ( মেখনাদ আইব্য )          | ۶5               | २१              |      |
| व्यक्तिको (क १ - हाम-क्या अंतरनम्               | ১৮৯    | <b>३२</b> ९     | 3        | ইশুজিতের বঞ্জাবংগ ও ইশুজিত বধ       | 202              | ૧૯ 🜒            | >    |
| অন্ত-পাধাৰ বামের ভক্ষনা কৰিলে                   |        |                 |          | ইন্দ্রভিতের যুগ                     | 500              | 95              |      |
| <b>উদ্বা</b> ৰের ভদ্ন নাই                       | ८१८    | 205 A)          | 3        | ইব্দির্থারে দেবতার স্থান            | ১৮৩              | >>৭( <b>খ</b> ) | ৬    |
| অন্তগতি সেবককে ভগবানেৰ ভা <b>ল লাগে</b>         | 00     | ২               | 8        | S 1                                 | 525              | ১০৯( <b>খ</b> ) | >    |
| জ্মস্ত মতি কে ?                                 | 30     | <b>၁</b>        |          | हैत्यव ग्रहावर्षण                   | ১২৩              | 220             | ၁    |
| <b>ब</b> न्युरा                                 | 3      | 8               | >        | इत्सन चर                            | ১২২              | >><             | >    |
| অন্ত্রার পাতিবভাধম ক্ধন                         | ೨      | 8               | ર        | ইট্রদেবতা ভিন্ন অভ্য দেবতার মন      |                  |                 |      |
| অহ্বাগ বক্ষীত ভগৰং-লাভ হয় না                   | ১৫৬    | ৬১              | >        | না থাকিলে গোৰ নাই                   | ৬                | `               | >    |
| व्यक्तांष्ट्रि किया, वावरनव                     | ১১৭    |                 | >        | টট দেবতার দেই প্রির, যে অনক্তৰাশ্রর | ৬                | 20              | 8    |
|   | 224    | 208             | 8        | <b>\$</b>                           |                  |                 |      |
| অপ্যান, রাবণ কর্ম্ক বিভীবণের                    | ৬০     | 80              | >        | জৰুৱে ও জীবে প্ৰভে <del>ষ</del>     | 50               | >8              |      |
| অবিক্তা মারা                                    | 20     | 58              | ર        | <b>B</b>                            |                  |                 |      |
| करकर खानी (क <b>े कनिकारन,</b>                  | ১৭২    |                 |          | উন্ধঃকাপ্ত                          | う <sup>っ</sup> る | -               | ~=   |
| व्यविधात वस्त्रीवञ्चा                           | 283    | રહ              | ૨        | উদবী বোপ                            | ১৮৬              | 530 W)          | 24   |
| <b>ष्ट्रा</b> शास शयन, ताम- <b>लक्षन-शेखा</b> स |        | ১১৮(গ)          | >        | উদ্বার, কবন্ধ                       | 25               | <b>૭</b> ૨      | ၁    |
| অংশ্যক্তি                                       | >      |                 | ~-       | উদ্বাৰ, কালনেমি                     | <b>∌</b> 8       | 09              | J    |
| व्यविदयक कि १                                   | 284    |                 |          | <b>উदाव, मक्</b> वी                 | ಾ೨               | e s             |      |
| অংশক বন   | 28     |                 | <b>3</b> | উপদেশ, अञ्चलक, वावन <b>्</b>        | 9 <b>9</b>       | >>              | >    |
| <b>पर</b> णा ३ वन                               | 85     | ૨૧<br>-         | ڻ<br>-   | উপবেশ, কৃত্তকর্থের, বারণকে          | ৯৬               | ৬২              |      |
| चरना करन  | ৪৬     | ٩               | 9        | উপদেশ, দুভের, রাবশক্ষে              | ৪৬               | ૯૨              | ર    |
| অশোক্তন ছার্থার                                 | 60     | ১৬              | >        |                                     | (00              | ২৩              | 8    |
| অংশাক্বনে সীন্ত।                                | 86     | 9               | 3        | উপদেশ, विजीवत्वत, ताबनत्क           | 100              | <b>৩</b> ৭      | ર    |
| षडेश्यकात शाय, वश्येत,                          | ৭৬     | >৫(◄)           |          |                                     | 60               | ೨৯ ಕ)           | J    |
| অসম্ভব, কি কি কিনিৰ পাওয়া                      | >>     | <b>36</b>       | ь        |                                     | (04              | ပ္လ             | 3    |
| অসাযু ও সাধুর প্রভেদ                            | 226    | ১২ <b>০(</b> ৠ) | Þ        | <b>উপदर्ग, मःमानशीर, जारनः</b> क    | 45               | a               | >    |
| অসাকাতে নিন্দা করার অপেকা .                     |        |                 |          | STORT, NUTRAIS, SISTE               | ૧૯               | >O(*)           | 8    |
| পাপ নাই   | ১৭৯    | >>>(4)          | Œ        | • ,                                 | ( P8             | <b>૦૯ ≼)</b>    | -    |

|   | পৃষ্ঠা         | দোহা          | চোপাই                            |                                    | পুষা                   | শেহা ৫          | চাপাই         |
|---|----------------|---------------|----------------------------------|------------------------------------|------------------------|-----------------|---------------|
| উপ্লেশ, খাল্যবানের, রাবণ্ডে               | ৮৯             | 89            | <b>១</b>                         | কাকভূষ্ভির রামকণ বর্ণনা            | ১৬২                    | 9 G( <b>4</b> ) | ) ၁           |
| डेश्राम, बार्यय व्यक्तात्रगटक             | 585            | 8३            | >                                | ઋજિ, અંદ્રલા                       | 5                      | -               |               |
| Bপাৰ্যান, <b>ভৃ</b> ষ্ণির                 | 568            | øø            | 8                                | ু উত্তৰ                            | ১২৯                    |                 |               |
| हेलावि, -स्मवरो वीवी                      | ১৮৩            | >>9(          | (n) C                            | 🔐 কিছিছ্য।                         | २क                     | -               | -             |
| উপাসনা, ভিন্ন <b>ভিন্ন বুগে</b> ব         | ১৭৩            | ১৩২,          | a)                               | , <b>শ</b> হা                      | ৬৯                     |                 | -             |
| ₹   |                |               |                                  | , সু <b>শ্</b> ব                   | 83                     |                 |               |
| খুদ্দি-সি'ছ প্ৰভৃতি <b>মায়াৰ প্ৰলোভন</b> | ১৮৩            | 224           | ( <b>4</b> ) 8                   |                                    | পৃষ্ঠা                 | (4:51 C         | াপাই          |
| ধ্যামুক পর্বাষ্ঠ                          | ২৯             |               | >>                               | কাম-ক্রোধাণি ভীষণ সৈম্ব            | २७                     | 83              | •-            |
| क   |                |               |                                  | কামিনীর কাঁদ                       | २७                     | 83              | -             |
| ক্তুহন বোপ                                | ১৮৬            | <b>\$</b> 30, | খ) ১৭                            | কাৰ্ত্তবীৰ্যাৰ্চ্জ্ন ( সহম্ৰৰাছ )  | ৫২                     | २১              | >             |
| şপট-ব <b>জু</b> শূল-সমান                  | <b>૭</b> ૨     | ৬             | ¢                                |                                    |                        | ও পাদ           |               |
| FP.                                       | ১৮৬            | 250           | ( <b>4</b> ) 20                  | কালনেমি-উদার                       | 58                     | ৫৭              | 3             |
|   | { ₹0<br>₹>     | ૭૨            |                                  | কালনেমি-য়াবণ সংবাদ                | ある                     | 00              | >             |
| इ <b>यक् व्यक्ता</b> व                    | -              | ૭૨            |                                  | কাহাকে কি ভাবে সেবা করিছে হয়      | ೨৯                     | <b>२२</b>       | . <b></b>     |
| <b>চলিকাল-মাহাত্মা বৰ্ণন</b>              | 240            |               | (本)                              | কাহাকে মোহ অভিভূত না করে ?         | \$65                   | ৬৯(ৼ            |               |
| इनिकाल क्या नाहे                          | 50             | २ ৬           |                                  | काशांक विश्वत्रण ना नाहांच ?       | ১৫৯                    | <b>₽</b> 9(≉    |               |
| कृष्टिकास्त्रव खन                         | 590            | 505           | .(3)                             | काशासर कार्ड छक्टि-कथा बनिएक ना    | त्यद <b>्</b>          | <b>३२</b> १     | ર             |
| <b>চলিকালের ছোব</b>                       | ১৭২            | 202           | · (4s)                           | কাহাদের চাটুৰাণীতে রাজ্য, ধর্ম ও   |                        |                 |               |
| <b>∤শিতে প্রেদ-জানী কে</b> ?              | ১৭২            | 29            | w) >                             | বেং নাশ হ                          |                        | <b>೨</b> ٩      |               |
| " আচারবান্কে?                             | 242            | ৯ ৭           | ( <b>4</b> ) 3                   | কাহাদের সঙ্গে বিহোধ কর। অকর্ত্তগ্য | > ৬                    | ₹.0             | ર             |
| " কুলীন কে !                              | ১৭২            | 200           | (મ) 8                            | , , , চলিভে পা                     |                        | C               | ૨             |
| " গুণবান কে গু                            | 242            | ৯ ৭           | (w) O                            | কাহার অস্তবে ভগবান্ থাক্ন          | :0                     | ১৬              |               |
| 💂 গৌরববান কে 🕈                            | 242            | かい            | ж)                               | কাহার৷ ছঃখী ও কাহারা স্থা, রামের   |                        |                 |               |
| , জ্ঞানীকে ?                              | 242            | ৯৭            | a) 8                             | প্ৰভাগে                            | -                      |                 | >             |
| ্ব ভাপস কে ?                              | 242            | ৯৭            | (4) 8                            | काहावी ध्रम                        |                        | ১২৬             | ્ગ            |
| ্ল'ষ্টস্ব                                 | 50             | ২ ৬           | 3                                | कोशको नगरी नरह                     | 58                     | 22(4            |               |
| " পণ্ডিত কে 🕈                             | ১৭১            | ৯৭            | ( <b>a</b> ) 2                   | কাহাৰা বধ-বোগ্য                    | ౨೨                     | ь               | 8             |
| ু প্রমায়ু                                | 290            | 202           | , খ) ২                           | কি কি জিনিব পাওৱা অসম্ভৰ           | >>                     |                 | ъ             |
| "বজ্ঞাকে শ                                | ১৭২            | ৯৯            | (세) >                            | কি ভাবে সেবা করি <b>ডে হর</b>      | <b>এ</b> ৯             | २२              | ર             |
| বিবাগবান্ কে ?                            | 245            | 5 ৭           | (ষ) ২                            | কিছিল্লা কাণ্ড                     | ২ ৯                    |                 |               |
| " বুদ্বিমান্ কে ?                         | 245            | 20            | (여) 곡                            | কুকাৰ্য্য করার সময়ে শরীরে বল থাকে |                        | 29              | , ¢           |
| " সম্ভ কে ?                               | 242            | 9 وو          | (4) 2                            | কুটিলের সঙ্গে সম্বন্ধ বাবিও না     |                        | 200(            |               |
| ্ল সিম্বপুক্ষৰ কে 🏲                       | 242            |               | (4)                              | কৃত্বৰণ                            | 20                     |                 | <b>ე</b>      |
| कलियुन्न रे खर्छ यून                      |                |               | (4)                              | কুভকৰ হয় মাস ব্যাইত               |                        | 686             | <b>a</b><br>5 |
| कृतिक नावो                                |                |               | (₹) >                            | কুভকৰ-বিভীৰণ সংবাদ                 | ৯৬<br>১৫               | ৬8<br>৬১        | ,             |
| কাক-দেহে ভৃষ্পির মমতা কেন ?               | { >90<br>>90   |               | ( <b>4</b> ) 8<br>( <b>4</b> ) ૨ | কুভকর্ণের জাপ্রণ<br>এ যুদ্ধ        | <i>১</i> ৫<br><i>৭</i> |                 | >             |
| ৰাক-ভুবুণ্ডিকে বাথের বিধ <b>রণ আ</b> ন্ধ  | ia ວຽວ         | 90            | c (#):                           | , वावन <b>्क छन्दम्</b>            | ৯৬                     | ৬২              |               |
| <b>ভাক-</b> কৃষ্ণিৰ উপাধ্যান              | >৫8            | 00            | . 8                              | कुमहा छ। भूम-मनान                  | ৩২                     | ৬               | ¢             |
| কাক-ভূমুতিং পূৰ্কভণা                      | 299            | 202           | (4)                              | সুষ্ঠ বেংগ                         | ১৮৬                    | >२०(◀           | ) 51          |
| दांश्य करवा क्या                          | <b>&gt;</b> 09 |               | o( <b>*</b> )                    | क्ष्मकान व्हेट्ड धर्म नहे व्य      | <b>ე</b> ს             | >७(५            | s) —          |
|   |                |               |                                  |                                    |                        |                 |               |
| ু বালক বামের সলে থেব                      | না ১৬:         | 98            | ৪(১) ৩                           | কুৰণ নৃণ্ডি শূৰ-স্থান              | . ৩২                   | . ৬             | Œ             |

|  |        |                   | [ .         | Jo ]                                   |                    |                  |            |
|--|--------|-------------------|-------------|--|--------------------|------------------|------------|
|  | পৃষ্ঠা | CPISI (5          | <b>ৰা</b> ই |  | नृष्ठे।            | <b>লো</b> ছা     | চৌ পাই     |
| देकरमा   | ১৮৩    | ১১৮(খ)            | >           |  |                    |                  |            |
| কোন্ সভান পিতাৰ প্ৰিয়ত্ত্ব                                  | ১৬৬    | ৮৬                | >           | জীবের প্রকৃত কার্য কি ?                |                    | 20%              |            |
| <b>4</b>   |        |                   |             | জ্ঞান ও ভক্তির প্রছেদ                  |                    | 228              |            |
| 41   | ৫૨     | 30                | ¢           | कान-वे ११क                             |                    | 226              |            |
| चय-द्वयनाणि यथ   | >>     | 59                | >           | <b>क</b> ान-পথ                         |                    | 724              |            |
| प <b>न</b>   |        | ১২০(খ)            |             | জ্ঞান-পূৰে বহু বিদ্ন                   | ১৮৩                | 224(             | H) —       |
| बरमद शिवसामा छत्यद कावन                                      | 20     | ૨૦ ે              | 8           | कान, देववागा, भावा, क्रिक              |                    |                  | _          |
| থলের সঙ্গে বাস করা অপেক্ষা নরক-                              |        |                   | Ü           | काशस्य वरण १                           | 2                  |                  | 8          |
| বানও ভাল   | ৬২     | 8¢                | 0           | জানু-ভক্তি নিয়প্ৰ                     | 242                |                  |            |
| গ  |        | ••                | -           | জ্ঞানীয়া ভগ্নানের প্রোচ <b>সন্থান</b> | ₹0                 |                  |            |
| প্রমালা ও প্লগও রোগ  | ১৮৬    | >२०(◀)            | >9          | <b>ब</b> बरवान                         | ১৮৬                | :301             | 4) )       |
| প্ৰকৃত কাকেৰ কাছে পিয়া বাশ-চৰিত                             |        | -(4)              |             | <b>T</b>                               |                    |                  |            |
| या के पार्टिक पार्टिक विकास किया है।<br>अंदेश कविन (क्या है) | 200    | <b>¢8</b>         | ર           | <b>છ</b> ર્જાયનો                       | 80                 |                  | -          |
| গৃক্ডেৰ ভূষ্ভিব নিকট গ্ৰন                                    | 300    | હર <b>(</b> ∢)    |             | ভপৰিনীৰ সহিত বানৰগণেৰ সাঞ্চাৎ          | ೨೩                 |                  | >          |
| গ্ৰুড়েৰ মোহ   | 308    | 69                | 5           | ভাড়নাৰ অধিকারী কাহাৰা ?               | ৬৭                 |                  | <b>.</b>   |
| গ্ৰুড়ৰ সাত <b>শ্ৰে</b> ল                                    |        | ১২০( <b>খ</b> )   |             | ভারা                                   | ೨೨                 |                  | >8         |
| ৪৭ছীন হইলেও আহ্ম <b>ণ পূজ্য</b>                              | 35     | ೨೨                | 5           | ভারাকে রামের উপদেশ                     | <b>↓</b> 8         |                  | >          |
| ७१२।न २२००१० चारमा रूपा<br>७इटक च्युपान, <b>पृत्</b> खिन     |        | აიი( <b>≄</b> )   |             | ভাৰাৰ বিলাপ                            | <b>9</b> 8         |                  | >          |
| ८६२ व्यक्तिक विनायमान, ब्राह्म                               | 206    | 200(4)            | _           | ভিৰন্ধাৰে কে বল হয় ?                  | 60                 |                  |            |
| जर्म व्यक्तकत्म (पनाधनाम, भारतम<br>जादिन्म                   |        | ٥ ١ ١ ١           | 2 5 700     | ত্ৰাহিক শ্ব-বোগ                        |                    | <b>३२०,</b> ब    |            |
| গ্ৰাৰণ<br>শ্ৰন্থিৰাত ৰোগ                                     |        | ₹0(₦)             |             | विकालन अपूर्वान                        |                    | 205(A)           |            |
| 5  |        | 10(4)             |             | <b>बिक्</b> छै।                        | 85                 | 20<br>20         | ১<br>২     |
| হক্ৰানয়, সুবেল প্ৰ্যুন্তে,                                  | 90     | 50                | >           | <b>ত্ৰি</b> শিৰা                       | 8¢¢ <b>∫</b><br>≎¢ |                  |            |
|  | 98     | >>(4)             |             |  | •                  |                  | ', '       |
| চরণে মতি কিলে হয়  | ৯      | 30                | 8           | भ                                      |                    |                  |            |
| <b>প্ৰে</b> ৰোগ  | ১৮৬ '  | ১२ <b>०(च</b> ) : | b           | শশুক কানন                              | 5                  | ১২               | ь          |
| চাৰিপ্ৰকাৰ শূল   | ৩২     | ৬                 | Œ           | षक्ष (द्वां <b>श</b>                   | ১৮৬                | <b>う</b> その(*)   | 26         |
| जिंदवरम्ब खर   | ১৩৬    | <b>ેર(</b> ∢)     | -           | দ্বিস্ত অণেকা ছঃৰী কেই নাই             | <b>&gt;</b> F@     | 520, <b>4</b>    | ) ૧        |
| <b>S</b> 7   |        |                   |             | দশ্ৰধের হাষের নিকটে আগধন               | ১২২                | 222              | >          |
| লগতে ভগ <b>ধাৰ্-সথাৰ কে</b> ?                                | ೨৮     | २0                | ર           | নাজিকের নীজি ভাল লাগে না               | 298                | 500 <b>4</b>     | ) -        |
| महोश्  | 24     | २৮                | 8           | দাস আমাৰ প্ৰিয়                        |                    | <b>५</b> ७(थ)    | Ŋ          |
| দটায়ুৰ <b>অসম</b>   | 29     | २७(च)             | ð           | দানের আলা, প্রভূর ভরসার থাকিসেই        |                    |                  |            |
| ग्रेश्व खिक  | 22     | 30                | J           | <b>পূर्व स्</b> य                      | <b>30</b>          | ર                | ર          |
| ষ্টায়ুৰ স্বাৰণেৰ সহিত সুস্ব                                 | ১৮     | ર૪                | 8           | ত্মত হবিভজিব অধিকারী কে 🏻              | 200                | હું              | >          |
| महोसून वान कर  | 20     | აა ა-             | <b>17</b>   | <b>प्</b> र <b>्</b>                   | >>                 | 28               | >          |
| १५-८७८नव श्री इ  |        | ১১৬(ৰ)            | •           | (एरग्रन्द छन                           | 252                | >09( <b>≠</b> ,  | ) >        |
| কে:<br>কে:ডেডনের পাঁঠ খোলা                                   |        | >> 9( <b>4</b> )  |             | (१रठात्रण कान कानरायन ना               | 280                | <b>7</b> ,866    | ) <b>b</b> |
| १५-ठभाविक <b>मन छ</b> श्चर-ध्यम <b>मा</b> ख                  | 202    | 86                | >           | साय-पूक श्रेरमध वासन भूमा              | ২ ১                | ు                | >          |
| म्बर <b>ण्य कृ</b> ष्टिनञ्च।                                 | >      |                   | J           | <b>4</b>                               |                    |                  |            |
| नवर्णन स्थानार्थ मार्ग <b>र मन्</b> न                        |        |                   |             | ধন্হীন অপেশ হংবী কেহ নাই               | ১৮৫                | > 20( <b>4</b> ) | 9          |
| मास्टक छे <b>शस्य वास</b>                                    | 8२     | ₹ के .            | >           | 49 416141                              | 249                |                  | J          |
| मोर ७ विर<br>•   | 30     | 20                | _           | वश्च वृद्धिक बनाव्यम १७-वन             | >8                 | ₹0,¶             |            |
| 412 W 1777   |        |                   |             |  |                    | , ,              |            |

|  | পঠা        | দোহা  | চৌপাই              |                                 | পুঠা           | CETE!       | હો <b>ના</b> દે |
|--|------------|-------|--------------------|---------------------------------|----------------|-------------|-----------------|
| <b>:</b> 7   | •          |       |                    | *                               | 4              | .,          |                 |
| ন্   | •          |       | ( <del></del> )    | •                               | ***            | > 200       | ٠. ١            |
| मश्री, कहिता नरह                                     | >8         |       | ( <del>a</del> )   | ক্ষতক্তি, বামায়ণের             |                | )<br>)<br>) | æ)              |
| নরক-বাসও, ধলের সম্ব অপেনা ভাল                        | <b>U</b> 2 |       | ٥                  | कांप, माठीव                     | २७             | 83          | •               |
| सन्न-त्वर माध्यय क्या कि १                           | 289        | 80    |                    | ৰ                               |                |             |                 |
| मक्रावह गर्काखंडे                                    | 220        |       | ) 4) C             | बर, चक्रदक्रांद                 | œ              | ১৭          | ર               |
| महिंग छक्ति  | 25         |       |                    | यश, चत्रप्रभाषि                 | >>             | 59          | 8               |
| নহজন লোকের সঙ্গে বিরোধ করা অকর্ত্তব                  |            |       |                    | वय, वानि                        | <b>ు</b>       | ა(          | a) ၁            |
| নগেপাশ, রামের  | 200        |       | _                  | वय, विशय                        | α              | <b> 6</b> ( | د (د            |
| লাপণাশ, হন্যানের                                     | 65         | 29    |                    | वर्ष. (अचनान                    | ১০২            | ৭৬          | _               |
| নাৰদ-রাম সংবাদ                                       | ₹8         | 80    |                    |                                 | 5 >>a          | ৯৯          | 8               |
| ম্বাবদের বাম সকালে আগমন ও স্বব                       | ১৫২        |       |                    | यथ, दावन                        | <b>[</b> >>9   | २०२         | >               |
| লারদের রাম-সকাংশ <b>অসু</b>                          | ₹0         |       | c (p).             | বৰ প্ৰতিজ্ঞা, বালি,             | ૭૨             | •           | -               |
| নারীধর্ম   | ٠          | 8     | 2                  | বৰ-প্ৰতিজ্ঞা, ৰাক্ষ্য           | ৬              | ৮           | J               |
| <b>নারী</b> মারা- <b>বঙ্গি</b> ণী                    | ર ૯        | 80    | ) <b>-</b>         | বধ-বোগ্য কাহারা ?               | ೨೨             | b           | 8               |
| মারী সব হুংপের আকর                                   | 20         | 88    | 3                  | বন্ধুৰ আচংপ                     | ৩২             | ů.          | >               |
| নারী বাধীনতা পাইলে নট হয়                            | ৩৬         | 58    | 8                  | বছু-লক্ষণ বৰ্মা                 | ৩২             | .6          | ٥               |
| मानीय कैंग्नि  | 20         | 83    | · ~ ·              | বৰ্ণনা, বন-শোভা                 | રર             | <b>ე</b> ৬  | ર               |
| মারীর সভাবের <b>অষ্টপ্রকার লোব</b>                   | 96         | > 50  | ¢ (⊭):             | , ব্যুৰ লক্ষণ                   | ৩২             | ৬           | >               |
| <b>নিজ্ঞাস</b> ই ভগ্নানের <b>প্রিয়ত্য</b>           | 360        | ৬ ৮৮  | '₹)8               | , বৰ্বা                         | ೦೦             | ১২          | 8               |
| নীচ অবনত হই <b>লেও ছঃখই দেয়</b>                     | 50         | : ২৩  | 8                  | , বামবাক্ষ্য                    | 580            | 55          | 8               |
| মীচের আচবশ   | >90        | 500   | ( <del>4</del> ) C |                                 | ( 65           | 88          | 2               |
| নীকি ভিগ্ন বাজ্যবন্ধা হয় না                         | 299        | > >>> | 4) O               | ্ বাংম্ব স্থপ                   | }>U9           |             | 8               |
| প  |            |       |                    | material was                    | (১৩২<br>৩৬     | ,           |                 |
| শৃশ্বটা বলে বাস, বামের                               | ৯          | 50    | >                  | वर्णना, नदर                     | ৩১             | )0¢<br>8    | ·) >            |
| পৃথিত চাৰ ভোগী ভাগ                                   | 8          |       | ৬                  | वर्षना, श्रुखोरवद छःष           | ১৩৮            | 20          | •               |
| भाग्या अस्त्रावत                                     | ২৩         |       | د (۲)              | বানবপ্ৰণ ও গুড়ককে বিদায় দান   |                |             | ·.\ •           |
| প্রম বৈবাগ্যবান্ কে ?                                | 30         |       | . 8                | বানবগৰকে অসম্বার ও বন্ধ বিভয়প  | <b>&gt;</b> 28 | ১১৬(        | 4) J            |
| भवम द्रशं छ भवम द्रश्य कि १                          |            |       | (*)२५१             | বানৰগণের কথোপ্তথন, সম্পাতির<br> | ^^             | 5.1         |                 |
| প্ৰিন্ত্ৰত্য ধৰ                                      | 3          |       | ົ່ວ                |                                 | <b>₹</b> ₹, 80 |             | >               |
| পর্য গুল   | 395        | ∌¢(   | a) 8               | ৰানংগণের সমুস্ততটে প্রন         | 80             |             | >               |
| পিড-বোগ  |            | >20(  |                    | বানংগৈত প্ৰেৰণ, সীভাৰ স্থানে    | <b>3</b> 6     |             |                 |
| गुर्क-कथा, काक <b>पृ</b> ष् <b>रित्र</b>             |            | >O5(- |                    | বালি                            | აა<br>( აა     | œ.          | ১<br>১৩         |
| भूकं क्या कथा, काक पृष्णित                           | ১৬১        |       | a)                 | বালি ৰণ                         | 38             | ა<br>აი     | 30              |
| व्यक्षात्रनरक वारमत छन्दम्                           | 289        | 83    | ັ                  | ৰালি-বৰ আভিজ্ঞা                 | <b>ૄ</b> ૩૩    | ی           |                 |
| व्यवस्थ अर्थन  | 26         | >>    | œ                  | वानि-प्रश्लोर दृष्ट             | ಖ              | <b>5</b>    | 33              |
| व्ययन अपरव<br>व्यक्ष करमात्र थाक्टिनहे बाटमंत्र चामा | ••         | • •   |                    |                                 |                |             |                 |
| व्यक्ष ७१गात मा। म्यार माया पूर्व हा                 | E 8        | 8     | Ŀ                  | ৰায়ু-ৰোগ                       |                | > > 0(*     | ા) ૩૯<br>૨      |
|  | 30         | 58    | _                  | विष - ४१३।                      | ა0<br>და       | ১৪<br>৩১    | ર               |
| व्यक्तम, कोरन ७ मेचरन                                | ₹0         | 8२(   | e) >               | বিশ্বদ কাহাকে বলে ?             | 8<br>8         | 8           |                 |
| क्षण, मात्रस्य, त्राभ्यक                             | 9          | 33    | າ, ເ<br>ວ          | বিপৰে কাহাদের পরীকা হয় ?       | 8<br>∫ 50      |             | 8<br>২          |
| প্রস্তা, সম্পাদের                                    |            | >30   |                    | বিভাৰণ                          | 88             |             | 3               |
| এখ, সাভ, প্ৰক্ৰেৰ                                    |            | P 10( | -                  | विक्रीवर-कृषकर्य जःवाष          | <b>2</b> 00    |             | ર               |
| <b>€</b> ₹ <b>T</b>                                  | 160        | •     | • -                | HANAL KALA WAIL                 |                | <b>₩</b>    | `               |

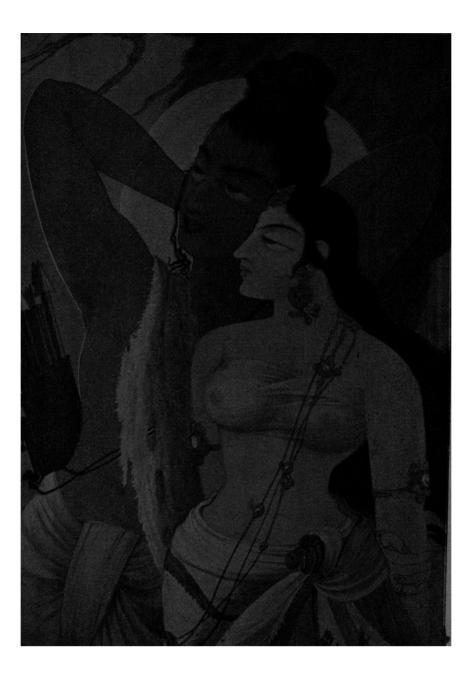
|   |                |                 | [             | ν· ]  |               |                     |          |
|---|----------------|-----------------|---------------|---|---------------|---------------------|----------|
|   | পৃষ্ঠা         | (मास त          | <b>ৰি</b> শাই |   | পৃষ্ঠ         | (PTE)               | હો ના≷   |
| विश्वीवर-प्रावःनव वृष                                 | 222            | 33              | 2             | ছক্তি, জান, বৈবাগা ও মানা কাহাকে:                   | <b>₹</b> (* > | ১৩                  | 8        |
| বিভীবণের অপথান, বাবণ-কর্ত্ত্ব                         | ৬০             | 8)              | >             | জ্জিতেই বাম শ্রীত হন                                |               | <b>&gt;&gt;</b> 9(+ | 1)       |
| বিভীষণের অভিবেক                                       | 224            | 200             | >             | <b>फ</b> िस, नद श्रंकाटः द                          | २১            | 28                  | 8        |
|   | ෙ              | २७              | 8             | ভক্তি পথ  | ১৮৩           | ))b ×               | (؛       |
| বিভাবনের উপদেশ, বাবনের প্রতি                          | G.P.           |                 | ર             | ভক্তিশ্ৰ অতি শ্বগৰ                                  | 500           | 80                  | >        |
| বিভীবংশৰ প্ৰতি হাবণেৰ শ <b>ন্তিংশল কে</b> প্          | . 69           | აე(^)<br>გე     | J             | উক্তিপাওয়া কত হয়হ                                 | 500           | ¢                   | >        |
| विकोरतय कार्य श्रवतय ना <b>कत्नन स्क</b> न्           |                | 220             | >             | ভক্তি বিহীন ধণ অভি ভুচ্ছ                            | 299           | <b>४</b> ०(३        | () S     |
| विक्रेशनव यानमा<br>विक्रेशनव यानवननत्त्र चनकात्र वक्क | J \ 0          | 2.00            | ,             | ভজি-বিধীন অক্ষণ ও ভগৰানের নিকটে                     |               |                     |          |
| RESIG   | 538            | ১১৬(৩)          | >             | নাৰাৱৰ জীবের মন্ত<br>ভ'ক্ত-মাজা                     | ১৬৬           |                     |          |
| ্বিভীবণের ভক্তি                                       | 86             | ٠,,             | 5             | ভজিংৰ'প তত্ত্ব                                      | 50            | ><br>>>⊗¢¢¢         |          |
| 6.3   | ( სე           | 85              | Œ             | ভজিংৰ সাভৰ<br>ভজিং লাভ কিয়প গুৰুহ                  | 500           | ১৬<br>৫৩            | >        |
| বিভীবংশঃ রাজ্ঞীকা                                     | ८ २२४          | 300             | >             | ভক্তি-সাডের উপার <b>অভি সহজ্ঞ</b>                   |               |                     |          |
| বিভাৰণের রামণনে শরণ গ্রহণ                             | ৬০             | 85              | >             | छक्ति-नार्थन कि १                                   | 50            | >0<br>>>>>          | , ဝ<br>၁ |
| विश्वह, बारमव   | २२             | <b>ე</b> ৬      | >             | ভক্তের উপরে কৈবল্য জোর করিয়া আর                    |               |                     | -        |
| विशास वस  | Œ              | ৬( ঃ)           |               | ভক্তেৰ উপৰ ৰামেৰ নিৰ্ভিশন প্ৰীতি                    | ১৩৮<br>১৩৮    | 200(.               | 8        |
| বিবেধ কৰা অকৰ্ত্তবা, কাছাদেৰ সহিত ?                   |                |                 | ્ર            | ভজেৰ কাছে ভগৰান কিছু গোপন                           |               |                     | Ü        |
| বিরোধ করা ১লিতে পারে, কা <b>হারে স</b> হিত            |                | ` '             |               | वास्त्र म   | ٦٥            | 85                  | ą        |
| বিলাপ, ভারার  | 28             |                 | •             | ৬.ক্টের ক্ষম্ম ভগবানের নরক্ষণ ধারণ                  | ১৬০           | ۹٦( ۽               | ).       |
| विमाभ, मत्यानवीव                                      | _              | 1 200           |               | _   | 6             | <b>ે</b> ર          | ં ર      |
| বিলাপ, ৰামের  | <b>১</b> ১ন    |                 |               | ভক্তের জন্মই ভগবানের দীলা করা                       | ১৬০           | 9 <b>२</b> (±       | )        |
| বিলাপ, স'ভার  | ) b            |                 | , -<br>>      | ভজের মোহ ভগবানু রাখেন না                            | ১৬১           | 9.O( n)             | 8        |
| বিষ্ণু মালা জগতে মারারপে <b>একাশিত</b>                | 222            |                 |               | ভক্তেরা ভগবানের বালক সম্ভান                         | ২৫            | 8₹(₦)               | 8        |
| देवतात्रा, छान, भाषा ७ ७क्टि काशस्य व                 |                |                 | 8             | ভগৰৎ-চৰণে মতি কিলে হয়                              | ٥             | >0                  | 8        |
| देवशाभावाम् (क १                                      | 50             |                 | 8             | ভগ্ৰংপ্ৰেমলাভই ঋণ-ভণের উদ্দেশ্য                     | 590           | 58(°)               | ၁        |
| •   | ( >8           | २०,श            | o (           | ভগৰৎ-প্ৰেমণাড়ই জীবেৰ প্ৰকৃত স্বাৰ্থ                | 590           | 30(·)               | 5        |
| ৰাৰ্থ   | <b>(</b> 66    | 69              | >             | खनवर-विश्वं <b>बक्षा</b> वंत माहाचा नाहे            | 240           | 28(*)               | ર        |
| শ্ৰদ্ধান হই প্ৰকাৰ অগ্নির স্থান                       | ১৩             | २२              | ર             | ভগবৎ-ভক্তি ব্যতীত ছঃখেব শেষ হয় না                  | ১৬৭           | <b>Ь</b> Ь(∗)       | ၁        |
| এক্ষরি স্থব   | ১২১            | 220             | -             | ভগবান্ অসুকৃল থাকিলে কিছু অসাধ্য                    |               |                     |          |
| আত্মণ দোববুক হইলেও পূজ্য                              | २১             |                 | >             | पारक न  |               | <b>3</b> 9          |          |
| স্কাশ্মণের সেবা শুধু জীহরির সজোববিধানা                | <b>4</b> 599   | 1 20P(4)        | ৬             | ভগৰান্ কাহাৰ বলে খাকেন                              | 50            | 5¢                  | ى<br>    |
| •   |                |                 |               | ভগবান্ তাং ভাব প্রচণ করেন                           |               | 92(a)               |          |
| ख् <b>क</b> (क !                                      | 585            |                 | >             | ভগবাৰ্-সমান কে জগতে                                 | 26            | २०                  | ર        |
| ভজ্ঞকে ভগবানের খণেয় কিছুই নাই                        | 20             |                 | ى             | ভগবানে মতি থাকিলে যুগ-কর্মের                        |               | 30 J(H              | ١.       |
| ভক্তদের উপরে যারার প্রভাব লাগে ন।                     | <b>30</b> 6    |                 |               | প্ৰভাব লাগে না                                      | 210           | 30 )( 9             | , ,      |
| कक क्षत्रवात्मव व्यानावात्र                           | 3&¢            | )))             | 8             | ভগৰানেৰ নিকটে <b>প্ৰিয় হইতে</b><br>প্ৰিয়ন্তৰ কে ? | ১৬৬           | ৮৫(ৰ                | ) ૨      |
| ভক্ত, সঙ্গ, মোক চার না                                | 30             | 303             | ર             | ভেশবানের সংই সীমাতী <b>ত</b>                        | ১৮৬           | DO(4                |          |
| ভড়ি আপনিই আদে  |                | >>8( <b>∀</b> ) |               | क्ष्मशास्त्र स्थाप साम करत (क है                    | હર            | 89                  | ં ર      |
| ছক্তি ও ফানের ক্রভেন                                  | . >10          | 112             | 9             | चन्त्राच्यम स्वरंग त्रान क्या ध्या ।<br>वि          |               | 558(e)              |          |
| জ্জিকথা কাহাদের কাছে বলিতে নাই                        | 249            | >२१             | ٠<br>૨        | <b>७</b> ळत-मश् <b>षा</b> {                         |               | > <b>₹</b> >(*      |          |
| জজি বি !  |                | >20(4)          |               | ভঃত-গাৰ মিলন  | ১৩২           | 8(*                 | ) >      |
| ভক্তি হাড়িয়া আনবার্গ বহিলে कि कन दर                 | <b>&gt;</b> >> | )<br>(*,8¢¢     | >             | <b>७१</b> ठ-विग्रह                                  | ১২৯           | o                   | >        |

|                                  | शृष्टी माहा कोनाइ                       | मुडी साहा की नाहे                         |
|----------------------------------|---|---|
| ভঃত-হতুম'ন্ মিলন                 | <b>२२७ ० ० माना</b> वान्                | ে ১৯(৮)                                   |
| खबरखन क्षेत्र, तारमन मकारण       | ১৪৬ ৩৫ ১ মারা 🍑                         | 7 50 58 5                                 |
| ভূবৃতিকে গ্ৰামের ব্ৰদান          | ১৬৫ ৮৪(-) ১ মারা, জ                     | চ'ন, বৈরাগা ও ভঞ্জি কাহাকে বলে ১ :৩ 🔍     |
| ভূষ্ভিকে বিশ্বছণ আমৰ্শন          | ১৬১ ৭৫( ) ১ <b>মারা, বি</b>             | <b>বভা, ও থাবভা</b> ২০ ২৪ ২               |
| ভূষ্বিকে শিবের অভিশাপ            | ১৭৫ ১০৬(·) ১                            | রমের দানী ১৬০ ৭১(৯)                       |
| ভূষ্ণিকে শিবের বরদান             | ३११ ३०५(६) 8 <b>शांश</b> ड्रे           | রামের প্রাঞ্জিক ১৬২ ৭৭(৪) ৩               |
| ভূষ্তিৰ অভ্তৰ                    | ১৬৭ ৮৮(ৰ) <b>০ মারা নী</b>              | <b>ভা</b> ১৫ ২০ <b>২</b>                  |
| ভূবৃত্তিৰ উপাধ্যান               | ১৫৪ ৫৫ ৪ মার্মা                         | , बाबाबन- >४४८ २२७(३) >                   |
| ভূষুতির কাক দেহ কেন ?            | ১৬৯ ৯৩(+) ১ বিছভা,                      | রামের সহি <b>ত প্রত্তীবের</b> ৩০ ৩ ১      |
|                                  | ১৭০ ৯৪(খ) ৪ মেখনাদ                      | bo २ <b>१</b> -                           |
| ভূবু ভিৰ কাৰ-: গছে মৰতা কেন 📍 🤫  | ३४३ ३३८( )                              | 44 ১০২ ৭৬ ~                               |
| ,                                |   | C DP COC PSP BB A)                        |
| জুষ্ঠিঃ ও দ-লপ্যান               | ১৭৪ ১০৬(s)<br>১৫৬ ৬২(a) ১ শ্বেদাবে      | 50 85(4) 3                                |
| ভূষ্পিৰ নিকট গ্ল-ড্ৰ প্ৰন        |   | ( 300 A3 O                                |
| দ্ৰ্তির পূৰ্বকথ।                 | ১৭৭ ১০৯(খ) মো <b>ৼ ক</b> ।              | হাকে পাত্রজ্ভ না করে ? ১৫৯ ৬ /(৭) ৪       |
| কুষ্তিৰ পূৰ্বভন্মকৰ।             |   | বনে নারী বেন ঋছুবাজ ২৫ ৪৩ ১               |
| কুৰ্তিৰ অধন কলোৰ বিবৰণ           |   | <b>१६९-७क हाब मा</b> >२२ >>> 8            |
| ভূবৃতিঃ বালক-রামের সহিত খেলা     | ১৬১ ৭৪(*) ৩ য                           |   |
| স্কৃতিৰ মোৰ                      | ১৬১ ৭৩(+) ১<br>বঞ্জার                   | ८ २१ ८७८ १७ १                             |
| ভূষ্তিৰ বালক-ৱাম <b>ৰণ বৰ্না</b> | ১৬২ ৭৫(×) ৩<br><b>২৩</b> ধ্ব,দ          | १, शब्दाव ३०५ ५८ ३                        |
| জুবৃত্তির শেবের শুখীর<br>ম       | ১৭৭ ১০৯(ৰ) <sup>২</sup> <b>মুগ, ক</b> ! | <b>!n€ (₫\$</b> 50२(♠)                    |
| म<br>भक्ती छेदार                 | क <b>्र ८९ यूग-प</b> क                  |   |
| 444.041.                         | 1 5 0 0 30.21                           |   |
|                                  | 25 0 0 45 CH                            | <b>441€4</b> \$ 000 45 3                  |
| 49A(544                          | 8000                                    |   |
|                                  |   | ai, बाक्टनब ३०७ ११ २                      |
|                                  | ) २३० O O युष, 41                       | वन-विकोबरनंब ১১১ ৯৩ २                     |
| ६४८ <del>६</del> इ. इ.           | १२ ८ ८ स्व. भा                          | वन-रह्मात्नव ३३२ ३४ ३                     |
| भूरत स्थ                         | oc २१ 8 रू. वा                          | म-सावत्वच ३०१ ४७                          |
| খনৰাগ সমূৰৰ                      | ১৮৬ ১২০(৯) ১৫ 🏻 🌉                       | १९-वायत्व ३०७ ४२                          |
| मः क्षिरी-विशाल                  |   | , बाब-बाबरबंब ४७ ०४(व) ५                  |
|                                  | (८৮ ७८ ७ व्यक्ति                        | বন দীপৰিবা ২ ৷ ৪৬(ব)                      |
| बल्पावयोत वायन्यक छन्दरम्        | <b>र्वश्रदेश द्वा</b>                   |   |
|                                  | ( १७ २७( व ) ८ व्यव्यविद                | <b>)</b> 8 3                              |
|                                  | (20 228(4) 2 44484                      | <b>≑া</b>                                 |
|                                  | २०१ २०(च)२ हम्म सम्बेदः                 | <b>महेश्रकाव (शव २७(४) &gt;</b>           |
| माछ। कथन् भाराची-मध चाह्यप करवन  | ১৬১ ৭৩(৮) ৪ বাজানি                      | इत्स्क विकोशलब ३३४ ३०७ ३                  |
| যানগ-পূৰ্য সম্ভৰণৰ ; মানগ-পাপ    | at Artife                               | <b>अरम् ५, बारम्ब</b> ५७८ ७( <b>५</b> ) २ |
| महर्गद नद                        |   | <b>इंट्रक, जुबीरवर ७</b> ८ ५० <b>७</b>    |
| শাৰীচ                            | 1 " "                                   | मान गरवार १९ ३৮                           |
|                                  |   | मर्ज् <b>र विकोरत्य व्यवस्या</b> ७० ८० ५  |
| वाडीह वर्ष                       |   | गणदर्भि ऋषांच ३२ ०० ३                     |
|                                  |   |   |

|                                  | नुई। त्याश कोलाहे                           |  | र्भा         | লোচা চৌশ          | ΠĒ |
|----------------------------------|---|--|--------------|-------------------|----|
| হাবণ-প্রহন্ত সংবাদ               | 92 9 8                                      | साम-नका. म हक्ष्मात्मद व्यत्र-विकामा > | 8৬           | <b>೨</b> ৫ :      | >  |
| দ্বাৰৰ বামের পোপন ভক্ত           | 50 EE 5                                     | বাম-গীতা-সম্মাণৰ ক্ষোধায় প্ৰম         | ১২৬          | >>b(*) 3          | >  |
|                                  | \$ 550 55 8                                 | बाय-मवा, भी छार,                       | 485          | ૨૭ ३              | Ł  |
| ब्रादन रह                        | र ३३१ ३०२ ३                                 | রাম-ছইতে বামের দাস বড় :               | ₽8           | >>:(·) b          | *  |
|                                  | ( 65 50 8                                   | রামারণ-মাহাত্ম >                       | 66           | >>a(·) :          | •  |
| ব্রাবণ আত্মণ-বংশোৎপদ্ম           | ্ঠ প্রশাস্টীক।<br>৭২ ১৯ ২                   | ৰামেৰ কুপা ভিন্ন ভক্তি হয় না          | ゅう           | 5₹¢(•) 8          | 3  |
| 6 . 3                            | ( 92 )                                      | ৰামেৰ চৰণে মতি হওৱা ভিন্ন অভ           |              |                   |    |
| ৰাবণ-বিভাবণের সুদ                | ৫৮ ৩৫ ১                                     | প্ৰ নাই :                              | <b>, b</b> 9 | >>>(*)            | f  |
| बादल-प्रात्मावजी मरवाव           | 509 be                                      | वारमय नात्रण्या                        | 000          | १२ 0              | 3  |
| মাৰণ-বামের যুদ্ধ                 | 200 PS                                      | রামের প্রভাগণকে উপবেশ                  | \$85         | 83                | •  |
| वार्य-मण्डात्व युष               | es 20                                       | য়ামের প্রভাপে কাহারা ছঃখী ও           |              |                   |    |
| श्चावन-सङ्गान मःवान              | 552 58 5                                    | कारात्रा खबी रव                        | 588          | oo :              | >  |
| बार्य-इक्ष्मात्मर युव            | <b>৯৬ ৬</b> ২                               | ব্ৰামেৰ বিলাপ                          | 29           | २ - (अ) 8         | 3  |
| बादनस्य ब्रूछकार्गत छनात्रम् गान | ( ৫৩ २৩ 8                                   | বামেৰ বিশাপ {                          | 26           | ७०( <b>४</b> ) :  | •  |
|                                  | ar 29 3                                     | ৰামেৰ বিষয়                            | २२           | <b>ა</b> ა        | >  |
| बायनक विकीयनब <b>উপদেশ गान</b>   |   | ৰামেৰ মহানতা                           | ১৬৮          | >0(*) €           | ၁  |
|                                  | ( ৫৯ ৩৯(৮) ৩                                | ৰামেৰ মাহাত্মা                         | २७           | 89                | >  |
|                                  | 1 95 6 5                                    | বাংষৰ মাছ/জ্বা অধ্বৰণৰ মহিমা           | २१           | ৪৬(১) -           | -  |
| রাবণকে মন্দোগরীর উপদেশ দান       | 90 50(x) 8                                  | রামের হাঞ্যাঞ্জিবেক                    | 38           | ৯(*) ই            | ર  |
| •                                | ( PS 20(4)                                  | ৰামের হাক্ষ্য-বধ প্রতিজ্ঞা             | ৬            | ৮                 | 9  |
| बारगःक मामाबादमय छेनायम माम      | ४३ 89 <b>७</b>                              | ৰামেৰ কপু বৰিনা                        | ৬১           | 89                | ર  |
| ৰাৰণেৰ অন্ত্যেষ্ট ক্ৰিয়া        | <b>₹</b> >>9 >>৩ >                          | রামের রূপ বর্ণন।                       | POC          | क्ष क्ष           | 3  |
|                                  | \$ 228 208 8                                | রামের শ্বপ বর্ণনা                      | >>9          | ১০২ ৬-            | Į: |
| बावलव बज मुक्ठोनि कर्छन          | ৭৫ ১৩(ক)                                    | ৰামের সমূহ-ভটে আপম্ন                   | 89           | <b>ა</b> ა ა      | o  |
| बारतव का न-डेशरम                 | <b>५०२ ११</b>                               | হামের স্বই অন্ত                        | ১৬৮          | ৯০(*) ও           | 5  |
| ৰাবণেৰ মাৰ,-স্কন                 | 555 28 2                                    | 31000 afau makau Samu                  | 00           | ં ક               | ,  |
| बावर्णक वस्क्रकारि               | 506 F8 2                                    | বামের সহিত প্রতীবের মিত্রভা 🗧          | 30           | 8 0               | )  |
| ৱাবণের হ্রপ বর্ণনা               | ११ ३४ २                                     | ৰাঘের সহিত বছুমানের সাক্ষাৎ            | ২৯           | 0 5               | •  |
| क्षांत्र-सक्षम मर्गाम            | ४७ ७१ २                                     |  | ১৬০          | ৭১(খ) ২           | Į. |
| ৰাম-কৰা ভাৰণেৰ অধিকাৰী কে ?      | <b>३४३ ३२१ ७</b>                            | রামেশ্ব প্রকিষ্ঠ।                      | 40           | > :               | •  |
| बाय-नावन मरवान                   | ₹8 80 0                                     | রাক্ষ্ম-বান্ত্রে যুদ্ধ 🔰               | 00           | 96 9-             | ₹: |
| बाम निक्रभभ                      | ১৬৮ ৯১(ৰ) 8- <b>ছ</b> :                     | क्र <b>म</b> हिक े                     | 90           | 509(a) 5          |    |
| बाब-विश्व भरवाव                  | ¢ 88 00¢                                    | स्थ-वर्षना, जावरबंद                    | 99           | ১৮ ২              | ł  |
| রাম-ভক্তিই স্কৃত্ৰের আক্র        | ১৮৯ ১২৬ ১                                   | <b>a</b>                               |              |                   |    |
| ৰাম ভজিতেই আঁড হন                | <b>&gt;</b> રહ >>૧(૧૦) ૪                    | <b>সন্ধা</b> ৰাণ্ড                     | ৬৯           | 0 0               | )  |
| ৰাম-ভদনার মাংগাল্য               | >>> >≤> >≤> 8- <b>¥:</b>                    | कक्षः श्रमम, व्यक्षरमय                 | 96           | ১৬( <b>ə</b> ) ১  |    |
| ৰাম-ভংক মিলন                     | ১৩২ . ৪(ক) —                                |  | 88           | ۶<br>۹. د         |    |
| वाय-वाष्ट्र वर्गना               | 580 55 8                                    | मदा अभन, इक्षात्म                      | රථ           | ર.<br>૨૭ <b>ર</b> |    |
| ৰাম-ৰাব্শ যুদ্ধ                  | 204 PG                                      | मदा परन {                              | હુ           | ₹8 5              |    |
| वाम-ज्ञावन यूकावस                | ৮৬ ৩৮(খ) ১                                  | मक्ष-र्गम                              | 88           | ۹ ۵               | ľ  |
|                                  | \   | महिनी दश                               | 80.          | . o s             | ,  |
| वाध-मद्भग गर्थाण                 | { \$ >3 3 3 3 3 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 |  | 83           | રક ૭              | )  |
|                                  |   | र प्राप्त                              | • •          |                   |    |

|   | পৃষ্ঠা ৰোহা চৌপাই             |   | পৃষ্ঠ        | लाहा छोनाह                      |
|---|-------------------------------|---|--------------|---------------------------------|
| म <b>ख</b> १-, भचनाम स्द                      | ۶ ۱۷) د 8 و ۲                 | गांबू ७ <b>च</b> र्माबूद श्राप् <del>धन</del> ' | 246          | ( ५२०(४) ७<br>( ५२०(४) <b>१</b> |
| লক্ষণ-বাবণের যুব                              | 290 PS                        |   | 589          |                                 |
| मणानंत्र स्कृति 🖁                             | 09 51 5                       | সাধু ও অসাধুং লক্ষ্                             | ্য<br>২৬     |                                 |
|   | 8 75 26<br>8 CC G             | সাধুর লক্ষণ<br>সাত্ত,- মমস্থা বিলন              | ر.<br>د      |                                 |
| লক্ষণের বাধকে শ্রম<br>জন্মণের জিপিদান, বাবপকে | &8 C2 8                       |   | ∫ 8৮         |                                 |
| পদ্মশন মোশনান, মাশশকে<br>লোমশ মূনি            | ১৭৮ ১১০( <i>য</i> )           | সীভা-ত্রিজটা সংবাদ                              | <b>(</b> >>8 |                                 |
| লোৰণ যুনিৰ <b>অভুতাপ</b>                      | 249 225(4) Q                  | সীতা-ংখ্যান্ সংবাদ                              | 85           |                                 |
| লোমণ মুনির বরণান, ভূবুতিকে                    | 2PO 225(*) R                  | সীভা-হৰণ ও সীডা-বিলাপ                           | \$ 39        |                                 |
| M   |                               | সীতা কি ভাবে শঙ্কার থাকেন                       | 00           |                                 |
| শক্তিকে া, বিভীধণের প্রতি                     | CE CCC                        | সীতার অগ্নি-প্রীক।                              |              | 509 <b>9</b>                    |
| শক্তিকেণ, গল্পণের প্রতি                       | <b>৯</b> ২ ৫৩ ৪               | স্টভার অন্ধি-প্রবেশ                             | 20           |                                 |
| শুঠ-দেবক পূল-সম্মান                           | ગ≺ ৬ α                        | সাভার নিকট হলুগানের বিশায় এছণ                  | <b>¢</b> 8   | ₹6 8                            |
| म्बर्ग चानित्नहे बका                          | હર 89 >                       | সীভাৰ বাম দেবা                                  | 580          | <b>२</b> ७ <b>२</b>             |
| नवस्य मृति                                    | ৫ ৬ ৯) ৪                      | সীভার বিশাপ                                     | 24           | રક 5                            |
| <b>ण</b> श्चर वर्गन                           | ৩৬ ১৫(₦) ১                    | সীতার সম্ভান-ভশ্ম                               | ১৪২          | ≎8 <b>೨</b>                     |
| <b>भ</b> वशे                                  | ২১ ৩৩ ৩                       | স্টিয়ৰ সন্ধানে বানৰ-দৈল প্ৰেৰণ                 | <b>ు</b> ఫ   | <b>२</b> > <b>೨</b>             |
| निव ७ को ब                                    | >0 >6 -                       | স্থাৰ   | ∫ રજ્ઞ       | 0 >                             |
| শিব-ছৰ্গা সংবাদ                               | 502 65 5                      |   | <b>)</b> 30  | ၁ >                             |
| শিবের নিষ্ট ভূবৃতির গুলুর ক্ষা ভিক            |                               | न्द्रश्रीय-राणि युष                             | <u>ు</u>     | ৬ ১৩                            |
| শিবের শাপ, ভূষ্বিকে                           | 598 50b(*)                    | শ্বজ্ঞাৰ-খিলন                                   | ሪዕ           | ₹৮ ₹                            |
|   | 520 558( <b>4</b> ) 5         | স্তপ্রীব রাম সংবাদ                              | ೨৮           |                                 |
| •   | ه-د (۱۹) کې د کې<br>د کې د کې | শ্বত্ৰীবাদিৰ স্থামেৰ নিকট বিদায় এছণ            |              |                                 |
| भूण, ठावि व्यकारवव                            | ১৮৬ ১২০(•) ১৬                 | रुबोरवर छै । व शासन जनस्थान                     | ૭૧           |                                 |
| <b>म्</b> न-स्थाप                             | ; ৪০, ৬৯, ১২৯,                | স্থাবৈর উপর লশ্বণের কোব                         | 29           | _                               |
| •   | ) 90 , 00 , 5 to ,            | স্প্রীবের ছঃখ বর্ণন                             | <b>3</b> 5   |                                 |
| <b>ज</b>                                      | 710, 707,                     | ক্ষ্মীবের বৈরাপ্য                               | <b>3</b> 2   |                                 |
| স্ <b>ত</b> ্ৰজ থেকি চায় না                  | <b>३२२ ३३</b> ३ 8             | दकी यह वाक्यांक्टरक                             | 38           |                                 |
| <b>७७:</b> -मोमा व्या ६६६                     | ১৬১ ৭৩(*)                     | প্ৰটাৰের সহিত ধিত্ৰতা, বাবের 👸                  | رد }<br>ان ا |                                 |
| সৰকাৰিৰ বাম সকালে জাগধন                       | 586 55 5                      | ন্ত <b>্ত মু</b> 'ন                             | و            | -                               |
| সন্তান-কথ, সাকাৰ                              | ५८ २८ ५                       | থুকা কাণ্ড<br>থুকা কাণ্ড                        | 83           |                                 |
| সংখ্য খড়াব                                   | ३७४ ३२०(a) <b>१</b>           | স্থবেল পর্ব্ব চ,                                | 9.           |                                 |
| সন্মিপাত বোগ                                  | ১৮৬ ১২০(ৰ) ১৬                 | হুবেল পর্বন্তে অবস্থান                          | ۹:           |                                 |
| সমূস পঞ্চন, মুখানের,                          | c o c8                        | श्रादन नर्साष्ठ ठालावर                          | 9.8          | 3 >5(4)                         |
| त्रमुख भव्यन, यानव-स्मनाव,                    | د د دو                        | ****  | 8            | 8 5 5                           |
| · मध्य मञ्चलक पृक्षि                          | હું છે ર                      | ন্থবেণ বৈভ                                      | <b>9</b> :   | 8 80 8                          |
| সমূল্যে ৫ উপৰ বাংশৰ ক্ষোৰ                     | ৬৬ ৫৭ ১                       | পূৰ্ণন্থাৰ বাৰণেৰ নিকট প্ৰন                     | { a:         | 8 २०(४) >                       |
| সম্পাত  | ८० २७ ३                       |   | £ >:         | 8 २०(५) ७                       |
| अर्थाव अज्ञाव                                 | ১৫৬ ৬১ ~                      | স্পূৰ্বাৰ যাবেৰ নিকট প্ৰন                       | 2.           |                                 |
| সাপৰ উত্তৰণ                                   | 45 0 5                        | পূৰ্ণৰাৰ বিষয়ণ                                 | 3            |                                 |
| माभव मध्यनानस्य मक्त्यव व्यक्तांवर्षन         |                               | (त्र इ. १६न                                     | 63           |                                 |
| माच बाब, भक्रद्भा,                            | 2AG 250(4) 2                  | সেবা ক্ৰিডাৰে কৰিছে হয়                         | 3            | <b>३ २२ २</b>                   |

|  |      | পৃষ্ঠা    | লোহা চে         | नार          |  | , | jai c       | गर। को        | াণাই |
|--|------|-----------|-----------------|--------------|--|---|-------------|---------------|------|
| দেব্য-সেবকভাব <b>ভিন্ন</b> ভব-ছুংখ <b>অস্ত</b> । | ध ना | 228       | >>>(*)          |              | ऋयान, जीका-क्क्यान्                        |   | 8 <b>৮</b>  | >>            | 8    |
| श्रीमात्मन पहेरिय साम                            |      | ৭৬        | >0(4)           | >            | সংবাদ, স্থঞীৰ-বাম                          |   | ೨৮          | 20            | -    |
| चारीमछा भारेष्म नारी महे हर                      |      | ೨৬        | >8              | 8            | সংবাদ, হছুমান-বিজীবণ                       |   | 80          | 8             | Ę    |
| <b>एर, प्</b> तिपृतिर,                           |      | ၁         | ၁               | >            | ऋराष, रक्षान्-७३७                          |   | ৯৪          | GF            | 5    |
| चन, हेंद्यन,                                     |      | ১২২       | ১১২             | >            | त्रश्याम्, रुष्ट्रयान्-शायन                |   | ¢5          | 30            |      |
| Ba. Bifacatra,                                   |      | ১৩৬       | ১২(প)           | >- <b>ĕ:</b> | সংবাদ, হৰ-পাৰ্কতী                          |   | ১৫২         | 65            | `    |
| <b>छ र, क</b> हेर्नुर,                           |      | ₹0        | 25              | >- <b>Ę:</b> | ₹  |   |             |               |      |
|  | 5    | 90        | 240             | >            | হত্যান্                                    |   | २७          | 0             | ٦    |
| क्षव, (परभावंब,                                  | Ś    | ১২১       | 202(*)          | ર            | হলুয়ান্ কর্তৃক ভরতের এখে <b>ভিজ্ঞা</b> স। |   | ১৪৬         | 200           | 5    |
| क्षय, मात्रत्य,                                  |      | >७२       | 90              | >            | হছুবান্-বিভীৰণ সংবাদ                       |   | 88          | 8             | ٦,   |
| ভব, ব্ৰহ্মাৰ,                                    |      | ১২১       | 220             |              | হছুৰান্-ভব <b>ভ মিলন</b>                   | ( | <b>३२</b> ३ | 0             | 5    |
| खर, निट्यंब,                                     | {    |           | >>8(•)          |              | रह्नवान्-७४७ । ननान                        | Ì | いいつ         | <b>১(</b> *)  | )    |
| A4) [-]444)                                      | (    | २०१       |                 |              | হছুখান্-ভৰক সংবাদ                          |   | ∌8          | 62            | `    |
| चर, मनकारिय                                      |      | 286       | ೨೨              | >            | হতুমাৰ্-বাবণ সংবাদ                         |   | 65          | 20            | -    |
| ক্তব, প্ৰতীক্ষ মূনিৰ                             |      | ٩         |                 | 5            | रुष्ट्रभान्-बाय मरवाम                      |   | OO          | २৯            | 8    |
| खर,( क्याहेक )                                   |      |           | >09( <b>4</b> ) | >            | इ <b>द्य</b> शन्-श्रीक। मःसम               |   | 86          | 22            | 8    |
| সংবাদ, जनम-वादन                                  |      | 99        | ১৮              | -            | চতুমান্-পুৰসা সংবা <del>দ</del>            |   | 88          | >             | >    |
| ऋताम, अञ्चन-व्याम                                |      | ৮৫        |                 | ર            | হতুযান্কে সাপৰ লঙ্গন কৰিছে                 |   | •           |               |      |
| मरवाप, कामप्तिवि-दादप                            |      | ラミ        | •               | >            | ভাগবানের উৎসাহ দান                         |   | 83          | ২৯            | >    |
| मर्बार, नादर दांच                                |      | ₹8        |                 | ၁            | হতুষানের নাগপাশ                            |   | ć٥          | 29            |      |
| সংবাদ, বশিষ্ট বাম                                |      | 200       | 89              | >            | হতুষানের রাবণ-স <b>ভার আ</b> গমন           |   | ¢5          | 76            | `    |
| সংবাদ, বিভাবণ-কৃষ্কৰণ                            |      | ১৬        | ৬৩              | ર            | হ্যুথানের লক্ষার প্রবেশ                    |   | 88          | ર             | ၁    |
| मः वाप, खबळ-इष्ट्रमान्                           |      | 28        | GA              | ٥            | <del>স্থ্যানের সাগর স্থান</del>            |   | 83          | 0             | ٥    |
| मःबोर, वाय९-वशर                                  |      | 99        |                 |              | হতুষানেৰ সাক্ষাৎ, বাবেৰ সহিত               |   | २५          | 0             | 5    |
| দ্বাদ, বাংণ-কালনেমি                              |      | ১২        |                 | >            | হত্তমানের সীভা-সমীপে গ্রম                  | 5 | 85          | ٩             | ં    |
| मरवाप, बावर-व्यव्य                               |      | 93        | -               |              | रह्माध्यम् गार्थः गमाः। गमम                | ſ | 229         | ১০৬           | 5    |
| সংবাদ, বাবণ-মন্দোদরী                             |      | СP        | 200             | ٦.           | হত্যানের সীভার নিকট বিবায় এহণ             | Į | ¢8          | २৫            | 8    |
| म् वाष, वादण-स्युधान्                            |      | e:        | २०              | -            |  | ( | 89          | ್ಳಿ           | >    |
| मःवाप, वाम-नावप                                  |      | ₹8        | 80              | ၁            | চত্যানেৰ স্থাৰণ বৈভকে আনৱন                 |   | ৯২          | 68            |      |
| <b>अर्शक, बाय-र</b> निर्ड                        |      | 500       | 89              | 5            | হর-পার্বভী সংবাদ                           |   | ১৫২         | 6.5           | •    |
| স্বোদ, বাস-সন্মণ-প্ৰাৰ                           |      | ગ         | 2 20            |              | হৰি-ভক্তির অধিকারী                         |   | Coc         | (O)           | ,    |
| ऋवाम, बाम-हक्षमान्                               |      | 00        | ३ २५            | ٥            | হৰিব ভজনা ভিন্ন ক্লেপেৰ শেষ হয় না<br>     |   | ১৬৭         | <b>b</b> b(∗) | S    |
| সংবাদ, সীভা-ৱি <del>জ</del> টা                   | ş    | 88<br>306 |                 | ><br>>       | ক্ষ<br>ক্ষয় বোপ                           | : | ১৮৬ :       | ২০(*)         | 59   |



#### श्रीश्रावशास नयः

#### ঞ্জানকীব্যুভের জয়

# শ্রীরামচরিত মানস

# ভভীম্ব সোপান

# অরণ্যকাণ্ড

শ্লোক-ধর্ম-বিটপীর মূল

- বৈরাগ্য-অম্বন্ধ-ভারু মোহ-জলধর ছিন্ন-

বন্দি ব্ৰহ্ম-কুলঞ্জাভ

জল ভরা জলধর-

আয়ত রাজীব-আঁখি মস্তক-উপরে যিনি জানকী-লক্ষণ-যুত

সো-উমা রাম-গুণ দৃঢ়

মোহ লভে ওধু মৃঢ়

বিবেক-জলধি-শোভা ঘন পাপ-অন্ধকার

জিল্প করণ কাল-কলম্ব চির-নাশন

সমান স্বন্দৰ ভতু

কবেতে কাম্মুক শর কটিতটে মুশোভিত

পথিক-প্রবর পৃঞ্জি

আর ভাপে স্থির পরিত্রাতা। নভ:-জাত প্রন-আকারে রাজা রাম শন্তুর প্রিয়েরে ॥ ১

শোভার আধার পীতাম্বর স্থ-উত্তম তৃণীর স্থন্দর।

পূৰ্ণ-বিধু আনন্দ বিধাতা

क्रोक्रिके करत्र मध्य অভিরাম সে রাম-চরণ॥ ২

প্রদানে সাধুরে বিরাগ মর্শ্ম। যে হরি-বিমুখ বিরত ধর্মে॥

# क्षत्र क्षिन्छ।

চৌ-নিজমতি অমুসারে অমুপম বিমোহন। खादन क्रबर এবে ख्रीबारमब नौना शुर । **একবার নিজক**রে কুম্বম কবি<sup>2</sup> চয়ন। বসি' এক মনোহর স্ফটিক শিলার 'পরে। জয়ন্ত বাদব-স্থুত ধরি'রূপ বায়দের। যেন অতি মন্দমতি পিণীলিকা হঠ ভরে। মৃঢ় কাক আপনার খল-মতি অনুসরি'। বহিতে ক্রধির-ধারা হইল রাম-গোচর।

করিমু ভরত পুরম্বন শ্রীতি বিবরণ ॥ করিল। যা' স্থর-মুনি-নর-মন বিমোহিত ॥ ১ विविध कृषण ताम कतिरामन वित्रहम ॥ (मर्वी **कानको**रत क्षकु भरा'न व्यामतकरत ॥ २ হেরিবারে চাহে শঠ পরাক্রম শ্রীরামের । অতল দাগর-তল মাপিতে ত্রাশা ধরে ॥ ৩০০ পলায় জানকী-পায় চঞ্চ-আঘাত করি' ॥ শবঞ্-সন্ধান এক করিলেন রখুবর ॥ ৪

<sup>•</sup> ভূপের বাপ।

**দো—অ**তি কুপাময় তাঁ'রো সনে ছল রম্বুক্লপতি করে আচরণ

সতত করুণা দীনে। দোষাগার মতিহীনে॥ ১

(চ) — মন্ত্র-চালিত হ'য়ে ব্রহ্ম-শায়ক ধায়।
আপন প্রকৃত রূপ ধরি' যায় পিতৃ পাশে।
উপজ্লিল ত্রাস মনে অুচে' গেল সব আশা।
বৈলাস আদি করি' সব ধামে বিধি-লোকে।
জয়ন্তে বসিতে কেই নাহি করে আবাহন।
স্থধা হয় বিষ কাক বলে শুন হরি যান।
শত অরি-সম হয় স্প্রদের ব্যবহার।
ভথ্য অনল হ'তে ভা'র কাছে সারা ধরা।
জয়ন্তে বিকল অভি হেরিলেন দেব-ঋষি।
প্রেরণ করিলা ভা'রে রামপদে দ্বরা করি'।
ভয়ে ভীত সকাতরে জভা'য়ে ধরে চরণ।
ভোমার অতুল বল প্রভুতা তব অতুল।
নিজকৃত কর্ম্মকল সমুচিত লভিলাম।
কৃপাময় শুনি' ভা'র অতি তুপ-ভরা বাণী।

দ্যে-ন্মোহ-বশে সাথে বাদ ককণা করি' অগাধ ভয়াকৃল প্রাণ ল'য়ে বায়দ পলা'য়ে যায়॥
বীয়াম-বিরোধী বৃদ্ধি' অভয় নাতিক আদে॥ ১
চক্রের ডরে লভে দলা যথা ছুর্বাদা ।
ছুটে' আছে কলেবর সমাকৃল ভয়ে লোকে॥ ২
রাম-ডোহী জনে রাথে বল ধরে কে এমন॥
জননা মরণ-সমা জনক যম-সমান॥ ৩
শৈবলিনী বৈতরণী সমান নিকটে ভা'র॥
এ দলা ভাহার যেবা রাম-বিমুখভা ভবা॥ ৪
সন্ত কোমল-চিভ করুণা উদিল আসি'॥
চীৎকারি' কহে রাখ' প্রণভের হিভকারি॥ ৫
বলে ত্রাহি ত্রাহি প্রভু দয়াল রখুনন্দন॥
আমার ছিল না জানা কুমভি আমি বাতুল॥৬
রাখ' প্রভু এবে তব শরণে ছুটে' এলাম॥
এক কাঁথি করি' ভা'রে ক্ষমিলেন হে ভবানি॥৭

যদিও বিনাশ তা<sup>2</sup>র বিধি। ১ ক্ষমিলেন রাম গুণনিধি॥ ২

#### অত্রি-মিল্স

বেটা—চিত্রকৃটে অবস্থান করি' রঘুমণি রাম।
কিছুদিন গত স'লে উদয় হইল মনে।
এত ভাবি' মুনিগণ-সমীপে ল'য়ে বিদায়।
অত্রিমুনির পাশে যথন করিলা গতি।
রোমাঞ্চিত কলেবরে ধাবিত উঠিয়া মুনি।
করিতেই দণ্ডবং শ্রীরামে বুকে জড়া'ন।
হেরিয়া শ্রীরাম-রূপ শীতল নয়ন-মন।
আর্চনা করি' কহি' স্বচন মনোহর।
ব্যা—আস্যেতে গ্রেছ স্মাসীন

—-আসন্তেও প্রভুসমাসান মুনিবর পরম প্রবীণ করেন কতই লালা আংতিযুগ-অভিরাম ॥
হইবে বড়ই ভীত সকলে কেলে'ছে চিনে'॥ ১
সীতাসনে হুই ভাই যা'ন যথা মন যায়॥
বারতা শুনিযা মুনি, অতি হর্ষিত মতি॥ ২
তাহারে হেরিয়া ক্রত চলিলেন রঘুমণি॥
ক্রেমবারি সহযোগে হুজনে করা'ন স্নান॥ ৩
সাদরে করেন নিজ আআমে আনয়ন॥
অপে'ন ফলমুল প্রীত রাম রঘুবর॥ ৪
হেরি' রূপ ভরিয়া নয়ন।
অভ্তি' কর করেন বন্দন॥ ৩

অকামী জনেরে স্থান দাও তব নিজধাম। নৱনের প্রীতিকর কম শ্রাম কলেবর। কিবা বিকশিত কম রাজীব যুগ-লোচন। প্রলম্ব ও ভূজ-যুগে বিপুল কডই বল। তৃণীর শায়কবর ভাষণ ধহুকধারী। প্ত দিবাকর-কুল করিলে তুমি উল্লল। সাধুগণ মূলিবর হাদি অমুরঞ্জন। মনোভব-অস্তক-বন্দিত পদতল। 🔻 😘 জ্ঞানময় ভূমি বিগ্রহ নিবারণ। প্রণাম ভোমার করি রমার জনয়পতি। শচীপতি-প্রিয়ামুক ভকডের প্রাণাধার। আপন মনের হ'তে তম: করি' পরিহার। সে কভু তর্ক-বীচ়ি পুরিত ভবার্ণবে। একান্তে করি' বাস মুক্তির কামনায়। निम्हर (महेबन भन्नम भूलक-मत्न। সেই এক অদ্বিতীয় মায়ার অতীত প্রস্তু। জগতেব গুরু যিনি যিনি চির-সনাতন। ভাব অতি প্রিয় যাঁর যিনি ভাব-বল্ল। নিজ ভকতের যিনি কল্পাদপ-প্রায়। অফুপম স্থুন্দর হে পৃথিবী-অধিপতি। ভূষ্ট আমারে হও প্রণাম পায়ে ভোমার। যেক্সন এ স্তব-পাঠ করয়ে সহ আদর। অন্তে করয়ে লাভ নাহি তাহে সংশয়।

ছু-প্রণাম ভোমার পায় ভকভবনে সদয়। কোমলভা-ভরা প্রাণ ওছে প্রভু কুপাময় । চরণ-সরোজে নমি' ভজি প্রোণ-অভিরাম॥ ১ তুমি ভব-জলধিতে মন্দর ধরাধর॥ काम मन (भार-वानि नव (नाय विस्माहन ॥ २ বিভব ভোমার প্রভু কে আছে যে পায় ভল 🛚 ত্রিলোক-অধিনায়ক ত্রিভাপ ছরিভহারী॥ ৩ धुर्व्छिंगै-श्रे छात्रि' दिशाहेटल निक रहा ॥ অমর-অরাভিদল-দর্প বিভঞ্জন ॥ ৪ সেবিত কালাম্ভক অজ-আদি সুরদল।। দূষণ কলুষ যত করহ অপহরণ 🛭 ৫ স্থাপর আকর চির সম্ভন্সনের গভি। অমুজ্ঞ শক্তি-সনে ভজনা করি ভোমার॥ ৬ নিয়ত যে করে সেবা কমল-পদ তোমার॥ ওছে প্রভু কুপাময় স্থপনেও নাঠি ডুবে॥ ৭ ইপ্রিয় বোধি' যেবা রক্ত তব সাধনায়॥ স্বগতি কবিয়া লাভ যায় নিজ-নিকেতনে॥৮ সব সাধ-বিরহিত ঈশ্বর আর বিভু॥ ত্রিগুণ-অতীত যিনি স্বগত প্রমাত্মন ॥ ৯ কু-যোগিগণের কাছে যিনি মহাত্র্লভ। সম স্থাপে সেবা-যোগ্য ভজনা করি তাঁহায় ॥১০ ভোমারে প্রণমি' আমি দেব জানকীর পতি। ভক্তি কমল-পদে দাও মোরে কুপাধার॥ ১১ সেজন ভোমার পদ ওছে প্রভু পরাৎপর ॥ ভোমার ভক্তি-রুসে ভিজিয়া তে কুপাময়॥ ১২

দো-করিয়া মিনতি ও পদ-কমল

শির নত করি' যেন প্রভুনাহি ক'ন করি' কর জোড। কভু ত্যঞ্জে মন মোর॥ ৪

# সীতা-অনস্মা-মিলন ; অনস্যার পাতিব্রত্য ধর্ম কীর্ত্তন

🧲 এনসুয়াদেবী-পদ ধারণ করিয়া সীভা। করিলেন সম্ভাষণ সুশীলা অভি বিনাডা ॥ ঋবি-ঘরণীর মন অপার সুখেতে ভাসে। পরা'লেন চাক্<mark>রবাস আন্তরণ স্থুন্দর।</mark> ক'ন ঋষিবধু সহ সরস কোমল বাণী।

আশীষ করিয়া দান বদা'লেন নিজ পালে ॥ ১ নিত যা' নৃতন রয় নির্মণ মনোহর 🛭 রমণী-ধরম যাহা কিঞিৎ বিষরণি ॥ ২

জনক জননী ভ্ৰাডা সকলেই হিতকারী। निष क्वांत्र मार्ट नाहि नीमा नाहि भात । देश्या ध्रम निष-वाक्य व्यात नाती। বৃদ্ধ অনুস্থকায় মূর্য ও ধনহীন। हिन পভিকেও यनि मात्रा कत्त्र अभमान। কায় মন বাণী সনে পত্তি-পদে অফুরাগ। এ জগতে পতিব্রতা চারি প্রকারের রয়। উত্তম যেবা তা'র সদা এই ভাব মনে। মধ্যম পর-পতি দরশন করে হেন। ধশ্ম ভাবিয়া মনে কুলে থাকে নারী যত। ভয়ে কিন্তা অ-সুযোগে পতিরতা হ'য়ে রয়। পতি-বঞ্চনা করি' পর-পতি করে আশ। ছটা কে ভা'র সম যে ক্ষণ-মুখ কারণে। ছল ছাড়ি' পতিপদে যাহার অচল মতি। ভর্তার প্রতিকৃষ আচরণ হয় যা'র।

> সো-সহজে অ-পূতা নারী যশ গায় বেদ চারি শ্ববি' সীভা তব নাম তুমি ড' রামের প্রাণ

(5)—শুনি' জানকীর প্রাণ পুলকে হ'ল অধীর। আদরে চরণ 'পরে নমিত করেন শির। করুণানিধান তবে কহেন মুনির প্রতি। সভত আমার 'পরে রাখিও তব করুণা ধরমের ধর-ধারী 🗃 রামের ছেন বাণী। যাঁ'র কুপা শঙ্কর বিধাতা ও শনকাদি। তেমন বিগতকাম পুরুবের(ও) প্রিয়তম। এভদিনে বুঝিলাম রমার কি চতুরভা। কেহ নাহি ত্রিভুবনে যাঁ'র সম অভিশয়। কোন প্ৰাণ ল'য়ে মুখে ক'ব প্ৰাড় যাও তুমি। এত বলি' প্রভু-পানে চেয়ে র'ন মুনিবর।

কিছ আছয়ে সীমা শুন নৃপ-স্কুমারি। অধম রমণী সেই যে না সেবা করে ঠা'র। 🗢 विभागत काल छत्व वृक्षा यात्र अहे ठाति ॥ অন্ধ বধির ক্রোধ-পরায়ণ অভি দীন॥ ৪ সে নারীর যমপুরে ছঃখ আছে বিধান॥ এই শুধু ধর্মা ত্রত নিয়ম কেবল এক॥ ৫ নিগম পুরাণ সাধু সকলেই এই কয়॥ বিতীয় পুরুষ নাহি স্থপনেও ত্রিভূবনে॥ ৬ সবে পিতা সহোদর পুত্র আপন যেন॥ চীনা নারী সবে ভা'রা বেদের বিধান মভ ॥ क বুঝিবে অধম নারী এরা সারা জগময়॥ রৌরব-মাঝে শতকল্প ভাহার বাস ॥ ৮ শত কোটি জন্ম তথ-ডর নাহি আনে মনে॥ আয়াস বিনা সে নারী করে লাভ পরাগতি॥ ৯ যৌবনে বিধবা-দশা লিখিত ললাটে ভা'র ॥ ১০

> সেবি' পতি শুভ গতি পায়। আজিও তুলসী হরির পায়॥ ৫ (ক) পতি- 10 মারী পালিবে সদা। জগভের ভরে বলা এ কথা॥ ৫ (খ)

অপর কাননে যাই যদি হয় অমুমতি॥ ১ নিজ দাস জানি' মনে স্নেহ যেন ভাজিও না॥ শুনিয়া প্রেমের সনে কহিলেন জ্ঞানী মূনি॥ ২ করেন নিয়ত সাধ যত পরমার্থবাদী॥ তুমি সেই দীননাথ কহ হেন কথা কম॥ ৩ সকল দেবেরে ভাজি' কেন ভোমা 'পরে রভা ॥ কেন না হইবে কহ তাঁহার হেন বিনয়॥ ৪ তুমিই বলহ নাথ তুমি ত অস্তর্যামী। নয়নেতে জল বহে পুলকিত কলেবর॥ ৫

ছ-পুলক শরীরে মন জ্ঞান থাণ

প্রেমে প্রাণ ভরা हे जिस्साकी ज

কমল-আননে স্থাপিত আঁথি ៖ कि मानना-वरम बाजुदत्र एमि #

| ধর্ম বোগ জণ           | আচারের ফলে  | পরমৃ। ভক্তি লভরে নরে।         |
|-----------------------|-------------|-------------------------------|
| <b>জ্ঞির</b> ত্বনাথের | প্তলীলা-গান | নিশিদিন দাস তুলসী করে #       |
| <b>জো</b> —কলির শমন   | মানস-দমন    | রাম-যশ স্থমূল।                |
| সাদরে যে শুনে         | ভাহার উপরে  | হ'ন রাম অনুকৃল ॥ ৬ (ক)        |
| সো—কলি ঘোর মলাগার     |             | ধর্ম জ্ঞান নাহি কি যোগ।       |
| করি' সব পরিহার        |             | রামে ভজে যেবা চতুর লোক॥ ৬ (খ) |

বিরাধ বধ ; শরভদ-প্রসদ

চৌ-মুনির কমল-পদে অবশেষে করি' নতি। গমন করেন বনে স্থর-মুনি-অধিপতি॥ অত্রে চলেন রাম পাছে যা ন লক্ষ্ণ। উভয়ের মাঝখানে শোভিতা এমন সীতা। कुर्त्रम घाँछि वन नमनमी शितिवदा । যথায় যথায় যা'ন প্রভুরাম র<del>খু</del>রায়। বিরাধ অমর-অরি পাইলেন পথে ভা'র। মরিভেই রাম-করে মনোহর কায়া পায়। সহিত অনুভাবর জানকীরে ল'য়ে সাধ।

ভাপদের বরবেশে স্থশোভিত বিমোহন 🛚 🗲 ব্রহ্ম জীবের মাঝে মায়া যথা সুশোভিতা। আপন প্রভুরে চিনি' পথ দেয় সমাদরে॥ ২ নভে মেঘ ছায়া করি' তথায় তথায় যায়॥ সমুখে আসিডেই করিলেন সংহার ॥ ৩ পাঠা'ন আপন ধামে ছ:খিত হেরি' ডা'য় ॥ শরভঙ্গ মূনি-পাশে আসিলেন রখুনাথ।। ৪

বে ক্রিয়া শ্রীরাম-মুনির লোচন-ভূঙ্গ। আনন-কমল হ'ল মধু পানে আদরে অচল মহাধক্ত শরভঙ্গ II ৭ °

(5)—মূনি ক'ন রঘুবীর শুন প্রভু হে কুপাল। ওহে শক্ষর-মন-মানসদর-মরাল।। যাইতেছিলাম আমি দেব চারিমুধ-ধাম। निमितिन আছি চে'য়ে ভদবধি পথ পানে। खडीव अधम आमि नकल नाधनशैन। সে কিছু আমার 'পরে নছে তব পক্ষপাত। এলে যদি রহ তবে এ দীনের হিত তরে ষাগ যোগ ব্ৰভ ভপ যা' করেন মূনিগণ। এমনি ভক্তি-পরা লভি' মুনি শরভঙ্গ।

প্রকণে আসিল তুমি কাননে আসিবে রাম।। ১ আব্দ তোমা হেরি' প্রভু শীতল হ'লাম প্রাণে।। क'त्रिष्ठ कक्रें भारत कानि' निक अन मीन।। २ রাখিলে আপন পণ জন-মনচোর নাথ।। যতদিন নাহি পাই তোমা ভ্যঞ্জি' কলেবরে॥ ৩ প্রভূরে সমপি' সব ভক্তি-বর থেচে' লন।। বসেন রচিয়া চিতা প্রাণে ড্যঞ্জি' সব সঙ্গ।। ৪

नीम नीत्रथत्र-शाम। দো—জানকী অমুক সঙ্গেডে প্রভূ कत्र व्यवित्रल সপ্তণ-মূরতি রাম।। ৮ মম জলে বাস

**টৌ—এতেক কহির। যোগ-অনলে-দহেন কায়। আত্মা হরির-ধামে যায় রাম-করুণার।**। হরির চরণে লয় এ কারণে নাহি পা'ন॥ > व्यवस्परे एएए-एकि मुख्रिमन वद्रमानं।

ঋষিগণ মূনিবর হেরি' শরভঙ্গ-গতি। করিলেন স্তুতি রামে মিলি' যত মুনিগণ। করিলেন অমুভব পরাণে পুলক অডি॥ জয় হে প্রণড-হিত করুণার নিকেতন।। ২

#### শ্রীরামের রাক্ষসবধের প্রতিজ্ঞা

পুনরায় রঘুনাথ চলেন কাননে আগে। একস্থানে বহু অস্থি করি' রাম দরশন।

বিপুল মুনির কুল তাঁহাদের সাথে লাগে # কুপা করি' মুনিগণে শুধা'লেন কি কারণ॥ ৩ ক'ন ডা'রাকি জিজভাস' জান'ত সকলি আংমি। সর্ব-দরশীতুমি স্বার অন্তর্যামী॥ শুনি' জলে উঠে ভরি' জলজ যুগ-নয়ন॥ ৪

দো-ত' বাহু তুলিয়া মুনিদের বাসে

রাক্ষসগণ করে মুনিগণে ভক্ষণ॥

ক'ন নিশাচর-গিয়া তা'র পর

হীন ধরা হ'বে এবে। ধন্য করেন দবে ৷ ৯

### স্থুডীক্ষের ভব্জি; অগন্ত্য মিলন

(5)-- অগ্যন্ত্রের শিষ্য এক আছিলেন জ্ঞানবান্। ভগবৎ-পদে মতি স্থতীক ওাঁচার নাম। কায় মন বচনেতে রাম-সেবা পরায়ণ। প্রভ-আগমন-কথা अবণ করিয়া কাণে। হে বিধাত। দীননাথ সেই রাম রমুবর। অনুদ্ধ সহিত মোরে জানকীর নাথ প্রভু। জনয়ে ভরদা নাহি নাহি বিশ্বাস দৃঢ। নাছি হ'ল সৎসঙ্গ নাহি জপ যোগ যাগ। ত্তবে এক প্রতিশ্রুতি আছে গুণ-নিধানের। হইবে সফল আৰু যুগল মম লোচন। প্রেমী মুনির প্রাণে সীমাহীন নির্ভরতা। দিক কি বিদিক পথ কোন জ্ঞান নাহি মনে। ক্রখনো সুমুখে চলি' আবার পিছা'য়ে যা'ন। অবিরল প্রেমাভক্তি লভিলেন মুনিবর। অভিশয় প্রীতিভাব করি' রাম দরশন। অমনি বদেন মুনি পথের মাঝারে স্থির। আদেন নিকটে ভবে রমুমণি কুপাময়। মুনিরে কতই ভাবে করিলেন সম্বোধন। হরণ করিয়া ডবে রাজ-রূপ আপনার।

অন্ত দেবতা-প্রতি স্বপনেও নাহি মন॥ ১ ছুটেন ব্যাকুল করি' কভই মানদ প্রাণে॥ कक्रणा कि कतिरवन वामा-मम मर्ठ भेत ॥ २ আপন ভকত-ভাবে দিবেন কি দেখা কভু॥ ভকতি বিরাগ নাই নাহি জ্ঞান আমি মৃচ॥ ৩ কমল চরণ-ভলে নাহি দৃঢ অমুরাগ। দেই প্রিয় নাহি যা'র আঞায় অপরের ॥ ৪ হেরি' সে রাজীব মুখ ভবত্থ-বিমোচন ॥ ভবানি সে দশা তাঁর কহিবার ভাষা কোথা॥ ৫ কোপা যা'ন করেন কি না জানেন তা'ও ভ্রমে ! কখনো নাচেন করি' প্রভুর মহিমা গান॥ ৬ লুকা'য়ে বিটপী-আড়ে হেরেন করুণাকর ॥ হরিতে ভবের ভয় জ্বদয়ে উদয় হন। ৭ পনস# কলের মত কাঁটার ভরা শরীর ॥ ভক্তের দশা হেরি' পুলক নিরতিশয় ॥ ৮ ধ্যানে-পাওয়া সুখ-ঘোরে মুনি র'ন অভেডন ॥ চারিভুক্ত রূপ নিজ ধরেন জনয়ে উা'র ॥ ১

় রাজ-রূপ না হেরিয়া উঠেন আকুল হ'য়ে। **সমূধে ভেরেন শ্যাম বর-কলেবর** রাম। ধরায় দশু-সম পড়িয়া ধরেন পায়। সুবিশাল ভুজ্মুগে <u>ধ্রিয়া</u> ভুলেন রাম। মুনি সলে আজিজনে শোভেন কুপাল ছেন। দাঁডা'যে চাহিয়া র'ন ঞ্রীরামের মুখপানে।

আকুল যেমন ফণী হয় মণি ছারাইয়ে। জানকী অনুজ সনে সকল সুখের ধাম॥ ১০ মগ্র ৫৫মের সরে মহাধয়া মুনিরায় । পরম প্রীতিতে বুকে ধরিলেন গুণধাম॥ ১, কনক-পাদপ-গলে ভমাল জড়া'ল যেন # চিত্রে মুনিরে যেন এঁকে' রাখে কোন জনে। ১২

**লো**—ভা'ব পর মূনি আনিয়া প্রভুরে

সম্বরি' নিজে নিজ আশ্রমে

পড়ি' পায়ে বারবার । পুজেন বহু প্রকার॥ ১০

অসীম মহিমা তব আর মোর লম্মতি। শ্রামল ভামরস-দামের সম বয়ান। করে শরাসন শর কটিতে বাঁধা ভূনীর। মাহের বিপিন ঘন দহনকারী কুশান্ত। রাক্ষদ-করী যুথ তরে ভূমি মৃগরাজ। অরুণ রাজীব-আঁথি পরিধান চারুবেণ। গিরিজা-বিলাস-হাদি-মানস বাল মরাল। সংশ্য-ব্যাল-অরি বিন্তার বাছাধন। ভবভয় ভঞ্জন শ্বপাতা দেবতার। স-গুণ অ-গুণ তুমি বি-সম সম-সরূপ। অমল অখিল অনবতা তুমি অপার। কল্ল-পাদপবন তুমি তব ভকতের। চতুর নিরতিশয় ভব-পারাবার-দেতু। অতৃলিত ভুজ-বল প্রতাপের চিবধাম। ধর্ম্ম-বর্ম তুমি নর্মদ \* গুণগ্রাম। যদিও বিরক্ত তুমি ব্যাপক অবিনাশী। ভথাপি অমুজ 🕮 সহ প্রভু হে ধরারি। আফুক বে জানে ডোমা পুজা ৫৫ জু আমার। कामाला पछि (महे बाब्बीव-नयन वाम-। জমেও এ অভিমান যেন দুর নাহি হয়। মুনির বচন ওনি' তৃপ্ত জীরাম-মন।

চৌ—মুনি ক'ন শুন প্রাভু অধীনের এ মিনতি। কি ভাবে করিবে দাস দীননাথ তব স্থাতি। দিবাকর-আগে যেন জোনাকীর মান জ্যোতি॥ ১ জটার মৃকুট শিরে মৃনি-চীর পরিধান x প্রণতি চরণে তব অবিরত রঘুবীর॥ ২ সম্ভ-কমলবন বিকাশন তুমি ভান্ন॥ করহ আমারে ত্রাণ হে ভব-বিহগ-বাজ॥ ৩ জানকী-নয়ন যুগ-চকোরে তুমি নিশেশ। প্রণতি ভোমারে রাম উর ভুক্ত স্থাকশাল ॥ ৪ কৃটিল ভৰ্ক-জ্বাভ বিষাদ-জ্বালে শমন।। কর্চ আমারে ত্রাণ সদা কুপ:-পারাবার॥ ৫ জ্ঞান বাণী ইচ্ছিয়ের অভীত তুমি অনুপ। প্রণতি হে রঘুনাথ ভঞ্জন ভূমি-ভার॥ ৬ जान-धनायक (काथ (माख मन e कारमत h সদা পার কর মোরে দিনকর কুল-কেড়॥ ৭ বিপুল কলির পাপ-ভঞ্জন তব নাম। কর বিভরণ সদা কল্যাণ মম রাম॥৮ নিত্যই সবাকার হৃদি-কন্দরবাসী॥ করহ নিবাদ মম মানদে কানন-চারি॥ ৯ স-গুণ অ-গুণ আর হৃদিবাসী সবাকার॥ রূপে মোর জ্বদিত্তে কর' আপনার ধাম॥১০ আমি দাস আর পতি রখুপতি কুপাময় ৷ আবার হরষ-প্রাণে মুনিরে বুকেতে ল'ন। ১১

<sup>•</sup> व्यानवन्त्रावकः।

ক'ন মোরে অভি শ্রীত মনে বুঝি' মূনিরাছ। মুনি ক'ন কছু বর যাচিনি' ড'.ভব পায়। ভোমারে যে বর ভাল লাগে হে রখুনায়ক। রাম ক'ন অবিরঙ্গ ভক্তি বিজ্ঞান জ্ঞান। যাহা দিলে ভাই প্রভু লইলাম অমুরাগে।

যাহা সাধ যাচ' বর ভাহাই পূরা'ব আজ । किया याति कि ना याति अ कितात कता नात 122 সেই বর দাও মোরে ভক্ত সুধ-দায়ক। বিরতি শভিয়া হও সকল গুণ্-নিধান ৷ ১৩ এবে দাও সেই বর আমার যা' ভাল লাগে #১৪

দো—অমুদ্ৰ জানকী

সাথে ল'য়ে প্রভ

ধরি' শর শরাসন। বাস কর' সারাক্ষণ ॥ ১১

क्षप्र-গগনে চন্দ্র-সমান

(5)—তা'ই হো'ক কহি' এই তথন রমা-নিবাস। পুলক-পরাণে যা'ন অগস্ত্য মূনির পাশ॥ বহুদিন গত হ'ল সুতীক্ষ্ণ তখন ক'ন। আমিও গুরুর পদে প্রভু তব সনে বাই। মুনির চাতুরী হেরি' ভবে কুপা-নিকেজন। করিতে করিতে পথে বিবরণ ভক্তিব। ছরায় সুভীক্ষ হ'য়ে গুরুর চরণ-গত। হে প্রভু কোশলপতি দশরথ সুকুমার। আসিলেন তব সনে সাক্ষাৎ করিবারে। ব্দগন্ত্য ছুটেন উঠি' এ কথা করি' প্রবণ। ফুই ভাই পড়িলেন মুনির চরণ 'পরে। ख्धा'न कुल्ल नव नमान्दत मूनिवत । ডা'র পর প্রভূ-পূজা করিয়া বহু প্রকার। যতেক ছিলেন মূনি সেইখানে উপনীত।

অাসিলাম আঞামে করি' গুরু-দরশন । ১ ইহাতে ভোমার প্রতি কোন অনুবোধ নাই 🛭 ভাই হুইজনে হাসি' তাঁহারে সাথেতে ল'ন ॥ ২ মুনি-আশ্রমে গিয়া উপনীত রঘুবীর ৷ দণ্ডবৎ নতি করি' কঠিলেন এইমত॥ ৩ শ্রীরাম অত্নুক্ত সনে বৈদেহী সনে আর॥ দিবানিশি যাঁ'র নাম জ্বপ কর' প্রেমভরে 🛭 ৪ পড়িতেই হরি চ'থে জলে ভরে ছ'নয়ন II বুকেতে জড়া'ন ঋষি অভীব পুলকভরে ॥ ৫ আনয়ন করি নিজে বসা'ন আসন 'পর॥ ক'ন আমা-সম নাই ভাগ্যবান কেহ আর॥ ৬ স্থ-কল্পে দরশ্রন করি' হরষিত চিত॥ ৭

(म)--- मूनिशंश-मार्य শরতের চাঁদে বসেন প্রীরাম যেন চে'য়ে রয় সবারি পানেতে ফিরি'। চকোরেরা আঁথি ভরি' ॥ ১২

CD — মুনিগণ-প্রতি তবে রঘুমণি রাম ক'ন। তোমাদের সনে প্রস্তু নাহিক কিছু গোপন ॥ থে কারণে হেথা আসা নহে ড' তা' অজ্ঞানিত। সে কারণে নাহি কহি করি' কিছু বিস্তৃত॥ ১ এখন দে উপদেশ দেহ প্রভু সবে মোরে। প্রভুর বচনে মূনি ঈষৎ হাসিয়া क'ন। তব পদ-ভঙ্কনার প্রভাব করি' আধার। বিশাল ভোমার মায়া উড়ুম্বরডর•-হেন। জন্তর সম জীব চরাচর সমুদয়। সে কল আহার করে যে খোর কাল করাল।

मूनि-अति निर्माहत्रशर्ग विध य श्रकारत ॥ কি মনে ভাবিয়া প্রভু প্রশ্ন মোরে এমন॥ ২ কণাটুকু অবগত শুধু তব মহিমার । অন্তহীন ব্ৰহ্ম-মন্ত উপ্ত তাহে ফল-সম ॥ ৩ नारि कात्न किছू जात छाराति माबादत बता । সে কাল(ও) ভোমার ভরে শব্ধিত চিম্বকাল ॥ ৪

र्श्य पूर्वि निर्द्ध मिहे जिल्लूबन-व्यविभित्त । বাচি কুপা-নিকেতন এই বর তব পাশ। ষ্ট্রা ভক্তি তব সাধুসঙ্গ ও বিরাগ। यनिक व्यवश कृमि अवा मौमा विशीन। ব্যানিলেও করিলেও মূবে তাহা বর্ণন। নিক ভকতেরে সদা সম্মান কর দান। হে প্রভু র'য়েছে এক ঠাই অতি মনোহর। श्चिष्य कांनरनरत कत्रह क्षेत्र भावन।

কুজ মানব-প্রায় শুধাইছৈ মোর প্রতি। দরিতা অমূদ সনে জদয়ে করহ বাস ৷ ৫ চরণ-কমলে রহে অবিচ্ছেদ অমুরাগ ॥ অনুভব-গন্য সাধু যাঁহার ভল্পনে শীন ॥ ৬ সগুণ-রূপেতে রুহে বারবার রুড মন ॥ বুঝিলাম তা'ই ভব শুধান' আমারে রাম ॥ প পঞ্বটী নাম তা'র অভিপৃত স্থন্দর॥ স্থভীষণ মুনিবর-শাপেরে কর হরণ॥ ৮

#### এরামের ছপ্তক কানমে প্রবেশ

मुनिशन 'भटन এই प्रशा कत्र' त्रधूरत। চলেন জ্রীরাম তবে লভিয়া মূনি-আদেশ।

ভথায় করহ বাস দিবাকর-কুলেখর ॥ পঞ্বটী নিকটেতে উপনীত অবশেষ॥ ৯

(मा-भुधवाक मत्न গোদাবরী-কাছে হইল মিলন র'ন প্রভুরচি' সহিত কত প্রণয়। বাস পল্লবময় ॥ ১৩

#### भक्षत्री वटन-वाज ; जाम-लक्ष्मण **मरवा**क

(5)-यमविध त्रध्नाथ स्रांतिरतम ज्या वाम। निति नना मदावत वन द'न यूटनां छिछ। খেচর ভূচর যত সবে প্রমোদিত রয। कानरनत विवत्रण मिर्छ हारत व्यक्तिशक । একবার রামচক্র স্থাসনে সমাসীন। **(इ व्यम्ब नत मूनि म-व्य**हत हत्र-थर । ছে দেব আমারে তাহা বুঝাও করুণাময়। কিবা জ্ঞান কি বিরাগ মারাই বা বলি কা'রে। ভক্তিও ব'লে দাও দয়া কর' যা'র ভবে ॥ ৪

মুনিগণ অভি সুখী বিগত হ'ইল ত্রাস। সবাকার শোভা হয় দিনে দিনে বর্দ্ধিত। ১ গুল্পে মধুর অলি নিরখিতে শোভাময়। करतन अत्रवाश यथाय नित्व विताय ॥ २ লক্ষ্য নিবেদন করেন কপট-হীন॥ নিজ-প্রভু জ্ঞান করি' শুধাই চরণে তব ॥ ৩ সকাল ভ্যঞ্জিয়া যাহে ও চরণে মতি হয় 🛭

দণ্ডক :----রাজবি ইক্ষুকুর মত পবিত্রাত্বা মানবের পূলগবের মধ্যে দণ্ডক নামে এক ছ্রাচার পূজ্ঞ অভ্যন্ত্র कतियादिका । विका ध नीमिति असीवक्यत्वर मदाश्वित खु-खान काहार व्यवकारत मध्यादिका । अक्तिन क्षक হঠাৎ নিজ্ঞক ওজাচার্ব্যের আঞ্জন আগমন কবিয়া, জীহার জোঠ। কলা অরজাকে দেখিরা গোভিড হর, ও জীহার নিজ্ঞ क्-अक्षां करतः अवका कारा अक्षांना अदिश्व भव, एकक काराव अकि अनिहे नावश्व करतः अवका निकास त्रकम कथा विभिन्न त्यन । देश छनिया छक्षाठादी विभागन, "त्य त्यत्यन ध्यक्षाणामक नदल्खि এहे ध्यकात्वत, त्यामम रहत्यन অতি সুখঁৰ নাশ হওয়াই উচিত। আৰু হুইতে সাত বিনেৰ মধ্যে ভোষাৰ ৰাজ্য হৰ হুইবে। দেববাজ ইবা কেন প্ৰান্তৰ ও ধুলি বুটি কৰিব। তোমাৰ বাজা নাল কৰিব। বেল। " অনজৰ ওফাচাৰ্য্য ৰাজ্যেৰ প্ৰান্তাপুৰৰ মধ্যে এই বোৰণা कविया विरागत रन, रन रन जानमात व्यापनका कतिरत हारह, रन रन रन जिनस्य राहे वाका छानि कविना व्यापन करता हेश क्तिहा महरनं स्म दोका परिकानं कविन । विद्यव निवरम छैश भक्त भने विशेष धृनिवह विक-भवरना अञ्चित्र - वृहेश অবশেৰে গুপবাৰ প্ৰাৰ্চজ ধৰন তথাৰ প্ৰাৰ্থি কৰিলেন, তথন আবাৰ সে ছান পৰিত্ৰ ইইল।

(प)-नेश्रत कीर्य कि व्याख्य व्यक् বাহাতে চরণে হয় রভি যায়

वृक्षा'रम् वन नकन। শোক যোগ ভ্ৰম-দল ॥ ১৪

(5)-রাম ক'ন সংক্ষেপে দিই ভোমা বুঝাইয়া। শুন ভাত বৃদ্ধি মন আর চিত লাগাইয়া॥ আমি মোর ভূমি তব এই মারা বুক মনে। রাখে যাহা নিজ বশে ভূলাইয়া জীবগণে ॥ ১ ই আছের-গম্যত মন যায় বডদুর। প্রভেদ ভারার মাঝে শুন বলি এ ভোমারে। বিছামায়া একটিরে অবিছা বলে অপরে ॥ ২ অবিস্তা অতীব হুটা অতিশয় হুঃখ-রূপ। বিক্তা-স্বাক্তি বিশ্ব ভিনপ্তণ বলে যা'র। ভাই জ্ঞান মান-আদি দোষ-তৃষ্ট বাহা নয়। পরম বিরাগবান কহিবে মানবে সেই।

স্বারি মাঝারে জে'ন মাহা রছে ভরপুর ॥ যাহার অধীনে জীব প'ড়েছে এ ভব-কুপ ॥ প্রভুর(ই) প্রেরিড ভাহা নিজ বল নাহি ভা'র ॥৩ ব্রন্মের রূপ যাহে সবে প্রতিভাত হয় ! তিন গুণ আর সিদ্ধি তৃণ সম ত্যুদ্ধে যেই ॥ ৪

দো-মায়া ভগবান বন্ধ মোক্ষ-প্রাপ

নিজেরে না জানে মায়ার প্রেরক

ভাহারে বলিবে জীব। সর্বেরাপর সেই শিব॥ ১৫

(5)-विताश धरम ह'एछ (याश हर्ष्ड कार्श खान। खान (मान-धानाग्रक दवन करत नना शान॥ বাচাতে জবিত ভাত আমি মতি সম্বর। সে ভক্তি নিজে আসে নহে কা'বো আন্তিত। তাহারি অধীনে জ্ঞান আরু অনুভব যত। ভক্তি উপমাহীন স্থাবের অ-শেষ মূগ। ভক্তি-সাধনা কিবা কহিতেছি বিবর্ণি'। প্রথমেই বিপ্র-পদে প্রীভিতে মজিবে মন। বিষয়ে ইহার ফলে উদিত হ'বে বিরাগ। আৰণ মনন আদি ন'-ভক্তি দৃঢ় হ'বে। লম্ভ-কমলপদে থেম যা'র হয় গাঢ়। শ্বক জননী গুরু ভর্তা দেবতা ভ্রাতা। মন গুণ-কীর্ত্তনে পুলকনে ততু ছায়। কাম দম্ভ মদ-আদি পরিশুগ্র হাদি-তল।

আমার ভকতি তাহা ডকতের সুথকর॥ ১ সে ভক্তি মিলে সম্ভ হ'ন যদি অমুকুল ॥ ২ এ পথ সুগম•অতি এতে মোরে পায় প্রাণী। বেদের বিধান-মত নিরত কাজে আপন ॥ ৩ আমার ধরমে তবে হ'বে তা'র অনুরাগ ॥ আমার লীলায় রভি অতীব মনেতে ভবে॥ ৪ कर्ण्य वहरत मर्न छक्षरत नियम पृष् ॥ नृष्-त्यवा करत आनि' आमारत यव-दिशाखा ॥ € গদগদ হয় বাণী জলে আঁখি ভ'রে যায়। তে ভাত ভাহার বশে রহি আমি অবিরল। ७

(मा-कांग्र बाक् मत्न ভাহারি হাদয়- আমি যা'র পতি कमन मासादत

मना खरक निकाम। মোর নিড বিজ্ঞাম ॥ ১৬

(5)---छक्टियांश-छङ् असि' अछि सुध अम आह्न । समितम मध्य अविवारमव अविवारमव अविवारमव अविवारमव अविवारमव अविवारमव को जारव खान लग विविध-चापि कथाय । मश्चक वरन मिन व्यक्तील इहेशा यात्र ॥ >

# সূর্পণখার বিবরণ

সূর্ণপথা নামে ছিল রাষ্ণের স্ছোদরা। পঞ্চতী কাননে সে গিয়াছিল একবার। ৰাক কয় কিবা পিডা ভ্ৰাডা স্থুড উন্নগারি। অভীৰ বিৰুদ্ধ প্ৰাণ বলে না আনিতে পারে। আছুর নিকটে যায় মনোহর রূপ ধরি'। ৰলে ডোমাসম নর আর নারী মোর প্রায়া আলোড়িয়া ত্রিভুবন খুঁজিয়া দেখেছি আমি। পে হেতু কুমারী ভাবে জীবন করি যাপন। চাছিয়া দীভার পানে ক'ন প্রভু কুপাময়। (श्रम मन्त्रप-भारम क्रिके अति-मरहामता। স্থুনরি শুন আমি আজীবন ওঁর দাস। সর্ব্ব শক্তিমান্ প্রভূ কোশলের অধিপতি। দাস যদি সুখ চায় মান খুঁজে যে ভিখারী। লোভী যশ তরে মরে চারি বর্গ অভিমানী। যায় রাম-সমীপেতে তখন সে পুনরায়। **লন্ম**ণ ক'ন ডোরে বরণ করিবে সেই। রাগত হইয়া তবে পুন: রাম-পাশে যায়। व्यानकीरत अग्रजीका नित्रशिशा त्रच्यत्र ।

নাগিনী-সদৃশ হিয়া অভি খোর ভয়ধরা ৷ (इतिशा विकल इ'ल यूशल तुश-कूमात ॥ २ পুরুষে হুরুপ হেরে ধর্ম-জ্ঞানহীনা নামী॥ রবিকান্তমণি যথা জবিত তপনে তেরে ॥ ৩ মধুর বচন কচে হাসিতে আনন ভরি' 🛭 অনেক বিচার করি' নিরমিল বিধাভায়॥ 8 কোথাও নাহিক কেছ মোর অভুরূপ স্বামী। ভোমারে দেখিয়া মোর শাস্ত আজিকে মন । ৫ আজিও অমুক্ত মোর না করিল পরিণর। প্রভূ-পানে চাহি' কথা ক'ন কোমলভা-ভরা।। পরাধীন এখানে না পুরিবে **ভোমার আল** ॥ যা' করেন তাই সাজে উহার অমিত গতি ঃ ৭ দ্যুত সুৱা-সেবী ধন গুভ-গতি ব্যাভচারী 🛭 আকাশ-দোহনে তথ চাতে এ সকল প্রাণী ॥ ৮ পুন: লক্ষ্মণ-পাশে ঞ্জীরাম পাঠা'ন ডা'য় 🕍 পণ করি' সব লাজ পরিহার করে যেই ॥ ১ নিজ ভয়াবহ রূপ তখন প্রকাশ পায়॥ ভাইয়ে ইলিড করি' ডাকিলেন শ্বরা-পর । ১০

বো-লন্ধণ অভি ভা'র হাড দিয়া পুলকে করেন রাবণের কাছে

শ্রুতি নাসাহীনা তা'র। আহ্বান যেন যায় ৷ ১৭

### **पत्र**-मूचनाकि वद

🖒 —হারা'রে আবণ-নাসা আকুলা সে অন্তরে। রুধিরের স্রোভ ধারা গিরি হ'তে যেন ব্ররে 🛊 পর ও দুষণ-পাশে কাঁদিতে কাঁদিতে যার। ওথাইল হেডু যবে করিল সে বর্ণন। व्यथाविक र'न यक निमाहत-(मनापन। আরোছি' বাছন নামা ধরিয়া নামা আকার। অভত-দৰ্শন সেই কৰ্ণ নাদা-বিহীনাৱে। অওও-শকুন যত হ'তে প্লাকে ভর্মর । পূর্বের হয়ার করে উত্তে তা'রা নভোপরে।

करक थिक् शोक्सरव वरण छव थिक् हाम ॥ > **ভনি' নিশাচর স্বরা করিল সেনা-গঠন ॥** পক্ষ-যুক্ত মদী-কায় গিরি যেন দে সকলা। ২ ধরি' প্রহরণ কড ভয়ানক ও অপার ৷ मेरक महेब्रा मर्व हरम श्रुरबाखारण क'रब ॥ ७ मद्रव चनात्र विन' व्याप्य नाहि करते छत् । সেনা হেরি' বীরদের পরাণ পুলকে ভবে ॥ ৪

কেছ বা বলি'ছে জ্যান্ত চুটো ভাইয়ে কেল ধ'রে। মেরেটাকে কেড়ে'।নয়ে ও ছটোরে কেল মে'রে। ধুলিতে ধুলিতে ছে'য়ে মলিন হ'ল গগন। গিরির গুহায় যাও জানকীরে সাথে ক'রে। সতর্কে থে'ক তথা শুনিয়া প্রভুর বাণী। 🕮রাম হেরিয়া অরি হইতেছে অগ্রসর।

আহ্বানি' লক্ষণে রাম ভবে এই ক'ন॥ ৫ ভয়ানক নিশাচর-সেনা আগে হুঙারে I সীভা-সনে লক্ষণ যা'ন শর ধন্থ-পাণি॥ ৬ হাসিয়া তথন গুণ চড়া'ন ধমুর পর॥ ৭

| ছ –কোদও কঠোর   | ধরি' <b>ক</b> টাজুট  | বাঁধিয়া মাথায় শোভেন হেন। |
|----------------|----------------------|----------------------------|
| নীশগিরি 'পরে   | কোটি ইরম্প-          | সনে অহি-যুগ যুঝি'ছে বেন॥   |
| কটিতটে অ'টো    | তৃণীর বিশাল          | করে ধরি' চাপ বিশিখ-চয়।    |
| ছেরি'ছেন প্রভূ | গ <b>জ</b> -যুথ পানে | যেন মুগরাজ চাহিমা রয়॥     |

**বো**—মাসিয়া স্রোতের প্রায় বাল-রবি অসহায়

थत्र थत्र वीत्रभग करत्र। পে'য়ে দৈতা\* যেইমত ঘিরে ॥ ১৮

66-প্রভুরে হেরিয়া আর না পারে হানিতে শর। তাত্ত্ব হইয়া রয় যতেক রঞ্জনীচর। সচিবে ডাকা'য়ে তবে কহিল খর-দূষণ। অসুর অমর নর মূনি অহিদল যত। কিছ জীবনে হেন হেরি নাই কোন দিন। যদিও ও হত-রূপা ক'রে দিল ভূগিনীরে। পুৰায়িতা বনিতারে মোদের করি' অর্পণ। মোদের আদেশ এই শুনাও সকলে ওরে। ব্রীরামেরে জানাইল এ আদেশ দুভগণ। আছি ক্ষত্রিয় মোরা কাননে করি শিকার। ৰশবান রিপু হেরি' প্রাণে নাহি করি' ডর। যদিও মন্ত্ৰ মোরা দমুক্ত কুল-নাশন। वन यमि नाहि थाटक या अन्तर चटत किति'। রণে আগুয়ান হ'য়ে শঠত। করা প্রকাশ। দুভেরা ফিরিয়া গিয়া সকলি আনে গোচরে।

কেবা এ নুপতি-মুভ মানবকুল-ভূষণ 🛚 ১ হেরে'ছি জিনে'ছি রণে কতই ক'রেছি হত॥ তেন বিমোচন কপ আভাম্য অমলিন। ২ তবু বধ অভুচিত এ অভুপ পুরুষেরে। প্রাণ ল'য়ে গৃহে কিরে' যাক্ ভাই ছইজন ॥ ৩ উত্তর দেহ ওর আসি' ফিরে' ছরা ক'রে। শুনি' রঘুমণি ভবে ঈষৎ হাসিয়া ক'ন। 8 খুঁজি' ফিরি খলপশু সম তোমা-সবাকার॥ একবার কাল-সনে আসিয়া কর সমর। € थान प्रश्व-विधायक वानक मूनि-शानन॥ সমর-বিমুখ জনে কা'রেও না প্রাণে মারি॥ ৬ व्यक्तित कतिल पदा वीत-छन भाग नाम ॥ छनि' थत-पृष्या मात्रा त्मर खाना करत्र ॥ १

| 🗨 महिन खनग   | ছম্বারি' কয়  | ধর্ ওরে ছুটে র <b>জ</b> নীচর। |
|--------------|---------------|-------------------------------|
| শ্রাসন শ্র   | শক্তি ভোমর    | শৃল করবাল পরশুধর।             |
| প্রথমে ধহুতে | करत्रन कर्छ।त | টদার খোর রাঘবমণি।             |
| रहेन क्षीत   | রাক্ষ্স বীর   | হারায় চেডনা আরাব ওনি'।       |

रमोरफ नकरन **गवन वृति' ज**ताजि। ৰে শাবধান হ'য়ে ্রামের উপরে বর্ষিতে লাগে প্রহরণ বছ ভাঁতি॥ ১৯ (ক) ভিল ভিল করি' কাতিলেন রমুবীর। শে আর্থচয় कर्विया श्रम ध्यवन পुत्रिया ভাজেন আপন ভীর। ১৯ (খ) ₩-তখন ছুটিল গরব্বিয়া যেন কোটি ফণ-ধর ( কাল-সম শর কাঁপি'ছেন ক্রোধে রখুকুলবর ॥ ১ हिनन निभिन्न শর-মিকর রণ পরিছরি' পলাইতে সবে দর্শন করি'। হেরি' সে শারক কোপে তিন বীরঙ कथा तर्श रयवा कतिरह मनन ॥ २ কতে পলায়ন-করিব সংহার क्ति' किरत मरन कतिया विठात । আপনার করে মরণ আছিকে রহিয়াছে জানা মাছে ভৰে রামে প্রহরণ নানা। ৎ কোপ-যুক্ত অরি নেহারিয়া রাম ছাডিলেন চাপে চডাইয়া বাণ। ৰভিত হয় বিকট পিশাচ। ৪ हानिर्णन श्रनः বিপুল নারাচ পড়িতে লাগিল ধরণীর 'পর। वया ख्या भित्र দেহ পদ কর ধরাধর-সম ধরণীতে পড়ে 🛊 ৫ শায়ক-আঘাতে চীৎকার-ডরে শত-টুকে কাটা তবু উঠে ভা'রা প্রকাশিয়া মারা। বীরগণ-কালা আকাশে উডি'ছে মস্তক বিনা ছটি'ছে রাঙাণ । ৬ क्त्र ७ प्रश जुनि'एइ विकष्ठे आदार कतान ॥ १ কাক ও শৃগাল মাংস-ডুক খগ ডুলে শিবা সব পিশাচ প্রেডেরা কপাল ভরে। ₩—ভয়ন্তর রব নাচি'ছে যোগিনী পুলক-ভরে ॥ দিভেছে বেভাল খৰ্পরে ভাল ৰীরগণ-শির বাহু ও দেই। 🗷 রামের বাণ করে খান খান উঠি' পুনরায় वृत्स धत्र धत्र शैंकिया त्क्छ ॥ ५ পড়ি'ছে ধরায় পিশাচের হাতে-ধরা অস্ত্র ল'য়ে আকাশে শকুনি বাই'ছে উড়ি'। বালকেরা বেন উড়ার ছড়ি 🛭 সংগ্রাম-ক্রপী नशरी-निवामी विशातिष-तुक कछ है वीत्र। বীর অগণিত নিহত মথিত কিরি'ছে বিকল क्रम् पुरुष चत्र जिमित ॥ २ হেরি' নিজ্পল শূল<sup>ী</sup> ভরবার কোপের ভরে। শক্তি শায়ক তোমর কুঠার त्रकः वीत्रमत्न সবে এককালে করিছৈ প্রহার রামের পরে। নিমিষ-মাৰাৱে নিবারি' ভাহারে इंडारि' काष्ट्र करवन वर्ग।

मन-सन नज

. বন্দ-উপর

লভিল রক্ষ:-নায়কগণ॥ ৩

<sup>ः</sup> विषयः प्राप्त । विभिन्नाः

f cres

উঠে নাহি মরে দেখার মা**র**িং, বীর পুনরায় मुद्रो'रय धराय প্ৰভু সাধিহীন ৰেরি' অমরের শিহরে কায়া। ভা'রা সীমাহীন মায়াপতি দীলা দেখান তবে। एहित्रै भूमि खुद्र ভয়েতে আতুর মরে ছানাছানি করিয়া পবে॥ ৪ হেরি' এ উহারে রাম মনে ক'রে পান্ন পদ-নিৰ্কাণ। (मा-त्राय त्राम कहि' **छाटन करन**वर নালেন কুপানিধান ॥ ২০ (ক) এ উপায় করি' পলকেতে অরি আকাশে নাকাড়া বাজে। इत्रय वत्रय কুমুম অমর विमारन विविध नारक ॥ २० (४) সবে যায় কিরি' অভি করি' করি'

### जूर्नभ्यात्र जावटनंत्र मिक्के शमम

(6)-विश्वय यथन त्रान मिक्टमन अनिनाम । ফিরিলেন লক্ষণ সাথে ল'রে জানকীকে। চাছিয়া রছেন সীডা কম শ্যাম-কলেবরে। পঞ্বতীতে বাস করি' রাম এ প্রকার। **धत्र-पूर्वरात्र माम क**तिया लाहम-गङ। शोकन क्वार्यत छत्त तावरन करह वहन। ৰবিস্মদিরা পান দিবারাতি খুমে ভোর। नीकि हाष्ट्रि' ताब-काब धर्म हाष्ट्रि धनाव्यम । विद्वास्त ना क्षांगा'रत्र कात्रांश्त विशात । मण-दनादरक माधू जाका क्-मञ्जना-वर्ण। ব্দহন্তার-পোষে গুণ নম্মতা-বিদা শ্রীভি।

> লো –ছরি রোগ ছডাশন পাপ করি' হেন বিবিধ বিলাপ

(को — ज्ञावग-प्रकाश काकीय काकत्त्र पूरे व्यारन (बैंरठ' बाक्तिक वारन

चानवात कथा वस् करह छर्व प्रमानव। ब्युदाशास व्यविशक्ति स्थाप्तर-नम्सन । **जा'त जा**ठतग (रुति<sup>\*</sup> महम स्मात्र विश्वाम । পেন্ধে ডা'র শ্বিশাল ভূমব্গ-জাঞ্জ দেখিতে বালক ব্ৰে অভি ধীর বছর্ম । শ্বর নর মূলি সব হইল বিগত-তাস। পড়িতে প্রভুর পায়ে হরষে ধরেন বুকে॥ ১ তিরপিত মহে আঁখি পরম প্রণয়-ভরে॥ সুর মুনি সুধ-দাত। করেন লীলা অপার॥ ২ ব্রপথা করে গিয়া রাবণেরে উত্তেজিত । তুই ড আছিস্ ভূলে যাবতীয় রাজ্যধন। ০ অরাতি শিয়রে খাড়া সে জ্ঞান নাহিক ভোর 🛭 শুকর্ম যে নাহি করে জীহরিরে সমর্পণ ॥ ৪ পরিণামে ভা'র হয় আসে করা তথু সার ৷ मार्नित (हार्रवरण स्वान मण्डा मित्रा-र्लारव ॥ ६ শ্বায় বিলোপ পার শুনিয়াছি এই নীডি॥ ७

> क्षक्र वश्या (ए'वा ना। (कैं(स' क्य भन्नभ-(नमना ॥ २) (क)

विनाटन नाना श्रकांत्र। এ দশা ছ'বে আমার ॥ ২১ (খ)

(6) — শুনিয়া আফুল হ'য়ে উঠে সভাসদ্ সবে। হাত হ'য়ে তুলে' ভায়ে বুবাইল কত ভাবে। নাসিকা ঋবণ ভোর কেটে' দিল কোন্ খন 🛭 ১ भानव-द्यमती आहम भूगवात छत्त वन ॥ बाक्तरींन रहा कतियात ऋष्टिमार ॥ २ विष्य करत वरम मूनियाँ विश्व केंद्र । कानाश्चक कान-गम नाता वृत-मनीवृत्र । ए

অতুলম খলপালী সেই ছাই ছুইখন ৷ ' ক্সাপের নিকেতন দাম বেন নাম ভাব। विष्यंत्र ऋण में देश विधि छा देश मित्रशिम । অধির এ হেন দশা ভাষারি অমুক্র-পাল। व्यामात्र दर्शागरम चत्र ७ मृद्य छुट्डे' रशन । ট্রিশিরা সুষণ ধর নিহত করি<sup>8</sup> ভাষণ।

' স্পণিধারে अ कि कि वन के कि कि कि कामादा (श्रम চিক্তিত মন

্ত ছষ্ট-দশময়ত দেবতা মূনি-পাশন। সজে রমনী এক তথা রূপদী-সার ॥ ৪ यस्यद्याहिनी मछ्दकां हि क्रट्स अताबिन । ডোর ভগ্নী ভ্রমে সে-ই ক'রেছিল পরিহাস # ৫ निरमय-प्राक्षारत जा'त रमनापरम निभाजिम ॥ জ্ঞলিয়া উঠিল রেগে লঙ্কেব দলানম 🛊 ৬

> ध्यरवाधिया वद्यक्ष कि । লাগরণে গেল রাভি। ২২

पत्र ७ प्रथम हिम यामा-मम वनवान । শুর-বন রঞ্জন ভঞ্জন মহীভার। ভবে নিশ্চয় তাঁ'র বৈর করি' সাধন। **ख्टमाखन ख**त्रा (मृद्ध नाथना क' नाहि ह'दे । শার যদি নূপ-স্থুত নর হয় কোনকন। मन व्हित कवि' अका तर्प प्रभानन याय। অক্স দিকে রখুবীর করেন উপায় বথা।

ক্রৌ—ভাবি'ছে বাবণ স্থয় নর দৈত্য নাগ-মাঝে। মেয় ক্সয়্করে জিনে হেন বল কা'য় আছে য় ভা'ছের বিনাশ কেবা করে বিনা ভগবান ॥ ১ পরম্ প্রাভুর যদি হ'য়ে থাকে অবভার ॥ ভরিব প্রভূর শরে প্রোণ করি' বরক্ষম ॥ ২ कांग्र मम बहरनट्ड भग मृह क्रेड एटब ॥ রণে পরাভবি' দোঁতে করিব নারী হরণ ॥ ৩ মারীত যথায় রতে সাগরের কিনারায় ॥ व्यवन कत्रह छैमां त्महे मत्नाहत कथा॥ 8

## দীভার অগ্নি-প্রবেশ ও মারা-সীভা

े ८५१ — लक्सन यरव জনক-মুভারে কানমেডে যা'ন ক্ৰেন ছাসিয়া

তৌ-ওন বিরো দরিভের অনুরভা চারুশীল।। করিব এখন কিছু ললিত মানব-লীলা।। यखर्तिम निर्माहद्वशत्य ना कवि विनाम । त्यमनि क्रिताम भव कहित्मन क्षका भित्रा। আপনার প্রতি-রূপ রাধিয়া গেলেন সীভা।

জ্ঞতাদিন হুডাশন-মাঝে ভূমি কর বাস ৷ ১ প্রভূ-প্দ-ছলে ধরি' অনলে পশেন গিয়া। সেই রূপ সেই শীল সেইমত স্থবিনীভা ॥ ২

(भागतन या' किছू नौना बहितनम क्रभवान ॥

निमिन यारेश उथा यथाय त्राह मात्रीह में ठ অঙ্গুশ ধনু অহি মার্জার বেইমত ॥

## मात्रोटक्स दिवस्य : माहीक यथ

লক্ষণের এ সবের খুণাকার নাহি জ্ঞান। স্বার্থেডে সদা মন দশানন অতি নীচ। कु:बहे (मय नीठ यहि रुग्न व्यवन्छ। অকালে-ফুটিক ফুল যে প্রকার হে ভবানি।

> (मा—कति कार्रुत। মারীচ তথ্য কি স্বার্থে এড विक्रिक महन

नापटन किन क'न। একা ভাত আগমন । ২৪

ত্রাদের কার্ণ তথা খলদের **প্রেয়**-বা**নী** ॥ ৪

চৌ-ভাগ্য-হত দশানন তখন মারীচ-পাশে। কছে তুমি যাও তথা মায়া-মুগ রূপ ধরি'। अभिया भारी ह क्य निट्यमन ब्रह्मायत । বৈর-আচরণ তাভ ক'রো না তাঁহার সনে। এ নুপ-সুডেই মুনি আনে যাগ-রক্ষা ভরে। ডা'র হার ক্লণ-মাঝে এলাম শভ-বোজন। ভঙ্গ-কটি সম এবে হ'য়েছে দশা আমার। যদিও মানব তাঁ'রা অভি বীর বলবান।

প্রকাশ করিয়া করে অভিযান-ভন্না ভাবে 🛊 🖓 যাহে আমি নৃপ-নারী পারি আনিবারে হরি' 💫 মানব-রূপেতে ডিনি চরাচর-অধীশর # বাঁচিবে রাখিলে তাঁ'রে মারিলে মরিবে প্রাথে ১১ ফলক-বিহীন শর হানিলেন মোর 'পরে। শক্রতা তাঁর সমে ভাগ নছে কদাচন 🛭 ৩ যথা যাই ছ-ভাইয়ের মূরতি করি নেছার। विरवार्थ कां'रमत मरन नाहि ह'रव नाकवान ॥ 8

বো-ভাড়কা বিনাশি' দুষণ ত্রিশিরা

স্থান্ত বধিয়া খরে যে বিনাশে **ভালে** य হর-কোদও। সে নর কি বীর চণ্ড । ২৫

**টো**—ফিরে' যাও রাখি'মনে রক্ষ:-কুলের হিত। শুনি' গালি দশানন দিল তা'রে যথোচিত 🛭 গুরুর সমান মৃচ উপদেশ-বাণী মোরে। **তথ**ন মারীচ মনে করে এই অনুমান। আর-পাণি প্রভু মৃত গুপ্ত-কথা বেই জানে। ধনবান্ বৈছ ভাট কবি স্পকার জনে॥ ২ উভর দিকেই যবে বুঝিল নিজ মরণ। অভাগা বধিবে মোরে উত্তর দিলে পরে। চলে দশানন-সাথে স্থির হেন করি' মনে। মনেতে হরব অভি প্রিয়তম শ্রীরামেরে।

আমার সমান বীর কে আছে ধরণী 'পরে॥ ১ এই নয়জন সনে বিসোধেতে অকল্যাণ ঃ করিল তথন সাম্ব শ্রীরাম-পদে শরণ॥ কেন তবে নাহি ভ্যাজি পরাণ রামের শরে॥ ৩ রাখি' অবিচল প্রেম রঘুনাথ-জীচরণে। নয়নে ৰেরিৰ কিন্তু কিছুই না কছে ভা'ৰে। ।

**ছ**—মোর প্রিয়ত্তমে সামুক জানকী কোপানল ঘাঁ'র সে স্থ-সাগর দো-পশ্চাতে মোর হেরিব প্রভুরে

নির্থি' নয়নে স্থপা-নিকেডন-মোক-ভূথাগার সন্ধানি' শর ধাৰন-নির্ভ চাহি किरत्र' किरत्र'

আঞ্জিকে সফল করিব আঁথি। চরণের তলে এ মূন রাখি। ভক্তি অ-বশে বশেতে আনে। ব্যাহিন মোরে স্বকরে বাংগ # করে শর শরাসন।

मक्न इ'रव कीवन। ३७

চৌ—লে বনের সামুদেশে দশানন ধবে যায়। মারীচ তথন ধরে কণ্ট-মূগের কায়। ৰণিতে নাহি ভাষা হেন রূপ মনোহর। রমণীয় মুগ হ'ল সীভার আঁথি-গোচর। সীভা ক'ন শুন দেব রখুপতি কুপাময়। সভ্যসদ প্ৰভু উহারে কার' বিনাশ। তথন করুণাময় জানিয়াও সব মনে।

কনক-ছড়িত মণি-বিরচিত কলেবর। ১ প্রতি-অঙ্গরূপ-ভাতি মন-প্রাণ মোহকর 🛭 চর্মা-বরণ মোর প্রাণ সন ছ'রে লয় ॥ ২ চর্মা আনিয়া দাও পুরাও মনের আশা । উঠেন হরষ ভবে ত্বর-কাঞ্চ সম্পাদনে 🛭 ও मुश मत्रमन कति' वाँधितान शतिकत्र। কহেন বুঝা'য়ে প্রভু সক্ষণে ভা'র পর। কর জানকীরে তুমি ভালমতে রক্ষণ। এভুরে হেরিয়া মুগ লাগিল পলা'য়ে যে'ছে। क्षु मृत्र कार्ष्ट आरम करत्र मृत्र भनायम। ष्मि पिया लुकारेया वह इन ध्वकानिया। স্থির-লক্ষ্যে শেষে রাম করিলেন শরাঘাত। প্রথমেই উচ্চরবে লক্ষণের ধরি' নাম। প্রাণ ভ্যঞ্জিবার কালে ধরে নিজ কলেবর। ভাহার প্রাণের প্রেম বুঝিলেন ভগবান।

ধারণ করেন করে ক্রচির ধতুক-শর ॥ বেডায় কাননে ভাই অগণিত নিশাচর ॥ ৪ वृद्धि विरवक वर्षण काण कत्रि' विरवहन ॥ শরাসন শরে সাজি' যা'ন প্রভু পশ্চাতে॥ ৫ ৰেদ ধাঁবে নেতি বলে খ্যানে শিব নাহি পা'ন। মায়ামুগ-পিছে পিছে সেই এড় ছুটে' বা'ন। কিছু দেখা দেয় কভু নিজেরে করে গোপন 🏽 😉 বহু দূরে ল'য়ে তাঁ'রে ছেন যায় পলাইয়া॥ ধরা'পরে পড়ে ভবে করি' ঘোর আর্দ্রনাদ ॥ ৭ পরে নিজ মন-মাঝে স্মরণ করে **জীরা**ম ॥ শ্মরণ ভকতি ভরে করে রাম রঘুবর॥ ৮ মুনি-হল্লভ গতি ভা'রে করিলেন দান॥ ৯

(দা-বর্ষিল সুর স্থান নিজ পায়ে প্রস্থন প্রচুর रेषरका रमन रहन

প্রভু-গুণগাধা গায়। দীননাথ রখুরার্ছ ২৭

## সীভা-হরণ ও সীভা-বিলাপ

**চৌ—খলেরে বিনাশি' হরা কিরিলেন রঘুবীর। করেতে শোভিত ধন্ন কটিতে বাঁধা তৃশীর।** আর্দ্ধনাদ-বাণী যবে শুনিলেন কাণে সীতা। করহ গমন ছবা বিপদে পণ্ডিত ভাতা। জকৃটি-বিলাসে বাঁ'র স্প্তির হয় লয়। বচন মরম-ভেদী কহিলেন সীভা যবে। मॅं भिशा मौखां यनत्त्रव निक्भानगत्। রক্ষকহীন করি' দরশন দশানন। যা'র ডরে স্থরাস্থর রহে হেন ত্রস্ত-চিতে। সারমের-মত চুপে সেই বীর দশানন। अमनहे कुलाथ यात हाल (कह रह बाराना। বিবিধ বচন-জাল করি' শঠ বিস্তার। ক্ষেন জানকী শুন সন্ন্যাসি মহাশয়। ख्यम व्यापन क्रिश (मथाय ठाँ दिव वादन । গভীর ধীরতা-ভরে জানকী কছেন ভবু। (कनतीत वर् कृष्य मनदक (यमन हांग्र। পশিভেই কথা কাণে ক্রোধে ভরে দশানন।

কহিলেন দক্ষণে হ'য়ে অতি ভয়ভীতা॥ ১ হাসিয়া কহেন ভবে লক্ষ্মণ শুন মাভা। স্বপনেও সঙ্কট তাঁ'র কি কখনো হয়। ২ লক্ষণ-মন টলে হরি-প্রেরণায় ভবে॥ রাবণ শশীর রাভ যথা যা'ন সেইখানে। ৩ সক্তাসী-রূপ ধরি' তথা করে আগমন। দিবসে নাহিক অন্ন নিজা নাহি রক্তনীতে ॥ ৪ এদিক ওদিক চাহি' সভয়ে করে গমন ॥ শরীরে নারছে তেজ বুজির বল-লেখ। ৫ রাজনীতি ভয় প্রীতি দেখায় সীতারে আরে। . কথা ত কহি'ছ তুমি চুষ্ট জনের প্রায়॥ ৬ ত্যাইতে নিজ নাম ত্রাসিত সীভার মন 🛭 দাড়া ধল এইক্ষণে আসিবেন ফিরে' এড়। ৭ তথা তুই কাল-গ্রাসে পডিত রাক্ষসরায় 🛭 मत्न मत्न कुथ शाह विकि? मीखा-इद्रेश । ৮

#### জ্ঞায়ুর রাবণের সহিত যুদ্ধ

বো—কোধ-যুত হ'য়ে চলে ব্যোম্-পথে

রাবণ তথন ভয়াতুর মন

লয় তাঁ'রে রথোপরে। রথ চালাইতে নারে॥ ২৮

চৌ—এ অখিল বিখের এক বীর রঘুরায়। হা ছথ-হরণ প্রভু শরণের সুধকর। হায় সন্মণ তব নাহি এতে কেশ দোষ। • विमान विविध एरव करत्रन विरामश-कुछ।। বিপদ-বারতা মোর প্রভুরে কে দিবে হায়। বিলাপ মরম-ভেদী শুনিয়া জানকী মুখে। পশিতে জটায়ু-কাণে গভীর বিলাপাবলী। হীন রাক্ষস-করে হ'তেছেন অপহতা। কহিয়া উঠিল সীতে বংসে না কর তাস। ক্রোধ-যুক্ত খগরাজ ছটিল বেগে ভেমন। करह थन किवा दिलु ना इ'न प्रशासमान। করাল কুতান্ত সম আসিতে হেরিয়া ধে'য়ে। মৈনাক গিরি এ কি অথবা বিহগপতি। স্থ্যির জটায়ু এই কহিল সে ডা'র পর। ভালয় ভালয় ফিরে' সীতা তাঞ্জি' যা' ভবনে। রম্বংশ-অবভংস ক্রোধ-ছভাশনে যোর। এর উত্তরে কিছু না কহিল দশানন। কেশে ধরি' রথহীন করি' ভূমে ফেলে' তা'রে। ফিরিল জটায়ুরাখি' জানকীরে একধারে ॥ **एक-टाहारत करत रमह छा'त विमादग**। ভীষণ ক্রোধের ভরে দশনে চাপি' দশন। कर्तिष्ठ-भक्त थरा भएए धर्मीत 'भरत । সীতারে আবার রূপে উঠাইল দশানন। বিবশ ব্যাধের ভয়ে মুগী-প্রায় ভয়ভীতা। रेमन-निधत्र 'शरत नित्रचि' वानत-कून। এইভাবে জানকীরে দশানন ল'য়ে যায়।

পাশরিলে নিজ দয়া কোন্ অপরাধে হায়॥ হা রাঘবকুল-রূপী সরোজের দিনকর॥ ১ লভিলাম ঠিক ফল থেমন করিত্ব রোষ॥ সে কুপার পারাবার রহিলেন এবে কোথা। ২ যজের দেব-ভাগ রাসভে পাইতে চায় ৷ চরাচর জীবগণ অভিভূত হ'ল হুখে॥ ৩ চিনিলেন রঘুকুল-তিলকের নারী বলি'। সুরভী কপিলা যথা মেচ্ছ কবল-গভা॥ ৪ এই নিশাচরে জির করিব এবে বিনাশ।। ধরাধর-অভিমুখে অশনি ছুটে যেমন।। ৫ নিভর চলিয়া যা'স কে আমি নাহিক জ্ঞান। রাবণ ভাবিল মনে ভা'র পানে ফিরেঁ চে'য়ে॥৬ সে ত' জানে মোর বল সহিত আগন পতি॥ মম কর-তীর্থে আসে ভাজিবারে কলেবর ম ৭ ষ্টায়ু এ কথা শুনি ধে'য়ে আসে ক্রোধ ভরে। করে শোন্দশানন যেই শিক্ষা দিই ভো'রে॥ নতুবা রে বছবাত এই দশা হ'বে রণে॥৮ বর্ত্তি-সমান হ'বে সমুদয় কুল ভো'র॥ করিল তথন গুত্র ক্রোধে তা'রে আক্রমণ॥৯ परिश्व एरत स्थान शतादेश हमारून ॥ ১० করাল কুপাণ করে রক্ষঃ-বাজ কিছায়ণ। 🕮রামের অন্তুত লীলায় স্মরণ ক'রে॥ ১১ চলিল সন্তাস ভৱে শান্ত নহেক মন॥ কাঁদিতে কাঁদিতে যা'ন আকাশ-পথেতে সীতা ৷ ১২ উচ্চারি হরিনাম দিলেন ফেলি তুকুল। অশোক-কানন মাঝে রাবণ রাথে তাঁহায় ॥ ১৩

তথন অশোক-

व्यवय (प्रथा रेय পাদপের ভলে

गर्वरक थेन हारत। রাখিল যভন क'রে॥ ২৯ (क)

#### অরণ্যকাও

কুরগের পিছে যে ভাবে কপট-সে ছবি জানকী

धतिरा कपरम

ধাবিত হ'লেন রাম। থাকেন রটিছে নাম ৷ ২৯ (খ)

#### এরিবের বিলাপ ও জ্টার্র প্রসল

পরশেন শির

(চী-রবুপতি অফুলেরে আগিতে করি' লোকন। বাছ-ভাবেতে হ'ন অতি চিন্তিত-মন। অবহেলা করি' মোর উপদেশ সমুদয়। নিশাচরগণ বনে কভ করে বিচরণ। ধরিয়া সরোজ-পদে অফুর্জ জুড়িয়া কর। লক্ষ্ণ সনে প্রভু করেন গমন তথা। হেরিয়া কুটির এবে জনক-ছহিতাহীন। ক'ন হায় গুণ-খনি জনক-ছহিতা সীতা। লক্ষণ বহুভাবে প্রবোধ করেন দান। হে খেচর হে কুরগ ওতে মধুকরগণ। কপোত খঞ্জন শুক স্থ-আঁখি কুরগ মীন। দাড়িম দামিনী আর বিমল কুন্দ-কলি। বকুণের পাশ হংস মনোজের শরাসন। কদলী কনক বিল পুলকিত অভিশয়। ভোমার বিহনে মীতা ইহারা স্বাই আঞ্চ। কেমনে সহি'ছ প্রিয়া ইহাদের স্পর্দ্ধা হেন। এ ভাবে খুঁজেন আর কাঁদেন জগত-স্বামী। পূর্ণকাম যে শ্রীরাম অপার আনন্দ-রাশি। পতিত থাকিতে আগে হেরিলেন ফটায়ুরে।

একাকী সীডারে ছাডি' হেথা কি আসিতে হয় #> আশ্রমে নাতি সীতা তেন লয় মোর মন ॥ কছে মোর অপরাধ কিছু নাই কৃপাকর॥ ২ গোদাবরী-ভটদেশে আশ্রম রহে যথা। সাধারণ নর-প্রায় হ'লেন বিকল দীন। ৩ হায় রূপে স্থবিনয়ে নিয়মে ব্রতে পুণিতা । ব্ৰততী পাদপে এভু ওধা'তে ওধা'তে যা'ন। । । মুগ-আঁথি জানকীরে ক'রেছ কি দরশন। কাল-ভূজগিনী কিবা কোকিলা মহাপ্রবীণ॥ ৫ কমল শারদ বিধু মধুর-নিনাদী অলি ॥ শুনি'ছে কেশরী গল বাধান আপনাপন ॥ ৬ সংখ্যাচ নাহি মনে নাহি আর ডিল ভর ! পুলক-পুরিত প্রাণ যেন ভোগ করে রাজ॥ ৭ ছরায় ফিরিয়া জাসি' উদয় না ছও কেন॥ বিরহী বড়ই যেন ডিনি যেন অতি কামী । ৮ করেন মানব লীলা আজ সেই অবিনাশী # • রেখাবলী-লাঞ্চিত রাম-পদ চিন্তা করে। ১

ব্যে-সরোক্ত্র-করে শোভার আগারে निविधि' नग्रत

রাম কপা-পারাবার। বিগত যাতনা তা'র ॥ ৩০

(5)- জটায় বচন কহে করি' নিজে সম্বরণ। এ দশা আমার লঙ্কাপতি দশানন-করে। লইয়া গিয়াছে তাঁ'রে দক্ষিণ দিক পানে। প্রভু তব দরশন-আশে রেখেছিত্ব প্রাণ। জীরাম কহেন ভাত রাখ'নিজ কলেবর। মরণ-সময়ে নাম গ্রহণ করিলে হাঁ। ব। সেই ডোমা আঁখি-আগে দরখন করি যবে। ক্রেন জীরঘুনাথ জলে ভরা ত'নয়ন।

শুন রাম রধুপতি ভবভয়-ভঞ্জন ॥ ল'য়েছে হঃণ করি' সেই থল জানকীরে॥ ১ বিলাপ করেন অতি আকুলিত ক্রেন্সনে॥ विषाय हत्राण याहि अथन कुशा-निशान ॥ २ জটার ওধান হাসি' কি হেতু করুণাকর। অধ্যেও পরা-গতি পায় বেদ কছে সার ॥ ৩ কিসের আশায় তবে জীবন রাখিতে হ'বে # কর্মের মত ভাত গতি পায় জীবগণ 🛭 ৪

অপরের হিড-সাধ নিয়ত হৃদয়ে যা'র। ভমুপরিচরি' ভাত যাও মম নিজ্ঞাম।

ত্লভ ধরামাঝে কিছুই নাহিক ভা'র। কি দিব ভোমারে বল তুমি ত পুরণ কাম॥ ৫

দো-দীভার বারতা

ব'লো না পিডারে

শপথ করিয়া কই। যদি রাম আমি হই ॥ ৩১

স-কুলে রাবণ নিজে গিয়া ক'বে '(5)—জটায়ু ডাজিয়া কায়া ধরিল হরির রূপ। আভরণ কডবিধ বসন পীত অনুপ।

শ্রাম কম-কলেবর স্থবিশাল ভুক্ত চারি।

অভি-গান সে বদনে নয়নে এেমের বারি॥ ১

**छ्री-- ज**र कश-छुल অফুপম রূপ ভীম দশানন ভুজ-বিপণ্ডন তমু জলধর মুখ মনোহর নমি সদা পায় রাম কুপাময় বল অতুলিভ মায়ার অতীত গোবিন্দ# গো-পরণ সব-দ্বস্থ হর রাম-নাম মস্ত জপে যেই সন্ত নমি সদারাম সে প্রিয় অকাম বাঁ'রে মায়াভীভ ব্ৰহ্মা স্ব-গভ করি' যোগ ধ্যান বিরতিও জ্ঞান-সেই কুপা-কন্দ স্থুষমার বুন্দ জদি-এ ভ্রমর প্রতি অঙ্গ 'পর অগম স্থগম শান্ত অ-সম যোগিগণ বাঁ'রে যতনে নেহারে সেই ভব পতি রমা-প্রাণপত্তি বাস হো'ক তাঁ'র क्षप्रदा व्यामात বর ভিক্ষা করি' ছো-অচলা ভকতি-করেন বিহিত তাহার সৎকার

সগুণ অ-গুণ মায়ার পতি। চণ্ড শর-ধর ভূষণ ক্ষিতি।। কমল লোচন রাজীব-দল। ভব-নিবারণ ভুঞ্জ বিশাল ॥ ১ আদি অ-জ এক হে অগোচর। विकान-धन ध्रुगीध्र ॥ অনস্ত-ছাসের মন যে হরে। कार्यामि मर्ग रय मनन करत् ॥ २ অজ রক্ষাভীত বেদেতে গায়। সাধনে মুনিরা বাঁহারে পায়॥ জগ-বিমোহন নিজে প্রকাশ। বহু কাম-শোভা করে বিকাশ। ূও স্বভাব-বিমল সম যে সদা। ইন্দ্রিয় মনে দমিয়া সদা॥ ভক্ত-বশ যিনি সভত র'ন। পৃত লীলা বাঁর ভব-বারণ॥ ৪ পুঞ গেল হরি-ধাম। আপনার করে রাম॥ ৩২

#### কবন্ধ-উদ্ধার

**(র্চ)—শভী**ব কোমল-প্রাণ দীনেরে দয়ার খনি। কারণ বিনাই কুপা করেন প্রীরম্মণি॥ গুত্র অধম ধগ আমিষ করে আহার। ত্ত্র ক'ন শুন উমা তা'রা অভি ভাগ্যহীন। সীতা-সদ্ধান রত হুই ভ্রাতা ভা'র পর।

যোগিলন-বাঞ্চিত স্থুগতি হইল তা'র॥ ১ হরি তাঞ্জি' হয় যা'রা বিষয়-রসেতে লীন। অভীব বিকল প্রাণে হইলেন অগ্রসর । ২

o কোৰাকা বাৰা জেব। † ইন্দ্ৰিৰ-পতীত।

ভক্লতা সমাকুল গভীর ঘন কানন। কৰছে গমন-পথে আসিতে করেন নাম। कहिन इद्योगा अवि हिना এই অভিদাপ। ক'ন রাম প্রবর্ষ আমার শুন বচন।

কডই বিহুগ মুগ কেশরী কড বারণ। নিজ শাপ-কথা রক্ষঃ কহিল প্রভুর পাশ ॥ ৩ क्षकु-भग मत्रमान चृतिन এरव रम भाभ ॥ ব্রহ্মকুল-অরি আমি নাহি সহি কদাচন ॥ ৪

**বো**—কায় বাক মনে ব্ৰহ্মাশিব আর কণটডা ডাজি' আমার সহিত

বিপ্র-সেবা যে করে। সব দেবে বশ করে ৷ ৩৩

#### শবরীর প্রতি কুপা

(5)-इ'न माश-क्थ-अन क्रम्ভावा-श्रवाद्यग । क्तिरव विरक्षत्र भूका इटेरमञ् अन्दीन। বুঝা'লেন নিজধর্ম করি' ডা'র বিষরণ। রছুপতি-পদতলে শির অবনত করি'। **উদ্ধা**র করি' ভা'রে উদার-চরিত রাম। আখ্রমে উপনীত হেরি' রাম রখুরায়। चनक-লোচন ছই বাছযুগ খ্বিশাল। এক শ্রাম কলেবর স্থ-গৌর আরম্বনে। ध्याया विष्णांत व्यान वहन ना व्याप्त मूर्य। चाष्ट्र मिन महन श्रुवा न क्य-५३०।

ভবু বিজ পুজনীয় সাধুদের এ বচন। भृष्य कष्ट्र भृष्या नरह ह'ल्ब खरा धारी। । ১ হেরি' প্রেম নিজ পায়ে প্রসন্ন রামের মন ! वाग्र (म गगन-भाष व्याभनात क्रभ धिते ॥ २ শবরী-আবাদে গিয়া উপনীত গুণধাম। মভঙ্গ মূনির বাণী স্মরি' পুশকিত-কায়। ৩ ষ্টার মৃকুট মাথে গলে শোভে বনমাল। শবরী পড়েন লুটে' জড়াইরা জীচরণে ॥ ৪ বারবার পদে নভি করি'ছেন মহাস্থাধ । বর-ভূথাসন ল'য়ে করা'ন উপবেশন ॥ ৫

(प)--कम मून कन প্রেমন্তরে প্রভ

অতি স্থরসাল क्रबन चाहात

আনিয়া করেন দান। করি' বছ গুণগান ॥ ৩৪

## নববিদ ভক্তির উপদেশ

কৌ-- ভোড় করি' ছই পাণি দাঁড়া'লেন সম্মুখে। প্রভুরে নয়নে ছেরি' ভক্তির বান বুকে ॥ নীচাদপি নীচ বেবা ভা' হ'ভেও নীচ নারী। ষ ন রাম 😍ন ভাষা মোর এ বচন স্থির। আড-পাঁত কুল-মদ ধর্ম মান প্রধানতা। ভক্তি-বিহীন নর বিভরে শোভা ভেমন। नवश छक्षि-कथा कहिएकि छव कारह। প্রথম ভক্তি হ'বে সম্ভের সংসক্ষে।

কি ভাবে এ দাসী প্রভু করিবে ভোষার **ভড়ি। ভা**ছিতে অধম আমি ভছি মোর জড় ম**ডি ॥১** ভাহাদেরো মাঝে আমি হীমতম হে পাপারি॥ সম্পর্ক জীবের সনে শুধু মোর ভকতির 🛚 ২ ধন বল পরিজন গুণ কিম্বা চতুরভা ॥ জল বিনা জলধর নয়নে লাগে বেমন 🛚 ৬ অবহিত হ'রে শুন গেঁপে' রাখ' শুদি-মাঝে । বিভীয় ভক্তি রতি আমার ক্থা-প্রসঙ্গে 🛭 ৪

বো-ভূতীয় ভ্ৰতি চতুর্থ আমার

শুক্ল-পথ সেবা चन मध्यम

বৰ্জন করি' মান। অৰুপটে করা গান ৷ ৩৫ চৌ—নম নাম ৰূপ করা সহ দৃঢ় বিশাস।

যর্চ ইন্সির-রোধ বিনর বিরাপ মনে।

সপ্তম আমি-মর করা ৰূপ দরশন।

অইম যথা-লাভে মন-মাঝে সস্তোষ।

নবম সরল সবে অকপট ব্যবহার।

এই নরটির মাঝে একটিও যা'র হয়।

তে ভামিনি সেই মোর পাশে প্রিয়ভম অভি।

যোগিজন-ত্র্লেভ গতি যাহা স্থমহান্।

মোর দরশন-ফলও এ অপার অন্থপ।

তে দেবি এখন বল যদি তব রতে জানা।

কহিলা শবরী যাও পম্পা সরসী-পানে।

করিবে সে নিবেদন সব ভোমা রঘুবীর।

বারবার প্রভু-পদে শির করি' অবনত।

এই পঞ্চম বেদে র'রেছে ইহা প্রকাশ ।

অবিরত রত থাকা সজ্জন-আচরণে । ১

মো' হ'তে অধিক করি' দেখা সাধু-সজ্জন ।

অপনেও আঁখি মেলে' নাহি দেখা পর-দোষ । ২
আমারি ভরসা প্রাণে বীত স্থত্থ-ভার ॥ ।

হ'ক সে পুরুষ নারী জড় কি চেডনাময় । ৩
ভূমি ত সকল ভাবে স্থৃদ্ ভক্তিমতী ॥

সে গতি ত' তব তরে স্থ-লভ হয় জ্ঞান ॥ ৪

জীব অধিকার করে খাভাবিক নিজরপ ॥

বারণ-গামিনী কোণা সীতা মৃগ-স্নয়না ॥ ৫
ভ্রায় মিভালি হ'বে তব স্থীব সনে ॥

জেনে'ও তথাও মোরে কিবা প্রভু মভিধীর ॥ ৬
ভ্রায় ভক্তি-ভরে শবরী বারতা যত ॥ ৭

| ए—निरविष' भक्न   | লে মুখ-কমল    | नित्रचित्रा श्रम खपरत्र थंदा ।   |
|------------------|---------------|----------------------------------|
| যোগে দহি' কায়   | হরি-পদ পায়   | যথা হ'তে কভু কেহ না ফিরে।        |
| বছ্মত কৰ্ম       | সকল অংশ্ম     | শোক-প্রদ সব ত্যুক্ত নর।          |
| করি' বিশাস       | ৰলে তুলসীদাস  | কর নতি রাম-চরণ <sup>2</sup> পর ॥ |
| দো—জন্ম নীচ কুলে | পাপে ধরাত্তশে | ভারি <b>লেন হেন নারী</b> ।       |
| ওরে ধল মন        | ত্ৰ আকিকন     | এ হেন প্রভুবিসারি'॥ ৩৬           |

#### রামের বিরহ

(চ)—দে কানন(৩) করি' ত্যাগ চলিলেন রছ্বর। মানব-কেশরী ছই অতুলিত বল-ধর ।
বিরহী-সমান প্রত্যু সহিত কত বিধাদ। কহি'ছেন অছজেরে কত কথা-সংবাদ । ১
ক'ন গল্পণ হের বন কিবা শোভাময়। হেন শোভা হোর' কা'র প্রোণে ক্ষোভ নাহি ছয়॥
দয়িতার সনে সব জন্ত বিহগগণ। নিন্দা করি'ছে মোরে এই যেন লয় মন॥ ২
আমারে বিলোকি' দূরে মুগেরা পলা'য়ে যায়। মৃগীরা হাসিয়া কহে ডোমাদের নাহি ভয় ॥
সাধারণ-মুগলাত তোমরা কর বিহার। প্রত্তিত কাক-মুগ কাননে আসা ইহার॥ ৩
ক্রের নিন্দ পাশে বধ্রে টানিয়া লয়। যেন তা'বা ইলিতে আমারেই শিক্ষা দেয় ।
স্কৃতিন্তিত শান্ত যত দেখ তুমি বারবার। স্ব-মেবিত রূপে বশে তে'বনাক' আপনার॥ ৪

त्यम अहे निका त्यद त्य, खीटक कथ्रमक अकाको वाचिवा वांच्या क्रिक मार ।

यमिष्ठ नात्रीरत्र निक्व यूरक शूरत्र श्रांच कञ्र । मधूत मनत्रश्रकु (इत मन-विरमाइन।

শাল্ল যুবভী নূপ বংশ নাহি রয় ভবু। বিয়ার বিহনে মোর' করে ত্রাস উৎপাদন। ধ

| <b>দো</b> —বিরহে বিকল | বলহীন অভি         | একা মোরে ভা'র জানা।         |
|-----------------------|-------------------|-----------------------------|
| মধুপ কানন             | বিহুপেরে ল'য়ে    | কাম দিল ডা'ই হানা॥ ৩৭ (ক)   |
| দেখে' গেল দূত         | ভ্রান্তা সনে মোরে | সংবাদ লভি' ডা'র।            |
| থামাইয়া <b>যে</b> ন  | আপন বিপ্ল         | বাহিনী স্থাপিল মার ৷ ৬৭ (খ) |

(5)-বিশাল পাদপ হ'তে ঝুলিছে ব্রভতী যত। রচিত হইল যেন তথায় শিবির কড ॥ উড়িছে পতাকা ধ্বনা যতেক কদলী ভালে। ধ'রেছে বিবিধ ফুল নানাজাভি তরুদল। হেপা হোপা মনোহর তরুগণ শোভা পায়। পিকের কৃজন যেন মন্ত বারণ-রব। ময়ুর চকোর শুক কপোত মরালচয়। তিতির বটের যত পদাতিক সেনাগণ। রথ ধরাধর-শিলা তুন্দুন্ডি নিঝর। মধুকর-গুন্গুন তুরী আর ভেরী-হেন। চারিদল অনীকিনী ল'য়ে সাথে আপনার। মীন-কেতনের এই সেনা করি' দরশন। ামণী কামের এক বড়ই প্রবল বল।

ধীরতা যাহার মলে লে কভু নাহিক টলে # ১ যেন তীরন্দাল বহু আগুলিছে বন্দিদল ॥ পৃথক্ ছাউনি যেন কোন কোন বীর ছা'য়॥ ২ ডাছক কোৰিল উট অখন্তর যেন স্ব ॥ এরা যেন মনোজের মহাতেজ রণ-হয়॥ ৩ কত ক'ব মনসিজ-বাছিনীর বিবরণ ॥ চাতক-ভাটেরা গায় গুণচয় নিরম্বর **।** ৪ ভিনবিধ সমীরণ মদনের দুত যেন॥ রণে আবাহন করি' বিচরণ করে মার ॥ ৫ বে পারে ধরিছে ধীর খ্যাতি লভে সেইজন ॥ বিষয় যে লভে ভা'তে বীর লেই মহাবল ॥ ৬

| দো—ভাত এই ডিন | থল অভিবল      | কাম ক্রোধ কোভ আর।           |
|---------------|---------------|-----------------------------|
| পলে বিক্ষোভ   | তুলে মূনি-মনে | ধাঁ'রা বিজ্ঞানাগার ॥ ৩৮ (ক) |
| লোভের ইচ্ছা   | দন্ত সহায়    | নারীই কামের বল।             |
| ক্রোধের সহায় | প্ৰুষ ৰচন     | ৰ'লেছেন মুনিদল॥ ৩৮ (খ)      |

#### शन्भा-जदबाबदब शमम

(6)—গুণের অতীত তিনি চরাচর-জগস্থামী: काभीत्मत्र मीन-छात त्मथारेग्रा त्रचूत्र । ক্রে। কাম মদ লোভ মায়া-আদি সমুদায়। वाकीकत या'त 'शदत त'न मना अधुकृत । উমা কহিতেছি আমি নিজের যা অমুভব। তা'র পর যা'ন প্রভু সেই সরসীর ভীর। সন্ত-হৃদয় সম নিৰ্মাণ ডা'র বারি। মধা তথা জলপান করে বহু পউদল।

ভবানি তিনিই রাম সবার অস্তর্যামী॥ করিলেন বিবেকীর বিরাগ খুদুঢ়ভর ৷ ১ ঞীরামের দয়া হ'লে আপনি খুচিয়া যায়॥ বাজীর মায়ায় তা'র কদাচ না হয় ভুল ॥ ২ হরির ভক্ষনা সার স্বপ্ন অগত সব ॥ পম্পা যাহার নাম মনোহর স্থগভীর ॥ ৩ ভাহাতে বাঁধান' ঘাট রহে মনোহর চারি । উদার দাতার গৃহে যেমন যাচক দল 🛭 ৪

সহজে না পা'বে মর্ম। (प)---कमन-भार्ण লুকান' সলিল যথা নিশুৰ্প অক্ষা ৩৯ (ক) ना भाग्न प्रत्न মায়াবত জীব এক-রসে মাডি' অতল জলের মাঝে। স্থারে মীন কেটে' যায় স্থুখ-সাজে ॥ ৩৯ (খ) ধর্ম্ম-নিরভ জীবন বেমন

চৌ—বিকশিত বহুভাঁতি সরসিজ শোভমান্। ধ্রঞ্জে ভৃত্ন বহু তুলিয়া ললিত তান ॥ क्न-कृक्षे ভাকে মরাল चु-त्रव करत। চক্রবাক্ বক-আদি কভবিধ ধপ আর। নয়ন-ভূলান' পাখী করে গান বিমোহন। সরোবর-ভটদেশে কন্ত মুনি-আঞ্রম। চম্পা বকুল আর কদম কিবা ভমাল। নব কিশলয়-সাজে সক্ষিত ভর্নচয়। অভাবজ-ফুশীতল মন্দ সুরস্তি-যুক্ত। 'শৃত্মূত কৃত্কুত কোকিলেরা ভূলে ভান।

প্রভুরে ছেরিয়া যেন সবে গুণগান করে॥ ১ মূখে নাহি যায় কহা দেখিবার(ই) সে বাহার # প্রধারী প্রিকেরে যেন করে আবাহন। ২ কাননের চারিদিকে ডক রছে মনোরম। পাটল পনস আদি সহকার স্থুরসাল। ৩ ফুলে ভর। মধুকর গুঞ্জরে মনোময়। ভিনবিধ সমীরণ রহে তথা প্রবাহিত ॥ ৪ রস ভন্না সেই রব শুনি' মুনি গড়-ধ্যান 🛭 🕏

দো-কল-ভারে নমি' পর-উপকারী

পাদপ মিকর मत्र वर्षा मर

थत्रनी भन्नामि तत्र । লভিয়া বিভাচর ॥ ৪ •

D -- রমণীয় সরোবর করি' রাম দরশন। হেরি' মনোহর এক পাদপ ভাহার ছার। আদেন তখন তথা মূনি ঋষি স্থুরগণ। পরম হরষ-মনে বসিয়া তথা কুপাল।

মজ্জন করি' ভাছে অভীব মোদিত মন॥ বসিলেন অনুজের সনে তথা রম্বরায় ॥ ১ निक्रनिक शास या"न कति ' शप-रम्पन ॥ অফুজের সনে ক'ন কত কথা সুরসাল ॥ ২

#### নারদ-রাম সংবাদ

বিরহ-পীড়িত ভগবানে করি' দরশন। ভাবেন আমারি শাপ দয়াল করি' স্বীকার। এমন প্রভুরে গিয়া করি আজি দরখন। এ কথা ভাবিয়া মনে করেডে শইয়া বীণ। মূখেতে করেন গান মৃত্যুত্ রাম-নাম। করিডেই দণ্ডবৎ ধরিয়া তুলেন তাঁরে। স্বাগত করিয়া তাঁ'রে আপন পালে বসা'ন। অভীব ভাবনাযুত নারদ মুনির মন 🛭 🕮রাম সহেন এই ছঃখ নানাপ্রকার॥ ৩ হেন অবসর আর হ'বে না পরে কখন 🛭 গেলেন নারদ যথা পুথে এভু সমাসীন ॥ ৪ করেন ভক্তি ভরে বিবিধ শীলা বাধান। চাপেন আপম বুকে নারদেরে বারেবারে 🛭 ϵ नेष्मन वाति षानि' ष्यानरत श्रेम श्रेम'न ॥ ७

দো-বছবিধি স্ততি কছেন বচন

ক্রিয়া ভাঁহার ATEN GUA

व्यक्रत सामिष्ठ मानि'। · चुक्तिम क्मल-शानि ॥ 83 ক্রী-সহক্র-উদার শুন হে রখুনারক।

যাচি ও পদতলে এক বর দেহ আমি।

আমার প্রকৃতি ভাল জান মূনি রাম ক'ন।

কি আছে এমন প্রিয় কহ এ স্কুলন 'পর।

অদেয় ভকতে মোর নাহিক কিছু এমন।

নারদ কহেন ভবে প্রাণে ভরা পুলক্তা।

যদিও হে প্রভু নাম গণনাহীন ডোমার।

রাম-নাম হ'ক নাথ বড়-নাম সকলের।

স্থান অগম স্থাম বরদারক ॥

যদিও বিদিত সব অস্তর্যামী ॥ ১

ভকতের কাছে কভু থাকে কি কিছু গোপন ॥

যাচিতে যা' মোর পাশে নাহি পার' মুনিবর ॥ ২

এ প্রতীতি ভূলেও না কভু হ'রো বিসরণ ॥

এই বর যাচি প্রভু ক্ষম মম ধুইতা ॥ ৩

এক হ'তে এক বড় বেদ এই বলে আর ॥

ব্যাধের সমান হ'ক যত পাপ-বিহুগের ॥ ৪

| <b>দো</b> —পূর্ণিমা নিশা | ভোমার ভক্তি    | রাম-নাম হ'রে সোম।       |
|--------------------------|----------------|-------------------------|
| অক্তে তারা সম            | করুক উজ্ঞল     | ভকত-ছাদর-ব্যোম। ৪২ (ক)  |
| ভাহাই হইবে               | মুনি-প্ৰতি ক'ন | কুপানিধি রখুনাথ।        |
| বিপুল পুলকে              | প্রভূর চরণে    | নারদ নমা'ন মাথ ॥ ৪২ (খ) |

C51—তখন নারদ রামে অতি প্রসর জানি'।
ত্বন প্রভু রছুনাথ মায়ারে করি' প্রেরণ।
বিবাহ করিতে তবে হ'য়েছিল অভিলাষ।
অবধান মুনিবর কহি ভোমা প্রীভিডরে।
তেমনি তাহার সদা করি পরিরক্ষণ।
ধরিতে অনল অহি শিশু যবে ছুটে' যায়।
প্রোচ্ ও হ'লে স্কুত মাতার তনয়-'পরে।
প্রোচ্ তনয় সম যে সকল জ্ঞানিগণ।
ভক্তের মার বল নিজ্বল জ্ঞানীদের।
পণ্ডিত এ বিচারি' আমার ভজনা করে।

কহিলেন আর বার সহ সুকোমল বাণী।
বিমোহিত ক'রেছিলে যখন আমার মন। ১
দিয়াছিলে বাধা তাহে কি হেতু রমা-নিবাস।।
সকল ভরসা ত্যক্তি' বে মোর ভলনা করে। ২
মাতা যধা করে শিশু-রক্ষণাবেক্ষণ।।
মাতা তব আগুলিয়া রক্ষা করেন তা'য়।। ০
মেহ রয় তবে নহে পূর্কের মত ক'রে।।
বালক-তনয় মম অ-মান ভক্তজন। ৪
কাম-ক্রোধ আদি রিপু আছেই ত সকলের।।
করিলেও জ্ঞানলাভ নাহি ছাড়ে ভক্তিরে॥ ৫

পৌ—কাম ক্রোধ লোভ ডা'র মাঝে অভি

মোৰ অহমার ত্থদ দারুণ এরা ভীম অনীকিনী। নারী মায়া-স্বরূপিণী॥ ৪৩

(5)—সন্ত পুরাণ বেদ এই বলে মুনিরান্ধ।
জপ-তপ-নিয়ম-জলাশয় হ'তে বারি।
কাম-ক্রোধ-মদ-ভেকেরে হরব দিতে।
কু-বাসনা বিকশিত কুম্দ-নিকর-প্রায়।

কামিনী মোহের বন-মাঝে যেন ঋতুরাল। লোবণ করয়ে সব নিদাঘরূপিণী নারী।। ১
এরাই প্রার্ট-রূপা শুধু এক এ মহীতে।।
এ শরৎঋতু হ'তে তারা সদা হুখ পায়।। ২

२७

ধর্ম যভেক ডা'রা কমল-আকার ধরে।
নারী-চিমঋতু পেয়ে তথন মমতা-কাশ।
পাপ-পেচকের চির অন্তর-বিনোদিনী
বৃদ্ধি বল সভ্য শীল এ সকল মীন।

নীচ-মুখদা নারী হিমরপে দহে ভা'রে। সবারে আবরি' করে নিজেরে তেজে প্রকাশ॥ ৩ রমণী তমসাময়ী ঘন ঘোর নিশীখিনী॥ এদের বঁড়শী যেন রমণী বলে প্রবীণ॥ ৪

দো—যাতনা-দায়িনী এই সব বৃঝি' সব দোষ মূল ভা'ই নিবারণ সকল ছথের খনি। করিয়াছিলাম মুনি॥ ৪৪

(5)—মনোহর রঘুপতি বচন করি' প্রবণ।
ভাবি'ছেন বল' কোন্ প্রভুর এমন রীতি।
ভাম করি' বরজন যে প্রভুরে নাহি ভজে।
আদরের সনে পুন: কংহন মুনি নারদ।
সাধুজন-লক্ষণ কচ দেব কুপা করি'।
রাম ক'ন শুন মুনি সাধু গুণ-বর্ণন।
জিত যিনি ভ' বিকার অ-পাপ বিগভ কাম।
সীমাহীন জান বাঁ'র ইচ্ছাহীন মিত-ভোগী।
সাবধান মানদাতা আপনি মদ-বিহীন।

পুলকিত মৃনি-কায় জলে ভরে ত্'নয়ন।।
ভকতের তরে কা'র এমন মমতা প্রীতি।। >
জ্ঞানের কালাল সেই কু-ললাট-পাঁকে মজে।
কহ প্রভুনাথ বিজ্ঞান-বিশাবদ।। ২
ভবভয়-নিবারণ হে নাথ ছরিতহারি।।
তাঁ'দের অধীন আমি রহি সদা যে কাবণ।। ৩
অবিচল অকিঞ্চন পূত আর সুথধাম।।
সত্য-রত সব কালে পণ্ডিত কবি যোগী।। ৪
বৈধ্যাশীল ধর্ম-জ্ঞান আচারে মহাপ্রবীণ।। ৫

**দো—**ভব-**ত্থ**হীন আমার চরণ গুণের আধার বিহনে কিছুই

নাহি কোন সম্পেহ। নহে প্রিয় গৃহ দেহ॥ ৪৫

(b) — কৃষ্ঠিত হয় শুনি' আপনার গুণগান।
সম শীতল ভাব ত্যাগ যে না করে নীতি।
অপ তপ ব্রুত দম নিয়ম সংযম আর।
শ্রেদ্ধা ক্ষম। স্থা-ভাব দয়া ভরা অন্তরে।
বিরাগ বিবেক শীল ভরা অন্তর্ভব-জ্ঞানে।
দল্ভ মান মদ নাহিক কাহার সনে।
মম লীলা-গান মুখে কাণে শুনে অবিরত।
শুন মুনি সাধুদের লক্ষণ এ সকল।

ভানিলে পরের গুণ অধিক হরষে প্রাণ।।

অভাবে দারলা ভরা দ্বারি দহিত প্রীভি॥ >
গোবিন্দ গুরু ভিজ-চরণে ভক্তি যা'ব।।
প্রমোদিত ভাব প্রেম আমার চরণ পৈরে।। ২

যথাযথ জ্ঞান যা'র কিবা বেদে কি পুরাণে।।

অমেও না দেয় পদ কখনো কুপথ-পানে।। ৩

বিনা হেতু অপরের উপকারে সদা রভ।।

বর্ণিতে মানে হার বাণী আর বেদ-দল।। ৪

ছ—হারে বীণাপাণি বাসুকী এ শুনি' এ-ভাবে কৃপাল দীনের দয়াল বার বার নমি' পদ-কোকনদে তুলসি সে ধক্স ভালি আলা লাভ

কমল-চরণ মূনি জড়া'ন। ভকতের গুণ শ্রীমুখে গা'ন। গেলেন নারদ ধাতার ধামে। রঞ্জিত রহে যে হরি-প্রেমে।

## শ্রীরাম-মাহান্ত্র্য শ্রেবণের মহিনা

**দো**—রাবণ-অন্নির

পুণ্য-মুষণ

বিনা থোগ অপ বিবাগ বামের

যে জন শুনিবে গা'বে। দৃঢ ভক্তি দে প†'বে॥ ৪৬(ক)

দীপ-শিখা প্রায় যুবভীর কায়

হ'যোনামন প্তঙ্গ।

ভজ'রাম-পদ ত্যজি'ক'ম মদ কর সদা সংস্কা ৮৬(খ)

কলিযুগের সমস্ত পাপবংসকারী জ্রীরামচরিত-মানদের এই তৃতীয় সোপান সমাপ্ত হইল॥

( অরণ্যকাশু সম্বর্ধ )

#### अन्तिनाम ममः

#### এলানকীবন্ধতের পর

# শ্রীরামচরিত মানস

# চতুৰ্থ সোপান

# কি জিন্ধা কাণ্ড

শ্রোক—কুন্দ নীল-ইন্দীবর অন্বিতীর ধন্দর্ধর মায়ায় মানবন্ধণী দীতা-অন্বেষণপর ব্রহ্ম-বারি সমৃদ্ভব কুষমা বিস্তার করি' জন্ম-মরণ রোগে গৌর-শ্রামল রূপ
শোভাধার বেদ-বদ্দ্য
রঘুক্লবর ছটি
পথিক-প্রাবর সদা
কলির কলুব যত
সর্ববিদ্যাল তরে যেই
স্থাসম ঔষধ
নিশিদিন নির্ম্পর

অভিবল বিজ্ঞানের ধাম
গো-রাক্ষণগণ-প্রাণারাম।
সদর্শের বর্ণ্ম হিতকারী
হ'ন ভক্তি বিভরণকারী॥ >
নিংশেষ-বিধ্বংলা নাশ হীন
শ্রীশস্ত্র মুখ-ইন্দু লীন।
আনকীর প্রাণের সমান
শ্রীরামের নামায়ত পান॥ ২

সো—মুক্তি-জন্মভূমি জানি' যথা র'ন শঙ্কর-ভবানী দহিত হেরিয়া স্বরগণ না ভজিস্ তাঁ'রে মৃচ মন

ধক্ত ভা'র৷ যা'রা করে

জ্ঞানকর পাপ-বিনাশন।
দে কাশী না দেবি কি কারণ॥
করিয়া গরল যেবা পান।
কে কুপাল দে শস্তু সমান॥

#### এরাবের সহিত হসুসালের সাক্ষাৎ

(5) — পুনরায় আগুরান হ'ন রাম রছ্বর।
সেধা স্থ্রীব রহে আপেন সচিব সনে।
অতীব ত্রাসের ভরে কহে শুন চহুমান।
ধরি' ব্রক্ষচারী-রূপ আপনি ওবানে বাও।
থ্রোরিত কুটিল বালি যম্ভাগি ওরা হয়।
বিক্র-বেশ ধরি' কপি করিল ভবা গমন।

ঋষ্যমুক শৈলের হ'লেন নিকটভর ॥
আনিতে হেরিয়া মহাবল রাম-লক্ষণে ॥ ১
কে ওই যুগল নর বল ও রূপ-নিধান ॥
মর্ম্ম বৃষিয়া সব বারভা মোরে জানাও ॥ ২
পর্বত ভাজি' ডবে এখনি পলা'তে হয় ॥
নমিত করিয়া শির শুধাইল এ বচন ॥ ৩

কে তোমরা ছই জন গৌর-স্থাম শরীর। স্থকঠিন ক্ষিভিডলে কোমল চরণ ফেলে'। মুত্র মনোহর স্থলর কলেবর। ত্রি-মূরতি মাঝ হ'তে ভোমবা কি ছইজন। কিরি'ছ কানন মাঝে রূপে ক্ষজ্রিয় বীর॥ হে প্রভু এ বনদেশে বিচরিছ কোন্ছলে॥ ৪ সহিছ' আতপ-ভাপ সমীরণ ক্লেশকর॥ অথবা ভোমরা কি গো সেই নর-নাবায়ণ॥ ৫

দো-কিম্বা জগত-আপনি অখিল

ভারণ-কারণ . ভুবনের পত্তি

ভঞ্জন ভূমি-ভার। নেছ' নর-অবভার ॥ ১

চৌ—স্বত মোরা কোশলের নুপতির রাম ক'ন। জনক-বচনে বনে দোঁহাকার আগমন। মোরা ভাই তুইজন লক্ষ্মণ রাম নাম। হেপা সেই জানকীরে রাক্ষস নিল হ'বে। করিলাম বর্ণন নিজেদের ইভিহাস। প্রভুরে চিনিয়া হমু পড়িল চরণ ধ'রে। পুলকনে ভরে তহু মুখে না আসে বচন। তথন ধরিয়া ধীর করে তাঁ'র স্তুতি গান। কহে মোর শুধানতে নাহি কিছু অক্সায়। তোমারি মায়ার বশে ভ্রান্ত হইয়া ফিরি।

সাবে সুকুমারী নারী ছিল আঁখি-অভিরাম ॥ ১ ব্রাহ্মণ ফিরি মোরা তা'রি উদ্দেশ ক'রে ॥ নিজ-কথা এবে দ্বিজ করহ মোরে প্রকাশ ॥ ২ সে সুথ ভাহার উমা বর্ণনা কেবা করে॥ প্রভুর রুচির বেশ করে শুধু দরশন ॥ ৩ ৈ চিনিয়া প্রভুরে নিজ হরষে ভরিল প্রাণ॥ তুমি কি শুধাও প্রভু তুচ্ছ মানবপ্রায়॥ ৪ সে কারণে আপনার প্রভুরে চিনিতে নারি॥ €

দো-একেই ত নিজে তাহে তুমি প্রভু

মূঢ় মায়াবল ভুলাইলে মোরে

कृष्टिन समग्र व्यख्डान। দীননাথ ভগবান ॥ ২

চৌ—যদিও আমার প্রাভু অপরাধে দীমা নাই। প্রাভু যেন দেবকেরে না ভূলিও এই চাই॥ ভোমারি মায়ায় নাথ মৃগ্ধ জীব সকলে। ভত্পরি ভোমার দোহাই হে রঘুরায় সন্তান জননীর প্রভু-ভরসায় দাস। এ বলিয়া সকাভরে পড়িয়া চরণ 'পরে। তখন জ্রীরঘুনাথ উঠাইয়া বুকে লন। ক'ন কপি মনে গ্লান আনিও নাকোন মতে। তুমি মোর পাশে প্রিয় বিতংগ লক্ষণ হ'তে ॥ मम-मत्रभी विनिश्वतम (भारत मवकरन।

নিস্তার পে'তে পারে ভোমারি দয়ার বলে। ১ কিছুই ত জানা নাই সাধনার সত্পায়॥ অ-ভাবনারহে প্রভুপালিলেই পুরে আশ॥২ হলে প্রেম ভরা নিজ শরীর প্রকাশ করে॥ খুড়া'ন আপন আঁখি-বারি করি' সিঞ্চন ॥ ৩ দেবক অনক্ষগতি মোর প্রিয় লাগে মনে॥ ৪

দো-মতি অনক্স আমি দাস

ভাহারি যাহার আর চরাচর-রূপে মনে এ অটল জ্ঞান। প্রভু মোর ভগবান। ৩

## শ্রীরামের সহিত ত্মগ্রীবের মিত্রভা

(51-- হেরিয়া প্রনম্বত জ্রীরামেরে অমুকৃদ। অপার প্রসাদ প্রাণে মিটে গেল স্ব শৃল ॥ বলে প্রভু গিরি 'পরে কপিপত্তি করে বাদ। স্থাীব নাম ডা'র দে-ও তব এক দাস॥ ১ '

ডাহার সাথেতে প্রভু স্থাপন কর প্রণয়। সে-ই জানকীর তব করাইবে অবেষণ। এই ভাবে শ্রীরামেরে সব কথা বুঝাইল। পায় স্থগ্রীব যবে জ্রীরামের দরশন। মিলিল আদরে নত করিয়া চরণে শির। স্থগ্রীব মনে মনে কবিতেতে এ বিচার।

ভা'রে দীন বুঝি' মনে প্রদান কর অভয় ॥ চারি দিকে কোটি কোটি কপিরে করি' কেরিণ ॥২ प्रष्मत्त्र निष काँदि श्राद्वाहर कताहेश । করিল জনম অভি ধন্য বলি' গণন॥ ৩ ভাই সনে সম্ভাষণ করিলেন রম্ববীর ॥ कतिर्देश कि एवं विधि अगर महास आधार ॥ ।

বে —হমুমান তবে অনলে সাকী দোঁহে দোঁহাকার রাখিয়া মিডালি সকল কথা শুনায়। করাইল ছ'জনায়॥ ৪

স্থগ্রীব কহে ভবে নয়নে পুরিত বারি। মন্ত্রিগণের সনে এইথানে একবার। তথন গগনে যে'তে কবিয়াছি দরশন। রাম রাম হায় বাম হবে চীৎকার করি'। যাচিতে বসন রাম এনে দিল ছবাপর। স্থাীব কহে তবে শুন প্রভু রঘুবীর। नक्न व्यंकारत रम्या कतिव व्यामता मरव।

(5)—প্রণয় ভাপিত হ'ল না রহিল অন্তর। লক্ষ্য রাম-গাথা কহিলেন অভঃপর॥ আবার পাইবে নাথ মিথিলেশ-সুকুমারী ॥ ১ বসি' বসি' সবে কিছু করিতেছিলু বিচার ॥ পরের কবলে পড়ি' করেন বহু রোদন॥ ২ দিলেন বসন ফেলি' আমা স্বাকায় ছেরি'॥ সে বাস জদয়ে চাপি<sup>2</sup> ঞীরাম অতি কাতর ॥ ৩ খেদ কর ভাগে এবে পরাণে ধরত ধীর। জনক-কুমারী সীঙা খাহে কিরে' পাওয়া যা 'বে॥৪

(দা-স্থার বচন কহ কি কারণে

শুনি' প্রীত অতি বনে বাস কর

কুপানিধি বলধাম। স্প্রতীবে ক'ন রাম॥ ৫

## স্থগ্রীবের নিজ ছুঃখ বর্ণন

চৌ--- মুগ্রীব.কতে নাথ বালি আমি হুই ভাই। কড যে প্রণয় ছিল বলিবার ভাষা নাই॥ ময়-দানবের স্থৃত মাযাবী ভাহার নাম। অর্দ্ধ রাত্রে করে চীৎকার পুরস্বারে। বালিবে ধাবিত হেরি' লাগিল দে পলাইতে। গিবির গুহায় এক সে দানব প্রবেশিল। মোর আসা-পথ চে'য়ে র'বে পক্ষান্ত-ভরে। একমাদ কাল তথা রহিলাম হে ধরারি। ভাবিলাম হত বালি আগিবে মোরে মারিডে। নির্থি নুপতি হীন বালির সচিবগণ। मानरव विश्वा वानि छवरन व्यानिन किरत । অরাতি-সমান মোরে করিল অতি প্রহার। ভাহার ত্রাদেতে ওহে রখুবীর কুপাময়।

একবার এসেছিল সে প্রভু মোদের গ্রাম॥ > অরাতির বল বালি পারিল না সহিবারে॥ ছটিত্ব তথন আমি ভ্রাতার সহায় হ'তে। ২ তখন আমারে বালি সম্ভাষি' এ কচিল 🛭 যদি নাহি ফিরি মনে বুঝিবে গিয়াছি ম'রে॥ ৩ বাহির লাগিল হ'তে ক্লধিরের স্রোড ভারি ॥ গুহা-মূখে শিলা চাপি' লাগিলাম পলাইছে ॥ ৪ হঠে মোরে করাইল রাজাসনে আরোহণ ॥ বিরোধ জদয়ে তা'র বাডিল নির্থি' মোরে ॥ ৫ नकिन द्विया निन क्लिए' निन साया चात् ॥ क्टित'हि (वहांन ह'रा नकन खुवनमग्र॥ ७

শাপের কারণে হেথা নাছি করে আগমন। ভক্তের হুথ শুনি' দীনের প্রভি কুপাল। ডথাপি র'রেছি হের সঙ্গুত ত্রাসিত মন॥ সকোরে তুলেন উচ্চে ভুজবুগ সুবিশাল॥ ৭

## वानि-वर शिक्का; वसू-मक्न वर्गम

**ড়ো—সুগ্রীব শুন** ব্রহ্মা শিবের বধিব বালিরে নিলেও শরণ

সন্ধানি' এক বাণ। তবু না রহিবে প্রাণ॥ ৬

(চ)—বক্র ছবে প্রাণে যেজন না ছব পায়।
নিজ গিরি-সম ছব রেণু ব'লে মনে করে।
আজাবিক ভাবে যা'র হেন মতি নাহি আসে।
ফিরা রে কুপথ হ'তে কিরা'বে স্থপথ পানে।
আদান-প্রদানে লেশ-শব্ধা বিহীন চিত।
শতগুণ সেহ র'বে ভাচার বিপদ কালে।
সমূবে মধুর কচে বচন করি' রচন।
যাহার মনের হেন সর্প-সমান গতি।
কুপণ নূপতি শঠ সেবক কুলটা নারী।
চিন্তা দূর কর স্থা ত্যক্ত' সব মোর' পরে।
স্থাব কহে ভবে অবধান রখুবীর।
দুন্তি রক্ত:-ছন্তি দেখাইল বুক্ক ভাল।

হেরিলেও ডা'রে চ'থে পাপ হয় অভিলয় ॥
বজুর কণা-চুথ সুমের-সমান হেরে॥ ১
সে শঠ কি হেতু মিছা মিডালি করিতে আলে॥
বাড়া'বে সুগুণ যত দূর করি অপগুণে॥ ২
আপনার যথাবল করিবে সদাই হিড॥
পরম সথার গুণ এই সব বেদে বলে॥ ৩
আড়ালে গুধুই মানি কৃটিলথা ভরা মন॥
তেমন কু-স্থা জনে বর্জনে গুভ অতি॥ ৪
কপটডা ভরা সথা শূল সম এই চারি॥
ডোমার সকল ভার লইয়ু আপন করে॥ ৫
বালি মহাপরাক্রম অভিলয় রণধীর॥
বিনায়াসে করিলেন চুণ ডা'রে দয়াল॥ ৬

## चुकीद्वत देवतागा

হেরিয়া অমিত বল হৃদয়ে বাড়িল প্রীতি।
বার বার করে শির আনত চরণ 'পর।
উপজিত হ'ল জ্ঞান বচন কহিল বীর।
সম্পদ মুখ আর খ্যাতি মান পরিবার।
শ্রীরাম ভকতি-পথে এরা সব অস্তরায়।
আরাতি-বান্ধব-মুখ হুংখ জগতময়।
বালি অতি হিডকারী তা'র তরে লভিলাম।
অরেও থা'র সনে হইবে হল্ম মোর।
এখন হে কুপাময় কর স্কুপা এই ভাঁতি।
ভনিয়া বিরাগভরা কপির মুখের বাবী।
যাহা কিছু বর্দিলে সভ্য সকলি ভাহা।
কাক কহে হে খগেশ শ্রীরাম বেছে এ বলে।

ই হা হ'তে বালি-বধ হ'বে হ'ল পরতীতি ।
লভি' প্রভূপরিচয় হুইট মন কপিবর ॥ ৭
হে নাথ কুপায় তব মন মোর হ'ল স্থির ॥
করিব তোমার সেবা সব করি' পরিহার ॥ ৮
এই ক'ন সস্থেরা বাঁ'র মন তব পায় ॥
মায়ার রচিত শুধু সন্তা প্রকৃত নয় ॥ ৯
তোমা হে ককণাময় হুংখ-শমন রাম ॥
ভাগরণে মনোমাধে উদিবে শোচনা ঘোর ॥ ১০
সব ডাজি' ডোমা যেন ভজি আমি দিবারাভি ॥
হসিত-বদনে তবে ক'ন রাম ধ্রুণাণি ॥ ১১
মিখ্যা কখন স্থা না হ'বে কহিছু যাহা ॥
মটের বানর-প্রায় নাচান স্বারে ছলে ॥ ১২

# वानि-प्रवीय-पूष ; वानि वर

স্থাবৈ সাথে ল'ন্ধে পরে রাম রছ্নাথ।
পাঠা'লেন স্থাীবে বালি-পালে সেই'খন।
ভানিভেই ছবার ছুটে বালি ক্রোথাড়র।
ভান নাথ স্থাীব জুটে'ছে বাঁ'লের সনে।
কোশলেশ-আছাল লক্ষাণ আর রাম।

চলিলেন ধন্ত্ৰার প্রহণ করিয়া হাত ।
কাছে পিয়া প্রীরাদের বলে করে গর্জন । ১৬
চরণ ধরিয়া ভারা বুঝার ভা'রে প্রচুর ।
ডেজ আর বলাধার উা'রা ভাই দুইজনে । ১৪
কালেও জিনিতে রণে সক্ষম গুণধাম ॥ ১৫

শে—বালি কচে ওন ক্যাপিও যদি ভীক প্রিরডমে বধেন আমারে সম-দিঠি রবুনাথ। সুশীলে ত'ব সনাথ॥ ৭

তৌ—এডেক বলিয়া যায় সহ মহা অভিমান।
ভেটিল দোঁহায় দোঁহে বালি করে ডর্জন।
পলায় আকুল হ'য়ে স্থগ্রীব সে প্রহারে।
বলেছিমু রঘুবার কুপাময় ভোমা হেন।
রাম ক'ন অবিকল আকৃতি চুইন্সনে।
করিলেন নিজ দেহ ডা'র করে পরশন।
গলায় পরা'য়ে রাম দিলেন কুম্ম-মাল।
আবার কতই মতে হইল ভীষণ রণ।

পো—বহু ছল-বল স্থগ্রীব করে করষি' শায়ক হানেন শ্রীরাম

তুণের সমান লখু ক্ষুগ্রীবে করি' জ্ঞান ।
মৃষ্টি প্রহারি' ঘোর রবে করে গর্জ্জন । ১
অ্লান-সমান লাগে মৃষ্টি-প্রহার ডা'রে ।
ভাই নয় সাক্ষাৎ কাল মোর বালি বেন । ২
অ্রমবণে বধ নাহি করিলাম সে কারণে ।
কুলিশ হইল ভয় খুটিল সব বেদন । ৩
পাঠা'লেন ডা'রে পুন: দিয়া বল ক্ষিলাল ।
বুক্লের আড়ে রাম ক্রি'ছেন দরলন । ৪

खनरत्र विकिष्ठ-खत्र । एक्टिनेश वानि-क्षत्र ॥ ৮

চৌ—আতৃল হইয়া পড়ে ধরায় শরের বায়।
খ্যাম কলেবর শিরে বিরচিত জটাভার।
বার বার তাঁরে হেরি' সে চরণে দিল মন।
মূখেতে কঠোর ভাষা পরা প্রেম ভরা বৃকে।
বর্ম-কারণে প্রভু তোমার অবতরণ।
অরাতি ভোমার আমি স্থগ্রীব প্রিয়ভর।
রাম ক'ন শোন্ শঠ আতৃবধ্ সহোদরা।
ইহাদের পরে করে বেজন কু-আঁথিপাভ।
বের মূঢ় ভাদরে ডোর অভিশর অভিমান।
ময় ভুজবলাঞ্জিত জেনে'ও মনেতে ভাগরে।

প্রভুবে সম্পে হেরি' উঠি' বসে পুনরার
অরুণ নয়ন-যুগ করে ধরু শর আর ॥ ১

চিনিরা প্রভুবে মানে সকল নিজ জনম ॥
কহিল তথন বালি চাহি' প্রীরামের মৃথে ॥ ২
ব্যাথের সমান ছলে করিলৈ মোরে হনম ॥
কি দোব আমার প্রভু বাহাডে পরাণে মার' ॥
পুত্রবধু ও ত্হিডা সকলে সমান এরা ॥
ভাহারে করিলে বধ কিছু নাহি অপরাধ ॥ ৪
বনিডার উপদেশে সে হেডু না দিলি কাণ ॥
গর্মিক অধম সাধ স্থানীবে বধিবারে ॥ ৫

এখনো কি প্রান্থ এখনো কি প্রান্থ সহিত আমার রহিলাম পাণী ৰুজু না চলিবে ছল। লভি'ও চরণ-ডল ॥ ৯ (5) - अवन कतिया त्राममन शान-नना वानी। কহেন অটুট দেহ করি তুমি রাখ' প্রাণ। জনম জনম মুনি করেন কভ সাধনা। নামের প্রভাপে যাঁ'র শঙ্কর বারাণসী-। পে'য়েছি নয়ন-আগে আজ তাঁ'রে সুপ্রকাশ।

ছ---নয়ন-গোচর আজিকে সে জন জিনি' প্রাণ-মন ইন্তিয় বোধি অভি অভিমানী মনে মোরে জানি' কোন মুঢ় হঠে স্থর-ডক্ল কেটে' করিয়া করুণা নাথ এ কামনা যে-যোনি ভিতরে ক্রিয়া অমুসারে সমান বিনয় এ মম তন্ম ধরি' এর হাত শ্বর-নর-নাথ দৃঢ় অনুরাগে **८चा--वारमत हतरन** কুমুম-মালিকা গল-চ্যুত হ'লে

বালির শিরের 'পরে রাখিয়া আপন পাণি 🛦 উত্তরে বালি কহে শুনহ কুপা-নিধান 🛭 🔾 অতে তথাপি রাম-নাম মুখে বাহিরে না ॥ ধামে সকলেই সম-গতি দেন অবিনাশী ॥ ২ ੰ আর কি কখনো প্রভু পা'ব হেন অবকাশ ॥ ৩

বেদ নেভি যা'রে সভত গায়। ধ্যানে মূলি যা'লে কদাচ পায় ॥ ক'ন প্রেডু রাখ' এ কলেবরে 🕽 তা'দিয়ে বাবুল গাছেরে খেরে 🛚 🔾 কুপা-চ'খে হের দেহ সে-বর। যাই প্রেম রহে চরণ 'পর ম বল কুপা করি' শরণে লও। वकरम मात्र-शरम वजाल । २ বালি করে ভন্নু ভ্যাগ। তা যথা জানে না নাগা ॥ ১০

#### ভারার বিশাপ, এরামের ভারাকে উপদেশ

(5)-পাঠাইলেন রম্বনাথ বালিরে আপন লোক। আসিল ব্যাকুল হ'য়ে নগরের যত লোক। করিল বিলাপ ভারা আসিয়া কতই মড। তারারে আকুলা হেরি' রখুনাথ দয়া করি'। কহিলেন ক্ষিতি বারি ব্যোম তেজ সমীরণ। সে দেহ ভোমার আগে ভূমিতে পড়িয়া রহে। উদিত যখন ভৱান পড়িল চরণ 'পর। শিব ক'ন উমা সবে কাঠের পুতুল মত। ক্রিলেন সুগ্রীবে তথন আদেশ দান।

এলায়িত কেশদাম দেহ নহে সংযত॥ ১ করিলেন জ্ঞানদান লইলেন মায়া হরি'॥ এই পাঁচ হ'তে অভি ছার দেহ বিরচন ॥ ২ সনাতন জীব ভবে কেন ভব মন দহে॥ যেচে' নিল তাঁ'র পাশে পরমা-ভকতি বর 🛚 🗸 নাচান জীরাম প্রভু চরাচরে আছে যত। যথা-বিধি সাধে বালি-মুডক্রিয়া অনুষ্ঠান ॥ ৪

#### ত্বত্রীবের রাজ্যাভিবেক

ডা'র পর রাম ক'ন বুঝাইয়া লক্ষণে। রামের আদেশ শিরে ধারণ করি তথন।

> ভাকা'য়ে বিপ্ৰ স্থগ্রীবে আর

বসাও আপনি গিয়া স্থগ্রীবে রাজাসনে 🛭 নমিয়া চরণে তাঁর করিল সবে গমন 🛚 ৫

> নগরবাসী-সমাঞ व्यक्राम युवब्राक ॥ ১১

ব্যে-লক্ষণ হরা

রাজা দিলেন

দেবভা মানব মূনি সকলেরি এই রীতি। আকুল বালির ত্রাসে ছিল বেবা দিবা রাতি। সেই স্থগ্রীবে দেন কপিদের রাজাসন। **জানিয়াও করে যা'রা হেন প্রভু পরিহার।** অভঃপর সুগ্রীবে কাছে করি' আহ্বান। ক্ছিলেন স্থাীব শুন সথা কপিরাজ। নিদাঘ হ'য়েছে গভ বরষার আগমন। ব্দেদ সনে ভবে কর তুমি এবে রাজ। স্থগ্রীৰ ফিরে' যবে আদিল আপন পুরে।

স্বার্থের ভরে করে অপরের সনে প্রীতি । ১ শরীরে আঘাত বহু ভাবনায় ভরা ছাতি : অভীব কুপাল রাম রমুকুল-বিভূষণ॥ ২ কেন না বিপদে নর পড়িবে না বার বার # নৃপতির বছনীতি শিখা'লেন প্রভুরাম 🛭 🕹 চারি-দশ বর্ষ আমি না রব' বস্তি-মাঝ ॥ নিকটের শৈল 'পরে রহিব আমি এখন ৪ ৪ কিন্তু স্মরণে সদা রাখিও আমার কাজ 🛭 গেলেন স্থারাম ডবে প্রবর্ষণ গিরি 'পরে ॥ €

দো—আগেই দেবতা কিছদিন এসে

রেখেছিল তথা করিবেন বাস

রচি' ওচা ফুন্দর। কুপাধার রঘুবর॥ ১২

কন্দ মুদ ও কল-পত্র মানদ-হর। অসুপম ধরাধর করি? রাম দরশন। জ্রমরা বিহুগ মুগ-দেহ ধরি' দেবদৃশ। যবে হ'তে রমাপতি করিলা কাননে বাস। স্ফটিকের শিলা এক অতি খেত মনোহর। অফুলের পাশে ক'ন কাহিনী-কথা অনেক। প্রাবৃট্-গগনে ঘন-আবৃত জলধর।

ছেয়ে'ছে কানন যবে আসিলেন রঘুবর 🛚 🗲 স্থর-ভূপ ভাতাসনে করিলেন নিবসন॥ করেন প্রভুর সেবা সিদ্ধ মূনি সকল ॥ ২ ভবে হ'তে বন হ'ল সব মঙ্গলাবাস ॥ সুখাসনে সমাসীন চুই ভাই ডচ্পুর॥ ৩ ভক্তি বিরতি আর রূপ-নীতি ও বিবেক। গরক্ষন-রভ লাগে অভি প্রাণ-মনোহর ॥ ৪

## वर्षाच्छ वर्षन

(ছা---সন্মণ হের বিরাগ-তাৰণ

নাচে শিথিগণ গুহী শ্ৰীত যথা হেরি' ঘন নভঃ 'পর। নেহারি' ভক্তবর ॥ ১৩

(5)-अथरत कनश्त करत त्यांत्र शतकन। মাসিনী-সমক আর খন-মাবে নাহি রয়। बद्भी-निक्षि त्नरम वद्गरय क्लम मल। বৃষ্টি-কণার ঘাত সহে গিরি সেই মত। প্লাবিয়া ভালিয়া ভট ডটিনী ছটি'ছে তথা। ধরণী-পর্মে নীর তেমনি মলিন হয়।

ভরাসে শিহবি' উঠে প্রিয়াহীন মোর মন 🛭 খলের প্রশয় যথা কথনই শ্ছির নয়। ১ বিশ্বা লভিয়া নত বেমন জ্ঞানী সকল ! ष्ट्रहे-वहरन माधु यथा नरह विह्निष्ठ ॥ २ यञ्च विरुष्ठ थन मर्यामा जुरन यथा ॥ বেই মড মায়াজাল-বিজড়িত জীবর্চয়। ৩

সদ্তাণ যেইমত জড় হয় সাধু-পাশে। শ্রীহরি লভিয়া বথা জীবগণ হয় স্থির। বারি-সমাবেশে তথা সরসী ভরিয়া আসে # তেমনি সাগর মাবে প্রবেশি' তটিনী-নীর # 8:

**দো**—ভূণে আর্ভ

শ্রামলা ধরণী উদয়ে বেমন নাহি দেখা যায় পন্থ। লোপ পাহ সদগন্ম ॥ ১০

ভণ্ড-মতবাদ উদয়ে

চৌ—মধ্র দাহর-রব চারিদিকে অন্থ-খন।
নব কিশলয়-নাজে সাজিয়াছে তরুদল।
অর্ক \* জবাসা এরা পত্র হারা'য়ে দীন।
খূলি আর ধরাপরে নাহি মিলে সন্ধানে।
শত্তে সাজিয়া ধরা সেই মত স্থুশোভিত।
রজনীর ঘন-তমে খন্ডোত শোভাপায়।
ক্লেত্রের বাঁধ ফুটে ধারা-বরবার জলে।
ভানী যণা ত্যাপ করে মদ আর মোহ মান।
ভক্রবাক্ পাখী আর চ'খে নাহি দেখা বায়।
উবরে প'ড়েও বারি তৃণ নহে উদ্গত।
বিবিধ প্রাণীতে ধরা সেইমত শোভমান্।
পথিক স্থাগত-গতি হ'য়ে যথাতথা রয়।

মন লোপ পার সদ্প্রন্থ ॥ ১৪
বেদপাঠ করে যেন মিলি যত যতিগণ ॥
বিবেক সাধক-মন যথা করে ঝলমল ॥ ১
স্থ-রাজার রাজ্যে খল যেমন উদ্ভমহীন ॥
ধর্ম ল্কায় যথা জোধরিপু আগমনে ॥ ২
উপকারী মানবের সম্পদ যেইমত ॥
দন্তীর দল যেন গড়িয়াছে সম্প্রদার ॥ ৩
নন্ট যেমন হয় নারী স্বাধীনতা পেলে ॥
নিড়ায় তেমনি ক্ষেত কৃষিদল মতিমান্ ॥ ৪
কলিযুগ-সঞ্চারে ধর্ম্ম যথা লোপ পার ॥
ভক্তের জদে কাম উপজেনা যেইমত ॥ ৫
বেমন স্থ-রাজ পে'লে গ্রেজা হয় বর্দ্ধমান্ ॥
জ্ঞানের উদয়ে যথা ইন্তিয়-দশা হয় ॥ ৬

কো---ছারথার করি' কু-ভনয় কুলে কথনো দিবলে ছুচে পুনঃ জাগে জলদ-পটল উদিলে বেমন ঘোর আঁথিয়ার জ্ঞান বেই মত কভু বারু বেগে বর। ধরমের নাশ হয় ॥ ১৫ (ক) কভু ভাতে দিবাকর। অ্-কু-সঙ্গ ক'রে ভর ॥ ১৫ (ব)-

(b)—বরষা অতীত এবে শরতের আগমন।
ফুল কালের ফুলে ধরাতল আরত।
সমৃদিত ছায়াপথ জলেরে করে শোষণ।
সরসী তটিনী-বারি নির্মাল শোভাময়।
তকায় সরসী নদী সেই মত ধীরে ধীরে।
শারৎ এসেতে জেনে' ধঞ্জন আলে ফিরে'।
নাহি ধূলি কর্দ্ধম শোভে বস্ত্মতী হেন।
জল-সল্লোচে মীন সেইমত আকুলিত।
মেঘহীন নির্মাল শোভি'ছে শরদাকাশ।
কোধাও বা মৃত্ লম্মু শারতের বরষণ।

কিবা মনোহর শোভা দেখ দেখ লক্ষণ ॥
প্রাবৃট্ আপন জরা খেন করে প্রকাশিত ॥ ১
সন্তোব আগি' যেন লোভেরে করে ছরণ ॥
অপগত মোহমদ সাধুর যেন জ্বদয় ॥ ২
জ্ঞানিজন মমভারে বেইমত ভ্যাগ করে ॥
পুণ্য যেমন কিরে' আসে ওড-অবসরে ॥ ও
স্থনীতি-নিপুণ রুপজন-আচরণ যেন ॥
বিবেক-বিহীন গৃহী ধন বিনা বেইমত ॥ ৪
লোভে যথা ভক্তেরা পরিহরি' সব আশ ॥
আমার ভক্তি যথা লভরে বিরল জন ॥ ৫

(ব)-হরবিত চলে হরির ভক্তি

পুরী ছাড়ি' যোগী লক্তি' বথা ভাজে

বণিক নুপ ভিখারী। শ্রম আশ্রমী চারি। > >

**টৌ—সুবে** রতে সেই মীন অগাধ জলে বে রয়। হরির শরণে যথা কোন বাধা নাহি রয়॥ श्रृति' मन मंडमन विड्रात सुवमा उपा। का मधुलकुल मुक्त । करूलम। চক্রবাক ছবে ভাসে বামিনী আগত দেখি। চাতক ফাটায় গলা ভূবা ডা'র অভিশন্ন। শরৎ-আতপ-ভাপ শশী হ'রে লয় রাতে। নির্থিয়া শশধর চকোরেরা সেইমত। সশক দংশক যত নষ্ট হিমের ভরে।

ব্ৰহ্ম রহিত-গুণ সগুণ হইলে যথা। ১ মুন্দ র ধর্গ-রব নানা শ্রুতি-মনোরম। পর-সম্পদ হেরে বেমন কু-জন ত্থী ॥ ২ শঙ্কর-জোহী যথা কড় সুখী নাহি হয় 🛭 যথা পাপ কেটে যার সম্ভের সাক্ষাতে॥ ৩ হরি পেয়ে ভক্তেরা চে'রে রয় যেইমড। कुलनाभ दर यथा विधा-त्यारहत जाता ह

শে-বরবার-জাত সংশয় ভ্ৰম

জীব ছিল যভ অপুগত যেন

শরতে পেয়েছে নাশ। সংগ্ৰহ পে'য়ে পাশ ॥ ১৭

च्योरवत छेभन बिनारमन चमरखाय ; नकारभन द्वाध

টো-বর্ষা অভীত হ'ল নিশাল ঋত এ'ল। কোন মডে একবার যদি সন্ধান হয়। दिशासिके थाक जीका यकि खारन द्वैंक बा শুভি'খন শুভি'পুরী বনিতাও রাজাসন। ৰালিরে যে-শরহায় পাঠা'মু সদনে কাল। বাঁহার কুপায় উমা মোহ মদ খুচে যায়। मुनि छ्यानी बाम-পদে मैं(भ' ह्वन याँ बा मन। বুঝিলেন লক্ষ্মণ ক্রোধযুক্ত ভগবান।

অখনও নাহি ভাভ সীভার বারভা এ'ল 🛭 নিমেব মাঝারে আনি কালেও ক'রেবিজয় । > যতন করিয়া ভাত আনি ভা'রে নিশ্চয় ॥ স্থগ্রীব মোর কথা হইয়াছে বিসরণ॥ ২ সেই শরাঘাতে মৃচে বিমাশ করিব কাল ॥ স্বপনেও তাঁর ফোধ কখনো কি ভাবা যায় 🕪 তাঁ'রাই জানেন দীলা প্রভুর ইহা (কমন। ধমুতে চড়া'য়ে জ্ঞা লইলেন করে বাণ ॥ ৪

(प)-वर्ष उपन

বুঝা'লেন রাম

করণার পারাবার। স্থ্ৰতীৰে একবার **।** ১৮

ভয় দেখাইয়া হেথা আন' তাত (5)--- अमिरक প्रवन-श्रुष्ठ मरन मरन ठाडिन। সমীপে করিয়া গভি স্থগ্রীবে প্রণমিল। ন্তনি' সব স্থাীবের ভয়ে ভীত হ'ল প্রাণ। এখন প্রন-স্থুত না করিয়া কালক্ষ্ম। ৰ'লে দাও পক্ষ মাঝে বেবা কিরে' না আসিবে। আমার করেতে তা'র নিশ্চিত প্রাণ যা'বে 🛭 এ ওনিয়া দুঙগণে ডাকাইল হনুমান।

শ্রীরামের দেওয়া কাজ স্থগ্রীব পাশরিল # সাম দান ভেদ দও-নীতি কহি' বুঝাইল ঃ ১ ক্ষে বিষয়েই মোর হ'রে নিল সব জ্ঞান **৷** পাঠাও সকল দিকে কপি-সেনাইসমুদয় ৮২ সকলের প্রতি করি' বছবিধি সম্মান 🛭 ৩

<sup>👂 💐</sup> है बिव कि नाक कविया छोति विव, जालको (वशन गावन-कनिक পरिलाग गरिकान करवन, मिर्क वर्षाह व्यक्त महर क्ष्मु मारेंबा, बांके, क्षमंत्री, वनिकृ, क्षिवाडी---मक्टन्टे निक निक भूगे (बाधवृष्ट्य) काम करिया वाहिब ब्हेरकाइन। विशेषा

ভীতি-প্রদর্শন আর প্রীতি-নীতি দেখাইল। হেন অবকাশে পুরে আসিলেন লক্ষণ।

চরণে করিয়া নতি সকলে ভবে চলিল 🛚 क्तांथ (इति' कशिष्ण मत्य करत भगायन ॥ 8-

**(मा—शब्र के**ठारेया

হেরিয়া সবারে

ক'ন ভবে পুরী অভীব ব্যাকুল

দ্রিয়া করিব ছার। আসেন বালি-কুমার II ১৯

(5)-চরণে নমিয়া শির করিলেন স্থাতিবাদ। ক্রোধ-যুক্ত লক্ষ্মণ প্রবণ করিয়া কাণে। হতুমান কথা শুন ভারারে সাথেতে ল'য়ে। ভারারে সাথেতে ল'য়ে গিয়া তবে হনুমান। মিনতি করিয়া কত মন্দিরে আনে তাঁরে। তা<sup>3</sup>র পর কপিরাজ চরণে করে নমন। বলে বিষয়ের সম মদ কিছু নাচি নাথ। মিনতি প্রবণ করি' সুখেতে মগন মন।

লক্ষ্মণ অভয় দেন তুলিয়া আপন হাত ॥ কহিলেন অভিশয় সন্ত্রাস-ভরা প্রাণে 🛭 🤉 কুমারে মিনতি করি' এখনি বুঝাও গিয়ে # বন্দি' চরণ তাঁর স্থক্ত করে যশোগান। ২ धुशा'रत्र চরণ यूग वनात्र भवन 'भरत ॥ লক্ষণ হাত ধরি' করিলেন আলিঙ্গন ৮ ৩ মুনির(ও) মনেতে কণ-মাঝে হয় মোহ-পাত ▶ ভাহারে অনেক ভাবে বুঝা'লেন লক্ষণ ॥ ৪

#### জীরাম-স্থার-সংবাদ

(प)-- हिनन इत्रय

লক্ষণে আগে

স্থঞীব ডবে করিয়া সকলে

जलन जानि माथ। যায় যথা রখুনাথ ॥ ২•

🕩 —চরণে নমিয়া শির কহে করি' করজোড়। তে নাথ ইহাডে কিছু অপরাধ নাহি মোর 🛭 ছে দেব ভোমার মাহা প্রবল নিরভিশয়। সবাই বিষয়-বশ' স্থর নর মুনি স্থামি। ब्रम्बी-नग्रनभत द्यहेक्टन नाहि नार्थ। গলায় লোভের ফাঁদ নাহি পরে যেই জন। কেবল সাধনা-বলে এগুণ না পাওয়া যায়। ভখন জীরাম ক'ল বদনে ঈষৎ হাসি। সে যভন কর দরা দিয়া সবে প্রাণ মন।

তুমি যদি দয়া কর ভবেই তা' দূর হয়। ১ আমি ত পামর পত বানর চরম কামী॥ चात्र ক্রোধ-ভমোনিশি-মাঝে যেবা সদা **জাগে ॥**২ সে ড'ভবে ডব সম ওহে প্রভু সনাতন। ভোমারি করণা-বলে কোন কোন জন পায় 🛚 ৩ অমুক্ত ভরত সম তোমা আমি ভালবাসি 🛚 জানকীর ওত্ব যাহে এবে হয় নিরূপণ । ৪

## সীভার সন্ধালে বানর-সৈক্ত প্রেম্বণ

পো—হ'তেছে এ ভাবে বিবিধ বরণ

ক্ৰোপক্ৰম य मिरक्रे (रूत व्यक्तिन वानव्रश्रम । ख्या कृषि श्रेश्वगन ॥ २)

চৌ-ভবানি বাদর সেনা করিয়াছি দরশন আসি' শ্রীরামের পদে প্রথমে বানরচয়। কপি-সেনা মাঝে ছেন না রহিল একজন **८**। छुद्र निक्ष्ठे किছू मञ्जवहीन नद्र।

मूछ (म छ। रावद त्यवा कविरक हारह शवन ! চাहिया त्म कल्बरम क्कोर्च र'रव अग्र ॥ S याश्रीत कूमण अभ ना कृतिना विकासन ! বিশ্বরূপ শ্রীরাম ধ্যে ব্যাপ্ত ক্লপ্তসন্মা। ২

च्याका भारेया यथा जवा मत्व मांखारेग। रेश जीवारमर्व काक जात त्याद अल्बन । - অনক-ছহিতা সীতাদেবী কর' উদ্দেশ। প্রণাদিন-পরে বেবা আসিবে হ'রে বিফল।

ভাদিগে সকল কথা সুগ্ৰীব বুঝাইল 🛭 करण करण ठावि किरक यां छ। वा नव्हा ॥ ० মাস-গতে সবে ভাই আসিৰে করি' বিশেষ 🛭 মরণ আমার করে জেনে' রেখ' অবিকল । ৪

(पा-एनिया चारम স্থগ্ৰীৰ ডবে

কপিরা চলিল ডাকা'লেন নল पत्रा ठाविभिक शास्त्र । व्यक्त रहमादन । २२

८६)-- ७न नीम अम्म ७न वीत दश्मान। -मार्व वीत्र-धूत्रक्षत या छ मक्तिन भारत । कांत्र मन कारतराज छेलाय केवह चित्र। ভান্থ-দেবা পৃষ্ঠধোগে বক্ষথোগে হুডাশন। শায়া ছাড়ি' করিবারে হয় দেবা পরলোক। কলেবর ধারণের এই গুভ পরিণাম। সেই সব-গুণজ্ঞাত। বড় ভাগ্যবান সেই। আদেশ করিয়া জিক্ষা চরণে নমিয়া শির। সকলের শেষে পায়ে নতি করে হনুমান। পরশ করেন শিরে সহ সুরোক্তর পাণি। करहम প্রবোধ দিও বহু ভাবে জানকীরে। জনম সফল হ'ল মনে ভাবে হতুমান। যদিও প্রভুর পাশে কিছু নহে অজানিত।

পাসুবান ধীরমতি স্ফুচ্ছুর জ্ঞানবান্। मी**जा**त উদ্দেশ-कथा **७**थां व मकन करन ॥ ১ যা'তে নির্বাহ হর কাজ রাম রশ্বীর नर्त्वछार्य थ्राञ्च-रन्यः इन कत्रि' वत्रक्रन ॥ ३ যাহাতে মিটিবে সব সংশয়-ছাত শোক। সকল কামনা ছাডি' আরাধনা করা রাম ৫ ৩ 🕮রাম-চরণ 'পরে অমুরাগ-বৃত্ত যেই।। -हिन रुत्र खर्ज खर्म धनि त्र त्रू वौत्र ॥ ८ কার্য্য-বিচার করি' নিকটে প্রভু ডাকান ॥ অঙ্গুরী খুলি' দেন আপন ভকত জানি'॥ ৫ মোর বল আকুলতা কহি' ছরা এল ফিরে ঃ চলিল खपत्र मात्य ताथिया कुलानिशन । ७ ডবু রাজনীতি তা'র হইতেছে আচরিত। ৭

**ডো**—চলে আলোড়িয়া জীরামের কাজে

কানন সরিত ভশ্বর মন

भूँ एक नमी श्रहा शित्रि। দেহ-বোধ বিশ্ববি' ৷ ২২

#### তপ্রিনীর সহিত বাদরগণের সাক্ষাৎ

<ि । করে তান রাক্ষণ সনে দেখা হ'য়ে যায়। করে তা'র প্রাণ নাশ এক এক চপেটায় । কভই প্রকারে খুঁজি' সবে গিরি কান্ধারে। পুঁ জিবার প্রম-ভারে ছাতি ফাটে পিপাসায়। হুতুমান নিজ মনে করিল এ অধুমান। चार्ताहिं कुथत-मिरत ठातिमिक भारत ठात्र। -छेफि'एए मत्राम वक ठक्कवाक ठाविशादा । প্ৰবিভ চূড়া হ'তে হয়ুমান নেমে' এ'প। সব কপি হতুমানে স্থাপি' নিজ পুরোদেশ।

(मथा (भारत कोन मूनि मार चिता वाम का'ता 1) ঘন বনে পথ ভূলে জল নাহি পাওয়। যায়॥ **এवात्र मतिरव मरव ना कतिया वक शान ॥ २** কৌতৃক এক ভূমি-বিবরে দেখিছে পায়॥ প্রবেশ করি'ছে বছ বিছপেরা সে বিবরে ॥ ঙ সবারে লইয়া গিয়া সে-বিবর দেখাইল চ विमय ना कति' करत विवत भारत धारवण ॥ 8

**দো**—গিয়া হেরে সর মন্দির এক

বর-উপবন ক্লচির তথায় বিকশিত বহু কঞ্চ। বসি' নারী তপ:পুঞ্জ 🛚 ২৪

(b)- मृत इर्फ मृत्व जां'त छेत्माम थामिन। ক্তিলেন তবে তিনি কর সবে জলপান। মত্ত্রন করে সবে সুমধুর ফল খার। তখন সে তপ্ৰিনী শুনান আপন কথা। নিজ নিজ আঁখি মৃদি' এ বিবর ভ্যাপ কর। মুদিল নয়ন সবে খুলিতে হেরিল বীর। ভপ্রিনী যা'ন ভবে যথা রাম রছুনাথ। নানাভাবে করিলেন মিনতি ও স্তুতিগান।

ওধাইতে আপনার বিবরণ নিবেদিল ॥ সরস স্থার নানা ফলেতে জুড়াও প্রাণ । ১ নারীর নিকটে পুন: সকলে মিলিয়া যার। ক্ৰেন বাইব এবে জীৱাৰ আছেন ব্ৰা ঃ ২ পা'বে সবে জানকীরে প্রাণে ছখ নাহি কর # র'য়েছে সকলে মিলি' দাঁড়া'য়ে সাগর-ভীর 🛚 🕹 গিয়া পদ-শভদলে করিলেন প্রণিপাভ **৷** দিলেন ভাঁছারে প্রস্তু অবিচল প্রেম দান ॥ ৪

(म)-शकुत व्यारमम জনয়ে রাখিয়া

ধরিয়া মাথায় অজেশ-পুঞ্জিত (शर्मन यमनी-यन। **এ**রাম বৃগ-চরণ ॥ ২৫

#### বানরগণের সমুজভটে গমন

(b) — এपिटक वानत्रशंश कार्य कटत विठात । সবে মিলে' এ উচারে এ কথাই কহে ভা'ই। নয়নেতে ভরা জল অঙ্গদ বলৈ ভবে। এদিকে সীতার কোন উদ্দেশ নাহি হার। আমারে মারিত সে ড' পিডার নিধন-পরে। বার বার অঙ্গদ কহে এই স্বাকায়। व्यक्रम-(थमवानी श्वरम मत्व किनिवेत । এক পল ভবে সবে চিস্তা-মগন রয়। না করিয়া সমাপন সীতা-উদ্দেশ-কাজ এত বলি' লবণামু-সাগরের ডটে গিয়া। काश्यान व्यक्रम-(थम कति' मत्रभन । হে ভাত রামেরে কভুমানব ভে'বোনা যেন। ব্রহ্ম অ-গুণ অঞ্জ অঞ্চেয় বলিয়া জেন'॥ ৬ সেৰক আমরা সবে অতি মহাভাগ্যবান ।

দো-শ্বে-চ্ছার প্রস্থ

স-প্রণ-সেবক

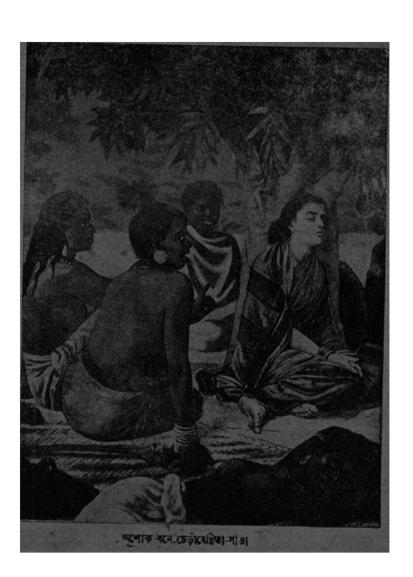
আসিলেন স্থ্র সাথে সেবা-রড

গণাদিন ব'য়ে গেল কাজ নহে উদ্ধার ॥ বারতা না পাই যদি কি হ'বে তখন ভাই ॥ ১ বুঝিভেছি ছু'য়েডেই অমািরে মরিভে হ'বে 🛭 अमिटक कितिया (ग'ल मातिरव वानत-ताय ॥ > ভাহার দ্যায় নহে রাম রাখিলেন মোরে : মরিভেই হ'বে কিছু সংশয় নাহি ভা'য় ॥ ৩ ভাষা নাহি আসে মূপে নয়নেতে বহে নীর 🛭 ভা'রপরে একযোগে এই কথা সবে কয়॥ ৪ কখনো যা'ব না ক্ষিরে' হে প্রবীণ ব্বরাজ ॥ বসিল সকলে মিলি কুশদল বিছাইয়া॥ ৫ ক্তিল বিশেষ ভাবে উপদেশে এ বচন ॥ त्म म-खब उम्म-भरम में भिग्नाहि मनद्यान । १ ধরা বিজ ধেরু লাগি'।

রছে যোক্ষেরে ভ্যাসি'॥ ২৩

जन्माक्ति जविक वानत्रगर्वत करवाभक्वन

কৌ—এইভাবে জামুবান ক'ল কথা নানা ভাঁতি। আলোচরা-শুনে গিরি-কন্দরে সম্পাতি । ভাবে মোর পাঠা'লেন খাত জগদীখর # ১ বাহিরে আসিয়া হেরে বসিয়া বছ বানর।



वह पिन गछ ह'न व्यान वाय छनवारम । क्षरना ना शांद्रशा यात्र छेमद्र छदि । वांडाद । শকুনির কথা কাণে আসিতে ভয়েতে সারা। ৰূপিরা দাঁডা'য়ে উঠে হেরিভেই সম্পাতি। অঙ্গদ নিজ মনে বিচার করিয়া কয়। **প্রিরামের উপকারে ওন্ত করি' বর্জন।** শুনিয়া বিছগ এই শোক-হর্ষ ভরা বাদী। সবারে অভয় দিয়া কাছে গিয়া গুধাইল। मण्याजि अनि' निक महामत-व्याहत्रम् ।

ু সবারে ধাইব আজ মিটা'য়ে মনের আশে 🛭 আজিকেই দিল বিধি সে আহার একবার 🛚 ২ এবার আমরা সবে সভ্য গেলাম মারা॥ জ্ঞান্ববান-মন মাঝো চিন্তা বিশেষ অভি ॥ ৩ আহা জটায়ুর সম ধশ্য কেহই নয়। হরি-পুরী পুণাবান করিল গোজা গমন # 8 আসিল নিকটে ভয়ে উডিল কপির প্রাণী। ভথন বারতা সবে সম্পাতিরে শুনাইল। ৫ রামের মহিমা করে বক্তবিধি বরণন 🛚 ৬

(प)-न'रत्र हन त्यादत বদলে হইব

সাগর-কিনারে বচনে সহায়

তর্পণ করি ভার। পা'বে খোঁজ কর যা'র ॥ ২৭

চৌ-অফুজের ক্রিয়া শেষ করিয়া সাগর-ভীরে। আপনার কথা কহি ওনাইল কপিবীরে॥ करह स्कन वीद्रशन व्यथम-रयोवरन छूटे। না পারি' সহিতে তেম্ব করি প্রতি-আগমন। পক্ষ দহিত হল সূর্য্য-তেক্তে অপার চক্রমা নামে এক মুনি মহা সদাশর। আমারে জ্ঞানের কথা কহিলেন কড মড। ত্রেভার ত্রাক্ষর হ'বে মানব-রূপ ধারণ। পাঠা'বেন তবে প্রস্তু তাঁর উদ্দেশে চর। আবার গলা'বে পাথা ভাবনা ক'রো না মনে। চন্ত্ৰমা মুনি-বাৰী সভ্য হইল আৰ । লক্ষা বিরাজ করে ত্রিকুট-গিরির <sup>2</sup>পর। ভাহার মাঝারে যথা বিরাজে অশোক বন।

ভাই মিলি' একবার তপন-সমীপ হই ॥ ১ অভিমানী আমি করি তপন-পাশে গমন 🛚 পড়িন্ন ধরণীতলে করি' ছোর চীৎকার ॥ ২ আমারে হেরিয়া তাঁ'র দয়া আদে অভিশয়। দেহ-অভিমান মোর করিলেন বিদুরিত 🛭 🗢 রাবণ তাঁহার নারী করিবে অপহরণ 🏻 ভাহাদের পে'য়ে পুভ হইবে বিহগবর ॥ ৪ সীভাৱে দেখা'য়ে দিও তুমি সেই চরগণে ॥ আমার বচন মড কর সবে প্রাভূ-কাজ ॥ ৫ তথায় রাবণ রহে অভাবত বিনা ডর ম সে বলে বসিয়া সীডা শোকে র'ন অমু'খণ ॥ ৬

**খে-**নামি হেরিভেছি স্থবির এখন

না ছের ভোমরা নহে করিডাম

শকুন-দৃষ্টি অপার। কিছু কাজ স্বাকার । ২৮

কৌ-শভিষৰে যেবা এই সাগর শভ যোজন। त्यात्र व्यक्ति ग्रंहि' मत्य समरम् वाँधह बीत । भार्श-त्रक बन(क) विक्रि प्रत्र कार्रात नामन दर्भाषता के कां ब पूक शरेब जानदी हु असूर्र

ক্রিবে সে মতিমান র্মি-কাজ সমাপন ॥ রামের কুপায় কিবা ইইল মন শ্রীর 🛭 ১ র্মপার ভবের পারে যায় সেই ভাগ্যবীন ॥ श्रप्तत्र ह्रांशिया ब्राटम क्वर मध्य यखन ॥ २

#### সমুদ্র-লভ্যনের মুক্তি

হেন কহি' খগরাজ গুঙ্র চলিয়া গেল। আপন আপন বল করিয়া সবে জ্ঞাপন। স্থবির হ'য়েছি এবে কহিতেছে ঋক্ষেশ। বামন-রূপেতে যবে আসিলেন খর-অরি। বানরগশের মনে বিস্ময় অভি এল 🛚 লভিয়তে পারাবার সন্দেহে দোলে মন ॥ ৩ নাহি আর এ শরীরে পূর্ব-বলের লেশ। তখন ভরণ আমি দেহে মোর বল ভারি॥ ৪

দো-বলিরে বাঁধিতে আমি কিন্তু ভবে প্রভূ-ভমু কভ সাত বার পাক্

বাড়িল কে ভাহা বলে। লাগা'য়েছি ছুই পলে॥ २৯

#### ভাষবাদের হমুমানকে উৎসাহিত করণ

(5)—অঙ্কদ বলে আমি থে'তে পারি হ'য়ে পার। তবে সন্দেহ প্রাণে হয় কালে ফিরিবার॥ জাস্ববান্ বলে তুমি যোগ্য সকল ভাবে। ঋক্ষেশ বলে কিবা বল তুমি হতুমান। প্রন-ভনয় ভূমি প্রন-সমান বল। এজগতে কোনু কাজ কঠিন আছে এমন। রামের কান্ধের ডরে হ'ল তব অবতার। কনক-বরণ তমু তেজ-ছটা উপচিত। করিল প্রনম্বত সিংহনাদ বার বার। যতেক সভায় সনে রাবণে করি' হনন। এখন হে জাত্ববান শুধাই শুধু ভোমারে। ভাত তুমি এই কর কহে তবে ঋক্ষেশ। त्राजीव-त्माहन ७१व (एवाहर७ कुक्ववम ।

কিন্তু নায়ক তুমি সেহেতু কেমনে যা'বে॥ ১ নীরবে বসিয়া আছ কিবা ওহে বলবান॥ বুদ্ধি বিবেক আর অমুভবে নাহি ডল 🛚 ২ অক্ষম তুমি যাহা করিবারে সমাপন ॥ 🖰 নিভেই দেহ ভা'র ধরিল ভূধরাকার ॥ ৩ সকল গিরির রাজা সুমেরু-সম শোভিত। হেলায় লবণ-অমুরাশি আমি হ'ব পার॥ 8 আনিব হেথায় করি' ত্রিকৃটেরে উৎপাটন ॥ यथायथ व'ला पां कि कतिए ह'त प्रांत ॥ १ সাক্ষাৎ সীতা সনে করি' আন সন্দেশ ॥ কৌতুক ভরে সাথে ল'বেন বানর দল॥ ৬

ছ-কপি সেনা ল'য়ে স্থর-মুনিগণ

যা' শুনে' যা' গেয়ে'

ব্দানকীরে রাম ত্রিলোক-পাবন कहिएय वृत्थिएय

व्यानित्वन किरत तकः नामि'। গাবেন রামের ভ্যশ-রাশি॥ সেই পরা-পদ মানব পায়।

ভাহে রঘুবর-

সিদ্ধ ভা'দের

চরণ ভ্রমর

কিন্ধর এই তুলসী গায়॥

#### এরাৰগুণ-নাহাম্য

বের ভেষ

রঘুনাথ-যশ সব মনোরথ अनित्व (य नद्रनादी । করিবেন ত্রিশিরারি॥ ৩০(क)

€সা---নীলোৎপল-ভত্ন খাম শুন জা'র গুণগ্রাম

কোটি কাম হ'তে শোভা অধিক। ষাঁর নাম অহ-থগে বধিক 🛭 ৩০(খ)

कविष्यां ममस्य भागभरः मकादी अवागवित मान्यमत अहे व्यूर्व मान्यन ममास्य हहेन ।

(কিবিব্যাকাও সমাধ্য )

#### প্রীগণেশার নমঃ

#### ঞ্জিলকীবছভের জয়

# শ্রীরামচরিত মানস

# পঞ্চম সোপান

## স্থুন্দরকাণ্ড

ক্রোক—শান্ত ও সনাতন অপ্রমেয় পাপহীন বেদান্তের অধিগম্য সর্বগত অনীশ্ব রাম-নামে অভিহিত জগদীশ সুরগুরু কুপাকর রব্বর নুপতির চূড়ামণি সত্য কহি রব্নাথ নাহি হাদে অক্স আশা হে রঘ্-পুক্র দেহ অনক্স-ভক্তি তব অত্লিত-বল-ধাম হেম-শৈল-আভ দেহ রঘ্নাথ-প্রিয়েউক্ত সকল গুণ-নিধান নির্বাণ-পরমা শান্তিদাতা
শস্তু-শেধ-দেবিত বিধাতা।
মায়া-নরকায়াধারী হরি
বন্দনা চরণ যুগ করি ॥ ১
আর অন্তরাত্ম। তুমি অধিল ভূবন।
আর কাম-আদি দোষ শৃক্ত কর মন ॥ ২
দৈত্যবন-অগ্নি সম জ্ঞানী-অগ্রগণ্য তুমি।
কপিনাথ বাধ্-স্ত ভোনাবে প্রশমি আমি॥ ৩

#### হতুৰানের সাগর-লঞ্চন

Cb) — জাহবান্ মৃথ হ'তে নি:স্ত স্থ-বচন।
হস্কর মোর আসা-পথ চেয়ে ততকণ।
যতকণ পুন: নাহি ফিরি হেরি' জানকারে।
এত বলি' সবাকার চরণে নমিয়া শির।
সাগরের তটে ছিল গিরি এক স্কলর।
বার বার রখুবীরে হাদয়ে করি' খারণ।
যে স্থার পারে পাল দের হস্থ বানরেল।
বেমতি অনোম অতি রাম্মের করের বাণ।
বীরামের ভূত বলি' নাগরে মনে বিচারি'।

পবন-মৃত্তের লাগে অতি প্রাণ-বিমোহন ॥
রহ ভাই সহি' ক্লেণ ফল করি' ভক্ষণ ॥ ১
হ'বেই নিশ্চর কাল প্রাণ মম সুখে ভরে ॥
ফলয়ে স্মরিয়া রামে যায় হমুমান বীর ॥ ২
কৌতুক ভরে হয় আরোহিল তত্তপর ॥
তখন বিপুল বলে দিল এক লক্ষ্ন ॥ ৩
প্রবল বেগেতে ভা্ছা পাভালে করে প্রবেশ ॥
তখনি ভাবেতে কভে বায় বীর হয়ুমান্ ॥ ৪
মৈনাকে কৃহে এবি ছও ভূমি আমহারী ॥ ৫

পোল্ডখনান্ ভাবে ক্ষেত্রাম্কার করিয়া পদ্ধ সমাপন বিনা করিল পুনঃ খ্রণাদ । কোবা মম বিশ্লাম ॥ ১

#### হ্লুমান-সুরুলা সাক্ষাৎকার

চৌ—প্রধাবিত হয়্মানে দেখে যত দেবগণ।
নাগ-মাতা স্থরদারে-সবে মিলি' পাঠাইল।
দেবগণ দিলা মোরে দয়া করে' স্থ-মাহার
সাথি' শ্রীরামের কাজ কিরে' আসি' একবার।
প্রবেশ করিব তবে তব মুখ-বিবরেতে।
ভাহার মিনতি যবে কোন মতে শুনিল না।
যোজন ব্যাপিয়া নিজ বদনেরে প্রসারিল।
স্থরসা বাড়া'ল মুখ যোড়শ যোজন ধরি'।
যেমন যেমন মুখ স্থরসা বাড়া'য়ে যায়।
করিল যোজন শত মুখ যবে আপনার।
বদনে প্রবেশ করি' আসিল পুন: বাহিরে।
কচে তবে পাঠাইল। দেবগণ যে কারণে।

করিতে ভাহার বল-বিবেচনা নিরূপণ ॥
হর্মান্-পাশে গিয়া এইমত শুধাইল ॥ ১
ভাহার বচন শুনি' কহিল বায়ু-কুমার ॥
প্রভুরে প্রাদান করি জানকীর সমাচার ॥ ২
সভ্য করিয়া বলি এখন মা লাভ যেতে ॥
হর্মান্ কহে মোরে গ্রাস যেন করিও না ॥ ৩
বিশুণ বানর তা'র নিজ ভয়ু বাডাইল ॥
বিজেশ করে হয়্থ নিজ ভয়ু বিশুরি' ॥ ৪
ভাহার বিশুণ দেহ ধরে হয়ু কপি-রায় ॥
অমনি করিল হয়ু অভি লঘু দেহাকার ॥ ৫
বিদায় যাচিল ভা'রে প্রশুভির অন্তরে ॥
পাইলাম পরিচয় সেই বল বুদ্ধি শুণে॥ ৬

দ্যো—হ'বে ভোমা হ'তে
দিয়া আশীৰ্বাদ

রাম-কাজ সব যায় চলি' প্রীভ তুমি বৃদ্ধি বল-ধাম। হ'য়ে চলে হনুমান॥ ২

(5) — দিকুব মাঝে এক রাক্ষ্মী করে বাস।
জন্ত জীব যে সকল উড়ে অত্বর 'পরে।
ছায়ারে ধরিয়া লয় উড়িতে না পারে আর।
প্রন-স্থতের 'পরে প্রকাশে সে এই ছল।
ভালারে করিয়া বধ প্রন-তন্ম বীর।

মায়া রচি' উজ্জীন বিহণে দে করে গ্রাস ॥
অল-মাঝে ভাহাদের দেহ-প্রভিরূপ হেরে' ॥ >
এ ভাবে গগন-চরে করে সে সদা আহার ॥
ভাহার এ চতুরভা বুঝে কপি অবিকল ॥ ২
অবশেষে ধার মভি পারে গেল বারিধির ॥

## नदा-वर्गन, नदिनी वथ, बसुभारमञ्ज नदाञ्च थारवन, नदाञ्च त्माना वर्गन

উত্তরি' হেরে হমু পরম কানন-শোভা। বিবিধ পাদপ তথা কলে মুলে শোভাময়। বিশাল ভূধর এক করি' আগে দরশন। কপির মহিমা এতে নাহি উমা শিব ক'ন। শৈল-উপরে উঠি' লক্ষাপুরী নেহারে। ভূক অতীব ভাহা অকনিধি চারি পাশে। মধুলোভে গুঞ্জরে মধুকর মনোলোভা ॥ ৩
খগ মৃগ দরশন করি' মনে সুখ হয় ॥
ভয় ত্যাগ করি' ফেভ করে তাহে আরোহণ ॥ ৪
প্রভুরই প্রতাপ গুধু কালে করে বিনাশন ॥
দুর্গ প্রকাণ্ড এত কহিবারে ভাষা হারে ॥ ৫
অধি-প্রাকার ভাবি চাকে বিভা পরকাশে ॥ ৬

| ভূ—কনক প্ৰাকাৰ | শোভার আধা  |
|----------------|------------|
| মু-পথ বাজার    | গলির বাহার |
| গব্দ অখন্তর    | বাজি পদচর  |
| ৰছ রূপধর       | রক্ষ:-নিকর |

র্গশিমর তাতে বিবিধ হর।
গঠিত সে পুরী কডই তর র
কে গণে তথার রথ বে কছে।
অতি বলধর সৈক্ত হত ৪ ১

| ৰন উপবন-                | বাটিকা কানন   |
|-------------------------|---------------|
| গদ্ধৰ্ব মান্ব           | নাগ স্থর-বালা |
| কোথাও বা মাল #          | দেহ স্থবিশাল  |
| নানা ক্রীড়া-স্থলে      | অক্সমন্ন দলে  |
| কোটি ভীমকায়            | বীর সমুদায়   |
| কোপা পশু নর             | খল নিশাচর     |
| নিশাচরগণ-               | কথা এ কারণ    |
| জ্ঞীরামের শর-           | ভীর্থের 'পর   |
| <b>দো</b> —অনেক প্রহরী- | রক্ষিত পুবী   |
| লঘু-রূপ ধ'রে            | চুকিব নগরে    |

কুণ - দুনেবাবর কি শোভা ধরে।
ক্রপে মুনি মন মোহিত করে।
বিরাম-বিহীন গরক্ষ করে।
আবাহে দশ্বে ভর্জ্জ-ভরে॥ ২
যতনে প্রাহর। দিতেছে পুরে।
অক্ষ ক্ষর্যতর উদরে পুরে।
বিস্তার করি' তুলসী গায়।
দেহ ছাড়ি' গতি পা'বে স্বায় ॥ ১
হেরি' কপি ভাবে মনে।
ঘোর নিশা আগ্যননে॥ ৩

(b) —মশক-সমান হত্ব লঘু-কলেবর ধরি'।
তথন লঙ্কিণী নামে এক ঘোর নিশাচরী।
মর্দ্ম আমার দেখি জানা নাই শঠ তোর।
মৃপ্তি-প্রহার এক হন্তু লাগাইল বলে।
সম্বরি' আপনায় লঙ্কিণী উ/ঠ তবে।
খাতা যবে দশাননে করিলেন ববদান।
কহেন বানর-করে হ'বি যবে জ্ঞানহারা।
তে ভাত কি ক'ব মোর স্কুত ভি অভিশয়।

প্রবিশে পুবীর মাঝে প্রাণে ধরি' নরহরি ॥
বলে কোথা যাও তুমি আমারে গোপন করি' ॥
আমার আহার শুধু জগতের যত চোর ॥
কধির বম'ন টিলি' পডিল ধরনীতলে ॥ ২
কহিল জুড়িয়া কর সভয়ে মিনতি-ভাবে ॥
মোরে ভা'র বিনাশের লক্ষণ ব'লে যা'ন ॥ ৩
তথন জানিস্ মনে দশানন যা'বে মারা ॥
রত্বর রাম-দৃত নয়ন-গোচর হয় ॥ ৪

**জো—**স্বরগের আর হয় না সমান মোক্ষের সুখ যে সুখ পলকে তুলাদতে রাখা যায়। ক্ষণ-সাধু সলে পায়। ৪

(5)—নগরে প্রবেশ করি' কর যাহা কিছু কাজ। প্রদয়ে ধারণ করি' কোশলের মহারাজ। বিষ হয় সুধা তাঁ'র অরিও মিতালি করে। সিন্ধু গো-পদ বহিন্দীতল-আকার ধরে॥ ১

#### হতুমান বিভীষণ সংবাদ

হে গকত কেণু সম মের গিরি লাগে তা'রে।
অতিশর লখুরপ ধরি' তবে হর্মান্।
প্রতি গৃহমাঝে পশি' থোঁক করে জানকীর
কশানন-মন্দিরে করিল পরে প্রবেশ।
হেরিল শর্ম-পরে ত'রে রয় দশানম।
অক্ত উর্ক এক দেখা গেল পুনরার।

বারেক কুপার রাম দরশন দেন যা'রে ॥
পশিল পুরীর মাঝে অরি' জদে ভগবান ॥ ২
অগণন বধা-ভধা ভেরে নিশাচর বীর ॥
দে পুরী বিচিত্র অভি কহিলে না হয় শেব ॥ ০
সে পুরীডে জানকীর নাহি পে'ল দরশন ॥
হরি-মন্দির ভধা পৃথক দেখিতে পার ॥ ৪

**ব্যো**—রামের আযুধ-নব-তুলসীর

অন্ধিত গৃহ বৃক্ষ সেখানে শোভা কহা দাহি যায়। হেরি' প্রীত কপিরায়॥ ৫

(ठी-नदा ७' निगाठत-निकरतत वारम खता। (दशा काथा मासूबन-निवास मानमस्ता ॥ ভর্ক এমনি করে হতুমানু মনে মন। রাম রাম রাম রব বাহির হ'ল বদনে। এঁরই সনে নিজে গিয়া করি ভবে পরিচয়। বিপ্রের রূপ ধরি' ডাকে তাঁ'রে হহুমান। প্রণাম করার পরে কুশল শুধা'ন তা'র। আপনার দরশনে প্রীতি জাগে জদিমাঝে। অথবা কি দীনজনে অনুরাগী নিজে রাম।

করেন এহেন কালে বিভীষণ জাগরণ II ১ ফুল-পরাণ কপি সভলন বৃঝি' মনে॥ সাধু হ'তে কাজ হানি কখনো হ'বার নয়॥ ২ শুনিতেই বিভীষণ উঠিয়া তথায় যা'ন ॥ কহেন বলুন দিল কিবা কাল আপনার॥ ৩ আপনি কি একজন হরির ভকত-মাঝে॥ **শাসিলে** আমারে দেব করিবারে ভাগ্যবান # ও

দো-তখন কহিল শুনি তুঁহু কায়

হতুমান সব রাম-কথা নিজ নাম। পুলক মগন মন স্মরি' গুণগ্রাম॥ ৬

C5)—আমার থাকার কথা শুন বাযু-সুত ওহে। দশন-মাঝারে যথা অভাগী রসনা রহে। ছে ভাত অনাথ মোরে করি' মনে বিবেচন। ভামস এ কলেবৰ কিছুই সাধনা নাই। এতদিনে মনে আশা উদিল হে হনুমান্। ক'রেছেন রঘুবর কুপা যবে মোর 'পরে। হমুকর প্রভু-রীতি শুন ওছে বিভীষণ। ৰলুন ত' আমি কি সে জাতিতে মহাকুলীন। প্রভাতে উঠিয়া যেবা নাম মোর লয় ঠোঁটে।

কখনো কি করিবেন রাম দয়া বিভরণ॥ ১ «সে চরণ-শতদলে প্রীতি মনে নাহি পাই ॥ সম্ভ না মিলে কুপা না করিলে ভগবান্॥ ২ তথনি দরশদান হ'য়ে গে'ছে হঠ্ভরে ॥ ভক্তের 'পরে প্রীতি রহে তাঁর অনু-'খন। ৩ চঞ্চল কপি জাতি সকল প্রকারে হীন॥ সে দিন তাহার আর আহার নাহিক জোটে 18

দো-এমনি অধম ক'রেছেন দয়া তবু শুন স্থা তাঁ'র গুণ স্মরি' মোর 'পরে রখুবীর। নয়নে ভরিল নীর॥ ৭

এই ভাবে বিবরিতে ঞীরামের গুণগ্রাম। তখন সকল কথা কহিলেন বিভীৰণ। 😘ন ভাই 🛛 বঙ্গে হয়ু তবে বিভীষণ-পাশ।

৫১ী—জানিয়াও প্রভু হেন তাঁহারে ভূলে যে জন। ঘুরে ম'রে কেন ছুথে না হ'বে সে নিমগন ॥ ভাষাতীত তৃত্তি পে'য়ে মহাশাস্ত হ'ল প্রাণ॥১ জনক-ছহিডা সীতা যেভাবে তথায় র'ন। জানকী মায়েরে মোর হেরিবারে অভিলাষ ॥২

## **ज्याक्याक्याल जीजादक दम्बिया स्थाप्तिय प्राप्त** ; রাবণের সীভাকে ভয় এখর্ণন

**दम्बात्र छैशात्र अय विक्षीयन व'रम** मिन। পুনঃ গছুরূপ ধরি' করিল তথা গমন।

বিৰায় গ্ৰহণ ক্লি' ইন্নুমান চ'লে পেল 🛚 **जुल्लाक्र-क्रा**जन-मारव जानकी यथाह त'त ॥ ७ হেরিডেই মনে মনে করিল তাঁ'রে প্রণাম। की व उस् नित्त कृत्न कि ।

বসিয়াই কাটে ডাঁরে প্রতি রাতে চারি যাম। क्रवट्य ब्यापन मना जीतात्मत खन-त्रभगे॥ 8

**८मा-**शालन हत्र्र

' লাগা'য়ে নয়ন

রামপদে মন লীন। আনকীরে হেরি' দীন। ৮

উদিল দাকণ

ष्ट्रं रुष्ट्र व्यार्ग

СБ -- বিটপা-পল্লব মাৰে রছিল সে লুকাইয়ে। কি করা এখন যায় এ বিচাব শুধু ছিয়ে॥ হেন অবসরে তথা উপনীত দুখানন। অনেক প্রকারে ধল জানকীরে বুঝাইল। কহিল রাবণ গুন জ্ঞানবতি স্থনয়নি। শপথ তোমার পাশে হ'বে তব অমুচরী। मात्य कुग वावधान बाचि रेवलिशी क'न ●। 😎न मनानन भ्रान त्यानाकोत त्याछि:-धात्व। একথা বৃঝিও মনে আবার জানকী ক'ন। শুত্রে মামারে শঠ করিলি অপহরণ।

সাথে ল'যে নারী বহু করি' নানা প্রসাধন ॥> সাম দান ভয় ভেদ এ সকলি দেখাইল। আছে মোর যতক্ষন মন্দোদরী-আদি রাণী॥ ২ একবার মোর প্রতি চাহ শুধু আঁখি ভরি'॥ দে পরম প্রেমময় শ্রীরামে করি' শ্বরণ॥ ৩ কমলেরে বিকশিত কড় কি কবিতে পারে II রামের শরের কথা হইও না'ক বিস্বৰ্॥ ৪ লাজ নাহি আসে তোর লাজহীন রে অধ্য॥৫

সো-আপনারে শুনি' শুনি' রাচ বাণী

জোনাকীব প্রায় নিকাশি' অসি

তপন-সমান রাম। কতে রোধে দহমান ॥ ৯

(5)—জানকি করিলে তুমি আমার এ অপমান। কাটিব ভোমার শির সহ ভীম এ কুপাণ। विमन्द्र ना कति' नटह स्मरत मुख स्मात वानी। শ্রামল সরোজদাম সম প্রাণ-বিমোহন। এ গলে সে ব'ছ নহে ভোমার কুপাণ ঘোর। সীত। ক'ন চন্দ্রহাদা হর' মম পরিভাপ। নিশিত শীতল অতি ভোমার এ বর-ধার। ममानन विधवादत हुटिं व्यात्म अ कथाय । ৰত রাক্ষসগণে রাবণ ডাকা'য়ে কয়। मारमक छिडरत यनि स्माद कथा नाहि मारन।

नत्र विश्वभूषी श'रव ভোমার জोवनशानि ॥ > कही-कह सम व्यष्ट्र-जुक्कतूश मनानन्। ছই মাঝে এক খল এই শ্ছির পণ মোর ॥ ২ রঘুপতি-বিরহের দারুণ অনল-ভাপ॥ হরণ করহ মম গ্রুপের গুরুজার ॥ ৩ ময়-স্থুভা তবে ডা'রে নীডির ভাষে বুঝায় 🛚 मकरण विविध ভাবে সীভারে দেখাও ভয় # 8 कुभार्भत चांग्र करव छेहारत्र वश्य व्यार्थ ॥ ﴿

(पा-छरान भगन मीजादत स्पर्धात्र

করে দর্শানন নানাবিধ ভয়

टिथा शिभाविनी बुम्म ।

আইস্টিভিড পূক্তবের সৃষ্টিভ বাক্টালাপ করিতে নারীমের বে বাভাবিক লক্ষার ব্যবহাম (বা পর্বা) থাকে, बचाल चारा न्येक्क राविरायं जरकान नारे ; कारे मैंका वैशासक न्यत्न कतिशः, त्यम अवनाहि कृत प्रास्टक सम्बद्ध ( পর্বা ) বছদা বার্ত্তিই, বাবদের সৃত্তিক করা কৃত্তিক আছর করিলেন। 🕴 ভরবারি।

#### भीखा-ति कहे। मरवाम

(5) — ত্রিকটা নামেতে ছিল রাক্ষসী একজন। আপন স্থপন কথা শুনা'য়ে সবারে কয়। স্থপনে হেরে'ছি পুরী বানরে করে দহন। নগ্র লক্ষেশ আর আরেট রাসভ 'পর। এই ভাবে দশানন দক্ষিণ দিকে যায়। নগরে সকলে করে শ্রীরামের জয় গান। দেখে'ছি স্থপন যাহা কহি করি' চীৎকার। শুনিয়া ভাহার বাণী সবে প্রাণে ত্রাস পায়।

বিবেক-নিপুণা সেই রামের চরণে মন # জানকী-সেবায় নিজ হিত কর সঞ্চয়। ১ निमाठत-चनोकिया त्रवादत्र करत्र इनन ॥ মুণ্ডিত শির ভা'র খণ্ডিত বিশ কর ॥ ২ লক্ষার রাজাসন বিভীষণ যেন পায় **।** তা'র পর রম্ববর সীতারে ডাকি' পাঠা'ন ॥ ৩ সত্য হ'বেই হ'বে গত হ'লে দিন চার ॥ সকলে মিলিয়া পড়ে জনক-স্থতার পায়। ৪

দো-করিলে প্রয়াণ মাস গভ হ'লে সকলে তথন নিশ্চয় নীচ

চিন্তা সীতার মনে। আমারে বধিবে প্রাণে ॥ ১১

🖒 — ত্রিকটার প্রতি ক'ন করিয়া তু'কর জোড়। তুমি মা সঙ্গিনী শুধু এ বোর বিপদে মোর 🛭 षता যাহে দেহ যায় কর তুমি দে উপায়। বিরচিত কর চিতা আহরিয়া ইন্ধন। আমার দয়িত-প্রেম সত্য কর কুপা-গুণে। ভনি' কথা পায়ে ধরি' কত ভাবে বুঝাইল। নিশিতে অনল কোথা পা'ব কহ স্থকুমারি।

ত্ত-সহ বিরহ আর মো' হ'তে না সহা ধার ॥ > ভাগতে অনুসুমাতা কর পরে সংযোজন । কহ শুলসম বাণী সদা কাণে কেবা শুনে । ২ প্রভুর প্রভাপ বল যশোগাথা **গুনাই**ল 🛚 এ কহি' ভবনে নিজ চ'লে গেল নিশাচরী ॥ ৩

## সীভা-হমুমান্ সংবাদ

আনকী ভাবেন মনে বিধাডাই প্রতিকৃল। অম্বরে বিরাজিত ওই অসার এত। ইন্দু পাবকময় না ঢালে অনল-ধারা। পুনহ মিনভি মোর ভক্কবর হে অশোক। তর নব-কিপলয় পাবকের সমতুল। অভীব বিরহাকুল সীভারে দরশ ক'রে।

> (मा-कति' किश खनरत्र विठात দিল যেন অশোক অঙ্গার

**(**ठो—प्रविद्या ७४न त्मरे अनुती श्रन्पत । **5কিড হট্টয়া চাহি' রহেন ভারারে টি্নে<sup>ট</sup>।** লে অজের রখুনাথে কে করিতে পারে জয়। **बहै मछ माना कथा छार्यन चानकी मरन।** 

মিলিল না ভ্তাশন মিটিল না হাদি-শুল 🛭 একটাও ভা'রা কই মহী'পরে পড়ে না ভ'॥ 8 এ যেন আমারে বুঝি' চিরছেরে ভাগ্যহারা। নামেরে সফল কর অপহর' মোর শোক।। ৫ দাও বহিন বাড়া'য়ো না আর এ বিরহ-শুল 💵 কল্প-সমান প্রতি'খন কপি মনে করে। ৬ षत्रुती स्कृति' भिन मौंअंद्र। इत्रवि' कानकी निम्न का'ग्र ॥ ১২

🕮 রামের নাম যাহে 🕶 বিত মনোহর 🛚 हत्रय-विशाप वर्ट् महत्र काहात् मुद्धन ॥ ১ মালায় এমন গড়া তাও সম্ভব নয়। ্ৰিট্ৰ উবে ইপুনান মধুন বচন সিনে 🕯 ই

বামচন্দ্র-গুণগাথা মুক্ত করে বর্ণিতে। লাগা'য়ে প্রবণ মন কবেন কথা প্রবণ। শ্রবণের সুধা-সম যে শুনা'লে এই ভাষ। তখন নিকটে তাঁ'র করে গতি হলুমান। জননী জানকি রাম রঘুবব-দৃত আমি। আমিই এ অসুরী সাথে মাতঃ আনিলাম।

শুনিযা সীতার হুখ অপগত চিত হ'তে॥ আদি হ'তে সব কথা শুনায হনু তথন॥ ৩ কেন ভাই সম্পুৰে নাহি হও সুপ্ৰকাশ। পিছন ফিরেন সীতা বিশ্বয়ে ভরে প্রাণ॥ ৪ সত্য আমার ভাষা শপথ জনয়-যামী 🛚 তোমারে এ অভিজ্ঞান পাঠা'যে দিলেন রাম ॥ ৫

দো-প্রণয-পৃবিত কপির বচন জানিলেন তা'ৱে বাণী কায় মনে

শুনি' জাগে বিশ্বাস। কুপানিধানের দাস॥ ১৩

(5)—হবিব ভকত জানি' প্রীতি বাড়ে অন্তরে। পুলকনে তমু ছাঘ নয়নেতে লল ভরে। বিরহ সাগব মাঝে ভূবিতে হে হনুমান। এখন কুশল কহ আমি যাই বলিহারী। স্থাকোমল চিত তিনি কুপাম্য রঘুবায়। সহজ-সভাব ভরে ভকতে সুখদায়ক। আমাব ন্থন তাত আর কভদিন পর। বচনে সরে না ভাষা নযনে ভরিল জগ। সীভারে হেরিয়া কপি অতীব বিরহাকুল। জননি অনুজ সনে কুশলেই প্রভুর'ন। আব কিছু ভাবি' মাতা করিও না খেদ মনে।

তুমিই হইলে ভাত বাঁচাবার জল্যান॥ ১ অসুজ্জ-সহিত স্থ্ব-নিকেতন খর-অরি॥ এ নিঠর আচবণ কি হেতু তাঁহার হায। ২ कथरना यातन कि ला बामाद त्रघुनायक ॥ হইবে শীতল হেরি' খ্যাম মৃত্-কলেবর ॥ ৩ ক'ন নাথ আমারে কি ভুলিলেন অবিকৃদ। বিনীত ভাবের সনে বলে বাণী অমুকুল ॥ ৪ তব ছথে তুখী অতি সদা কুপা-নিকেতন॥ বিগুণ ভোমাব 'পবে প্রেম রয় প্রভু-মনে॥ ৫

**(দা**—রামের বারতা এ বলিয়া কপি

শুন মা এখন গদগদ হ'ল

পরাণে ধরিয়া ধার। নয়নে ভবিল নীর॥ ১৪

(5)—ব'লে দিয়েছেন রাম জানকি বিযোগে তব। বিপরীত মোরে সব হয এবে অহতেব। নব-কিশলয় যেন হইযাছে হুডাশন। কমলেব বন লাগে শুলভবা বন-প্রায। প্রাণারাম ছিল যা'বা পীড়া দেয় ভা'রা সবে। কহিলে প্রাণের খেদ হয় কিছু প্রশমন। ভোমার আমার মাঝে প্রণ্যের ভেদ যাহা। দে মন আমার সদা ভোমারি নিকটে রয়। প্রভুর প্রেরিত বাণী জানকী করি' প্রবণ। হত্র কয় জলে মাতা ধারণ করহ ধীর। রামের প্রভাপ বলে ভরুত নিজ ক্রময়।

কাল-নিশা সম নিশি ইন্দু যেন তপন ॥ ১ অলদ তৈল যেন তপ্ত বর্ষি' যায়॥ ত্রিবিধ সমীর লাগে অহি-খাস অহভবে॥ ২ কারেই বা বলি কথা নাহি কেহ হেন জন। মাত্র মোর মন আছে অবগত প্রিয়া ভাষা 🌬 ইহাতেই কর' প্রেম অফুমান যাহ। হয়। মগ্ন প্রণ্য-নীরে দেহ-বোধ বিসর্ণ॥ ৪ সেবকের সুখদাতা স্মর' রাম রঘুবীর ॥ আমার বচন ওনি' বর্জন কর ভয়॥ ৫

#### প্রীরামচরিত মানস

(प)-- द्रकः निकत ধৈৰ্ঘ্য ধর মা

.

পতঙ্গ সমান হিযায় জানিও রাম-শর হুতাশন। পুড়ি'ছে রক্ষ:গণ॥ ১৫

চৌ — যদি রাম বসুপতি শভিতেন সন্ধান। প্রীরামের শর-রবি হে দেবি হ'লে উদয়। এখনি মা পারিভাম যাইতে ল'য়ে ভোমারে। কিছু দিন ধীর হ'য়ে কর মা হেথা যাপন। যা'বেন লইয়া বধ করি' নিশাচরগণে। ভোমারি ত'অফুরূপ হে ভনয় কপিগণ। আমার হৃদয়-মাঝে এতে বড় সন্দেহ। কনক-ভূধরাকার স্থবিশাল দে শরীর। তখন সীতার মনে বিশাস উপজিল।

পারে কুজ অহি

দেরী না হই'ত ভবে একভিল পরিমাণ। তমোরপী নিশাচর কোথায় বা আর রয় ॥ ১ রামের শপথ হেন আদেশ নাহি মোরে॥ কপিগণ সনে রাম করিবেন আগমন॥ ২ গাহিৰেন তাঁ'র যশ নারদাদি ত্রিভবনে ॥ রাক্ষ**স অভি বীর আর (ভেজ-পরায়ণ**॥ ৩ ওনিয়া প্রকাশ হমু করিল আপন দেহ ॥ রণে ত্রাস-উৎপাসক অভি বলশালী বীর॥ 8 আবার আকার লঘু হনুমান ক'রে নিল।। ৫

(मा-७नइ क्निन

শাখামুগগণ গক্তভেও খে'তে

নহে অভি-মতি বল। यिन भाग्र व्यष्ट्र-वन ॥ ১७

#### कर्मिकियम हान्यान

(5)—ভক্তি প্রতাপ তের আর বলে পূর্ণ বাণী। গুনি' সম্বোধ-মন জানকী রমণীমণি। জীরামের প্রিয় বৃঝি' করেন আশীষ দান। হও হুত গুণনিধি জ্বাহীন মৃত্যু হীন। বারবার পদতলে করি' শির অবনত। এখন মা চরিভার্থ ই ল ভব সম্ভাম। নিবেদি' মা পদে আমি ক্ষুধিত নিরতিশয়। সীড়াক'ন মহামহারাক্ষণ বীরগণ। रुष्ट्र कश जाशास्त्र कति नाक' मरन स्था।

ক হিলেন হও তাত শীল আর বল-ধাম। ১ করুন প্রভূত কুপা ভোমারে ভকতাধীন ॥ ভকভিতি তথায় হ'ল হতুমানু মনে॥ ২ জোড় করি' করযুগ কহে কপি এই মত॥ ভোমার আশীষবাণী কদাচ না হ'বে আন। ৩ এ ক্ষুধা পে'য়েছে হেরি' সুন্দর ফলচয়॥ নিয়ত এ কাননের করে স্থত রক্ষণ ॥ ৪ যদি এতে সম্মোধ তোমার মনেতে হয়॥ ৫

দো-হেরি' বুদ্ধি বল-🗃 রাম-চরণ

নিপুণ হন্তুরে রাখিয়া হৃদয়ে জানকী কচেন যাও। স্মধুর ফল থাও॥ ১৭

টৌ-প্রণতি করিয়া পদে কাননে করে প্রথেশ। খায় ফল আব নাশ করে তরু সবিশেষ। বছ বীর ছিল তথা কাননে প্রাহরা দিতে। কতক বা গেল মারা কিছু ধায বার্তা দিতে ॥ ১

#### অকর কুমার বধ

কহে প্ৰভু আসিয়াছে কপি এক স্বভীষণ। খায় নিজে ফল আর উপাড়ে বিটপীদলে।

**क्लिन** উष्टाष्ट्र कति नार्थत व्यत्नाक्यन ॥ রক্ষকে পিশে' পিশে' মাটির উপরে ফেলে। ২

#### হুন্দর কাও

७निया तावर ८थ:व ७थ। वङ् याङ्यान । সব নিশাচরগণে করিল কলি হনন। আকর কুমারে পাঠাইল রক্ষোনাথ। ভা'দের আসিতে দেখে' গর্জে তক ধরি' করে। বিনাশ করিয়া সবে তর্জে হুখার ভরে ॥ ৪

**जा'त्मत्र बित्रशि 'करत्र शर्चन रुग्नमान् ॥** हो दका व मान थाय कि हू अर्क-मृ छ न ॥ ७ চমুরে ভেটিতে যায় অগণিত বীর-সাধ।

(न-का'त्व वा मादव

কেহ ফিরে' গিয়ে

हृत्व वा का'रत আর্দ্রনাদ করে

কা'রে করে ধূলি-প্রার। মহাবদী কপি হায়॥ ১৮

দেখনাদ কর্তৃক হতুমানের লাগপাবে বছ ছইয়া রাবণ-সভায় গমন

(5) — उनायत वस अनि' नाकन त्वायपुत्र । অভুগ নিপুণ রণে বাসংব যে করে জয়। আসি'ছে দাকণ বীর হতু দেখিবারে পায়। অভীব বিশাল এক ভক্ন উৎপাটন ক'রে। ভা'র সনে মহা মহা বীরগণ রহে যত। বীরগণে বধি' শেষে মেখনাদ সনে লড়ে। মৃষ্টি প্রহার করি' চড়ে বিউপীর 'পরে। চেতনা লভিযা মায়া বিস্তারে নানামতে।

পাঠাইল দে ভখন বলী মেঘনাদ স্থত। ব'লে দিল বেঁধে এন মেরোনা ভাহারে প্রাণে। কোধাকার দে বানর হ'বে তা' লইতে জেনে'।> खांखांब निश्रंन मरन तार्थित श्लीवन वस्र ॥ গর্জে পেষণ করে দাঁতে দাঁতে আর ধায়॥ ২ তা'র ঘার রগহীন রাবণ কুমারে করে। আপনার অঙ্গ-সনে করে হনু ঘর্ষিত ॥ ৩ তুই গঙ্গরাজ যেন এ উহার ঘাড়ে পড়ে। ভাহাতে হারায় জ্ঞান মেঘনাদ ক্ষণতরে॥ ৪ জ্ব করিবারে নারে তা'তেও পবন-মুডে ॥ **৫** 

দো-ব্দ-আযুধ ব্ৰহ্ম-শরে যদি হানে কপি মনে অসম্মান করি

ভাহাতে করে বিচার। মহিমা না র'বে ভা'র॥ ১৯

নিরখিয়া ইক্রজিত মূর্জিতত চতুমান্। শिव क'न শুन উमा अप कति' नाम याँ'त। ভাঁ'র দৃত বন্ধ-দশা কবে লাভ কি কখন। বনদী জানিয়া কপি রাক্ষদগণ ধায়। হমুমান তথা গিয়া রাবণের সভা হেরে। কর-জ্বোড় করি রহে দিক্পাল স্থরগণ। হেরিয়াৰ এ প্রভাপ হন্তু নহে ভরষ্ত।

(6)— ব্লাশর মেলনাদ ক'পরে আবাত করে। পড়িবার কালে হয় বছ দেনা সংহারে॥ नामभारन दांशि करत्र मार्थ नरत्र व्यक्तन ॥ > জ্ঞানী নর ভব-বাধা হ'তে সদা হয় পার।। কার্য্যের তরে প্রভু ঘট।'লেন বন্ধন॥ ২ কৌ চুক হেরিবারে সভামাঝে সবে যায়। ভাহার বিভব কত বর্ণিতে ভাষা হারে॥ ৩ আড়েও হেরিলে হয় শক্কিড স্ব-মন। অহিগণ মাঝে যথা নিডর বিনতা-স্থৃত # 8

# হলুমান্-রাবণ সংবাদ

(पा-कशिद्र निव्रवि' স্থুত বধ মনে

হানে দশানন করি' ডা'র মন

কটুভাৰা মুখে কর। বিষাদ-পুরিত রয়॥ ২০

(D) - সংস্কেশ করে বল রে বানর ভূই কোন। কা'র বল ধ'র' দেহে উল্লাড় করিস বল ॥ কাণে ভোর কথনো কি পশে নাই মোর নাম। রাক্ষদগণে তুই ব্ধিলি কি অপরাধে। হতু কহে যাঁ'র বলে বলী হ'য়ে দশানন। বাঁ'র বল করি' লাভ বিধি বিফু মহেশ্বর। সহস্র-বদন শেষ করি' ঘাঁ'র বলাশ্রয়। ক্ত দেহ ল'ন যিনি অমরে করিতে ত্রাণ। कर्छात रुरत्र ४२ छात्रिमा (य व्यवरहरम । थदा पृष्टाद यात जिलिता ताकन वालि।

দেখা যায় ওরে শঠ ভরহীন ভোর প্রাণ॥ ১ নিজ প্রাণ যা'বে ভা'য় এ বাধা না মনে বাধে # সীমাতীত ব্রহ্ম-অগু করে মায়া বিরচন॥ ২ সূজন পালন নাশ করি ছৈন নিরস্তর ॥ স-কানন ধরাধর চরাচর শিরে বয় ॥ ৩ কভবিধি ভোমা সম শঠে দেন শিক্ষা দান ॥ তা'রি সনে রুপদল-মদ যে চরণে দলে ॥ ৪ বধিলা যে এ সকলে অভিশয় বলশালী ॥ ৫

(দা--াগাঁর অণু বল হ'রেছ বাঁচার

করি' আঞায় প্রিয়তমা আমি জিনিলে এ চরাচর। তাঁ'রি দুত রক্ষ:বর ॥ ২১

চৌ—ভোমার প্রভাপ বল সব আমি অবগত। ৰালিরণ সহিত রণে সুযশ লভিলে যথা। কুধার থে'লাম ফল রক্ষ:রাজ দশানন। नकरनति निक्षनिक (पर लार्श विग्रजम। ৰধিক তা'দের তবে আমারে মারিল যা'রা। এ বাঁধন ভরে মোর মনে কিছু নাহি লাজ। ভোড়করে এ মিনতি করি তোমা লঙ্কেশ। দেশ ভূমি নিজ পুত কুলেরেঃ বিচার করি'। থেই কাল শুরাশুর চরাচর সব গ্রাসে। বৈরতা তাঁ'র সনে করিও না কলাচন।

সহস্র-বান্তর**#** সনে সমর হইল যত। রাবণ বচন শুনি' হাসিয়া উডা'ল কথা॥ ১ বানর-স্বভাব বশে তরু করি উৎপাটন ॥ প্রহারে ছপ্টেরা যবে করে মোরে জালাতন ॥২ ভা'র পরে সুত তব বাঁধিয়া করিল সারা। আমার ড' অভিলাষ সাধিতে প্রভুর কাজ॥ ৩ অভিমান তাঞ্জি' ধর আমার এ উপদেশ ॥ ভ্রম তাজি' ভল সেই ভকতের ভয়হারী ॥ 8 সে প্রবল কাল কাঁপে থরথরি' যাঁ'র তাসে॥ মোর অমুরোধ মানি' সীতা কর অর্পণ 🛚 ৫

(দা-প্রণত-পালক পড়িলে শরণে কুপা-পারাবার রাখিবেন জোমা

খরারি জানকীনাথ। পাশরিয়া অপরাধ ॥ ২২

८ठी-नाम भन-भंडमल खनरत कत्र थात्र। মহর্বি পুলস্ত্য-যশ: নির্মাল শশধর।

তা'রপরে এই পুরী অচল কর শাসন। र्श्या ना कल्फ (यन म विधुत तकःवत ॥ ১

<sup>•</sup> है हाब चलर नाब कार्छरोपाळ्डून । हिन अड बनवान हिल्मन व बायन है हाब निकट वन्ते हिल्मन । कार्छरोधा প্ৰভাষেৰ পিতা অমদল্পিৰ কামধেল অপহত্তণ কৰিলা তাঁহাকে বধ কৰেল। ইহাতে প্ৰভ্ৰাম কাৰ্ত্বীৰ্ণাকে সংহাৰ কৰেল।

<sup>া</sup> ৱাৰণ বালির বল প্ৰীকা ক'ৰিতে চাহিয়াছিল। বালি ভখন সন্ধা করিতে উত্তত। বাৰণ অপেকা কৰিতে সম্বন্ধ না হওয়ার, বালি তাহাকে জনায়ালে নিজ কুঞ্চি-মংখ্য চালিয়া ধরিয়া, প্রতিণিনের নিষ্ম মত চারি সমূলে ব্রিছা সদ্ধা শেৰ কৰে। অবৰেবে পূৰ্ব্য-মৰ্থ্য দিবাৰ সময় ভূলিৱা হাত উঁচু করিতে গেলে বাবণ বাহিব হয়, ও অনেক বিনয় **কৰিবা ভাচাৰ সহিত বন্ধুৰ স্থাপন কৰে। 💠 বাৰণ পুলপ্ত্য মূনিৰ কলে বিশ্ৰবা মূনির পুল্ল , পুত্ৰবাং আক্ষণ-কলোৎপন্ন ।** 

বিহনে শ্রীরাম-নাম বচন না শোভা পার।

হ'লেও ভূষণে সব বিভূষিতা বরনারী।

শ্রীরাম-বিমুখ যেবা প্রভূতা বিভব ডা'র।

যে নদীর উৎস দেশে জল-ত্রোত নাহি হার।

দাপথ করিয়া কচি শুন লহা-অধাখর।

সহস্র মহেশ বিষ্ণু সহস্র চতুরানন।

মদ মোহ পরিহরি' মনে বৃঝি' দেখ ভা'র ॥
বসন বিহনে শোভা নাহি পায হে সুবারি ॥ ২
পেলেও নাহিক রম্ব পাওয়া খোওয়া একাকার॥
বরষার অবদানে পুন: ভা' শুকা'য়ে যায়॥ ৩
রাম-বিমুখের ত্রাভা কেচ নাহি ধরাপর ॥
রাখিতে না পারে রাম-বিবোধীরে কদাচন ॥ ৪

দৌ—মোহ-মূল বছ ভজারাম-রঘু- হু:খ-আধার কুলের নায়ক ভ্যন্ত তম-অভিমান। কুপানিধি ভগবান॥ ২৩

#### लडा-महम

(b) — যদিও কহিল কপি বাণী অতি হিতকর।
উপহাস-হাসি হাসি' কহে মহা অভিমানী।
ছই মরণ তো'ব শিষরে ঘনা'য়ে আসে।
হছু কহে বিপবীত হ'বে এর পরিণাম।
কপির বচন শুনি' মনে ক্রোধ অভিশয়।
শুনিভেই বধ-ভবে ছু'ট বাক্ষসগণ।
নমিত করিয়া শির মিনতি করিয়া কত।
দণ্ড অপব কোন ইহার কর বিধান।
শুনি' কথা দশানন কহিল হাসির ভরে।

ভক্তি বিবেক নীজি-সিঞ্চিত মনোহর ॥
জুটে'ছে বানর গুরু আমার পরম জ্ঞানী॥ ১
উপদেশ বাণী মোরে তা'ই তো'র মুখে আসে॥
তো'রি হ'ল মভিদ্রম নিশ্চয় বুঝিলাম॥ ২
ছরা এরে বধ কর দশানন রোঘে কয়॥
তথনি সচিব সহ আসিলেন বিভীষণ॥ ৩
ক'ন দুতে বধ করা সব নীতি-গঠিত।
সকলে কহিল সাধু যুক্তি করিলে দান॥ ৪
অক্সহীন করি' ফিরে' পাঠা'য়ে দেহ বানরে ॥৫

জে—বানরের মায়। তৈল সিক্ত বাস লাঙ্গুলে রয় বাঁধিয়া ভাহাতে কহি সবে বুঝাইয়। দেহ অগ্নি লাগাইয়া॥ ২৪

(ট)—লাজুল-হীন হ'রে বানর যাউক ক্সিরে'।
যাহার করিল মুখে এতই মহিমা গান।
একণা শুনিযা কপি মনে মনে হাসে তবে।
রাক্ষসগণ শুনি' রাবণের এ বচন।
রহিল না পুরীমাঝে তেল ঘৃত কি বসন।
রঙ্গ হেরিতে আসে যথা তথা পুরবাসী।
বান্ধিতে লাগিল ঢোল সবে দেয় করভালি।
অগ্রি অলিত হেরি' হ'রে অতি স্বরাপর।
মুক্ত-বাঁধন হ'রে চডে হেম-সৌধ 'পরে।

আসুক আবার মৃঢ় প্রভুরে সাথেতে ক'রে॥
দেখিব প্রতাপ বল তাহার কি পরিমাণ॥ ১
বৃঝি' দেবী বীণাপাণি সহায় হ'লেন এবে॥
মূর্থেরা সবে করে আয়োজন আরম্ভন । ২
লাঙ্গুল করে হন্নু কৌতুকে প্রসারণ॥
চরণ প্রহারি' ক'রে কতই প্রকার হাসি॥ ৩
নগর ঘুরা'য়ে দিল লাঙ্গুলে অনল আলি'॥
ধারণ করিল হনু অতি লঘু কলেবর॥ ৪
রাক্ষনীগণ তেরে' সকলে ভ্যেতে মরে॥ ৫

দো-হরি-প্রেরণার

সেইকালে বয়

বায়ু উনপঞ্চাশ।

অটুহাসি হাসি'

গৰ্জিয়া কপি

ছুঁয়া'ল দেহ আকাশ। ২৫

(চ) — অতীব বিশাল তবু অভি লঘু কলেবর। পলক মাঝারে যায় গৃহ হ'তে গৃহান্তর ॥ প্রথমেই ব'লেছিন্থু বানর এ কছু নয়। সাধুজন-অপমান-প্রতিফলে এইমত।

জ্বলিতে লাগিল পুরা পুরবাদী ভয়ে মরে। কোটি করে হুতাশন করাল-বাপ্ট মারে॥ ১ চারিদিকে সেইকালে <del>গুধু এই গু</del>না যায়। কোণা পিতা মাতা কেবা মোদের বাঁচা'বে হায় # বানরের রূপ ধ'রে কোন দেব নিশ্চয়॥ ২ প্রজ্ঞলিত সারা পুরী অনাথ-নগরী মত।। এক নিমেবেতে সারা করিল পুরী দাহন। 💍 😎 ধুবিভীষণ-পুরে না লাগা'ল হুতাশন॥ ৩

# হমুমানের সীভার নিক্ট বিদায় গ্রহণ

উমা হতু তাঁ'র দৃত অনল স্জন যাঁ'র।

একারণে না দহিল অনলে শরীর তা'র॥ এক প্রান্ত হ'তে লক্ষা পুরীরে করি' দাহিত। লক্ষ দিয়া পারাবার-মাঝে হ'ল মজ্জিত॥ ৪

বো—পুচ্ছ নিবা'য়ে জনক-স্তার

পুর করি' আংম সম্মুখে গিয়া

পুন: লঘুকায় ধরি'। দাঁড়া'ল ছ' কর জুড়ি'॥ ২৬

🖒 — কৃছিল জননি মোরে দেহ কিছু নিদর্শন। দিলেন আমারে যথা রাঘবকুল-মোদন॥ চুড়া হ'তে মণি খুলি' জানকী দিলেন ভা'রে। এভাবে প্রণাম মম ক'রে। তাত নিবেদন। তথাপি করুণা দীনে করিবারে পণ তব। হে ভাত জয়ন্ত-কথা করা'য়ো তাঁ'রে স্মরণ। শরের প্রতাপ তাঁ'র তাঁহারে ক'রো জ্ঞাপন ॥ বল' ভাত কি প্রকারে দেহে প্রাণ আমি ধরি। তুমিও ত কহিতেছ এবার যাইবে ফিরি'॥ ভোমারে হেরিয়া প্রাণ জ্ডা'য়েছিল আমার।

শইল প্রনম্ভ প্রম হর্ষ ভরে॥ ১ পরিপূর্ণ-কাম তুমি প্রভু রঘুনন্দন।। হর নাথ হর মম সঙ্কট ভবধব॥ ২ মাদেক মাঝারে যদি ভাঁর আসা নাহি হয় । জীবিত আমারে তিনি না পা'বেন নিশ্চয়। ৩ দিবা রাতি সম হ'বে আমার কাছে আবার॥ 8

# সাগর-লভ্যনামন্তর সকলের প্রভ্যাবর্তন

দো-সীভারে বুঝা'য়ে চরণ কমলে

বহুভাবে হনু করিয়া প্রাণাম

তাঁহারে প্রবোধ দিল। রাম-পদে ফিরে গেল। ২৭

চৌ-প্রস্থান-কালে করে মহারবে গর্জন। সাগর লজ্বিয়া পুনঃ আসিল এ-ভট 'পরে। হর্ষিত হ'রে সবে চাহে হতুমান পানে। মোদিত বদন তেজ শরীরে করে বিরাজ। সকলে খেরিল ভা'রে প্রাণে মোদ অভিশয়। সকলে পুলক-মনে যায় এরামের পাল।

ত্রাসে জ্ঞানহার। হয় রাক্ষদ-নারীগণ ॥ কিচ্কিচ হর্ষরৰ শুনা'ল যত বানরে । ১ নুতন জনম পে'ল এ-ভাব স্বার মনে ॥ বুঝা গেল সাধিয়াছে হতুমান রাম-কাজ। ২ কণ্ঠাগত-প্রাণ মীন বারি পে'লে যথা হয় ॥ কহিতে শুনিতে পথে এই নব ইতিহাস ॥ ৩

#### ৰধুবন ভল ; ভুগ্ৰীব-মিলন

হেনকালে হ'ল সবে মধুননে উপনীত। প্রহরীরা ভাহাদের যেমনি ভাড়া'তে এল। খায় মধুফল করি' অঙ্গদে সম্মত। মৃষ্টি-প্রহার লভি' সকলে পলা'য়ে গেল ॥ ৪

(পা-ভা'রা হেঁকে কয় স্থগ্রীব শুনি'

সব গেল বন বুঝিল কপিরা

উজাড়েন যুবরাজ। সেধে' এল প্রভূ-কাজ। ২৮

চৌ—না যদি উদ্দেশ লাভ করিত সবে সীতার । মধুবন-ফল খায় এমন ক্ষমতা কা'র ॥ মনে মনে এ বিচার করে যবে কপিবাঞ্চ। আসি' স্থগ্রীব-পদে সবে মাথা নোয়াইল। क्मन ख्धा'ता तता क्मन (इति हत्। সবে কহে প্রভু-কাঞ্চ সাধিয়াছে হরুমান। ন্ডনি' স্থগ্রীব ভা'রে সম্ভাষে আরবার। রাম যবে হেরিলেন কপি কবে আগমন। স্ফটিক শিলার 'পরে ব'দে র'ন চু'জনায়।

হেনকালে এল হনু সহিত কপি-সমাঞ্চ॥ ১ কপিরান্ধ শ্রীডিভরে সবাকারে সম্ভাবিল। রাম-কুপাবলে কাজ হইয়াছে সমাপন ॥ ২ সে-ই রক্ষা ক।রয়াছে বানরগণের মান **।** কপিদের সনে যায় যথা রাম কুপাধায় 🛚 🗷 কাৰ্য্য সমাধা হ'ল বৃঝি' পুলকিত মন॥ আসিয়া সকল কপি পড়িল ভাঁছার পায় 🖁 🕏

(দা-প্রণয়ের সনে শুধা'ন কুশল মিলেন সকলে বলে শুভ এবে

করুণা-সাগর রাম। হেরি'পদ কুপাধাম॥ ২৯

# **জীরাম-হত্মান সংবাদ**

চৌ—জাম্বান কচে তবে শুন ওচে দয়াময়। ভাহার সদাই শুভ কল্যাণ নিরন্থর। विकास माजरास (मार्डे (मार्खनी विनयवान्। প্রভুর করণাবলে হ'য়েছে সকল কাজ। হে নাথ পবনস্বত যে কাজ এসেছে ক'রে। মনোহর কাজ যত আচরিল হহুমান। হমুমান-ক্রিযাবলী লাগে ভাল রাম-প্রাণে। কহিলেন সীভা এবে কহ ভাত কি প্রকারে।

ভোমার করণা প্রভু যাহার উপর হয় ॥ অমর মানব মুনি প্রীত র'ন ডা'র 'পর॥ ১ উজ্জল ত্রিভুবন ভাহার যখে মহান্॥ মোদের জনম ভবে হ'ছেছে সফল আৰু ৷ ২ সহতা হ'লেও মুখ সাধ্য কা'র ডা' বিবরে 🛭 শ্ৰীরামের শ্রীচরণে নিবেদিল জাম্ববান্। ৩ পুলকে আবার বুকে লইলেন হয়ুমানে॥ রহেন রাখেন প্রাণ আপনার সন্ধাপুরে ॥ ৪

দো –দারী তব নাম পদ-লগ্ন আঁথি

কপাট ভাহার এ তালা লাগান'

দিবানিশি ভব ধ্যান। কোন পথে যা'বে প্রাণ ॥ ৩০

(5)—ফিরিবার কালে মোরে দিলেন চূড়ার মণি। আদরে হৃদয়ে চাপি' ধরিকেন রখুমণি॥ হমুকহে প্রভুসহ বারি-ভরাছ'নয়ন। পড়িও অমুজ-সহ প্রস্তুর চরণ 'পর। আমি ভ কায়ায় মনে বচনে চরণ-রভা।

জনক-ডনয়া কিছু ভোমারে বচন ক'ন। ১ ব'লো তুমি দাননাৰ প্ৰণত-বিপদহর ॥ कान् व्यवतार्थ नाथ कतिरल ठत्रग-ह्राडा ॥ ६ এক, অপরাধ মম আমি ভা'করি বীকার।
কিন্তুদেব এ ভ'মোর নয়নের অপরাধ।
বিরহ অনল যেন তুলাদেহ নিশাদ।
নিজ্ঞ হিত-লাগি' বারি নয়ন করে ক্ষরণ।
জনক-মুভার ভথা বিপদ অভি বিশাল।

বিরহে এ প্রাণ নাহি করে দেহ পরিহার ॥
বাহিরিতে গেলে প্রাণ দে-ই তাহে সাথে বাদ ॥৩
সমীরণ পারে ক্ষণে দেহের করিতে নাশ ॥
বিরহ-অনশ নারে করিতে কায়া দহন ॥ ৪
সেকথা না কহা ভাল চবণে দানদয়াল ॥ ৫

দৌ—এক এক পল চল ত্বরা প্রভু ক**ৱ**-সমান আন' বাহুবলে কাটে তাঁ'র এক্ষণে। জয় করি' খলগণে॥ ৩১

(চ)—জনকস্থতার হেন ক্লেশ শুনি' কুপাধার।
ক'ন কায় বাণী মনে রত যেবা মোর পরে।
হয়ু কহে বিপদ ত ভাহারেই প্রভু কয়।
ভোমার নিকটে নাথ এ আর কি বড় কথা।
প্রভু ক'ন হয়ুমান ভোমা সম উপকারী।
এর প্রতি উপকার কি করি তব এথন।
শুন মুক্ত তব ঋণ নতে কভু শোধিবার।
বারবার কপি-পানে চাহি'ছেন কুপাধার।

নলিন-নয়ন্থ্গে ভ'রে আদে জ্লভার ॥
স্থপনেও কি,বিপদ কোনকালে লাগে তা'রে ॥ ১
তোমার ভজ্কনা ধ্যান যা'র তরে নাহি হয় ॥
রিপুদলে জয় কার' আনিতে জনক-মুতা ॥ ২
কেহ নাহি মুর নর মুনি-মাঝে তমুধারী ॥
তোমার সমীপ হ'তে নাহি পারে মোর মন ॥ ৩
ক্রদয়-মাঝারে আমি দেখে'ছি করি' বিচার ॥
রোমাঞ্চ শ্রীকলেবরে নয়নেতে জ্লভার ॥ ৪

দো-প্রভূ-বাণী শুনি' প্রেমাকল হ'য়ে হেরি' ফু**ল মূখ** পায়ে পড়ি' কহে হর্ষিত হমুমান। আহি আহি ভগবান্॥ ৩২

প্রেমাকুল হ'মে পায়ে প

(৫)—প্রয়াস করেন প্রভু তুলিবারে বারবার।
ছাপিত তাহার শিরে প্রভুর কমল-কর।
সম্বরি' নিজ মনে শঙ্কর পুনঃ ক'ন।
কপেরে তুলিয়া প্রভু বুকের 'পরে লাগা'ন।
ক'ন কহ হন্তমান রাবণ-রক্ষিত পুরে।
প্রভুরে মোদিত-মন জ্ঞান করি' হন্তমান।
শাখা-মুগদের এই পুক্ষার্থ অভিশয়।
লাজ্ব' সাগর করি' কনকপুরী দহন।
ভোমারি প্রভাপ ভাহা সকলি ত' রন্থনাথ।

অমনি মগন প্রেমে তুলিতে শকতি কা'র ॥
সে দশা করিয়া মনে তন্ময় হ'ন হর ॥ ১
জননী ঈশানী-পাশে সে কাহিনী মনোরম ॥
হাত ধ'রে একেবারে আপন কাছে বসা'ন ॥ ২
আর বাঁকা হুর্গে ভা'র দহিলে কেমন ক'রে ॥
কহিল বচন হেন পরিশৃত্য অভিমান ॥ ৩
শাধা হ'তে অত্য শাখে গমনে শকতি রয় ॥
রাক্ষসগণে বধি' উজাড় করিছু বন ॥ ৪
কিছুই বড়াই তাহে নাহিক আমার নাধ ॥ ৫

**দো**—কিছু নাহি তা'র তোমার প্রভাবে সাধ্যের বা'র তৃলা'ও অনলে জুমি অমুকৃল যা'রে। দহন করিতে পারে॥ ৩৩

(6)—অচলা ভক্তি তব মোর অতি ভাল লাগে। কুপা করি' দেহ নাথ মিনতি চরণ-আগে ॥
ভূনি' প্রভু বানরের প্রম সরল বাণী। 'এবমস্তু' এই তবে ক্হিলেন হে ভ্বানি ॥ ১

ঈশানি স্বভাব তাঁর জানিয়াছে যেইজনে। এ তত্ত্ৰ হ'যেছে যা'র হাদিগত একবার।

ভঞ্জনা ব্যত্তীত কিছু ভাল নাহি লাগে মনে ॥ ভক্তি শ্রীরাম-পদে সে ক'রেছে অধিকার ৷ ২

#### বানর-সেমা সহ এরামের সমুদ্র-ডটে আগমন

প্রভুর বচন গুনি' কপিগণ সবে কয়। করিলেন রাম তবে স্থগ্রীবে আবাহন। কিসের কারণ আর এবে বিলম্ব করা। লীলা হেরি' বহু ফুল বর্ষিয়া স্থুরগণ।

জয় সুধ-মূলাধাব জয় জয় কুপাময়॥ কহিলেন কর এবে যাত্রার আযোজন॥ ৩ আদেশ হরায দেহ যাত্রা করুক ভা'রা॥ আপন আপন লোকে কিরে' যান প্রীত মন ॥ ৪

দো—স্থাীৰ স্বরা বিবিধ ববণ ডাকা'ন সবারে ঋক্ষ কপিদল

আসে তা'রা দলে দলে। অতুল দেহের বলে॥ ৩৪

(6) — প্রভু পদ শতদলে সকলে নোযায শির। গর্জে ঝক্ষ কপি মহাবল মহাবীর ॥ কপি-অনীকিনী করি' রঘুমণি দবশন। রামেব কুপাব বল লাভ করি' কপিদল। ক্রেন হব্যে ত্বে যাত্রা রম্ব-মোদন। কীর্ত্তি যাঁহার সদা সব-মঙ্গলময়। স্পন্দিত হ'য়ে বাম-অব্যব জ্ঞানকীরে। যা' যা' হয় মঙ্গল দীতাৰ শকুনচয়। চলিল বাহিনী কেবা করিবে বা বর্ণন। নথর-আযুধধব চলিছে নিডর মনে। গর্জন করিতেছে কপি-ভালুকদল।

করেন সবাব 'পরে কুপা-দিঠি বর্ষণ॥ ১ হ'ল যেন পক্ষয়ত ধরাধর মহাবল ॥ হইতে লাগিল শুভ সুন্দর লক্ষণ॥ ২ তাঁ'র যাত্রায় ভভ লীলা মহিমায় হয় ⊭ রাম-আগমন যেন তাঁহাবে ঘোষণা করে॥ ০ ভাহাই রাবণ তবে অগুভ-কারণ হয়॥ অগণিত কপি ভালু করিতেছে গৰ্জন ॥ 8 ধরি' পর্বত ভক্ন ধবণীতে কি গগনে॥ বিচলিত দিক্-করী করে ভা'রা টলমল ॥ ৫

| বস্থমতী টলে   | চঞ্চল গিরি কাঁপে দাগর।   |
|---------------|--|
| স্থুর মুনিগণ  | হইল সকলে বিগত ভর॥  |
| করে বহু ভটণ   | কোটি মৰ্কট সবেগে ধায়।   |
| মহা বলধাম     | বলি' গুণগ্রাম সকলে গায়॥ ১   |
| অনীকিনী-ভারে  | শেষ বারেবারে মুরছ। যায়।   |
| शृष्ट्रेट माट | কামড়ে ভাগতে কি শোভা হার॥  |
| সমরাভিযান     | অতি মনোহর তাহারে <b>জানি'</b> ।  |
| যেন দাগ কেটে  | চিরতরে নাগ লিখে সে বাণী‡ ॥ ২   |
|               | সুর মূনিগণ করে বহু ভটণ মহা বলধাম অনীকিনী-ভারে পৃষ্ঠেতে দাঁতে সমরাভিযান |

<sup>•</sup> প্রকুত্ত ভাব। † বোলা। 🗦 সেনার ভীবণ ভার বহিছে অসমর্থ হটলা বাস্তুকি বার বার মৃদ্ধিত হইতেছেন, আর কুবের কঠন পিঠের উপর কামছ দিরা ধরিতেছেন ( অর্থাৎ নিজেকে সামলাইতেছেন ) , এইরপ বার বার পাত দিয়া কাম ছাইব। ধরায় কুপের পিঠেবে গ্রুল বেবা পড়িকেছে, ভাহাতে কি অপূর্ব্ব শোভা হইতেছে। প্রীরামন্তমের এই গ্রুমান্তি-বানকে অভি মনোহর বিবেচন। কবিরা, নাগরাক্ষ বাহ্মকি কুর্মের পিঠে দাগ কবিরা চিরতবে তাতার ইতিবৃত্ত কোদিভ ক্রিয়া বাথিতেছেন।

# **এীরামচরিত মান**স

দো-এইভাবে চলি' মথা তথা ফল

Œ'n.

করুণা-সাগর খায় অবিরল আদেন সাগর-ভীর। বহু ভাল কপিবীর॥ ৩৫

#### भटन्यामत्री-त्रावश मःवाम

চৌ — ওদিকে রাক্ষদগণ রঙে ত্রাস-যুত মন। নিজ নিজ গৃহে বৃদি' কবে তা'রা এ বিচার। যাহার দুভের বল নাহি আদে বর্ণনায়। দৃতীগণ-মুখ হ'তে শুনি' পুরবাসী-বাণী। নির্জ্জনে পতি-পদে পড়ি' করি' জোড়কর। দ্রোহ কর পরিহার কান্ত হরির সনে। যাহার দুতের কাজ করিতে মনে স্মরণ। ভাল যদি চাহ নাথ তবে তা'র দয়িতারে। ভোমার কুলের কম কমল কানন ভরে। শুন নাথ যদি ফিরে' সীতারে না দেওয়া যায়। বিধি হর কহিলেও হিত তব নাহি তা'য়॥ ৫

যবে হ'তে হতু যায় লক্ষা করি' দহন॥ রাক্ষসকুলে আর রক্ষা নাহি এবার॥ ১ দে নিজে আসিলে আর কিবা শুভ তাহে হায়॥ সমধিক আকুলিত হ'ন মন্দোদরী রাণী॥ ২ নীতি-রসে সিঞ্চিত ক'ন এ বচন-বর ॥ হিতকর বলি' মোর বচন ধরহ মনে॥ ৩ শিহরিত-প্রাণ হয় যত নিশাচবীগণ॥ নিজ সচিবের সনে পাঠাইয়া দেহ ফিরে'॥ ৪ আসে সীতা ছখ দিতে বিভাবরী-রূপ ধ'রে ॥

দো-রাম-শর অহি-গ্রাস না করিতে

গণের সমান করহ উপায়

ভেক-সম রাক্ষস। নাহি হ'য়ে হঠ-বশ॥ ৩৬

(5)-अवर्ण अनिया मर्ठ मत्नामतीत वागी। স্বভাবে অতীব ভীক্ষ সত্যই নারীগণ। যদি আদে লক্ষায় বানরের দেনাগণ। লোকপাল যা'র ভরে কম্পিত-কলেবর। এত কৃৃহি' পুন; হাসি' তাহারে ধ্রিণ বুকে। রক্ষ:রাণী-মনোমাঝে জাগে শুধু এ ভাবনা। যেমনি সভায় বসে বারতা করে প্রাবণ। 😎 थाय महिवनात कि छेलाय कर मत्त । জিনে'ছেন সুরাসুর আংম নাহি হ'ল তা'য়।

হাদিল বড়ই হাদি ধরা-খ্যাত অভিমানী॥ শুভেতেও প্রাণে ভয় চর্কল তব মন। ১ দুখী রাক্ষস তবে জীবন করে ধাবণ॥ ভয়ভীতা ভা'ব রাণী এ বডই হাস্তকর ॥ ২ চলিল সভার পানে মমতা দেথা হৈয় মুখে॥ স্বামীর উপরে এবে বিধাতার বিভ্ননা। ৩ সাগরের পর-পারে উপনীত অরিগণ॥ হাসিয়া সকলে বলে নীরবে রছ'ন এবে ॥ ৪ মানব বানর এরা কিবা আসে গণনায়। ৫

দো-ভিষক সচিব রাজ্য ধর্ম দেহ গুরু তিনে যদি তিনটিই তবে

প্রিয় কহে লোভে ত্রাদে। ত্বা নাশ হ'য়ে আসে ৷ ৩৭

(5)--রাবণের উপনীত সেই যোগাযোগ এবে। মন্ত্রী চাটু-বাণী কচে গুনা য়ে গুনা যে দবে।

# রাবণকে বিভীষণের উপদেশ

হেন কালে বিভীষণ তথা আসি' উপনীত। পুন: নমি' করে নিজ আসনে উপবেশন। কুপাময় মোর 'পরে যদি অমুমতি হয়।

ভাতার চরণ 'পরে শির করে অবনত # ১ আদেশ করিয়া লাভ কহে তবে এ বচন। চিত-বাণী কহি তবে যাহা মোর মনে লয়॥ ২ যেজন কামনা করে কল্যাণ অপনার।
তাহার উচিত পর-বনিতারে হে রাজন্।
চারি-দশ লোকপতি যদিও দেজন হয়।
যেমন চতুর আব সকল গুণ-নিচয়।

সুষশ সুমতি সুখ শুভগতি অনিবার॥ চতুর্ণীর শশী সম সদা করা বংজন ॥ ৩ জীব সনে বিরোধেতে তা'রো নাশ নিশ্চয়॥ অল্ল লোভও তা'র শ্রেয় কেত নাহি কয়॥ ৪

দো—কাম ক্রোধ মদ এ সবে ভাঞ্জিয়া লোভ এরা প্রভু ভঙ্গ রঘুবীর নরকেতে ল'য়ে যায়। সন্তুভজেন যাঁ'য়॥ ৩৮

(6)—শুধু মানবের বাজা ন'ন বাম রল্বর।
ব্রহ্ম জিনি অ-বিকার জন্মগীন ভগবান্।
ধরণী পুরভী দ্বিজ দেবতার হিত্রকাবী।
ভকতের বঞ্জন হুর্জন-মন্তক।
ভাগা কবি' জোহ উ:'র নমিত করহ শির।
হে প্রভু বিদেহ-স্তা ফিবাইযা ভা'রে দেহ।
বিধ-জোহের পাপে যে হয় পাপ-ভাজন।
বিনাশে ত্রিধি ভাপ যাঁহাব নামেব গুণে।

কাল যে তাহারে। কাল সর্বলোক-অধীশার ॥
অঞ্চেয় অনাদি আর ব্যাপক অ-পরিমাণ ॥ ১
কুপার সাগর রাম নবের শবীরধারী ॥
তিনি ভাই সদা বেদ ধর্ম্মের রক্ষক ॥ ২
প্রণতের সব হুখ ভঞ্জন বলুবীর ॥
অহেতুকী হিতকারী-চরণে শরণ লহ ॥ ৩
শরণে আসিলে সে-ও না ত্যক্ষেন কদাচন ॥
প্রকট সে প্রস্কু ইহা লক্ষেশ বুঝ মনে ॥ ৪

দো—বার বাব পড়' কোশল-অধিপে মুনি পুলস্ত্য

শুভ-অবদর

চরণে তাঁহার ভঙ্গ মোহ মান নিজ শিষ্য দিয়া লভি' সম্বর মিনতি এ দশানন।
মদ করি' বরজন ॥ ৩৯ (ক)
পাঠা'লেন এ বারতা।
জানা'লাম দেই কথা॥ ৩৯ (খ)

(b) — মাল্যবান্ নামে এক চত্র সচিব ছিল।
কহিল অনুজ তব অতি নীতি-বিভূষণ।
অরির মহিমা গান করে মৃত হুইজন।
মাল্যবান্ গুহে গেল করি' এ শ্রুভি-গোচর।
কিবা বেদ কি পুরাণ স্বেতেই প্রভূ কয়।
যথায় সুমতি তথা সম্পদ অগণন।
ভোমার হৃদয়ে করে হুমতি অধিষ্ঠান।
রাক্ষস-কুল তবে কাল-রজনীর প্রায়।

বিভীষণ-বাণী শুনি' অভিশয় মুখ পে'ল। হলেয়ে গ্রহণ কর কহে যাহা বিভীষণ। ১
কে আছ সম্মুখ হ'তে করহ অপসারণ।
বিভীষণ ক'ন ভবে জ্যোড় করি' হুই কর। ২
স্বারি হুদয়-মাঝে কুমভি সুমভি রয়।
কুমভি যথায় ভথা বিপদ নাহি গণন। ৩
ভা'তেই অহিতে হিড আর স্থা হয় জ্ঞান।
সীভা 'পরে অভি ভব অন্তর্গাণ দেখা যায়। ৪

দো—ভাত পদে ধরি' রামে দেহ দীতা করি এ কামনা কথনো অহিত

মোর প্রতি স্নেহ-ডরে নাহি হ'বে ক্ষণভরে॥ ৪৩

অৰ্থাং কোলে যেমন চতুৰীৰ নষ্ট-চল্লকে ৰক্ষন কৰে।

# রাবণ কর্ত্তক বিভীষণের অপমান

(5) - পুরাণ পণ্ডিত এফ তি সম্মত বর বাণী। ভাহা শুনি' দশানন অতীব কোপেতে তবে। মোর অলে মৃট ভোর এ যাবৎ রহে প্রাণ। ৰন্দেখি লঘুমতি কে আছে এ ধরাতলে। মোর পুরে করি' বাদ তাপদের 'পরে প্রীতি। এত কহি' বিভীষণে চরণ প্রহার করে। मित क'न दर खतानि माधुत महिमा **এ**ই। পিতার সমান ভাল ক'রেছ মোরে প্রহার। সচিবে# লইযা চলে নভোপথে বিভীষণ।

কহিলেন বিভীষণ সাধু-নাতি বিবরণি'॥ কহে খল মৃত্যু ভো'র নিকটে আগত এবে॥ । অরাতির পক্ষ তবু শ্রেযতর হয জ্ঞান॥ যাহারে বিজয় নাহি করিলাম ভুজবলে॥ ২ যা' অজ্ঞান ভা'র পাশে ভা'রে শিখাগে যা' নীভি। অমুক্ত তথাপি ধরে পদ তা'র বারে বারে॥ ৩ তাহারি করেন হিত অপকার করে যেই। শ্রীরামের আরাধনে হে নাথ শুভ ভোমাব॥ ৪ সবজনে শুনাইয়া ব'লে গেল এ বচন ॥ ৫

দো—সভ্যবত প্রভু মোর অপবাদ রঘুকুল-মণি मि'रा नाक' (यन কাল-গ্রাসে সভা তব। এবে রাম-পদে যা'ব॥ ৪১

সাধুজন-অপমান-ফলে অতি সংরে।

65-এত বলি' স্থান ছাড়ি' বিভীষণ যা'ন যবে। মরণ নিশ্চিত হ'ল রক্ষ:গণেব তবে॥ মূল সনে শুভ নাশ পায় স্থির চিরতরে॥ ১

# বিভীষণের জীরামের চরণে শরণ গ্রহণ

যেইক্ষণে বিভাষণ দশাননে ত্যাগ করে। রামের চরণ-তলে যা'ন হর্ষিত মন। হেরিব তথায় গিয়া সে চরণ শতদল। যে পদ পরশ করি' ভরিল ঋষির নারী। যে পদ জনক-মুতা যতনে প্রদয়ে ধরে। হরের হৃদয়-সরে সরোজ-সম যে পদ।

তখনি সে হতভাগা হারা হ'ল বিভবেরে॥ করিতে করিতে পথে কতইবিধ মনন ॥ ২ ভকতের সুধদাতা অকণ অতি কোমল। কপট-মুগের পিছে যা' ছুটে ধরণী 'পরে ॥ ধ্যা ললাট মন্ন হেরিব সে কোকনদ।। ৪

ব্রে—ধাঁহার চরণ-আজিকে এখনি

পাছকার মন यादेया नग्रत्न

লাগা'য়ে ভরত র'ন। করিব তা' দরশন ॥ ৪২

(5) —করিতে করিতে মনে প্রেম দনে এ বিচার। আসিলেন ছরাপতি সাগরের এ-পার ॥ কপিগণ বিভীষণে হেরে' তথা আসিবারে। ভাঁহারে তথায় রাখি' সুগ্রীব-কাছে আসে। সুগ্রীব কহে ভবে শুন প্রভু রম্বুনাথ।

অরির বিশেষ দৃত বলি' হেন মনে করে॥ ১ ভাঁহার বারভা সব নিবেদন করে পাশে 🛭 রাবণের ভাতা আসে করিবারে সাক্ষাৎ॥ ২

<sup>•</sup> নিজের মন্ত্রী।

🕮 রাম কছেন সথে কিবা তব অসুমান। রাক্ষদ-মায়া কিছু অমুমানে নাহি আদে। তথ্য লওয়ার তরে উহার হেথা উদয়। ভোমার বিচার করে নীতির অনুসরণ। প্রভুর বচন শুনি' হমুমান হর্ষিত।

কপিপত্তি কহে তবে শুন হে কুপা-নিধান॥ মায়ারপধারী হেথা কিসের কারণে আসে॥ ৩ বন্দী উহাবে করা ভাল মোর মনে হয়॥ আঞ্জিভ-ভয় দুর করা-ই আমার পণ 🛭 ৪ ভাবে আহা আঞ্রিত-বংসল প্রভু কত॥ ৫

পো-মাপ্রিত জনে কলুষেতে ভরা

যেৰা ত্যাগ করে সে পামর নর

নিজাহিত অমুমানি'। ডা'রে হেরিলেও হানি॥ ৪৩

(5)—কোটি দ্বিদ্ধ-বধ পাপ লেগে'ছে যাহার 'পরে। শরণে পঞ্জিলে সেও কেহ নাহি ত্যক্ষে ভা'রে ॥ আমার সমীপ-দেশে আসে জীব যেইক্ষণ। স্বাভাবিক ভাব এই পাপাচার-রতগণে। এ যদি প্রকৃত হ'ত হুষ্ট-হৃদয়বান। নির্মাল মন যা'ব সেজন আমারে পায়। যদি সন্ধান ল'তে প্রেরে এরে দশানন। যত নিশাচর রহে জগত মাঝারে স্থা। আর যদি ত্রাস-ভরে লইতে আসে শবণ।

কোটি জনমের পাপ নাশ পায় সেইক্ষণ॥ ১ আমার ভঙ্গনা 'পরে ভাব নাহি আসে মনে॥ আমার সমীপে তবে হইত কি আগুয়ান্।। ২ কপটতা ছল-ছিজ ভাল না লাগে আমায়॥ ভাহাতেও হানি ভয় কিছু না করি গণন॥ ৩ সবে লক্ষ্মণ পারে নাশিতে নিমেষে এক।॥ প্রাণের সমান ভা'রে রাথিব করি যভন॥ 8

দো-হাসিয়া কহেন জ্ব প্ৰভু বলি'

কুপা-নিকেতন অঙ্গদ হন্তু-

ছু'য়েতেই আন' তা'রে। সহ চলে আনিবারে॥ ৪৭

চৌ—সমাদরে বিভাষণে অগ্রে ল'য়ে বানর। দুর হ'তে বিভীষণ করে তবে দরশন। আরবার শোভাধার বাম-রূপ নির্থিয়া। প্রামার মুগল ভুজ আঁথি লাল শতদল। আয়ত স্থূন্দর উর স্কন্ধ কেশরী-সম। নয়নে ভরিল নীব পুলকিত হ'ল কায়। প্রক্ত দশ-আননের সহোদর এই দাস। ষ্ট্রাবত: পাপ-প্রিয় তামস এ কলেবর।

চলিল রহেন যথা রখুপতি কুপাকর॥ নয়নের সুধকর সেই ভাই তৃইজন। ১ স্তব্ধ হ'য়ে অপশকে সেদিকে রচে চাহিয়া॥ প্রণতের ভয়হারী কলেবর সুখ্যামল॥ ২ অমিত মদন-মনোমোহন আনন কম॥ ধীরতা ধরিয়া মনে কহেন মৃত্ ভাষায়। ৩ নিশাচর-কুলে জন্ম হে ত্রাতা অমর-ত্রাস। তম: 'পরে পেচকের প্রীতি যথা নিরম্বর ॥ ৪

দো—তব যশ ভনি' শরণ-সুথদ

আসিয়াছি প্রভু আর্ত্তি-হরণ

ভঞ্চন ভব-ভয়। রাখ' পায়ে কুপাময় ॥ ৪৫

(5)—এত বলি' দওবং নমিতে হেরিয়া ভা'রে। স্বরিতে উঠেন প্রভ অতীব হরষ ভরে য় বিশাল ভুলেতে বাঁধি' আপন বুকে লাগা'ন # ১ দীনভাষা শুনি' রাম মনে অতি সুখ পা'ন।

ভ্রাতা সনে সম্ভাষি' নিকটে বসা'ন হরি। কহ লগা-অধিপতি সহ নিজ পরিবার। অসং-সমাজ মাঝে নিশিদিন তব বাস। তব বাতিনীতি সব বিদিত আছে আমার। হে তাত বরং শ্রেয় নরকেতে **অবস্থান**। রক্ষঃ কছে দাস বুঝি করিলে মোরে করুণা।

কহেন বচন তবে ভকতের ভয়হারী॥ কুশল ত' তব বাদ কু-দেশ 'পবে ভোমার ॥ ২ কেমনে ধরম নিজ নির্কাহ' বারমাস। অতি নীতিযুত তুমি অনীতি বিষ তোমার ॥ ৩ তবু ধাতা যেন খল-সমাগম নাহি দেন॥ হেরি' পদ নাথ এবে কুশল করি গণনা॥ ৪

দো-শোকের আগার তদবধি শুভ

কামনা ত্যজিয়া স্বপনেও মনে

রামে নাহি ভজে যবে। শান্তি না পায় জীবে॥ ৪৬

(5)--यमविध कपरा ना निवरमन त्रधूनाथ। তদবধি হাদিমাঝে রচে যত পাপাশয়। त्राम-(वय-, अहरकत व्यार्ग स्थ अमाग्निनी। उनविध तम तकनी कीव-मतन (ह'रय तय। এখন কুশল মম মিটে'ছে ভবের ভয়। হে কুপাল যা'র 'পরে তুমি হও অমুকুল। রাক্ষদ আমি অতি অধম-মভাববান। যাঁহার রূপের ছবি মুনিও না ধ্যানে পা'ন।

কটিতে তৃণীর বাধা শর শবাদন সাথ॥ লোভ মোহ অহকার মদ মান রিপুচয়॥ ১ মমতা-রূপিণী ডমোময়া ঘোর নিশীথিনী॥ প্রভুর প্রভাপ-রবি যদবধি অমুদয়॥ ২ হেরিয়া কমল-পদ তোমার হে দয়াময়॥ ভাহারে না লাগে কভু ত্রিবিধ ভবের শূল।। ৩ ক ছু শুভ-আচরণ কথনো না করিলাম। সে প্রভু প্রীতির ভরে হৃদয়ে মোবে লাগা'ন 🛚 ৪

(मा-नीमानीन अरहा বিধাতা মহেশ-

সুকৃতি আমার সেবিত ও পদ

কুপা হুখ-রাশি বাম। এ নয়নে হেরিলাম॥ ৪৭

হইলেও ডোহী নর কিবা জডে কি চেডনে। আর ত্যকে নানাছল - নিজ মদ মোহ মান। জনক জননী ভ্রাতা সম্ভান বনিতারে। সবার মমতা-ডোর যে জন করি' ছেদিত। সম-দিঠি রহে যা'র কিছু না কামনা রয়। হেন সজ্জন মম জাদে হেন বাস করে। ভোমার সমান সাধু অভীব প্রিয় আমার।

(চৌ –রাম ক'ন শুন সধা আপন অভাব কই। জানেন মহেশ কাক আর উমা কুপাময়ী॥ मञ्जू श्वनरत यनि तम जातम मन भवत्। > সম্ম ডা'হ'লে করি ভাহারে সাধু-সমান ॥ শরীর ভবন ধন স্কুদ ও পবিবারে॥ ২ মনেরে আমার পায়ে করে দৃঢ় নিয়োঞ্চিত। না হরষ নাহি শোক মনোম'ঝে নাহি ভয় 🛚 🕹 खपरप्रएड (माडी यथा श्वतं माममा करतः॥ অস্ত কাহারো তরে ধরি না এ দেহ-ভার॥ ৪

(দা-সগুণ-ভক্ত সে মানব মম পরহিতে রঙ প্রাণের সমান নীতি নিয়মেতে রতি। ৰিজ-পদে যা'র প্রীতি॥ ৪৮

🖒 —এ সব ভোমার গুণ 😎ন লঙ্কা-অধিপতি। সেহেতু ভোমাতে মোর অভিশয় প্রীত মতি॥ রামের বচন শুনি' কপিদল সবে কয়। শ্রবণ করেন কাণে প্রভু-বাণী বিভীষণ। চরণ-সরোঞ্জ 'পরে নিপ্তিত বারবার। করেন শুনহ দেব চরাচর জগ-স্থাম। প্রথমে আছিল কিছু বাসনা মানদ-তলে। এখন হে কুপাময় পাবনী তব ভক্তি। 'এবমস্তা' কচি' তবে রঘুমণি রণধীর। ক্রেন যদিও স্থা তব অভিলায নাই। হেন কঠি' রাজ্ঞটীকা দেন রাম বিভীষণে।

অপার কুপার নিধি রঘুনাথ জয় জয় ॥ ১ প্রবণ-অমিয় জানি' তিরপিত নাহি হ'ন। ধরে না হৃদয়-মাঝে সেই প্রেম-পারাবার॥ ২ তে প্রণত-প্রতিপাল জনয়-অন্তর্যামি॥ ভাগিয়া গিয়াছে এবে প্রভু-প্রেম-নদীব্দলে॥ ० দেহ দাসে শিব-মন জ্বীভূত যাহে অভি॥ কহিলেন হরা করি' আনিতে সাগর-নীব॥ 8 অমোঘ দর্শ মম ধরা মাঝে স্বর্দাই ॥ প্রচুর বরষে ফুল যতেক অমরগণে॥ ৫

| দো—আপন বচন-  | সমীরে প্রবল     | রাবণের ক্রোধানলে।                   |
|--------------|-----------------|-------------------------------------|
| मक्ष विङोयरग | জুড়া'য়ে দিলেন | অথগু-তিলক ভালে॥ ৪৯ (ক)              |
| যে সম্পদ শিব | (पन प्रभानत     | দশ শির-বিনিময়ে। 🚆                  |
| তাহাই 🎒 বাম  | করিলেন দান      | বিভীষণে ভয়ে-ভয়ে ॥ ৮৯ ( <b>খ</b> ) |

চৌ—এমন প্রভূবে ত্যজি' যে ভজে অপরজনে। সে মানব পশু স্থির পুজু ও শিং বিনে॥ আপনার দাস ববিং' আপনার করি' ল'ন। প্রভুর স্বভাব লাগে কপি-মনে বিমোহন ॥ ১

# সমুদ্র উত্তরণের পরামর্শ

তখন সর্ব্বজ্ঞ প্রভু স্বার হৃদয়-বাসী। কার্য্যতরে নররূপ দমুল-কুল ঘাতক। শুন কপি-অধিপতি আর লহাপতি বীর। মকর ভূজগ মীন-সঙ্গুল পারাবার। বিভীষণ কহে শুন হে প্রভু রখুনায়ক। তথাপি নীতি এ বলে আপনার কাল-ভরে। সর্ব্যরপধারী সব-বিরহিত ও উদাসী॥ কংগন বচন এই নীতির প্রতিপালক॥২ এ গভীর পারাবারে কি প্রকারে পা'বো ভীর ॥ তলহীন অর্ণবে তরে সে শক্তি কা'র॥ ৩ কোটি হেন পারাবার-শোষক ভব শায়ক॥ সাগর-সকাশে গিয়া মিনতি জানাও তা'রে ॥৪

দো-হে প্রভু ভোমার বিনাই প্রয়াস

কুলের প্রবীণ ভাল কপি-সেনা

জ্বলধি ক'বে উপায়। সাগরে ভরিবে যা'য়॥ ৫০

এই যুক্তি লক্ষণের পরাণেতে নাহি লাগে। ক'ন নাথ দৈব 'পরে ভরদা আছে বা কোন। কাপুরুষগণ-মনে কেবল জরুসা ভার।

(6)-রাম ক'ন স্থা তুমি কহিয়াছ সতুপায়। দেবতা সদয় হ'লে তবে ইচা করা যায়॥ রামের বচন শুনি' প্রাণ ভরে অন্তব্যেগে।। ১ মনোমাঝে ক্রোধ আন' সাগরে কর শোষণ॥ 'रिमव रेमव' व'नि छा'ता ही श्कारत वात्रवात ॥ २

এ কথা প্রবণে হাসি' ক'ন তবে রঘুবীর। এই কথা বলি' প্রভু বুঝাইয়া অনুজেরে। শির অবনত করি' প্রথমে প্রণাম করি'। বিভীষণ আদিলেন যেমনি প্রভুর পায়।

ভাহাই করিব মনে এখন ধরহ ধীর॥ সাগর-সমীপদেশে যা'ন রাম তীর 'পরে॥ ৩ কুশ বিছাইয়া পরে বসিলেন ভটোপরি # সেইক্ষণে তাঁ'র পিছে রাবণ দুতে পাঠায়॥ ৪

ধরি' ছলে কপি-দেহ।

শরণাগভেরে স্বেহ ॥ ৫১

সুগ্রীব-সম্মুখে সকলে বাঁধিয়া আনে ॥ ১

অবয়ব-হানি' করি' ইহারে কর প্রেরণ॥

রামের শপর যদি কর মোর কর্তন॥ ৩

বাঁধন ঘুচা'য়ে দেন ছরিতে দয়ায় হেসে'॥

আর ব'লো জন্মণের বারতা কর পঠন। ৪

সেনাদের চারিধারে বাঁধিয়া ভা'রে মুরায়॥ ২ চীৎকার করে তবু নিস্তার নাহি তা'র॥

# রাবণের দূত্তের আগমন ও লক্ষাণের লিপি লইয়া প্রতিগমন

নিরখিল দৃত (দা-সকল ব্যাপার (नय माध्वान হ্যদে প্রভু-গ্রণে চৌ-ধরি' নিজরূপ রাম-স্বভাব-মহিমা গায়। অভীব ভক্তি সনে ভুলিয়া ক্পটতার । অরাতির দৃত বলি' তখন কপিরা জানে। সুগ্রীব কহে শুন যতেক বানরগণ। সুঞীব-বাণী শুনি' বানর সকল ধায়। কভই প্রকারে ভা'রে বানরে করে প্রহার। त्रकः उथन वर्ण नामिका किवा खवग। ইচা শুনি' লক্ষণ সবারে ডাকা'য়ে পাশে।

দো-ব'লো বাচনিক সেই মৃঢ়-পাশে সীতা অর্পিয়া

মিল' রাম সনে

বারতা মম উলার।

উদিত কাল ভোমার॥ ৫২

রাম-গুণ বর্ণিয়া চলিল সে দুত ফিরি'॥ নমিত করে সে শির তখন রাবণ-পায়॥ ১

আপন কুশল শুক নাহি কহ কি কারণ।।

(5)-ছরা লক্ষ্মণ-পদে শির অবনত করি'। গাহিতে গাহিতে রাম-যশ ফিরে লঙ্কায়।

ক'ন ডা'রে রাবণের হাতে দিও এ লিখন।

# দুভের রাবণকে উপদেশ ও লক্ষাণের লিপি দান

হাসিয়া রাবণ করে জিজ্ঞাসা বিবরণ। ভা'র পর সমাগত মরণ শিয়রে যা'র। লয়া ভ্যজিল মূঢ় প্রভূতা করি' দলিত। পরে কহ কপি ভালু-সেনাদের সমাচার। याहारमञ्जूषीवरनत वक्की मिवमहम्र। ডা'র পর কহ মোরে ডাপসবয়ের কথা।

সেই বিভীষণ-কথা গোচর কর আমার॥ ২ এখন ষবের কীট# হ'বে সেই ভাগ্যহত।। কালের প্রেরিভ হ'য়ে আসে যা'রা ছরাচার॥ ৩ তথুই কোমল প্রোণ সাগরের পিরে রয়।। বড়ই আমার ভর যা'দের পরাণে গাঁধা।। ৪

দো-পে'য়েছিস্ দেখা কেন না কহিস্

অথবা কিরে'ছে অরি-ডেজ বল

শুনি' কাণে যশ মোর। চকিত জনয় তো'র। ৫৩

<sup>•</sup> বেমন কৰেৰ সহিত কীটও নিম্পেৰিত হয়, সেই মন্ত বানৰ-সেনাৰ সহিত বিতীংগও মৃত্যুম্থ পতিত হইৰে।

🤇 🕳 কুড কৰে কুপা কৰি' শুধাইলে বেইমত। ক্ৰেনধ ড্যক্তি' নিবেদন শুন প্ৰভু দেই মন্ড ॥ যেমনি অমুক্ত তব মিলিলা রামের সনে। तावरनत पृष्ठ चामि खावरन यथा शनिन। নাসিকা শ্রবণ মম কর্মন উল্লভ তথাইছি প্রভুরাম-বাহিনীর বল কত। विविध वत्रम किंग अटकत्र मिनाशन। এ পুরী দহিল যেবা বধিল ভোমার স্ততে। क्छविथ नाम-थद क्नानी तरा कदान।

(प)-विविध मयुग्त मधियुच मार्ठ

বিকট-ৰদন কেশরী নিশঠ

(5)-- এসব বানরে বল স্থাব-সম ধরে। ভা'দের অভুল বল রামের করুণা-বলে। ওনে'ছি আপন কাণে ওচে প্রভুদশানন। (र व्यं चे वाहिनी-मात्य (हन किन माहि नग्र। অতি রোধ-ভরে করে করে-করে মর্দ্দন। ক্রে মীন অহি সহ শুষিব সারা সাগর। নিপীড়িয়া দশাননে মিশাইব ধূলি সনে। ৰভাবে নিডর তা'রা গর্জে ডর্জে হেন।

> দো-খাভাবিক বীর কোটি কালে ভা'রা

ৰূপি ভালু সব প্ৰভু লহাপতি

Cচী-রামের প্রভাপ বল বৃদ্ধির বিপুলভা। লক্ষম এক শরে শুষিতে শত সাগর। ভ্রাতার বচন শুনি' পারাবার-সন্নিধানে। দূতের বচন শুনি' হেদে' উঠে দশানন। সহজ-ভীকুরঞ্জধা করিয়া সে সপ্রমাণ। রে মুট বড়াই রুখা কি করিস্ভা'র আর। ৰাপুক্ৰ বিভীৰণ যা'ৰ মন্ত্ৰণাদাভা। রাবণ-বচন শুনি' বাড়িল দুডের জোধ। করে রামান্তর এই পত্র করিলা দান। হাস্ত করি' বাম করে লইল লিপি রাবণ।

দিলেন রাম জ্রীটীকা ভালে তাঁর দেইকণে ॥ ১ বানরে বাঁধিয়া মোরে যাতনা কভেট দিল ॥ রামের শপথ দিতে হইল তবে বিরত॥ ২ কহিতে না পারে মুধ হইলেও কোটিশত ॥ বিক্ট-বদন ভা'রা স্থবিশাল ও ভীষণ ॥ ৩ সে-ই হেরি ক্ষীণবল সকল কপির হ'তে ॥ অগণিত করী-বল শরীর অতি বিশাল # 8 व्यक्त नम नीम।

জামবান বলশীল। ৫৪

এইমভ কোটি কোটি গণনা বা কেবা করে॥ তৃণ-সম জ্ঞান করে ত্রিভুবন-মণ্ড:ল॥ ১ অষ্টাদশ পদা কপি গণনে সেনানীগণ॥ সমরে যে নাহি পারে ভোমারে করিতে জয় ॥ ২ এখনো না করি' লাভ রামের অনুমোদন॥ করিব ভরাট নহে লইয়া বড় পাপব 🛭 ৩ এইমত কথা কচে যতেক বানরগণে # অভিনাষ ধরে মনে লহা গ্রাসিতে যেন ॥ ৪

> পুন: রাম শিরোপরে। রণে জিনিবারে পারে। ৫৫

শতকোটি শেষ নারে কহিবারে সেই কথা। ত্বাপি অমূজ-পাশে শুধা'ন নীতি-নাগর ॥ ১ গমনের পথ চা'ন এমনি করুণা মনে ॥ এই বৃদ্ধি তাই লয় বানর-পদে শরণ॥ ২ পারাবার সনে হঠ আচরিল অল্ল-জান ॥ অরাতির বল মতি বৃঝিয়াছি এইবার 🛚 👁 বিজয় বিভৃতি ভা'র জগত-মাঝারে কোখা ॥ পত্র বাহির করে যথা-কাল করি' বোধ ॥ ৪ পাঠ করাইয়া প্রভু শীতল কবচ প্রাণ : সচিবে ডাকা'য়ে পাঠ করাইল আরম্ভন ॥ ৫

<sup>•</sup> विकीयन ।

# প্রীরামচরিত মানস

(म)—(कवन कथार्ड মনেরে বুঝা'য়ে কুলনাশ নাহি কর'। ত্রিমৃত্তি-শরণে পড়'॥ ৫৬ (₮) রাম-জোহী নাহি ৰাঁচিবে যদিও হয় ভাজি' মান হ' প্রভু-চরণ-ভুঙ্গ। অনুজ-সমান অথবা রেখল হ' কুল-সহ পতক । ৫৬ (৭) রাম-কোপানলে

(6) -- निপ ভিন' ভীত মন মুখে তক হাসি আনি'। সবাবে তনা'য়ে কহে দশানন এই বানী। ধরার পড়িয়া যথা ধরিতে চাহে আকাশ। मुख करह ठिक व्याष्ट्र वहन निश्विष्ठ यथा। ধরত বচন মম পরিহার করি' ক্রোধ। যদিও 🕮 রাম হ'ন সকল ভূবনপতি। क्रिलिहे मार्कां थ्रेष्ट्र कुला क्रिरियन। রামেরে অনক-মুতা কর' প্রতি-অর্পণ। সীতা-অর্পণ-কথা যথা দৃত মুখে নিল। পে-ও ভবে পদে তা'র নমিত করিয়া শির। প্রশাম করিয়া পদে জানাইল নিবেদন। অগন্তা মুনির শাপে শিব ক'ন হে ভবানি। রামের চরণতলে প্রণমিয়া বার বার।

লঘু-ভাপদের
ভথা এতেন কথা-বিলাস ॥ ১ মানের স্বভাব ত্যঞ্জি' বুঝাহ সকল কথা। রামের শহিত ত্যাগ কর প্রভু এ বিরোধ ॥ ২ তথাপি স্বভাব তিনি ধরেন কোমল অডি॥ হ্বদি-মাঝে অপরাধ কিছু নাহি রাখিবেন॥ ৩ এই অমুরোধ প্রভু আমার কর গ্রহণ। অমনি ভাহারে মৃঢ় পদাঘাত প্রহারিল # 8 চলিল যথায় র'ন কুপানিধি রযুবীর॥ রাম-করুণায় পেল' মুনির গতি যেমন॥ ৫ রাক্ষস হ'য়েছিল নতুবাসে মূনি জানী। আশ্রম পানে মুনি গেল চলি' আপনার॥ ७

# সমুজের উপর রামের ফোখ; ও সমুজের স্তব

(पा-(इथा जिनमिन হইল অভীত সাগর কথা না মানে। ভয়ের বিহনে প্রীতি না আসিবে মনে । ৫৭ কোপে রাম ক'ন

८5ो-- नम्मा ने देश अन (भार ने व ने वीनन। মিনতি মুচের পাশে কুটিলের সনে প্রীতি। মমতা-জড়িত জনে জ্ঞানের যত বচন। শাস্তি ক্রোধীর কাছে কামী-আগে হরি-কথা। এত বলি' রঘুপতি জ্যা দিলেন শরাসনে। প্রভু' হানিলেন শর করাল অভি ভীবণ। মকর উরগ মীন ব্যাকুলিড অভিশয়। কনক-থালায় ভরি' নানা মণি-উপহার।

व्यक्ति भाग्रदक कति मागदत এবে भाग्य ॥ অভাব-কুপণ পাশে কথা উদারতা-নীতি ! ১ অভিশয় লোভী-আগে বৈরাগ্যের বিবরণ । উষর ভূমিতে বীজ-বপন বিফল যথা। ২ এ উপায় অতি ভাল লাগে লক্ষ্ণ-মনে 🖁 উপজিত পারাবার-জদয়মাঝে দহন 🏽 ৩ জলনিধি যবে জানে প্রাণীরা দহিত হয় 🛭 মান ছাড়ি' আসে নিধি ধরিয়া বিজ-আকার । ঃ

বো-কোটি যত্নে কেহ বিনয়েতে বশ

(मैठ्ड कमनी হয় নাক' নীচ

কাটিলেই ফল ধরে। পথে আসে ডিরক্ষারে ॥ ৫৮

6ी—ত্রাস ভরে প্রভু-পদ অভাইয়া পারাবার। গগন সলিল ধরা প্রন ও ছভাশন। তব প্রেরণায় মায়া সৃষ্টির কাল-তরে। যাহার উপরে প্রভু-আদেশ যেমন হয়। ৰল্যাণ হ'ল শিক্ষা করিলে হে প্রভু দান। ভবু ঢোল মূঢ় শুদ্র পশু নারাগণ আর । প্রভূর প্রভাপে যা'ব গুকাইয়া নিশ্চয়। व्यम्बर्ग व्यापम एव (व्यम्हरू देशहे क्या।

বলে প্রভুক্ষমা কর অপরাধ যা' আমার॥ অভাবত: অভু-প্রায় ইহাদের আচরণ ॥ ১ ইহাদের বির্চিল শাল্পে এ গান করে॥ সেভাবে থাকায় তা'রা পরাণেতে ত্বপ পায়॥ ২ জীবের শ্বভাব যত যদিও তোমারি দান॥ ইহারা ভাড়িত হ'তে ধরে ওধু অধিকার॥ 🧕 পারে যাবে দেন। ইহা মোর মহিমায় নয়॥ করহ ভাহাই দ্বা যাহা অভিকৃতি হয়॥ 8

দো-ভনি' অভিশয়

কহ সে উপায়

বিনীড বচন

শ্মিতহুখে রাম ক'ন।

যাহে ভাত কপি-

সেনা হয় উত্রণ॥ ৫৯

C51—নাথ নলনীল নামে রহে ছই সহোদর । বালক-বয়সকালে লাভল মুনির বর ॥ ভাহার। পরশে যদি গিরি অভি গুরুভার। আমিও হাদয়ে ধরি' ভোমার প্রভাপ-বল। এই ভাবে পারাবারে করাইলে বন্ধন। এই শর হানি' মম উত্তর-ভটবাদী। কুপাল শুনিয়া ভবে সাগরের মন-খেদ। রামের পৌরুষ বল করি' নিধি দরশন। পাপীদের সব কথা বিবরিয়া শুনাইল।

ডোমার প্রভাপ-বলে সাগরে দিবে সাঁভার॥ ১ হইৰ সহায় তব আমার যেমন বল। ত্রিলোকে ভোমার যশ হ'বে প্রভু অভুলন ॥ ২ হনন করহ যভ খল নর পাপ-রাশি। করেন ছরিতে রাম ভাহাদের উচ্ছেদ।। ০ হইল পলক-মাঝে মহামুখে নিমগন। भार-वन्त्रना करि' माशव हिलाया (शल ॥ 8

# **अन्नामश्चन-माहाश्वा**

| <b>ভ্</b> —সাগর ভবন | ক্রিল গ্মন    | রঘুপতি হ'ন হরষ মনে।    |
|---------------------|---------------|------------------------|
| এ চরিত-বর           | কলিমল-হর      | যথা মতি দাস তুলসী ভণে। |
| স্থার সদন           | বিধার শমন     | বিষাদ-দমন স্থাপ-রাশ।   |
| ওরে মূঢ় মন         | শো'ন্ কীৰ্ত্ন | কর্দদা ড্যজি' দকল আশা। |
| বে শি-সব মঙ্গল      | চির বিধায়ক   | রমুপত্তি-গুণ গান।      |
| শুনিলে আদরে         | তরিবে ভবেরে   | निवि विना कलयान ॥ ७०   |

কলিযুগের সমস্ত পাপধ্বংসকারী জ্রীরামচরিত-মানদের এই পঞ্চম সোপান সমাপ্ত হইল ৷

( অব্যৱকাণ্ড সমাপ্ত )

#### शिगर्गमात्र नवः

#### श्रीकानकी बहुएकत कर

# শ্রীরামচরিত মানস

# ষ্ট্র সোপান

# লঙ্গ কাণ্ড

সৌক-কামারি-সেবিত রাম

যোগীখর-জ্ঞানগম্য
মায়াহীন স্থরেখর
পল্লাক্ষ জলদ-তমু
শক্ষা-ইন্দু-নিভ আভা
করাল কালের সম
কাশীখর যম ত্মি

প্রণাম গিরিজ্ঞাপতি কৈবল্য-মোচন(ও) যিনি আর খলে দওদাতা

**বো**—ক্ষণ ও নিমেষ নাভজিস্মন ভব-ভয় দুরকারী
অক্সেয় গুণের নিধি
তৎপর নিধন ছষ্ট
নূপ-রূপ পরমেশ
অতীব স্থুন্দর তফু
ব্যাল-ভূষণ-ধর
কলির কল্য-চয়ে
গুণনিধি তব পায়ে
অতীব হুর্লভ যাহা

যুগ প্রমাণু তেমন রামেরে

ককন সে শিবশস্থ

মন্ত করী কালের কেশরা
গুণের অতীত নির্ব্বকার।
একমাত্র ছিল্প রক্ষাকারী
বিন্দি আমি চরণ তোমার ॥ ১
ব্যাত্ত-চর্মা কটি-আভরণ
স্থরধূনী শশী-প্রিয় দেব।
কল্যাণের কঃক্রেম সম
শ্রীশঙ্কর অরি কামদেব। ২
সাধুগণে করেন প্রেদান।

মোর 'পরে বিস্তার কল্যাণ । ৩

কল্প বর্ষ শর চণ্ড। বাঁহার কাল কোদণ্ড॥

# ্সেতু-বন্ধন

**লো**—সিন্ধু-বাণী শুনি' ভবে বিলম্বে কি কাজ এবে

ত্ৰহ ভপনকুল-কেতৃ

**ভ**ব নাম(ই) প্রভু ভব-দেতু<sup>-</sup>

**(5)—এডটুক্ এ** সাগর শুষিতে লাগে কি কণ। প্রাক্তর প্রতিগে অভি ভীষণ বাড়বানল।

সচিবে ডাকিয়া প্রাভু ক'ন।
কর' সেতু বাহিনী-কারণ॥
আম্বান্ কহে জুড়ি' কর।
যা'ডে জব-পারে যায় নর॥

মারুতি কহিল পুন: শুনিয়া হেন বচন ॥ শুষিয়াছিল প্রেথম মহা-প্যোধির জল ॥ ১ অরাত্তি-রমণীগণ-রোদনের জলধারে। হতুর রহস্য ভরা বচন করি' আরবণ। জাম্বান আবাহন করি' তবে নীল নলে। শ্রীরাম-প্রতাপ মনে রাখি<sup>2</sup> চির **জাগরিত।** তখন বানরদলে করি' কাছে আবাহন। রাম পদ-শতদল রাখ'নিজ নিজ মনে। ধাও সবে ভীমকায় মহাবীর কলিগণ। শুনিতেই ধায় কপি ভালু করি' হুদ্বার।

লবণ-সাগর হ'য়ে আবার গিয়াছে ভ'রে॥ রত্মপতি-পানে চেয়ে কপিগণ প্রীত মন ৷ ২ ভাহাদের সব কথা যতনে ব্ঝা'য়ে বলে । নির্মাণ কর সেতু শ্রম নাহি কিছু ভাত॥ ৩ বলে সবে মিলি' ভন মোর কিছু নিবেদন ॥ এক খেলা খেল' সবে মিলি' কপি ভালুগণে 18 আন'ডরু ধরাধর করি'করি'উৎপাটন। শ্রীরামের প্রভাপের করি' জয়জয়কার॥ ৫

দো—অতি উত্তৰ আনিয়া তা' সবে

শৈল পাদপ (परा नम नीम হেলায় উপাড়ি' লয়। রচে সেতু কলাময় # ১

# জীরাম কর্ড়ক রামেশরের প্রতিষ্ঠা

**চৌ—বিশাল-আকার গিরি করে কশি আনয়ন। কন্দুক-প্রা**য় নল নীল করে তা' গ্রহণ ॥ নয়নের অভিরাম সেতৃর হেরি' রচন। অতি রমণীয় এই উকর মহীতল। এইস্থানে করিবারে মহাদেব প্রতিষ্ঠিত। ইহা শুনি' কপিরাজ বহু দৃত পাঠাইল। লিক-স্থাপন করি' যথাবিধি পূঞা হয়। শিব-জ্রোহিজন যদি আমাব ভক্তি করে। মহেশ-বিমুখ যদি ভক্তি চাহে আমার।

হাসিয়া করুণানিধি কহেন তবে বচন 🛚 ১ অসীম সহিমা এর কহিতে বাণী বিকল। পরম এ অভিলাষ মনোমাঝে সম্দিত॥ ২ মুনিবর সকলেরে যতন করি' আনিল। রাম ক'ন হর সম কেহ মম প্রিয় নয়। ৩ কথনো না পায় মোরে অপনেও ছেন নরে। সে নারকী মৃঢ় আর অভি লঘু মতি তার ॥৪

দো—হরের ভক্ত এমন মানব

জোহ মোর <sup>2</sup>পরে , কল্ল ধরি' ঘোর

শিব-জোহী মম দাস। নরকে করে নিবাস ॥ ২

(5)-রামেশ্বর মহাদেব বে করিবে দরশন। ত্মরধুনী-বারি আনি' ঢালিবে ইহায় যেই। কামনা-অতীত হ'য়ে যে সেবিবে ছাডি' ছল। আমার রচিত দেতু দরশন যে করিবে। রামের বচন লাগে অতি প্রিয় সবাকার। হর ক'ন হে ভবানি জীরামের এই রীডি। বাঁধিল সাগর দোঁছে নল নীল স্কুচতুর। যে উৎপল নিজে ডুবে অপরে ডুবার যাহা। সাগর-মহিমা ইহা নাহি হ'ল বর্ণিত।

সে পা'বে আমার ধাম তমু করি' বরজন। সায়জ্য করিবে লাভ পুণ্যবান নর সেই॥ ১ দিবেন মতেশ তা'রে মোর ভক্তি অবিচল । আয়াস বিহনে ভব-মহাবারি সে ভরিবে ! ২ আপ্রমে যা'ন কিরে' মুনিগণ বে বাঁহার । প্রণত ছনের 'পরে সদাই তাঁহার প্রীতি॥ ৩ রামের কুপায় যশে হ'ল ধরা ভরপুর ॥ তরণী-সমান ভাসে ভাসায় অপরে ভারা॥ ৪ শৈলের গুণ নহে নহেক কপির যভ 🛚 🕏

**দো—গ্রীর**ল্নাথের মন্দমতি সেই অমিত প্রভাপে অপর প্রভুরে সাগরে ভাসে পাবাণ। যেবা ভজে ভাজি'রাম॥৩

#### সাগর উত্তরণ

(চী — অভিশয় দৃঢ় দেতু করা হ'ল বিরচন।
চলিতে লাগিল দেনা বর্ণনা হ'বে কত।
কুপাময় রঘ্নাথ দেতু-তটে আরোহিয়া।
পরম করুণা-মূল প্রভুব দরশ-তরে।
মকর হাঙ্গর নানা মীন জ্বাতি আর ব্যাল।
আসিল এমন জীব তা'দের(ও) যাহারা খায়।
প্রভুব আদেন চাহি' রহে স্বাইলে নাহি সরে।
তা'দের কারণে জল চ'থে দেখা নাহি যায়।
প্রভুব আদেশ লভি' বাহিনী গমন করে।

কুপানিধি মনে প্রীত করি' তাহা দরশন ॥
অবিরত গর্জন করে কপি-বীর যত ॥ ১
রছিলেন অসুর প্রসার পানে চাহিয়া ॥
জলচর প্রাণী যত আদিল সলিলোপরে ॥ ২
যোজন যোজন শত দেহ যা'র স্থবিশাল ॥
কাহারো কাহারো ডরে তাহারাও ভয় পায় ॥ ৩
পরাণে হরষ ভরা ভাসে সবে মুথ সরে ॥
হরি রূপ হেরে তা'রা প্রেমের মগনভায ॥ ৪
কপিদল কি বিপুল কে তাহা কহিতে পারে ॥৫

**দো**—সেতু 'পরে ভীড় জলচরগণ- অভিশয় কপি 'পরে আরোহিয়া আকাশে উডিয়া চলে। কতক বাহিনী চলে॥ ৪

# অবেল পর্কতে অবস্থান; রাবণের ব্যাকুলভা

(b) — এইমত কোতুক করি' দোঁতে দরশন।
বাহিনী সহিত হ'ন লক্ষায় উত্তরিত।
শিবির স্থাপিলা প্রভু সাগরের পরপারে।
যাও সবে খাও ফল মূল অতি স্থমধুর।
রামের হিতের তরে তরুগণ ফলবান্।
খায় স্থমধুর ফল নাড়া দেয বিটপীরে।
যেশানে করিতে দেখে রাক্ষসে বিচরণ।
কামড়িয়া কেটে লয় নাসিকা প্রবণহয়।
এ ভাবে যে নিশারের হয় নাসা কাণ হারা।
সাগর ফেলেভি রে বেঁথে' একথা প্রবণে শুনে'।

হাসিয়া চলেন কুপাময় রাম লক্ষণ॥
কড যে সেনানী সেনা সে আর কহিব কড॥১
আদেশ বানরগণে দেন রাম একেবারে॥
শুনিতেই ধায় কপি ভালু স্থেথ ভরপুর॥২
সময় কি অসময় সে সবের নাহি জান॥
পাহাডের চূড়া ভাঙ্গি লহার পানে ছুঁড়ে॥ ৩
সকলে খেরিয়া ভা'রে করে নানা আলাভন॥
ছেডে' দেয় যবে প্রভু-গুণগান মুখে কয়॥৪
রাবণ-সমীপে গিয়া সব কথা বলে ভা'রা॥
রাবণ বলিয়া উঠে অভীব আকুল প্রাণে॥ ৫

**ডো**য়-অধিপতি

সলিলাধিপতি নীর-অধিশ্বর জলধি সিন্ধু বারীশ। উদৰি পয়োধি ঈশ॥ ৫

# রাবণের প্রতি মন্দোদরীর উপদেশ

(b) — আপনার আকুলতা আপনি করি' বিচার। ডর ড্য'জ' দশানন গৃতে যায় আপনার॥ কাণে যবে মন্দোদরী ওনে প্রভু আসিলেন। বেলা-ছলে উত্তাল পারাবারে বাঁধিলেন। ১

তথন ধরিয়া করে পতিরে ভবনে আনি'।
চরণে নমিয়া শির অঞ্চল প্রসারিয়া।
হে প্রভু তাহারি সনে বিরোধ করা উচিত।
তোমার ও রাম-মাঝে অন্তর সেইমত।
সীমাহীন বল মধুকৈটভে যেবা মারে।
বলিরে বাঁধিল কার্ত্তবীর্যোযে বিনাশিল।
তাঁর সনে বৈরতা করিও না প্রাণনাধ।

কলে ভাষারে অভি মন-বিমোছন বাণী॥
ক'ন নাথ শুন কথা ছদি-রোষ বরজিয়া॥ ২
বৃদ্ধি বলে যা'র সনে ভোমার হইবে জিভ॥
জোনাকী ও দিবাকরে প্রভেদ র'য়েছে যভ॥ ৩
বীরগণ-অগ্রগণ্য দিভিম্বতে সংহারে॥
ধরা-ভার হরিবারে সেই আসি' উভরিদ॥ ৪
কর্ম কাল জীব সব(ই) র'য়েছে বাহার হাত॥ ৫

পৌ—রামেরে প্রদান তন্ত্রের দিয়া করি' জানকীরে রাজাসন বনে

চরণে নমিয়া মাথ। গিয়াভজ রঘুনাথ॥ ৩

(5) — দীনজনে অভি দয়া-পরবশ রশুবায়।
ভোমার কামনা যত সবি ত' হ'ল পুরণ।
লাধুগণ এই নীতি ক'য়েছেন মহারাজ।
তথায় ভজনা স্বামি করহ চরণ তা'র।
তিনিই সে রঘুনাথ প্রণতের হিতকারী।
বাঁহারে লভিতে মুনি করেন কত যতন।
তিনিই যে কোশলের অধিপতি প্রভু রাম।
যদি ওতে প্রাণ্ডি মান' মম এ বচন।

শরণে আসিলে পরে শার্দ্গ(৩) নাহি ধায় ॥
স্থরাস্থর চরাচর পরশে তব চরণ ॥ ১
জরায় কানন মাঝে যাওয়াই নৃপের কাজ ॥
সংক্রেন পালেন যিনি করেন বিনাশ আর ॥ ২
ভজহ তাঁহারে নাথ সব মায়া পরিহরি'॥
বিরাগী হয়েন নূপ ভ্যাগ করি' রাজাসন ॥ ৩
ভোমারে করিতে কুপা উপনীত গুণধাম ॥
অতি পৃত যশে তব ভ'রে যা'বে ত্রিভুবল ॥ ৪

দো—এত কহি' ভরি' কহে হ'বে ভব জু নয়নে নীর ভাগ্য অচল ▼িপতা ধরি' পায়।
ভজারাম রখুরায়॥ ৭

কে কিবা করিয়া ময়-সুহিতায় উত্তোলন।
কহে প্রিয়া শুন বলি রুখা তব মনে ভয়।
কুবের বরুণ কিবা পবন শমন কাল।
দক্ষ অমর নর মোর বলে সবে রয়।
নানাবিধি ময়-সুতা রাবণেরে বুঝাইল।
বুঝাল হুদয়-মাঝে ময়-সুতা পরিশেষে।

করিতে লাগিল নিজ প্রভুতার বর্ণন ॥
আমার সমান বীর জগমাঝে কেবা রয় ॥ >
বিজ্ঞিত এ ভুজবলে যত সব দিক্পাল ॥
কি কারণে তব মনে উপজিল এই ভয় ॥ ২
রাবণ দভায় গিয়া আবার আসন নিল ॥
কাল-কবলিত তা'ই প্রাণে অভিমান আসে ॥ >

# রাবণ-প্রহন্ত সংবাদ

সভায় ফিরিয়া করে সচিবেরে সম্বোধন। সচিব ভাহাতে কহে স'য়ে এই কথা ছার। বলুন ভ', কিবা হেন শুদি-মাঝে মহাডর। কহ অরাতির সনে কি ভাবে হইবে রণ । হে প্রভুরাক্ষসপতি কি শুধা'ন বারবার ॥ ৪ আহার ড' আমাদের কপি ভালু আর নর ॥ ৫ **দো**—সবার বচন নীত্তি-অপলাপ ভূনি' প্রহন্ত**ঞ্চ** করিও না প্রভু

করকোড় করি' কয়। মন্ত্রী মৃত অভিনয়। ৮

চৌ—চাটুকার-বাণী কহে মূর্থ সাচবগণ।
তথ্ এক কপি এ'ল বারি লজ্বন করি'।
তথন কি কা'রো নাহি ছিল কুধা-ছতাশন।
সচিবেরা যে মন্ত্রণা শুনাইল বিধিমতে।
হেলার বাঁধিল ধেবা উত্তাল পারাবার।
বলুন ত' নর কি সে করিব বা'রে আহার।
সে তাত বচন মম আদরে কর প্রবণ।
প্রবণের মুখকর প্রিয় কথা যা'রা বলে।
শুনিতে কঠোর বটে পরম হিত-বচন।
প্রবণেম পাঠাও দূত শুন কথা ভরা নীতি।

এ ভাবে না হ'বে কাঞ্চ-উন্ধার কলাচন ॥

আজো আছে ভা'র কথা সবাকার মন ভরি'॥ >
নগর দহিতে কেন না করিল ভক্ষণ ॥

এখন শুনিতে ভাল তুখ আছে পশ্চাতে॥ ২

মবেল গিরিতে বেবা আনিল বাহিনী আর ॥
বড়াই করিয়া সবে বচন কহে অসার ॥ ৩

মোরে বেন কাপুরুষ করিও না বিবেচন ॥

হেন চাটু-কথা পটু বহু রহে মহীভলে॥ ৪

থেবা শুনে আর বলে বিরল এমন জন ॥
সীভারে ফিরা'য়ে দিয়া কর ভা'র সনে প্রীভি॥৫

দ্যে—বনিতারে পে'য়ে নহিলে সমুধ- যদি ফিনে' যায় সমরেতে ভাত বাড়া'য়ো না ঝঞ্চাট। ক'রো খুব মারকাট॥ ৯

(5)—বচন আমার প্রত্থ যদি তব মনে লয়।
কুপিত হইয়া কহে ফুত-প্রাত দশানন।
এখনি-ই সন্দেহ ছাদে হয় জাগরিত।
শুনিয়া পিতার বাণী পক্ষণ অতীব ঘোর।
কাল-কবলিত জনে ঔষধ যেই মত।
প্রাদোষ আগত হেরি' লক্ষাধিপ দশানন।
বিরাজে ভবন এক লক্ষা-শিধর 'পর।
দে ভবনে উপনীত হ'য়ে বদে দশানন।
বাজি'তে মুরজ বাজে করতাল আর বীণা।

উভয় প্রকাবে যশ হ'বে ভবে নিশ্চয়।

হেন মতি ভো'রে মৃঢ় প্রদানিল কোন্ জন॥ ১

বেণু-নুলে কু-বিটপী সম তুই সম্পিত॥

আলয়ে চলিল ফিনে' বচন কহি' কঠোর॥ ২
ভোমার লাগে না ভাল হিত কথা সেইমত॥
গৃহে যায় নিজ বিংশ-ভুজ করি' দরশন॥ ৩

অতি বিচিত্র রক্ষ-ভবন মানস হর॥

শুরু করে জ্ঞতিগান যভ কিল্লরগণ॥ ৪

অক্ষরগণ নাচে নর্ভন-সুপ্রবীণা॥ ৫

্বে —শত পুরন্দর-অভীব প্রবল সমান নিয়ত শিয়রে অরাতি রাবণ করে বিলাস। তবু নাহি শোচ ত্রাস॥ ১০

# হুবেল পর্বতে চন্দ্রোদয় বর্ণন

(b)—এদিকে স্থবেল গিরি 'পরে রাম রন্থ্রায়। উত্তরেন সহ সেনা সাগর-শহর প্রায় । উচ্চ শিশর তাহে ক্রি' এক দরশন। সমতল শুদ্র অতি আর প্রাণ-বিষোহন। ১

<sup>•</sup> शक्रवा अस शुद्ध । 🕇 सह ।

তক হ'তে কিশলয় লইয়া কুসুম দল। উপরে ক্রচির এক মস্থ মুগছাল-। সুগ্রীব-ক্রোড় 'পরে স্থাপিত প্রভুর শির। যুগল কমল-করে শর হয সংস্কার-। অতি মহা ভাগ্যবান্ অঙ্গদ বায়ু-সুত। বীরাসনে বসি' প্রভু-পশ্চাতে লক্ষ্মণ।

বিছা'লেন লক্ষ্মণ সহ নিজ পাণি' তল । আসনে বিরাজনান জীরাম মহা কুপাল ॥ ২ দক্ষিণ বামপাশে রহে কাম্মুক ভীর। কাণে কাণে মন্ত্রণা করে বিভীষণ আর ॥ ৩ কত-ভাবে সে চরণ-শতদল সেবা-রত। কটিতে তৃণীর বাঁধা করে শর শরাসন। ৪

| দো—এই ভাবে কুপা | ক্সপ-গুণ-ধাম  | প্রভু রাম সমাসীন।       |
|-----------------|---------------|-------------------------|
| ধশ্য সেই নর     | এ রূপ-ধেয়ানে | যেবা রহে লৌলীন ॥ ১১ (ক) |
| পুরবে চাহিয়া   | হোরদেন প্রভু  | সমুদিত শশধর।            |
| কচেন সবারে      | দেখ শশধরে     | কেশরী-সম নিডর॥ ১১ (খ)   |

মজ বারণ-ভম:-শির করি' বিদারণ। আকাশে ছড়ান' তারা মুকুতা সকলে যেন। প্রভ ক'ন কহ দেখি' মনেতে বিচার ক'রে। সুগ্রাব কহে প্রভু মোর মতি-অনুসারে। व्याचां कतिन तां है। (परत (कश्र व) कश्र। কেহ বলে রতি-মুখ বিধাতা গড়েন যবে। ছিড় দে আজো রহে ইন্দুর ওই বুকে। প্রভুক'ন হলাহল ইন্দুর প্রিয ভাই। হলাহল-সিঞ্জি নিশিত কর-প্রসারি'।

(5) —প্রাচী-দিশি-বিরাজিত শৈলের গুহাবাসী। পরম প্রভাপ তেজ ও বিপুল বলরাশি॥ সিংহ-সম শশী করে নভ:-বনে বিচরণ ॥ > নিশীথিনী-কামিনীর কম শৃঙ্গার-হেন॥ কিবা ওই শ্রামলিমা বিরাজিত শশধরে॥ ২ ধরণীর ছায়া রহে নিশাকর-কলেবরে॥ তাহারি ও শ্রামলিমা সারা দেহে ছে'য়ে রয়॥৩ শশী হ'তে সার ভাগ হরিয়া নিলেন তবে। সে-পরে নভের কাল ছাযা পড়ে সব-চ'থে॥ ৪ আপন বুকেতে তা'রে আদরে রাধিলা ডাই॥ দতে সে বিরহ-যুক্ত যাবতীয় নবনারী॥ ৫

| <b>ড়ো</b> —হনুমান কচে | শুন প্রাভু তব           | শশধর প্রিয় দাস।           |
|------------------------|-------------------------|----------------------------|
| তোমার মূরতি            | বুকে গাঁ <b>থা</b> তা'র | ভা'তেই শ্রাম-আভাষ ॥ ১২ (ক) |
| পবন-স্থতেব             | বচন শ্রবণে              | হাসেন রাম স্থান।           |
| দ ক্ষিণ-পাৰে           | অবলোকি' প্রভু           | কছেন কুপা-নিধান ॥ ১২ (খ)   |

(b) -- (पथ पिथ विडीयन पक्तिन पिक्-भारत। मध्द मध्द किया धन करत गतकन। বিভীষণ কহে তবে শুন প্রভু কুপাময়। লছা-শিখর 'পরে বিলাদের নিকেতন। জলদ-বরণ শিরে ছত্র করে বাহার। ময়-ছহিতার কাণে আভরণ বিমোহন।

জলদ-নিবিড় ছা'য় দামিনী কেমন হানে॥ হয় ড' করকা কোপা হইতেছে বর্ষণ ॥ ১ নহেক ভড়িৎ উহা জলধর(ও) উহা নয়। নৃত্যুগীত উপভোগ করে তথা দশানন॥ ২ খন-খ্যাম খনঘটা-ছটা করে অমুকার। मामिनी-समक सम हमकि'रह अ<u>सू-'</u>थन ॥ ७

বাজিতেছে অনুপম করতাল পাখোয়াজ : ঈবৎ হাসেন রাম হেরি' তা'র অভিমান। মধুর গরজ সেই শুন সুরকুল-রাজ ॥ ধমুতে চড়া'য়ে জ্যা হানিলেন এক বাণ ॥ ৪

কৰ্মিড এক বাণে। বো—ছত্র মুকুট শ্রুতি-মাভরণ পড়ে মহীতলে মৰ্ম কেহ না জানে॥ ১৩ ( क ) স্বাকার আগে ক্রীড়া সমাপিয়া পশিল পুনঃ নিষ্ক•। রামের শায়ক রাবণ-সভায় সচকিত সবে হেরি' মহা রস-ডঙ্গ। ১৩ ( খ )

(5)—নাহি কাঁপে বসুমতী উতল না বহে বায়। অথবা আয়ুধ কোন নয়নে না দেখা যায়॥ আপন আপন মনে সকলে করে বিচার। ত্রাসে অভিমৃত সভা অবলোকি' দশানন। শির **অ**র্পণে যা'র <del>গু</del>ভ হয় নিরম্ভর। শয়ন করহ এবে নিজ নিজ বাসে গিয়া। খনিতেই ধরাতলে সোণার কাণের ফুল।

অশুভ নিদর্শন উদিত হ'ল অপার॥ ১ যক্তির যোগে হাসি' কহিল হেন বচন। মুক্ট-খালনে ভা'র অগুভ কেন এ ডর॥ ২ যায় সবে গ্রহে ফিরে' পদে ডা'র প্রণমিয়া॥ ময়-সুতা মনে হ'ল চিন্তা স্থুদুঢ়-মূল। ৩

### मत्नामन्त्रीत नावनंदक भूनव्यात छभरमम ও ताम-महिमा कीर्डम

সঞ্জল-নয়নে কভে করি' তুই কর যোড়। প্রিয়তম রাম-সনে এ বিরোধ পরিহর'।

**জে**—বিশ্বরূপ রাম

অবয়বে বাঁ'র

রমুকুল-মণি কডই ভুবন

শুন শুন প্রাণপতি কাতর মিনতি মোর॥ মানুষ ভাবিয়া হঠ মন-মাঝে নাহি ধর'॥ ৪

> মান' মোর এ কথায়। विदारक (वरम ज भाग ॥ ১५

চৌ-পাতাল চরণ যাঁ'র শিরে বিধিলোক রয়। জ্রকটি-বিশাস কাল করাল সে ভয়ন্বর। নাসিক। হইয়া রহে অশ্বিনীর হু' কুমার। 🛎 ভি দশ দিক্ যাহা নিগম কহে বাথানি'। বাঁহার অধর লোভ দশন যম করাল। মৃথ যাঁর ভ্তাশন রসনা সলিলপতি। अष्टोषभ वनन्भिष्ठ (य भंदीरत दामावनी। সাগর উপর অধঃ-অঙ্গ নিরয় যত।

দো-অহকার হর বৃদ্ধি চারিমুখ মানব-আকারে বিশ্বরূপ সেই

গণনা-অভীত ধাম রাজে কলেবরময়॥ व्यमका बनाम-ब्यान व्यापि गाँद निवाकत ॥ ১ আঁখির নিমেষ যেন দিবস রজনী হাঁ'র॥ नियान वात्र आत ठाति (वन याँ त वानी॥ २ মায়া হাসি ভূজগণ যত সব দিকপাল। স্ত্রন পালন লয় যাঁ'র ৩ধু ক্রিয়া-পতি॥ ৩ অন্তি ভূধর শিরা ধমনী সরিতাবলী॥ ব্দগময় প্রভুরূপ-কল্পনা হ'বে কত॥ ৪

> विकृ हिक भनी मन। রমুকুল-বিভূষণ ॥ ১৫ (ক)

এ বিচার করি' আমার সোহাগ

শুন প্রাণপত্তি যাহাতে না যায় ত্যক' বাদ প্রভু-সনে। প্রীতি কর' সে চরণে ॥ ১৫ (খ)

চৌ—রাবণ হাদিল শুনি' বনিতার এ বয়ান। রমণীর স্বভাবেতে সভাই সবে কয়। সাহস ও মায়াজাল চপলতা মিথ্যাচার। অরাতির রূপ যাহা করিলে ভা'বর্ণন। দে জগ ড' প্রিয়তমে আমারি রহে অধান। তব চতুরতা যত বুঝিয়াছি সুলোচনা। রহত্তে পুরিভ অতি মুগ-আঁখি তব বাণী। রক্ষ:-রাণী মনোমাঝে এ দৃঢ় প্রভীতি এল।

কহিল মোহের ওহে৷ মহিমা কি বলবান II অষ্ট-প্রকার দোষ চিরদিন ছে'য়ে রয়॥ ১ অপুততা অবিবেক নিঠরতা ভয় আর॥ অভীব দারুণ ভয় করা'লে মোরে প্রবণ ॥ ২ ভোমারি কুপার ভরে ব্ঝে'ছে তব এ দীন। এ ভাবে প্রভাপ মোর নিয়ত কর রটন। ॥ ৩ বুঝিলে ত্রথদ হয় প্রবণেতে ভয়-হানি। কাল-কবলিত পতি তা'ই ভ্ৰষ্ট মতি হ'ল ॥ ৪

**দো**—এ ভাবে বিনোদ শ্বভাব-নিডর অমুভ খন না মৃঢ়ে চেডনা

করিতে অনেক লঙ্কা-অধিপ वत्रय यनिख মিলিলেও গুরু যামিনী পোছা'য়ে এল। সভায় চলিয়া গেল॥ ১৬ (ক) বেডদে ধরে না ফুল। ত্রকার সমতুল ॥ ১৬ ( খ )

#### अवटमम् नदा शंमन

(5)—এ দিকে প্রভাত কালে জাগিলেন রঘুরায়। শুধা'লেন অভিমত আহ্বানি' স্বাকায়। ক'ন কছ ছরা করি' কি উপায় করা যা'বে। ওনহ সর্বজ্ঞ প্রভু স্বার হৃদয়-বাসি। মন্ত্রণা কহি এই নিজ মতি অনুসারে । যুক্তি অতীব শ্রেয়ঃ বলি' সবে করে জ্ঞান। বল মতি গুণধাম হে বীর বালির স্থাত। ভোমারে অধিক ক'রে বুঝা'য়ে কি ক'ব আর। অরি-সনে সেই ভাবে ক'রো কথা-বিনিময়।

সো—প্রভুর আদেশ ধরি' শির करह रामिधि धौत्र আপনি সফল সব কাল এ কথা ভাবিয়া যুবরাজ

(চ)---বন্দি' চরণে প্রাণে ধরিয়া প্রভাপ ভা'র। সকলে নমিয়া চলে বালির প্রিয়-কুমার B রামের প্রভাপে প্রাণ সহজ বিগত-ভয়।

ৰাম্বান পদে শির নোয়া'য়ে কহিল তবে॥ ১ বুজি বল পরাক্রম ধর্ম ও গুণ-রাশি ॥ পাঠাও দুভের রূপে বীর বালি-মুকুমারে ॥ ২ অঙ্গদ-প্রতি ভবে কহেন রূপানিধান ॥ লক্ষায় যাও এবে আমার কাকেতে ভাত॥ ৩ পরম চতুর তুমি জানা আছে তা' আমার ॥ যাহে মোর কাজ আর কল্যাণ ভা'র হয় ॥ ৪ বালি-স্থন্ত উঠে পদে নমি'। কুপা রাম যা'রে কর তুমি॥ ১৭(क) প্রভু মোরে শুধু দেন মান ষ্র-কায় পুলকিড-প্রাণ । ১৭(খ)

नमत्र-निभूग वीत जनम निर्वत ॥ ১

করিছে প্রবেশ পুরে রাবণ-ডনয়ে পার।
কথার কথার বাড়ে মলিনতা ছুঁছ মনে।
অঙ্গদ-প্রতি করে নিজ পদ উদ্বোলন।
রাক্ষসগণ হেরি' হেন ভরানক বীরে।
এ উহার পাশে কিছু প্রকৃত কথা না কয়।
নগর-ভিত্তরে শেবে কোলাহল সমুদিত।
অভি ভরে ভীত হ'য়ে সকলে করে বিচার।
কোন কথা না শুধা'য়ে দেয় পথ দেখাইয়া।

পুরীর সমুখে বেবা নিরত ছিল খেলার ॥
বীরতার অতুলন তাহে বুবা হুই জনে ॥ ২
ধরি' ডা' ছুরা'রে কপি ধরার করে পাতন ॥
ছুটে যে যেদিকে পার গোল করিতেও নারে ॥৩
কুমারের প্রাণ-নাশ ছির জানি' চুপ রয় ॥
যে কপি দহিল পুরা সে পুন: হ'ল আগত ॥ ৪
কে জানে বিধির মনে কিবা আছে এইবার ॥
যে-ই দেখে সে-ই যেন ভয়ে যায় শুকাইয়।॥৫

#### রাবণ-অজদ লংবাদ

দো—সভার ভোরণে হেরে চারিদিক উপনীত শেষে বীরকুল-চূড়া রামের চরণ শ্বরি'। সিংহ-ধীরভা ধরি'॥ ১৮

চৌ—ছরিতে অঙ্গদ এক রাক্ষ্যে পাঠাইল।
তা' শুনি' হাসিয়া কহে লঙ্ক্ষেশ দশানন।
আদেশ করিয়া লাভ অনেক দুডেরা ধায়।
অঙ্গদ দশাননে করে হেন দরশন।
ভূজ মহীরুহ শির ভূধর-শিপর-প্রায়।
বদন নাসিকা কিবা নয়ন প্রবণ আর।
অভি বিক্রম-যুত রণ-বীর বালি-স্ত।
অঙ্গদে হেরি' সবে আসন চাডিয়া উঠে।

রাবণেরে সমাচার দিতে ডা'রে ব'লে দিল ॥
কোথাকার সে বানর ডেকে আন'কোন জন ॥১
কিশ-কুঞ্জরে ডাকি' সভায় লইয়া যায় ॥
কজ্জল-গিরি যেন সন্ধাব সহ চেতন ॥ ২
লোমাবলী সে শরীরে যেন লতা সমুদায় ॥
গিরি-কন্দরে খাদে যেন করে অমুকার ॥ ৩
সভায় দাঁড়া'য়ে মনে তিল নহে বিশ্বিত ॥
রাবণের মনোমাঝে নিদারণ ক্রোধ জুটে ॥ ৪

জে। নাম-বল ভুগা রাম-বল যুপের মাঝারে শ্বরি' বদে অভি- কেশরী চলিয়া যায়। বাদন করি সভায়॥ ১৯

(5)— শুধাইল দশানন কে তুই ওরে বানর।
পিতায় তোমায় ছিল হাছতা অভিশয়।
উত্তম কুল-জাত পুলস্ত্য মুনির নাতি।
করিয়াছ বরলাভ সকল বাসনা যত।
নূপ-অভিমানবশে অথবা মোহের ভূলে।
শ্রেণ করহ, এবে এই মোর হিড-বানী।
দশনে ধরহ ভূণ কণ্ঠ 'পরে কুঠার।
আদরে সীতারে ল'রে স্বাকার প্রোভাগে।

আমি শ্রীরামের দৃত এল তা'র উত্তর ॥
তোমার হিতের তবে তা'ই আসা মহাশয় ॥ ১
বিধাতা মহেশে তুমি আরাবিলে বহুভ তি,॥
লোকপাল নুপগণ সবে তব পদানত ॥ ২
সারা ভগতের মাতা ভানকী হরিছা নিলে ॥
সব অপরাধ তব ক্ষমিবেন রখুমণি ॥ ৩
আপন বনিতা সহ সহ নিজ পরিবার ॥
ভাজিয়া সকল তর যাও শ্রীরামের আলে ॥ ৪

#### **এীরামচরিত মানস**

**লো—প্রণত-শ**রণ কাতর বচন রযুক্লমণি শুনিলেই প্রভু ত্রাহি ত্রাহি এবে মোরে। অভয় দিবেন ভো'রে॥ ২০

(5)—রে কপির পুৎ মুথে ক'দ্ কথা সংযত।
বলু তো'র নিজ নাম আর তো'র জনকের।
আঙ্গদ নাম মোর কপীশ বালি-তনয়।
আঙ্গদ-বাণী শুনি' কুঞিত দশানন।
বালির তনর তুই আঙ্গদ নাম তো'র।
জঠরে মরণ কেন নাহি হ'ল মিছে এলি।
বালির কুশল বল্ কোথা দে থাকে এখন।
দিন দশ গত হ'লে নিজে গিয়ে বালি-কাছে।
রাম জোহ-প্রতিফলে যেমন কুশল হয়।
শোন্ মৃচ ভেদ-নীতি তা'রি মনে পায় স্থান।

দেবতার অরি আমি না জানিস্ভাগ্যহত ॥
কি ছলে হছততা-দাবী করিস্ এ লক্ষেশের ॥ ১
কথনো কি তাঁর সনে হ'য়েছিল পরিচয় ॥
বলে জানি বালি-নামে ছিল কপি একজন ॥ ২
৫রে কুল-বিনাশক বেণুর অনল ঘোর ॥
নিজ মুখে তাপসের দৃত পরিচয় দিলি ॥ ৩
তানি' অঙ্গদ হাসি' বলে তবে এ বচন ॥
স্থারে জড়া'য়ে রুকে তথা যো কেমন আছে ॥ ৪
সব সে ভানা'বে ভোমা ভাহাতে নাহিক ভ্য ॥
অংগরে না ধরে যেবা রঘুবীর ভগবান্॥ ৫

দো—সত্য কুল-নাশ। অন্ধ মূক নাহি আমি আর ডুমি কচে হেন বাণী পালক-কুল স্কুজান। বিশ তব আঁখি কাণ॥২১

GD—বিধাতা মহেশ দেব মুনিগণ আর যত।
তাঁ'র দৃত হ'য়ে আমি কুল-বিনাশক হ'ব।
তানীয়া কঠোর ভাষা অঞ্চদ-মুখ হ'তে।
বে পাপি ধরম-নীতি সব অবগত মোর।
কপি কহে জ্ঞাত আছি তব ধর্ম-আচরণ।
দেখে'ছি কেমন তুমি দৃতগণে রক্ষাকারী।
নির্থিয়া সহোদরা বিগত নাসা শ্রবণ।
ধর্মশীলতা তব জানে সারা সংসার।

যাঁ র চরণের দাস হ'তে সবে লালায়িত॥
হেন মতি তবু হিয়া দীর্ণ না হয় তব॥ ১
লক্ষেণ কহে তবে চাহি' বক্ত-নয়নেতে॥
তা'ই সহি আমি এই রুচ বাণী যত তো'র॥ ২
পরের রুমণী চুরি করা এহে দশানন॥
তুবিয়া না মর' কেন ওহে ধর্ম-ত্রতধারি ॥ ৩
ধর্ম ভেবে'ই ক্মা ক'বেছ ত হে বান্ধন্॥
তব দবশন লাভ বড ভাগ্য এ আমার॥ ৪

দো—কথা বলা বৃথা জড়-পশু কপি
লোকপাল্-বল- চাঁদেরে গ্রাসিতে
পুন: নড:-সরে এ কর নিকরমরাল সমান শোভিলা ঈশান

দেখ্ এই মোর বাছ।
এরা যেন সব রাছ। ২২ (ক)
কমলে করিয়া বাস।

সহ তাঁ'র কৈলাস ॥ ২২ (খ)

GD — বল্ দেখি অঞ্চদ ভো'দের সেনার মাঝে। আমারে ভেটিবে রণে কে এমন বীর আছে। তো'র ড' যে প্রাজু নারী-বিরহে সে বলহীন। আর যে অফুক সেও তা'র ছুখে বিমলিন। ১ তুই আর সূত্রীব ক্ল-ক্রম# চ্ইজন।
জাখবান্ মন্ত্রী আছে তবে সে স্থবির অতি।
শিল্প-করম শুধু অবগত নল নীল।
সব-আগে হেখা আসি' নগরীরে যে দহিল।
সত্য করিয়া বল লক্ষাপতি দশানন।
রাবণের পুরী দাহ ক্রন্ত এক কপি করে।
যা'রে মহাবীর বলি' ৰাখানিলে রক্ষাবর।
গতি-বেগ অতি ভা'র তবে সে নহেক বীর।

আর আছে ভ্রাতা মোর মহা ভীক বিভীষণ। রণে উন্নত হ'বে কোথা তা'র সে শক্তি॥ ২ আছে বটে এক কপি যেবা মহা বলশীল॥ রাবণ-বচনে বালি-কুমার উত্তর দিল॥ ৩ সত্যই কি দে বানর করিল পুরী দহন॥ সত্য বলিযা কেবা এ কথা প্রতীত করে॥ ৪ স্ত্রীবের বার্তাবহ সে ত' এক কুজত্তর॥ বাবতা লইতে তা'ই পাঠা'লেন রঘ্বীর॥ ৫

|                           |                 | • |
|---------------------------|-----------------|---|
| <b>দো</b> —সভ্য কি প্রভুর | বিনা অমুমতি     | দহিল পুরী ভোমান।                        |
| তা'ই বুঝি রহে             | লুকা'য়ে নাফিরে | স্থগ্রীব-পাশে আর॥ ২ <b>৩ (ক</b> )       |
| প্ৰকৃত ব'লেছ              | সৰ দশ-গ্ৰীব     | নাহি মোর এতে ক্রোধ।                     |
| দ্বন্দ্রী জোমার           | মোদের কটকে      | কেহ নাহি হেন যোধ। ২৩ (ব)                |
| প্রণয বিরোধ               | সমানে সমানে     | করিতে র'য়েছে নীতি।                     |
| মুগপতি যদি                | ভেকেরে বিনাশে   | হ'বে কি ভাহাতে খ্যাতি ॥ ২৬(গ)           |
| যদিও ভোমারে               | বধিলে রামের     | লঘুতা ও বড়দোষ।                         |
| ভথাপি কঠিন                | অভি দশানন       | ক্ষত্র-জাতির রোয॥॥ ২৩ (ঘ)               |
| বক্ত বচন-                 | ধহুকের শরে      | দহে কপি অরি-হিয়া।                      |
| প্রতি-উত্তর-              | আযুধ রাবণ       | যেন আনে বাহিরিয়া॥ ২৩ (ঙ)               |
| হাসি' দশানন               | ৰুহে বড় গুণ    | রহে এক কপিদের।                          |
| অনেক প্রয়াস              | করে উপকারে      | এরা প্রতিপালকের॥ ২৩ (চ)                 |

(5)—ধক্ত বানবের। যা'রা সাধিতে প্রভুর কাজ। যথায় তথায় নাচে পরিহার করি' লাজ ॥ (नारक'-कूरम मर्भारकत मान आता कुलाका। প্রাভূ-হিত করা ভার ধর্মের নিপুণভা 🛭 ১ রে অঙ্গদ প্রভুত্তক অতীব ডো'দের জাতি। কেন গান না করিবি প্রভু-গুণ এই ভাঁতি। অতি গুণ-গ্রাহী আমি রস-বোদ্ধা সবিশেষ। এ কারণে কটভাবে না করি অভিনিবেশ ॥ ২ অঙ্গদ কহে তব রস্বোধ-গুণ যত। সত্য প্ৰন-মৃত কহিল ভা' কভম্ভ ॥ অংশাক-কানন নাশে বধে মুতে পুরী দহে। তবু ভোমা হ'তে ভা'র কোন অপকার নহে। ৩ ভোমার সে মনোরম প্রকৃতি করি' বিচার। ব্রষ্টতা করা হ'ল দশানন এ আমার। या' किছू किश रुख--जा'रे ट्रिविनाम नित्न । त्जामात विताश नाक किया त्याय ना वितास ॥४ হেন মতি ভা'ই থে'লি পিভারে মৃঢ আপুন। এতেক বচন কৃছি' হেলে' উঠে দুশানন । পিতারে খে'য়েছি—হ'তে তুমিও উদরসাৎ। **এक कथा मन्त्रामात्व नम्रामन अक्त्रार ॥ ৫** 

<sup>•</sup> নদীকটোৰ বৃক্ষঃ

জনক বালিরে পুত যশের ভাজন জানি'। বল্ড' রাবণ রহে কত জন এই ভবে। বলিরে জিনিতে এক রাবণ পাতালে গেল। থেলিত বাদক আর করিত ভা'রে প্রচার। অন্ত রাবণে এক সহস্রবান্ত নেহারে। কৌতৃক-ভরে রাথে ভবনেতে আপনার।

ভো'রে নাহি করি বধ রে অধম অভিমানি ! শুনেছি যা'দের কথা নিজ কাণে শোন ভবে ॥৬ वासिमारम वामरकत्रा छा'रत (वेंरश रतर्थ किम ॥ कत्रगात वर्म विन मुक्ति पिन छाहात ॥ १ জন্ত-বিশেষ যেন এ ভাবে ভাহারে ধরে॥ তাহার পুলস্ত্য মুনি সাধিলেন উদ্ধার। ৮

দো—তৃতীয়ের কথা এ সব রাবণ-

বলিতে বাধিছে মাঝে তুমি কোন বালির বগলে ছিল। সভ্য না রেগে বল'। ২৪

(b) — শোন্মূঢ় এইজন দে—রাবণ বলবান্। যা'র ভুজ-লীলা জ্ঞানে হর-গিরি স্থমহান্ ॥ মতেশ-ভবানী জ্ঞাত যে জনার বীরপণা। অগণন কতবার পুঞ্জিয়াছি ধৃৰ্জ্জটী। এই বুক কি কঠোর-দিক-হাতা ভাহা জানে। যথনি ভেটে'ছি রণে হঠে ভাহাদের সনে॥ তাহাদের যে দশন অটুট অশনি-প্রায়। যাত্রাদের গভি-ভারে বস্ত্রমতী টলে হেন। সেই দশানন আমি জগত-খ্যাত প্রভাব।

করিল যে তাঁহাদের শির-ফুলে অর্চনা॥ ১ এ শির-সরোজ নি**জ** কর-যোগে উৎপাটি<sup>9</sup>॥ এ ভূজের কি বিক্রম জানে ভাহা দিক্পাল। আজ(ও) যা'র প্রাণে মৃঢ় বি'ধে আছে ছখ-শাল ॥২ এর সংঘাতে ভাহা মূলা-সম ভেকে' যায়॥ ৩ লম্ম ভরণীর 'পরে মন্ত বারণ যেন 🛭 অলীক-প্রলাপি কাণে পশেনি মম প্রভাপ & ৪

দো-সেই রাবণেরে বর্ববর খল

তুচ্ছ করিয়া ধর্ক বানর

করিস নরে বাধান। বুঝিয়াছি তো'র জ্ঞান॥ ২৫

(b)—হেন শুনি অঙ্গদ কহিল সকোপ বাণী। সংযত হ'য়ে বলু রে অধম অভিমানি ॥ সহস্রবাহর বাহু-সদৃশ বন অপার। পরশু-সাগরতলে যাঁ'র মহা ধর-ধার। সেই ভার্গব-মদ যাঁ'রে ছেরে' বিদুরিত। রে অজ্ঞান মদ-গবিব মানব কি রখুমণি। কল-পাদপ তক্ত কপিলারে পশু কয়। বিনতা-ভনয় পাৰী অহি কি সহস্ৰানন। रेवकृष्ठे कि लाक जरव अस्त अपि मन्त्रमणि।

দহনে অনল সম করাল কুঠার যাঁ'র॥ ১ মঞ্জিত চিরতরে কত রূপ বছবার 🎚 সে কি রে মানব হায় দশানন ভাগ্যহত॥ ২ भरनाक कि श्रम्भाती नहीं कि रव श्रत्रभूनी ॥ অন্নদান দান কি রে অমিয় কি রস হয় ॥ ৩ विनिवि कि विश्वामिन व्यख्य प्रभानम्॥ সে কিলাভ হ'লে লাভ অচলা রামের প্রীতি 18

দো—উৰাড়ি' অশোক ভো'ৰ স্থতে বধি'

আলাইয়া পুরী যে গেল ফিরিয়া

স-সেনা দলিয়া মান। कि कि त्म हरूमान् । २७

(6)—ওন দশানন —করি' কপটভা পরিহার। কেন নাহি ভক' সেই করুণার পারাবার । রে খল করিস্যদি শত্রুত। এরামের।

বাঁচা'তে শক্তি নাই ধাডার কি মহেশের ৷ ১

বৃথাই করা ও মুখে শুরতার আফালন। মস্ত্ৰক যত ভব কপি-আগে ধরাতলে। তখন ও শির যত কন্দুকের মত ক'রে। রণ-প্রাঙ্গণে কোপ করিবেন প্রভু যবে। চলিবে কি ভবে হেন শুরভার আক্ষালন। पर्णानन खाला छेर्छ क रहन वहन स्ट्रान ।

রামের জোহের ফলে হইবে দশা এমন ॥ রামের শরের খায় লুটা'বে অচির-কালে ॥ ২ त्थनित्व वानत्र खालू महा-खेळात्र खरते ॥ করাল শায়ক বহু ধাবিত হইবে তবে ॥ ৩ এ বিচার করি' রঘুনায়কে কর' ভব্দন ॥ মুভাক্তি পড়ে যেন বহিন্দান হতাশনে। ৪

(मो-कुछकर्ग-(रुन মোর বিক্রম

ভ্ৰাতা বিখ্যাত পশে নাই কাণে ভনয় বাসব-জয়ী। চরাচর জগ-জয়ী॥ ২৭

চৌ —কপি সমবেত করি'—সহায়তা লভি' তার। সাগরে বাঁধিল সেতু ইহাই প্রভুতা ভা'র। বিহগ ড' পারাবার পার হয় অগণন। মম ভূজ-পারাবার বল-জলে ভরপুর। বিংশ পয়োধি হেন অতল নাহিক পার। দিক-পালগণে দিয়ে আমি ভরা'লাম জস। তো'র প্রভু যদি হয় সংগ্রামে ধুরন্ধর। তবে দে কি কাজে দুত করিল হেথা প্রেরণ। কৈলাস মথে যেই ভাগ সেই বাত মোর।

তা'রা ড' না বীর হয় শোন কপি এ বচন॥ ১ যাহাতে ভূবিল বহু সুর নর আর শুর॥ কে আছে এমন বীর এ'তে যে হইবে পার।। ২ শুধু এক ভূপ-যশ আমারে শুনাস্ ধল।। করিদ্ যাহার যশ-গাণা গান নিরস্তর ॥ ৩ অরি-সনে প্রীতি-ভাবে লাজে নাহি ভরে মন॥ তথাপি বাধান মৃঢ় কারস প্রভুর তো'র ॥ ৪

(मा--वावन-ममान বক্তবার দিল

কেবা আছে বীর আক্তি হরধে

স্বকরে শির যে কাটি'। সাক্ষী তা'র ধূর্বছটী ॥ ২৮

(5)-যখন পুড়িতেছিল শির মোর হুতাশনে। মরণ নরের করে এ লিপি করি' পঠন। ক'রেও স্মরণ ভা'য় ত্রাদ নাছি মোর মনে। রে মৃত ভ্যক্তিয়া লাজ আর আপনার মান। অঙ্গৰ কহে লাজ তব সম দশানন। লক্ষাশীলতা তব স্বভাবে দেখিতে পাই। শির আর গিরি-কথা ইহাতে ভরা হাদয়। জনুরে গোপন ক'রে রে'খেছ বাছর বীর্ঘা। শোন ওরে মন্দমভি টের হ'ল মনে হয়। याष्ट्रकरत्र कष्ट्र क्ट क्ट क्ट ना छ' महावीता।

विधित्र लिथन निक मना हि जम नगरन ॥ विधि-लिलि मिছा कानि' हानिलाम मदन मन ॥> স্থবির বিধাত। ইহা লিখিয়াছে মন-জ্রমে॥ অস্ত বীরের বল করিস্ মোরে বাধান॥ ২ জগত-মাঝারে আর ধরে না কেছ এমন ॥ নিজমূপে নিজগুণ কা'রো কাছে বলা নাই ॥ ৩ তা'তে বার-কুজি হ'বে সে কাহিনী বা'র হয়॥ या' निया विनियाहित्न वनि स्रात कार्ववीर्या ॥8 निक भाषा कार्षिताहै व्यमनि कि वीत इस्र॥ যদিও আপন হাতে কাটে সে সারা শরীর॥ ৫

বো-পুড়ে পত্ত বুৰে' ভাৰ মূঢ়

মোহের কারণে না কহে ভাদের

গৰ্দ্ধভ বহে ভার। বীর কেছ একবার । ২৯ (5)—ছ' অধিক আর বুথা বাদ নাহি কর'।
দশানন দৃত হ'লে হেথা আসি নাই আমি।
বার বার এই কথা কহিলেন কুপাময়।
প্রভুর এ কথা রাখি' স্মরণেতে অনিবার।
নহে বিকৃত করি' ছার ও তব বদন।
রে অধম জানা আছে তো'র বল অমরারি।
নিশাচর-রাজা তুই মুরতি সে গর্কের।
রাম-অপমান-ডর যদি নাহি রাখিতাম।

আমার বচন মান' মদ-তম: পরিহর' ॥

এ বিচার করি' মোরে পাঠা'লেন রমুস্বামী ॥ ১

শৃগালে বধিলে যশ কেশরীর নাহি হয় ॥
কঠোর বচন মৃঢ় সহিয়াছি বার বার ॥ ২
লইয়া যে'ভাম সীভা করি' বল প্রদর্শন ॥

শৃশ্য পথেতে হরি' আনিলি পরের নারী ॥ ৬
আমি ত শুধুই দূত রমুপতি-সেবকের ॥

দেখিতে দেখিতে এই কৌতুক করিভাম ॥ ৪

দে ভূমিতে আছাড়ি' যুবতী বনিতা- সেনা হত করি' গণ সহ শঠ মধিয়া নগর গ্রাম। সীতা ল'য়ে যাইতাম॥ ০০

চৌ—করিলেও এইমত গৌরব কিছু নাই।
কুপণ যে অতি মৃঢ় কদাচারী কামবশ।
সদা রোগ-পরায়ণ যেজন নিয়ত ক্রোধী।
দেহই যাহার সব নিম্দুক পাপে ভরা।
এ বিচার করি' শুধু তো'রে বধ নাহি করি।
শুনিয়া ক্রোধের ভরে কহিল রাক্ষস-নাথ।
রে নীচ বানর এবে মরিতে বাসনা তো'র।
যাহার বলেতে কটু-ভাষা মুথে বাহিরায়।

মুভেরে করিলে বধ কা'র হয় কি বড়াই ॥
দরিজ নিরভিশয় স্থবির ভরা কুষশ ॥ ১
বিষ্ণু-বিমুখ বেদ সন্তুগণ-বিরোধী ॥
জীবন কালেই হয় মুভের সমান ডা'রা ॥ ২
রাগত আমারে আর না করিস্ স্থর-অরি ॥
দশনে অধর কাটি' হাতে নিশীড়িয়া হাত ॥ ৩
এ কারণে ছোট মুখে বড় কথা এত জোর ॥
বৃদ্ধি প্রভাপ বল তেজ কিছুনাই ভা'র ॥ ১

দো—অ-গুণ অ-মান বুঝেই ত' তা'রে সহে তা'র হৃথ যুবতী-বিরহ যাহার বলের অহন্তার তো'র রক্ষঃ কড শড করিছে আহার পিতা দিল বনবাস।
দিবানিশি মম ত্রাস॥ ৩১(ক)
হেন নরে দিনরাত।
বোঝা ছাড়ি' পক্ষপাত॥ ৩১(খ)

চৌ—রাম-নিন্দাবাণী যবে উচ্চারিল দশানন।
হরি-হরনিন্দা যেবা প্রবণ করে প্রবণে।
কটুকটু ঘোর রব করিল বানর-বর।
কম্পিতা বস্থমতী সভাসদ্ প'ড়ে যায়।
পড়িতে সামালি' উঠে লম্বার অধিপতি।
কতক রাবণ শিরে বসায় পুন: যভনে।
মুকুট উড়িয়া আঙ্গে হেরিয়া ক্পিরা ধার।
অধবা প্রেরিল রোধে রাবণ অশনি চারি।

কোধ-যুত অভিশয় হ'ল অলদ-মন।
গো-হনন সম পাপ লাভ করে সেই জনে॥ >
ছই বাছদণ্ড বলে প্রহারিল ধরা 'পর॥
ভয়-ভূতগ্রস্ত হ'য়ে এদিকে-ওদিকে ধায়॥ ২
ভূমে গড়াগড়ি বায় মুকুট স্থলর অভি॥
কতক ছুড়িয়া দেয় অলদ প্রভূ-পানে॥ ৩
ভাবে উকা দিনমানে এ কেমন বিধি হায়॥
ভীম কোপে আসে বাহা কিছুই বুৰিতে নারি॥৪

হাসি' তবে প্রভু ক'ন না করিও মনে ভয়। ও গুলি মুকুট দশানন-শির-আভরণ।

উহ্বা অশনি কেতৃ কিয়ারাত্ কিছু নয়। অক্লদ নিক্ষেপিল করিতেছে আগমন ॥ ¢

| দৌ—লক্ষ দিয়া হন্দ্ৰ | ধরি' সে সকলে | এনে' রা <b>খে প্রভু-পাশ</b> । |
|----------------------|--------------|-------------------------------|
| কৌভূকে হেরে          | ভালুকে বানরে | তপন-সম প্ৰকাশ 🛚 ৩২ (ক)        |
| ওদিকে ক্রোধিড        | দশানন কছে    | চণ্ড ভাষায় সবে।              |
| ধর' ধ'রে মার         | ওই বানরেরে   | অঙ্গদ হাসে ভবে ॥ ৩২ (খ)       |

চৌ-বলে এরে বধ করি' যত বীর বেগে যাও। খাও ভালু কপিদের যেখানে দেখিতে পাও। মর্কট তীন কর ধরাতল সবে গিয়ে। শুনি' রোঘে অঙ্গদ ক'রে উঠে গর্জন। আত্মঘাতী হ'য়ে মর রে নিলাক কুলঘাতি। ওরে ওরে নারী-চোর ওরে ওরে কদাচারি। সন্মিপাত রোগ বশে প্রলাপ কি ক'স আর। এর যথোচিত ফল আছে ধরা ভবিষ্যতে। রাম নর ও বদনে আনিতে এ হেন বাণী। সংশয় নাহি এতে খসিবেই ব্ভিত্তো'র।

জীবন্ত আন ধ'রে তাপস সে ছই ভা'য়ে॥ ১ লজ্ঞা আসে না ডো'র করিবারে আফালন। হেরিয়াও মোর বল ফাটে না ক' ডো'র ছাতি ॥২ ওরে খল পাপ-রাশি মন্দমতি ব্যাভিচারি॥ কাল-কবলিত তুই রে রাক্ষস মহী-ভার। ৩ পা'বি ভাহা বানরের দারুণ চপেটাঘাতে॥ খসিয়া পড়ে না ভো'র রসনা রে অভিমানি॥৪ মুগু সহিত তবে রণ-প্রাঙ্গণে ঘোর॥ ৫

| <b>দো</b> —নর ডিনি যিনি | বধেন বালিরে               | একই শায়কাঘাতে।           |
|-------------------------|---------------------------|---------------------------|
| বিশ লোচনেও              | অংশ রেজস্ড                | ধিক্ ভব জনমেতে। ৩৩ (ক)    |
| ভো <b>'</b> র শোণিভের   | পিয়াদে পিয়াসী           | রামের শর-নিকর।            |
| ভাহারি কারণে            | ত্য <b>ঞ্জিলা</b> ম তো'রে | বুধা-ভাষি নিশাচর ॥ ৩৩ (খ) |

এত রোষ জাগে হাদে মুখ ডো'র চুর্ণ করি'। ভুমুর-সমান তো'র অতি কুন্ত এই লয়। অঙ্গদ-ভাষে এ'ল রাবণের মুখে হাসি। বালি ড' কহিত না-ক' বচন এত অগার। थाकु छहे भिथावानी ह'व विश्म वाह-शाति। রাম-বল করি' মনে ক্রোধারিত যুবরাজ। কহে-- যদি কেহ পদ করিতে পারে হেলন। म्मानन करह-कति' मर्याथन तकः वीरतः। रेलिकि जापि हिन यक नव वनवान । মারে টান সংহত করি' বল প্রাণপণে।

(5)-পারি চূর্ণ করিবারে ও দশন-রে অধম। আদেশ নাহিক দিলা মোরে সে পুরুষোত্তম। লকা উঠা'রে দিই সাগরে মঞ্জিত করি'॥ ১ কীট-সম ভো'রা তাহে রহিস্ বিগত শহা। ক্লাভিতে বানর আমি ফল বে'তে কিবা ক্ষতি। কেবল আদেশ মোরে না দিলেন সীতাপতি॥ ২ কতে শিক্ষা কোথা হ'তে এ অলীক ভাষা-রাশি। ভাপসের সাথে থেকে' শেখা এই মিথ্যাচার ॥ ৩ তো'র ওই দশ জিভু যদি না ছিঁ ড়িতে পারি। দত্তে চরণ স্থাপি' দাঁডা'ল সভার মাঝ ॥ ৪ হারিলাম সীভা রাম যা'বেন না করি' রণ॥ পা ধরিয়া আছাডিয়া ফেল' ও বানরটারে ॥ ৫ বীরেরা আসন ভ্যক্তি' উঠে অতি ফুল্ল প্রাণ । নডে লা চরণ বসে নত শিরে নিজাসনে ॥ ৬

আবার উঠিয়া টানে চরণ অমর-অরি। মোহের বিটপী यथा कथाना कु-यांनी सन। অ-নড কপির পদ ডেমনি হে উরগারি। হৃদয় হইতে নারে করিবারে উৎপাটন ॥ ৭

| দো—মেখনাদ-সম     | বীর কোটিজন   | উঠে হ'য়ে হরষিত।           |
|------------------|--------------|----------------------------|
| টানে নাহি নড়ে   | ৰূপি-পদ পুনঃ | বঙ্গে করি' শির নত ॥ ৩৪ (ক) |
| ক্ষিতি হ'তে ভা'র | উঠে না চরণ   | হেরি' অরি-মদ যায়।         |
| কোটি-বিশ্বতেও    | সাধু-মন হ'তে | যথা নীতি নাহি যায়॥ ৩৪ (খ) |

টৌ-বানরের বল হেরি মনে সবে মানে হার। আপনি রাবণ উঠে শুনি কপি-ধিকার ॥ ধরিতে যাইতে পদ বালির তনয় কয়। রামের চরণ কেন না ধরিস হেন গিয়া। তেজ-হত মুখ তা'র 🕮 সকলি অপগত। আনত করিয়া শির বসে গিয়া রাজাসনে। জগতের আত্মা যিনি সর্ব্ব-প্রাণপতি রাম। क्ककृषि-विनाम छरत रह खवानि रय त्रारमत । করেন তৃণেরে বাজ বাজে পুন: তৃণদল। আবার বৃঝায় কপি নীতি-কথা নানামত। রিপু-মা করি' চুর গাহি' প্রস্তু-গুণগান। থেলা'য়ে থেলা'য়ে যদি না মারি সমরে,ভো'রে । প্রথম হ'তেই তবে কি বড়াই করি জোরে ॥ প্রথমেই স্বাস্থ্য ব'থেছে ভনয়ে ভা'র। वीत व्यक्तन-भग अभि तरकत मन।

ধরিলে আমার পায়ে রক্ষা হ'বার নয় ৷ ১ শুনিয়া রাবণ ফিরে ল'য়ে কুঞ্চিত হিয়া॥ মধ্য-দিবস্ভাগে শশধর যেইমত 🛚 ২ হত-সম্পদ থেন হেন ক্লিষ্ট-ভাব মনে ॥ তাঁহাতে বিমুখ যেবা পাইবে কিসে বিরাম॥ ৩ উপ**জে অথ**ও ভব পুন: নাশ হয় এর॥ তাঁহার দুভের পণ কেমনে হ'বে বিফল॥ ৪ মানিল না ডা' রাবণ সে ডখন কাল-গড ॥ বালির তনয় করে ইহা বলি' প্রস্থান ॥ ৫ এ শুনিয়া দশানন ছখিত হ'ল অপার। ৬ অতি নিদারুণ ভয়ে হইল সবে বিকল। ৭

(मा-मिथ' व्यति-वन হর্ষিয়া কপি পুলক-শরীরে সজল নয়নে

বালি-হুত বল-পুঞ্চ। ধরে রাম-পদ-কঞ্চ ॥ ৩৫ ( ক)

# রাবণকে মন্দোষরীর পুন: উপদেশ মান

বুঝি' দশানন ভবনে গেল উদাস। প্রদোষ আগত কহি' নীভি-যুক্ত ভাষ ॥ ৩৫ (৭) ময়-স্থুতা বহু ব্ঝায় রাবণে

(চ)---মনেতে বিচারি'নাথ ভ্যঞ্ব এই কৃটমন্ডি। রম্বুপতি সনে তব রণ অশোন্তন অভি॥ রামের অভুত্র এক রেখা যে টানিয়া দিল। বাহার দুভের এক এইমড ক্রিয়াবলী। খেলার তেলায় **এ'ল লভিষয়া পারাবার**।

ভাহারেও লভিবতে শক্তি না তব ছিল। ১ প্রিয়তম ভারে রণে জিনিতে এত আকুলি ॥ বানর-কেশরী প্রাণে ডর-লেশ নাহি যা'র ॥ ২

<sup>•</sup> সভার আসিবার পূর্ব্বেই।

व्यव्हेरीत यथ कति' छेकाफ् कविन यन। দাহ করি' সারা পুরী ক'রে গেল ভস্ম-শেব। ৰুথা কথা-আড়ম্বর এবে নাহি শোভা পায়। হে প্রভু-রামেরে যেন ভেবো না মানুষ ব'লে। শায়কের কি প্রভাপ মারীচ বিদিত ছিল। জনক-সভায় ছিল অগণিত নরপাল। হর-কাম্ম ভাঙ্গি' যবে লভে জানকীরে। बामव-जनम किंहु कारन वन रह ताकन। নয়নে হে'রেছ সূর্পণধার কি দখা হ'ল।

অক্ষয়ে আঁখি-আগে করিয়া গেল নিধন 🛚 কোথায় আছিল বল-গর্বব তব এ অশেষ। ৩ व्यामात्र भिन्छि इर्रम धत्र' त्रकः-कूल ताग्र ॥ চরাচর-পতি জিনি অতুলিত তেকে বলে। ৪ ভাহার নিষেধ তব মনে ভাল না লাগিল।। তুমিও তথায় ছিলে অতুল বলে বিশাল। ৫ তখন সমর করি' জিনিলে না কেন ডা'রে॥ রাখেন জীবিত করি' এক আঁথি উৎপাটন ॥৬ তথাপি ভোমার মনে বিশেষ না লাজ এ'ল।।৭

(म)-- विश्वा विद्राध এক শরে বধ

**अत्र-ष्ट्यरभरत्र** করে যে বালিরে কবন্ধে বধে হেলায়।

চৌ-পার-হীন পারাবার বাঁধিল যেবা হেলায়। উতরিলা যেই প্রভু সেনা সহ সুবেলায়। সেই কারুণিক প্রভু দিনকর-কুল কেতু। সভার মাঝারে যেবা মথিল ভোমার বল। অঙ্গ হতুমান্ যে প্রভুর অনুচর। তাঁহারে চে প্রিয়তম নর বল' বারবার। হা প্রস্থু রামের সনে টানিয়া নিলে বিরোধ। দশু ধরিয়া কাল কাহারেও নাহি মারে।

বুঝ' তা'র মহিমায়॥ ৩৬ প্রেরণ করিলা দৃত ডোমারি হিতের হেতু॥ ১

করী-যুথ মাঝে যথা মৃগপতি মহাবল। রণ-স্থানিপুণ বীর অতি মহা বলধর ॥ ২

বুণাই বেড়াও বহি' মাথা মান মদ-ভার॥

কাল-কবলিত-প্রাণে উপজে না শুভ বোধ॥ ৩

ভ্রম ঘনাইয়া আসে ভাহার ভোমারি মত। ৪

দৌ—ছই স্ত হত मध नगत्री কুপানিধি রামে ভজি' প্রিয়ত্ম

সমাপ্ত করিয়া দাও। স্থবিমল যশ পাও। ৩৭

বিচারের ধর্মমতি শুধু সে হরণ করে॥

(চী-ভীক্ষ শায়ক-সম শুনি' বনিভার বাণী। অতি অভিমান-বশে ভয় ত্রাদ সব ভূলি'।

নিকটে যাহার প্রভু কাল হয় সমাগত।

প্রভাত হ'তেই সভা মাঝে যায় রক্ষ:মণি ॥ সিংহাসন 'পরে গিয়া বসে মনে মনে ফুলি'॥ ১

#### রাম-অঙ্গদ-সংবাদ

এখানে ডাকা'ন বীর অঙ্গদে রঘুনাথ। অভীব আদরে পাশে করা'য়ে উপবেশন। হে বীর বালির মুভ জ্ঞদে জাগে কুভূহল। রাক্ষ্ক্র-চূড়া মহাবীর যে রাবণ। চারি উষ্টীৰ ভা'র করিলে হেখা প্রেরণ। **७**नर नर्यक थानू थानएत्र चूबक्त ।

আসি' পদ-শতদলে নোয়া'য় আপন মাথ॥ কুপাল ধরারি হাসি' কহেন তবে বচন ॥ ২ ভিজ্ঞাসা করি ডোমা সভ্য করিয়া বল'। যা'র ভূজবলে ধরা গুণগান-পরায়ণ ॥ ৩ কহ ভাত कि প্ৰকারে হইল ভাহা ঘটন। नरक पूज्रे छेहा ठाति श्रेग त्रधूवत ॥ 8

সাম দান ভেদ দণ্ড এই চারি গুণচয়। নীতি-ধরমের এই চারি পদ বিমোহন। রহে নুপতির হাদে বেদে প্রভু এই কয়। এ কারণে প্রভু-পদে করে প্রতি-আগমন। ৫

দো—ধর্মহীন প্রস্তু- পদে মতিহীন নিশাচর কাল-গ্রাসে।

সে কারণে ওরা • তোমার চরণে ডা'বে ডাঞ্জ' ফিরে আসে ॥৩৮(ক)

চতুরভা ভরা বচন শুনিয়া হাসেন প্রভু উদার।

পরে সমাচার হুর্গের যত কহেন বালি-কুমার ॥ ৩৮(ব)

#### যুকারভ

চৌ — অরাতির ভেদ সব যবে হ'ল উদ্ঘাটন।
লবার রহে চারি হ্বার পুর্বার।
তখন স্থাীব আর জাম্বান বিভীষণ।
মন্ত্রণা স্থির করি' বিচারের সহযোগে।
যোগ্য সেনা-নারকেরে করা হ'ল নিয়োজিত।
প্রভুর প্রতাপ-কথা ভা'দিগে সব ব্ঝায়।
হর্ষিত মনে রাম-চরণে নমিয়া শির।
গর্জে তর্জে যত ভালু আর কণীশ্র।
যদিও জানিত গড় হ্জের সবমতে।
জলদ-জালের মত চারি দিক হ'তে বেরি'।

কি ভাবে বা হানা দিবে সকলে কর বিচার ॥>
দিনকর-কুল কেডু প্রীরামের করি' অরণ ॥
বিভাগ করিল কপি-বাহিনীরে চারি ভাগে ॥ ২
তথন সেনানীগণ হ'ল সবে একত্রিত ॥
গর্জন করি' যত বানর তথন ধায় ॥ ৩
গিরি-চ্ড়া করে ল'য়ে ধায় যত মহাবীর ॥
বলে জয় রঘুবীর কোশলের অথীখর ॥ ৪
প্রাক্তর প্রতাপে যায় সকলে নিডর চিতে ॥
মুখেই বাজা'তে থাকে ত্ন্তুভি আর ভেরী ॥ ৫

সচিবগণেরে রাম করিলেন আবাহন।

দো—জয় রঘুপতি ভীমনাদে কপি জয় কপিনাথ গরজে ঋক জয় জয় লক্ষণ। অতি ভীম পরাক্রম॥ ৩৯

(চ) — সন্ধা-ভিতরে উঠে কোলাহল অভিশয়।
কহে দেখ দেশ সবে বানরের স্পর্কা কত।
কালের প্রেরিভ হ'রে আদিল বানরগণ।
এ কথা কহিয়া মৃত করে মহা অট্টহাস।
ওহে মহাবীরগণ সবে চারিদিকে যাও।
হর ক'ন উমা হেন রাবণের মদ হায়।
আজ্ঞা-কামনা করি' চলে নিশাচরগণ।
ভোমরণ মুদগর ভীম পরশু প্রথন-ধার।
লোহিভ উপল দুল যথা করি' দরশন।
চকু-ভাঙ্গার ক্রেশ মনেতে মা আনে হায়।

করিল জাবণ কাণে দশানন মদ-ময় ॥
হাসি আহ্বান করে রক্ষ:-বাহিনী যত ॥ >
রাক্ষসগণ সবে ক্ষার সহে ভাড়ন ॥
কহে ধাতা আনি' দিলা গৃহেতে ভোজন-রাশ ॥২
ধরি' ধরি' কপি ভালু সকলে মিলিয়া খাও।
টিট্টিভ উদ্ধ-পদ হইয়া যথা খুমার ॥ ৩
ভিদ্দিপাল ধর শেল করেতে করি' গ্রহণ ॥
কুপাণ পরিষ্ণ শূল প্রস্তির ধরি' আর ॥ ৪
মাংস-আহারকারী ধায় মৃঢ় ধগগণ ॥
ভেমনি অবুঝ যত নিশাচর ধে'য়ে বায় ॥ ৫

দৌ-কভই আয়ুধ গৃহ-চূড়া 'পরে শর-চাপ-ধর করে আরোচণ নিশাচর মহাবীর। কোটি কোটি রণধীর 1 ৪০

**টো—প্রা**দাদ-উপরে চূড়া দেইমত শোভা পায়। মেরু-চূড়া 'পরে যথা **জল**দ বিভা বাড়ায়॥ বাজে ছুন্দুভি ঢোল সমর-দামামা বাজে। তুরী ভেরী নিনাদিত হইতেছে অগণন। श्रुविभाग-करमवत्र किन छात्र वीत्रमम । হেরি' কপি ভালু ধায় উঁচু নীচু নাহি জ্ঞান। কট্কট্রব করে—করে বীর গর্জন। এ দিকে রামের শ্বয় ও দিকে দশাননের। রাক্ষস গিরি-চূড়া বলে নিক্ষেপ করে।

রবে উৎসাহ আগে বীরগণ-মনোমাঝে॥ ১ যাহা ভানে' ফেটে' যায় কাপুরুষগণ-মন ॥ গিয়া নয়নেতে হেরে নিশাচর-দলবল ॥ ২ পর্বত ভেদি' করে বন্ধের নির্মাণ। দশনে অধর কাটে করে ঘোর ভর্জন॥ ৩ क्यक्यकात मान चुक हय ममारतत ॥ লম্ফে ধরিয়া কপি ভা'দেরি উপরে মারে॥ ৪

ছ--ভূধর-থণ্ড थबि' व्यव्ध ভূমিতে আছাড়ি' রক্ষঃ-পদ ধরি' যুবা-কপিদল অতি চঞ্চল---প্রবেশি' মহলে **ম**হাকুত্হলে

মকট ভালু ছর্গে মারে। লাজ দেয় পরিহাসের ভরে ॥ লক্ষিয়া তেকে আরোহি' গড়। জয় রাম-রবে তুলিছে ঋড়॥

বো-এক এক করি' উপরে আপনি

নিশাচরে ধরি' ब्राक्रम नीह

পলায় বানর দল। রাখি' পড়ে ধরাতল ॥ ৪১

(5)--त्रात्मत व्यक्तां न वला नाचा-मूग वीत । मिथर एक निमाठत-वीतगरण त्रवधीत ॥ চারিদিকে বানরের। হানা দেয় গড় 'পরে। নিশাচর-সেনাদল পলাইয়া যায় হেন। পুরী-মাঝে হাহাকার উঠিল নিরভিশয়। नकल मिलिया शांलि त्मय नहा-व्यथितिया । পশিল রাবণ-কাণে বিচল আপন দল। রণে কেছ পলাইল যদি গুনে মোর কাণ। খাইল পরিল আর ভূঞ্জিল সুথ যত। উগ্র বচন শুনি' সবে প্রাণে ভর পে'ল। সমরে মরণ বিনা বীরের কি শোভা হ'বে।

দিয়া জয় রঘুবীর প্রভাপের দিনকরে॥ ১ প্রবল পবন-যোগে জলদ-পটল যেন ৷ বালক রমণী রোগী-রোদন নগরীময়॥ ২ রাজ্য করিতে যেবা ডেকে আনে মরণেরে॥ **छा'त्मत्र किता'त्य्र कत्ट झाम क्लाश-मार्वानम ॥७** করাল কুপাণে এই যাইবে ভাহার প্রাণ ! সমর-ভূমিতে এবে প্রাণ প্রিয় হ'ল এত ॥ ৪ লাজ পে'য়ে ক্রোধ ভরে বীরেরা যুঝিতে গেল। ভবন করিল ভ্যাগ প্রাণের মমভা সবে ॥ ৫

ধরি' বীরগণ বো-বছ প্রহরণ করে বিচলিত কপি ভালগণে

मस्य द्राप (मर्फ यात्र। পরিষ ত্রিশৃল-ঘার ॥ ৪২

क्ट वर्रण क्वाचा रुष्ट्र काचा वा वालि-छनग्र। वलवान् नल नील विवित्र वा काचा त्रम्र॥ >

চৌ—ভয়েতে আতুর কপি কুরু করে পলাইতে। যদিও ভবানে তা'রা জয়ী হ'বে ভবিষ্যতে।

হমুমান্-কাণে এ'ল বিকল আপন দল। ডা'র সনে মেঘনাদ করিতেছিল সমর। প্রন-ভনয়-মনে উপজে দারুণ ক্রোধ। লঙ্কার গড়-চূড়ে লাকে হন্তু আরোহিল। চূর্ণ করিল রথ বিনাশিল সার্থিরে। অহ্য সারথী তবে হেরিয়া বিকল তা'রে।

পশ্চিম ছারে যবে ছিল সেই মহার্যল # কঠিন সে ধার ভেদ করা অভি চন্ধর ॥ ২ গৰ্জন করে যেন কাল-সম ভীম যোধ॥ পর্বত করে ধরি' মেঘনাদে ধে'য়ে গেল ॥ ৩ করে ভীম পদাঘাত মেঘনাদ-বক্ষোপরে ॥ আলয়ে আনিল দ্বরা চড়া'য়ে রথের 'পরে॥ ৪

(म - अनम-कारन রণ-স্থুনিপুণ

গেল হতুমান্ বালির তন্য

একাকী পশে'ছে গডে। হেলায় ভাহাতে চড়ে ॥ ৪৩

(5)—অরাতি-বিরোধী ফ্রোধ-বৃত কপি ছইজন। রামের প্রতাপ-বল জ্বদয়ে করি' স্থরণ॥ আবোচণ করে গিয়া রাবণ-মহল 'পরে। কলদ সহিত করে রাবণ-পুরীর ক্ষতি। রমণী-নিকর করে বক্ষেতে করাঘাত। বানরেরা খেলা-ছলে করে ভয় প্রদর্শন। তখন ধারণ করি' হেমময় স্তম্ভ সব। অরাতি-কটক মাঝে গর্জিয়া পড়ে গিয়া। কাহারেও পদাখাত চপেট কা'রে বা মারে।

কোশলের অধিপতি রামের দোহাই করে। ১ হেরি' মনে পায় ডর রাক্ষ্যপতি অভি। কহে হায় এবে এল বানরের উৎপাত॥ ২ গান করে রঘুবীর-গুণগান অমু'খণ॥ वनावनि करत्र अन कता या'क् छेशखव ॥ ० অতি ভীম ভুজবুগে কেলিতে থাকে মথিয়া॥ বলে রামে না ভজার ফল ভাগ এইবারে॥৪

(पा-ठीकार्वेक करत রাবণের আগে

একে আর সনে গিয়া পড়ে যেন ছি ডে' ছড়ে' দেয় মুগু। ভগ্ন দধির কুণ্ড। ৪৪

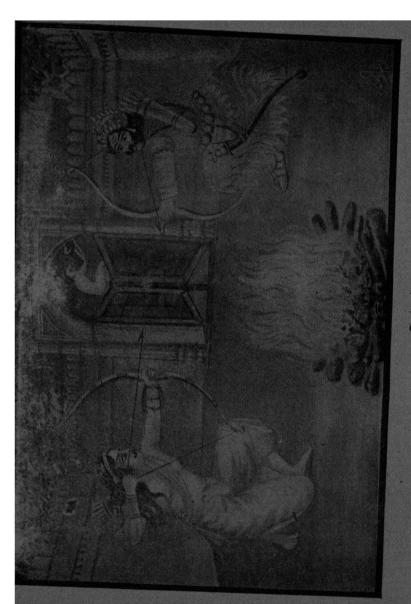
বিভীষণ ব'লে দেন ভাহাদের কি কি নাম। ব্রাহ্মণ-মাংস ভোজী খল মতি নিশাচরে। ভবানি কোমল-প্রাণ জীরাম করুণাকর। এ ভাবি' পরমাগতি রক্ষংগণে করুণায়। সে প্রভু এমন শুনি' যে না ভক্তে ডাঞ্জি' ভ্রম। ভাগ্যহীন কুটম্ভি পরম সে নরাধ্ম ॥ ৩ রাম ক'ন অঞ্চল আর বীর হতুমান্। লহা-মথনে ছুই বীর শোভে সেইমভ।

চৌ—মহামহা দেনানীরে যদি ধরিবারে পারে। পা'ধরি' টানিয়া ফেলি' দেয় প্রভু-পাশে ভা'রে। व्यनान करतन ताम छा' नवादत निक्रधाम ॥ ১ যোগি-বাঞ্চিত যেই গতি তাহা লাভ করে॥ ভাবেন ভাবে ড' মোরে অরি-ভাবে নিশারে ॥২ দেন উমা কুপাময় কেবা যথা রম্বরায়॥ প্রবেশ করিল গড় মাঝে ছই বলবান॥ मन्द्रत-यूर्ग# दयन त्रिक्-मथरन त्रक ॥ 8

(म)--- जुल-यम जित्र লাক মারি' এম

করিয়া দলন করি' বিদুরিত

ছেরি' দিবা অবসান। व्यारम यथा खनवान् ॥ ८৫ \



লক্ষণের মহিত ইঞ্জিতের যুক

**(ठी--अञ्-**शन भेजनन माथाय करत शातन। করুণা করিয়া দোঁতে দৃষ্টি করেন দান। অঙ্গদ হতু ফিরে' গিয়াছে বুঝিয়া মনে। প্রদোষ আসিলে সব রাক্ষ্স বল পায়। রাক্ষস সেনা হেরি' পুনঃ ফিরে কপিদল। ছু' দিক্ই বলবান্ করি' ভা'রা আক্ষালন। রাক্ষ্স মহাবার অসিত বরণ সবে। মহাবল ডুইদল সমবল যোধগণ। বর্ষার শরতের তুই খন জলধর। অৰুপ্ৰন অভিকায় এই ছুই সেনাপতি। নিমেব-ভিতরে হয় অতি ঘোর আঁধিয়ার।

মহাবীর **ঘ**য়ে ছেবি' ফুল রামের মন ॥ अप्रेम সব অপগত স্থ-সরে ভূবে প্রাণ ॥ ১ সমর হইতে ফিরে কপি ভালু-বীর গণে। গাহি' রাবণের জয় কপিদল-পিছে ধায়॥ ২ চারি দিকে কট্কট্রব করে অবির**ল** ॥ করে রণ পরাজয় নাহি মানে কোনজন # ৩ বিবিধ বরণ কপি সুবিশাল অবয়বে ॥ কৌতৃক ভরে যুঝে হ'য়ে ক্রোধ-পরায়ণ ॥ ৪ প্রন-প্রেরিভ হ'রে করিছে যেন সমর ॥ সেনা বিচলিত হেরি' প্রকাশিল মায়া অভি ॥ ৫ वद्राय समित-मिला छन्त्र मृदल-शांत ॥ ७

দো-দশদিকে হেরি' কেহ কাহারেও

ঘোর আধিয়ার পায় না দেখিতে

ত্রস্ত কপির দল। চীৎকারে অবিরল। ৪৬

Сচী-এর ভেদ রঘুনাথ বুঝিলেন মনে। করিলেন আবাহন অঙ্গদে হছুমানে॥ সব কাই বুঝা'লেন সমাচার রখুবর। তথন হাসিয়া রাম তুলিলেন শরাসন। অমনি আলোক জাগে তম: আর নাহি লেশ। জ্ঞানোদয়ে সংশয় ষেইমত হয় শেষ॥ ২ আলোক পাইয়া ভালু বানর-বাহিনীপণ। অঙ্গদ হতুমান্ করে রণে গর্জন। ভূমিতে আছাড়ে নিশাচরে পলায়ন-পর। পদে ধরি' ভাহালের সাগর-জ্ঞালে চ্বায়।

শুনিতেই ছুটে' গেল ক্রোধে কপি-কুঞ্জর॥ ১ অতি ক্ষত হানিলেন অগ্নিবাণ স্থভীষণ। হরবিত মনে ধায় অপগত ভয় ঋম। ছকার ওনি' ভয়ে পলায় রাক্ষসগণ॥ ৩ দেখায় কৌশল কপি ভালু অন্তভন্তর 🛭 মকর উরগ মাছে ধরিয়া ধরিয়া খায় ॥ ৪

পে—ানহত কতক राम अविमान

কতক আহড বিচলিত করি'

গড়ে বা কেহ পলায়। কপি-ভাসু গৰ্জায়। ৪৭

## मानाउपादमत ज्ञायनदक खेलदमम माम

টৌ--রজনীর আগমনে চারি কণি-অনীকিনী। ফিরিয়া আসিল যথা র'ন রাম রছুমণি।। ব্ৰীরাম করুণা-ব'লে চাহিলেন সব-পানে। ও मिटक महिदशर्ग जाकादेन मनानन। कटर वर्ष वनीकिनी करत क्लि मःहात। স্থ্যির রাক্ষ্য এক নাম ছিল মাল্যবান। কহিল কান পুত নীতিভারা সবিলেব।

ইইশ বিগত-আম বানরেরা সেইক্ষণে ১ ১ নিহত বীরের কথা করে সবে বর্ণন 🛚 বলহ উপায় ধরা কি করা যা'বে এবার ॥ ২ রাবণের মাতামহে বৃক্তি করিত দান। শুনহ এখন ভাত কিছু মম উপদেশ। ।

बानकी दर्श कति' बानित्म (यिन द'ए । বেদ ও পুরাণে যাঁ'র গুণ-গান সদা গায়।

কড যে অগুভ হয় কেবা পারে বর্ণিতে ৷ সে রামে বিমুধ হ'লে কেহ সুধ নাহি পায় ॥ ৪

| দো—হিবণ্যাক্ষ সহ | निक मरहामन     | মধুকৈটভ আর।                  |
|------------------|----------------|------------------------------|
| যে বধিলা সেই     | কুপানিধি প্রভূ | ধ'রেছেন অবতার॥ ৪৮ (ক)        |
| কাল-রূপ ধল-      | গ্ৰন-দহন       | জ্ঞান-ঘন গুণধাম ৷            |
| শিব চারিমুখ      | সেবেন বাঁহারে  | তাঁ'র 'পরে তুমি বাম ॥ ৪৮ (খ) |

(6)—বিরোধ করিয়া শেষ জানকীরে ফিরে' দাও। প্রেমময় রুপানিধি রাম-গুণ সলা গাও। মাল্যবান্-বাণী লাগে খেল সম হৃদয়েতে। বধিতাম তো'রে তবে এখন হ'লি প্রাচীন। এ কথায় মাল্যবান করে এই অফুমান।

কতে পোডা-মুখ ল'য়ে চলে' যা' এখান হ'তে ॥১ আমার সমুখে আর না আসিস কোনদিন। ইহারে এবার স্থির বধিবেন ভগবান্॥ ২

## नक्मण-दमयमाप मुक

**b'रन (शन मान)वान् बावरगरत शानि पिशा ।** কালি প্রাতে দরশন ক'রো মোর গুণপনা। পুত্র-বচন শুনি' হাদয়ে ভরসা এ'ল। ভাবিতে ভাবিতে নিশা হ'য়ে এ'ল অবসান। ছুর্গম গড়ে খেরে কপিরা ক্রোধের ভরে। विविध चाश्रुध न'रत्र त्राक्रमश्र धात्र ।

কহে তবে মেঘনাদ কোপেতে দহিত হিয়া॥ করিব যে কভবিধ হইবে কি বর্ণনা॥ ৩ সেহের সহিত তা'রে নিজ কোলে বসাইল ॥ চারি বাবে পুন: কপি হানা দিতে আগুয়ান 18 কোলাহল হয় খোর লঙ্কাপুরী-ভিতরে ॥ ছৰ্গ-উপর হ'তে গিরিচ্ডা ছড়ে' দেয়॥ ৫

| ছ—ছুড়ে' মারে কোটি      | পাহাড়ের চূড়া  | বিবিধ প্রকার গোলক ধায়।   |
|-------------------------|-----------------|---------------------------|
| করে গরজন                | অশনি যেমন       | প্রালয়ের যেন বাদল ছা'য়। |
| হয় সমবেত               | ভীম কপি যত      | তমুজর-জর তবুনাফিরে।       |
| ভূলিয়া পাথর            | মারে গড়'পর     | যথা তথা কত রকঃ মরে ।      |
| <b>দো</b> —মেখনাদ শুনি' | হানা দে'ছে পুন: | তুর্গের পুরোন্ডাগে।       |
| গড় হ'তে বীর            | নামিয়া চলিল    | বান্ত সহিত আগে ৷ ৪৯       |

চৌ—বলে কোথাকোশলের অধিপতি হুই ভাই। বাণ-চালনায় যা'র জগতে তুলনা নাই # কোথায় বা নল নীল স্বগ্ৰীব সে ভিবিদ। নিক সহোদর-জোহী কোধায় সে বিভীষণ। এ বলিয়া শরাসনে চড়া'ল কঠিন বাণ। ছাড়িতে লাগিল যত নিশিত শায়ক-চয়। ছেখা গেল বধা তথা ভূমিতে প'ড়ে বানর।

অঙ্গ হনুমান মহাবল রণবিদ ॥ ১ সবারে আজিকে ঠিক করিব বলে নিধন ! माक्रम कार्राट मिन खंदम खंदम के होत । २ পক্ষ-যুত অহি সম ছুটিল আকাশময় ৷ সমূপে আসিতে কেহ নারে সেই অবসর 🛭 ৬ এ দিকে ও দিকে কপি পলায় ভালুক-দল। সমর-ভূমিতে হেন কপি দেখা নাহি যায়। বিগত সমর-সাধ অপহত সব বল। তথু প্রাণ অবশেষ যা'দের না হ'ল হার॥ ৪

কো-দশ দশ শর কেশরীর নাচে

মারে সকলেরে গর্জে ভীষণ ভূমে পড়ে কপিবার। মেখনাদ বলী ধীর ॥ ৫•

কৌ—ব্যাকুল বাহিনী করি' হন্নুমান্দরশন।
মহা গিরিবর এক উপাড়িল দ্বরা করি'।
গিরি পড়িডেছে হেরি' আকাশে উঠি' পলায়।
ধিকার দেয় তা'রে হন্নুমান বার বার।
দ্ববিধ আয়ুধ করে তাঁহার পরে ক্ষেপণ।
প্রভাপ হেরিয়া মূঢ় অভিশয় লাজ-ভরে।
যেন অহি-লিশু এক করেডে করি' গ্রহণ।

কাল-সম ক্রোধভরে ধাবিত হ'ল তথন।
মহা রোঘে নিকেপিল ভাহে মেঘনাদোপরি ॥>
সারথি ও রথ বাজী চূর্ণিত হ'রে যায়।
নিকটে না আসে তবু মর্ম্ম জানে ইহার। ২
নানাবিধ কটুবাণী ভাঁহারে পাশী শুনায়।
হেলায় করেন প্রভু দে সকলে নিবারণ। ৩
ভাঁহার উপরে মারা ব্যাপিতে প্রয়াস করে।
গক্ষড়ে দেখা'তে ভয় সাধ করে কোনজন। ৪

পৌ—মহেশ বিধাতা তাঁহারে ভুলাতৈ ছোট বড় সব আপন মায়ায়

মোহিত মায়ায় বাঁ'র। চাহে রাক্ষস ছার॥ ৫১

চৌ—করে দে আকাশে উঠে বরষণ অঙ্গার।
কতই বিবিধ ভাঁতি পিণাচিনী ও পিণাচ।
মল পুষ কেশ অস্থি কথিরের ধারা আর।
ধূলি বরষণ করি' আধার স্ঞান করে।
মারা দরশন করি' কপিরা অতি নিকল।
কৌতৃক হেরি' হালি ঈষৎ হাদিলা রাম।
কাটিলেন এক শরে দব রাক্ষন-মারা।
কপি-ভালু পানে কুপা-চ'ধে চা'ন রম্বার।

ধরাতল হ'তে উঠে বিপুল জলের ধার ॥
মার্-কাট্ ধ্বনি করি' করে কতবিধ নাচ ॥ ১
কথনো বরষা শিলা হ'তে থাকে বারবার ॥
দেখিতে না পাওয়া যায় প্রদারিত নিজ করে ॥
স্বারি মরণ লেখা আছে ভাবে অবিকল ॥
ভয়-ভীত সব কপি বু'বলেন গুণধাম ॥ ৩
দিনকর-করে যেন কাটে আঁধারের ছায়া ॥
দারুণ হইল রণ রোধিলে না রোধা যায় ॥ ৪

**ড়ো** —আদেশ যাচিয়া মহা ক্রোধ-ভরে রামের চরণে যা'ন লক্ষণ অঙ্গদাদি কপি সাধ। শর-শরাসন হাত॥ ৫২

(5)— মরণ নয়ন বৃগ উর ভুক স্থবিশাল।

এ দিকে রাক্ষসপতি পাঠাইল বীরগণে।
পর্বাত নথ পাদপেরে করি' প্রহরণ।
রাক্ষস-বানরেতে জোড়া-জোড়া রণ করে।
মৃষ্টিকা পদাঘাত দাতে করে দংশন।
মার্ মার্ ধর্ ধর্ ধরিয়া কর্নিছত।

হিমগিরি-নিভ ডমু তচ্পরে আভা লাল ৷
ধায় তা'রা কতবিধ ভীম প্রাহরণ সনে ॥ ১
জয়জয় রাম রবে ধায় কপি-বীরগণ ॥
জয়-সাধ চু' দলের কম নহে জ্বলি-পৈরে ॥ ২
বিজ্ঞাী কপিরা বধে করে ভর প্রাদর্শন ॥
শির চুর্ণ করি' কর্ ভুজ্মুগ উৎপাটিভ ॥ ৩

नग्न लाक पूर्व थाकে এই মহা কোলাহলে। অম্বরে করে হুর কৌতুক দরশন।

প্ৰচণ্ড দেছ কড ৰখা তথা ছুটে বলে॥ क्षरना विवारक श्रूष क्षरना मगन मन ॥ 8

মহারোষে এ উঁহারে করিলেন আক্রমণ॥ ১

ছল বল রাক্ষদ করি'ছে রণে অ-নীতি॥

हुन करतन पत्रा जात्रथी ७ अन्मन । २

ভাহে রাক্ষস হ'ল শুধু প্রাণ-অবশেষ॥

সঙ্কট হ'ল অরি ল'বে এবে মোর প্রাণ॥ ৩

एड कामग्री भक्ति नारंश नम्बन कपि-'भरत ॥

দো-খাদেতে শোণিত-অঙ্গার-রাশি-

উপরে উড়িয়া উপরেতে যেন ধূলি-রাশি জমাহয়। ভন্ম ছাইয়া রয়। ৫৩

## লক্ষণের শক্তিশেল

চৌ—কুম্মতি কিংকক-তক্ষ শোভা যথা হয়। সেইমত শোভিতেছে মৃত বীর সমুদয়। नक्मन-स्थनाम जनवीत हुई खन। কাহারো-অপরে জয় করিতে নাহি শক্তি। কোপেতে অধীর তবে হইলেন লক্ষ্মণ। প্রহার বিবিধ ভাবে করিছে থাকেন শেষ \*। তখন রাবণ-স্থুত করে মনে অনুমান। শক্তি বীর-বিঘাতিনী এত ভাবি' ক্ষেপ করে। ভীষণ তাহার ঘার লক্ষণের ভ্রান যায়।

> শতকোটি বীরে শেষে কি ভূলিবে

তখন নিডর হ'য়ে তাঁহার নিকটে যায়॥ ৪ তুলিতে প্রয়াস-করে। লজ্জিত হ'য়ে ফিরে॥ ৫৪

জগৎ-আধার

# रुष्यादन्त्र श्रुट्यन देवण्डक कामग्रम

(b) — ७ न महारमवि (यह बनख-रकाशानरन। हात्र-मग रमाक शारत महन कत्रिरा शरम। তাঁহারে সমরে কহ জিনিতে শক্তি কা'র। 🕮রামের কুপা-আঁথি যাহার উপরে হয়। अमिष वागं है न किरत भूनः इहे नन । ব্যাপক ব্রহ্ম যিনি অঞ্জেয় ভূবনেশর। এমন সময়ে হতু লক্ষণে ল'য়ে আসে। बाधवान् राम त्राह श्रायग ভिषक्-त्रावा। रसूमान (शन जथा नच् करनवत धति'।

স্থুর নর চরাচর সদা সেবা করে বাঁ'র॥ ১ এ লীলার গৃঢ় ভেদ তা'রি শুধু জানা রয়। আপন আপন অনী সামালে সেনানীদল ॥ ২ লক্ষণ কোথা বলি' শুধা'ন করুণাকর। অমুজে নির্থি' প্রভু-দ্রদি অতি হথে ভাসে। ৩ কে আনিভে যায় ভা'রে লছাপুরীর মাঝ॥ আলয় সহিত ডা'রে আনে অভি দ্বা করি'। ৪

**(मा**-- ब्राटमब - ठब्रण-

বে – মেঘনাদ-সম

শতদলে আসি

হইল সুষেণ নত।

কৃষ্টি' নাম গিরি-ভেষজের কহে

গিয়া আন' বায়্-স্ত ॥ ৫৫

#### कानद्रमि-त्रावन मरवान

(5)--त्राम-अन-अतिक कनत्य कति' शात्रा । ও দিকে খনেক দৃত রাবণে বারতা দিল।

আখাস-বাণী সনে করিল হন্তু গমন 🛭 কালনেমি-পুরে আসি' রাবণ উদ্দিত হ'ল।। ১ সবিশেষ ভেদ-কথা দশানন কহে তা'রে। ভোষারি সমূধে বেবা করিল পুরী দহন। নিজ হিড কর' করি' রখুপতি বন্দনা। নীল-শতদল তমু , অভি কমনীয় শ্রাম। স্থামি ভিনি মোর ভ্যাগ কর ভব এ মৃঢ়ভা। মহামোহ-যামিনীর ভ্যক্ত'নিজ্ঞা-বিকল্ডা॥ কাল-রূপী বায়ুভুক্ যাঁ'র পালে পায় ক্ষয়।

শুনি' কালনেমি শির ঠুকে ভূমে বারে বারে ॥ তা'র গতিরোধ করে আছে হেন কোন্জন ॥ ২ ছাড়' রক্ষেশ दुश তব এই জল্পনা ॥ প্রদয়ে ধরহ রূপ নয়নের অভিরাম ॥ ৩ কভু কি তাঁহারে রণে স্বপনেও হয় জয়॥ ৪

(प)-छनि' प्रभानन রাম-দুক্ত-করে

কোপ-যুত্ত অভি মরি সেও ভাল

कामरनिय यस्न करत्र। ডুবে পাপী পাপ-সরে॥ ৫৬

#### মকরী-উভার

**চৌ—এ**ত ভাবি' পথে যেতে প্রপঞ্চ করে স্তম্পন। নির্ম্মাণ করে সর মন্দির উপরন॥ হত্নমান্ হেরে এক পুত মুনি-আশ্রম। রাক্ষ্য রহে তথা ভাপদের ছ্লাবেশে। চরণে প্রণাম করে তথা গিয়া হমুমান ৷ কহে হয় মহারণ শ্রীরামে ও দশাননে। হেথায় থাকিয়া আমি সকলি দেখিতে পাই। বারি যাচে হতুমান দিল নিজ কমগুল। রক্ষ: কহে স্বরা এস করি' সরে মতজন।

ভাবে করি জল পান করিবারে দূর আনম ॥ ১ মায়াপতি-দূতে চাহে ভুলাইতে মায়াবলে॥ সুরু করে কালনেমি শ্রীরামের গুণগান॥ ২ জীরামের জয়ে মোর সংশয় নাহি মনে॥ জ্ঞান-দরশন-বল আমার বড়ই ভাই 🖁 ৩ কপি কহে বেণি নাই রহে অভি অ**ল্ল জ**ল। দীক্ষা-দান করি ভোমা জ্ঞান হ'বে এইক্ষণ ॥ **৪** 

বে —ধরিল চরণ বধিতে ভাহারে

আকুলি মকরী (मव-(मश् धति' সলিলে যেমনি নামে। **हिन्म अंतर्ग-शास्त्र ॥ ५**१

চৌ—ভোমার দরশে কপি হইলাম নিশাপ। মকরী কহিল মুনি নছেক এ নিশাচর।

এখন খুচিল ভাত মূনিবর-ছোর শাপ॥ প্রকৃত আমার কথা ধব' নিজ হুদি 'পর 📲 ১

## কালমেমি-উজার

যেমনি অব্দরা গেল হয়ুরে এ কথা বলি'। হসুমান্কহে মূনি আগে দক্ষিণালহ।

রাক্ষ্য-পাশে হন্তু তথনি আসিল চলি'॥ ভা'র পর তব মন্ত্র-উপদেশ মোরে দেহ ৮২

মকরী ও কালনেবি ইতাসভাব শাপত্তই অপবা ও গছর্ক। একদিন ভাষাদের নৃত্যপীতে ইতাসভা মৃত; কিভ তথার উপৰিষ্ঠ মহর্ষি ভূকাসা কোন আংশংসা করিলেন না। ইহাতে মহর্ষিকে নৃত্যুসীত বিবহে আৰু মনে করিয়া ভাহার অবজ্ঞাব হাসি হাসিবাছিল ; কলে তাঁলারা অভিসম্পাতে অব্দারা যকরী ও গছর্ক কালনেধি রূপে পৃথিবীতে নিপজিত। উহাব। মহর্মির চরণে দাপ-মুক্তির জন্ত প্রার্থনা করিলে, মহর্মি তুর্বাসা ভাদেশ করেন যে, ত্রে চাবুগে বধন ভাৰবাৰ বাৰচজ পৃথিবীতে আদিৰেন, তথন জাঁহাৰ মুখ্ছ হছুমানেৰ চৰণ-পাৰ্থে মক্ৰীৰ, ও ডাহাৰ হজে নিহত হইলে कांगरनवित्र छेक्षाच स्टेरन ! अहे क्छानकान सकती सहवाग्नीरक बनिता विदाहित ।

এ বলি' তাহার শির লাঙ্গুলে জড়াইয়া। রাম রাম রাম বলি' ছাড়িল আপন প্রাণ।

আছাড়িল মরে রক্ষ: নিজ ততু প্রকাশিয়া ভা' শুনি' হরব-ভরে চলে পুন: হমুমান্॥ ৩

#### ভরতের শরে হলুমানের মৃচ্ছণ

হেরে হন্থ পর্বতে ভেষকে চিনিতে নারে।

তখন সহসা কপি উপাড়ি' লইল ভা'রে ॥ গিরি ল'য়ে নিশাযোগে নভে বাযু-বেগে ধায়। অযোধ্যা-উপর দিয়া বানর উড়িয়া যায়। ৪

দো—অতীৰ বিশাল ফলক-বিচীন

নেহারি' ভরত হানেন শায়ক

রাক্ষস অমুমানি'। প্রবণ অবধি টানি'॥ ৫৮

#### ভরত-ইন্মান সংবাদ

চৌ—মূরছি' ধরার পড়ে ভীষণ শরের ঘায়। ভরত চলেন ছুটে প্রিয়-নাম শুনি' কাণে। কাতর হেরিয়া ল'ন হমুমানে বুকে ক'রে। শুকায় ভরত-মুখ ছুখে বিচলিত মন। যে বিধি জীরাম-পদে বিমুখ আমারে করে। কার মন বচনের সহিত আমার যদি। রখুপতি মোর 'পরে যদি র'ন অমুকুল। কহিতেই এই কথা জয় জয় রমুপতি।

(সা---ল'ন তা'রে হুদি 'পরে करम उद्यम नाहि धरत

(5)-ক'ন ডাড সুধনিধি রামের কহ কুশল। সহিত অর্জ মাডা জানকীর মঙ্গল। मः (कर्ण इस मव विविद्या ममाठात । ক'ন হার দৈব কেন আমার জনম হ'ল। (अराज नमम नम दुवि' मरन धाति' धीत। হে ভাত বিলম্ব বড হইবে ভোমার যে'ছে। পর্বত-সনে মোর শরে কর আরোহণ। শুনি' হরুমান-মনে উপবিল অভিমান। 🖲রাম-প্রভাপ-কণা বিচারিয়া হৃদি 'পরে।

মুখে জপ করি' নাম রাম রাম রম্বায় ॥ আকুল-পরাণে যা'ন বানরের সন্মিধানে॥ ১ উপায় করেন বহু জ্ঞান নাহি আদে ফিরে'॥ সক্ষা-নয়নে তবে ভরত বচন ক'ন॥১ এই নিদারুণ তুথ আঞ্চি' মোর ভারি ভরে॥ রাম পদে অকপট রহে শ্রীতি নিরবধি॥ ৩ তবে যেন হয় কপি অপগত প্রম-শৃল। বলিয়া উঠিল বসি' হহুমান ক্রতগতি ॥ ৪

পুলকিত তমু লোচনে জল। শ্বরি' রাম রঘুকুল-কমল। ৫৯

শুনি' অরুতাপ প্রাণে মনে খেদ অতি আর ॥১ थ्यपुत कानरे कार्य **अ व्यथम ना मा**शिन ॥ হমুমান প্রতি বাণী কহিলেন বল-বীর। ২ প্রভাত হইয়া গেলে কার্য্য নাশ হ'বে ভা'তে ॥ প্রেরণ ভোমারে করি যথা কুপা-নিকেডন 🕽 😕 মোর ভার বহিতে কি সক্ষম হ'বে বাণ। বন্দি' চরণ কপি কহে করি' জোডকরে ॥ ৪

বে—তোমার প্রতাপ এত বলি' লডি' ভরতের শীল বারবার মনে

करत दाषि' नाथ ভরত-আদেশ গুণ বাত্-বল করিয়া বাধান

দরা যা'ব প্রভ-পায়। নমি' হতুমান যায়॥ ৬ • (क) প্রভুতে প্রেম অপার। যাই'ছে বায়ু-কুমার ৷ ৬০(৭)

#### এরামের বিলাপ

(क)--ও দিকে আনকীনাথ হৈরি' অমুজের পানে। কংহন বচন যথা কচে সব নরগণে॥ অর্থ-রাতি অভিক্রেম কপি না আসিল কিরে'। নিলেন অনুজে রাম আপন বকের পরে॥ ১ পারিতে না কভু ভাই হেরিতে মোরে বিক্ষ। সদাই আছিল তব খড়াব অতি কোমদ। আমারি হিতের তরে বর্জিলে পিতামাতা। ভোমার সে অমুরাগ রহিল কোথা এখন। যদি জানিভাম বনে ভোমারে হারা'তে হ'বে। পিভার বচন নাহি পালিভাম বভু তবে। ৩ তনয় বিভব নারী ভবন ও পরিবার। কিন্তু জগত মাঝে ভাই আর মিলে না ত'। পক্ষ বিহনে খগ বেমন অভীব দীন। তেমনি জীবন মম ভাই ভোমা হারাইয়ে। জায়া-উদ্ধার হেতু হারাইয়া অনুজেরে। সেও ভাল অপ্যদ স্তিতাম জগময়। এবে ঘোর অপয়শ আর শোক তব তরে। তব জননীর তুমি একমাত্র স্থকুমার। ধরিয়া ডোমার হাত করিলেন সমর্পণ। কি উত্তর দিব উা'রে কিরে গিয়ে অযোধায়। চিন্তা কতই তাঁ'র যিনি চিন্তা-বিমোচন। উমা এক খণ্ডহীন প্রভুরাম সনাতন।

সহিলে কাননে হিম তাপ বায়ু সদা ভাতা॥ ২ আকুলতা-ভরা কথা ওনিয়া না উঠ কেন। আসে যায় এরা সবে এ জগতে বারবার 🛚 এ বিচার করি' মনে হও ভাত জাগরিত ॥ 8 কর বিনা করী আর ফণী হ'লে মণি-হীন। অড় দৈব যদি রাখে মোরে এবে বাঁচাইয়ে । ৫ कान् मूच न'रत्र श्रूनः व्यायाशात्र या'व किरत्र'॥ বনিভারে হারাইলে ভাহে ক্ষতি বেশী নয় ॥ ৬ কঠোর হিয়ারে হ'বে অনিবার সহিবারে n তুমিই কেবল ভাত ভাঁহার জীবনাধার॥ ৭ সব বিধি হিডকর স্থাদ করি গণন। উঠি' মোরে কেন নাহি শিখাইয়া দাও হায় ॥৮ বয়ষে আসার তুই রাজীব-দল লোচন। ভৰতে কুপায় তাঁ'র নরলীলা আচরণ 🛚 ৯

# रम्मारमन अकार्विम

সো-প্রভুর বিলাপ শুনি' কাণ হেন কালে আসে হয়ুমান

চৌ-পুলকিত হ'য়ে রাম মিলিলেন হয়ুমানে। পরম স্থান প্রভু কৃতজ্ঞতা-ভরা প্রাণে ॥ ভিষক দ্বিত ভবে সমাপিল প্রতিকার। করেন জদয়ে ধরি' অমুজে প্রাভু আদর। যেভাবে ভিষকে হফু ক'রেছিল আনয়ন।

কপিদের প্রাণে দারুণ বাজে। वीववम यथा करून-भारता ॥ ७১

পুলকিত লক্ষ্মণ বদেন উঠি' আবার 🛭 ১ খক কপির দলে স্থাধের বহে লছর। আবার সেভাবে ভা'রে লইল পুনঃ ভবন ॥ ২

## কুম্বকর্তের জাগরণ

এ বারতা প্রত্তিল গিয়া দশানন-কাণে। ব্যাকুল হইয়া যায় কুম্ভকরণ-পালে। উঠে' বলে নিশাচর ভাহারে দেখায় হেন। ७थाडेन जावरभरत निमान्त्र ८ए त्राचन्।

অতীৰ বিষাদে শিবে বারবার কর হানে। বিবিধ যতনে ভা'র খুমের জড়ভা নালে ॥ ৩ শরীর ধরিয়া কাল উঠিয়া ব'সেছে যেন 🛭 ওছ বদন ভব ছেরি এবে কি কারণ। ৪

সব কথা কহে ভবে মহামানী দশানন। কতে তাত বানরেরা ব'ধেছে রাক্ষসগণে। চুমুর্থ স্থররিপু নরাহারী যতজন। মহোদর আদি যত আমাদের ছিল বীর।

যে প্রকারে জানকীরে আনিল করি' হরণ ॥ মহা মহাবীরগণে নিধন ক'রেছে রণে ॥ ৫ মহা বিক্রম বীর অভিকায় অকম্পন। নিপড়িত সংগ্রামে সেই সব রণধীর ॥ ৬

## क्षकदर्वत्र त्रावशदक छेशदम्भ माम

(मा-ममानन-वानी

ভানিয়া কুন্ত

मर्थरम करह वहन।

**২গত-মাতা**রে

হরি' জানি এবে

কল্যাণ চাহে মন ॥ ৬২

(5)-छन्न काम देश ना कतिला (इ तामन्। এখন-ও পরিত্যাগ করি' ওই অভিমান। হতুমান্ দাস সম করে যাঁ'র পদে নতি। হায় হায় ভাই তুমি কুকাজ ক'রেছ ঘোর। বিধাত। মহেশ দেব প্রভৃতি সেবক বাঁ'র। **(** क्विं कि हिना भारत शृष्ट्र स्थान-वहन । এখন আমারে ভাত দাও গাঢ় আলিঙ্গন। ত্রিভাপ-মোচনকারী নির্পি গিয়া নয়নে।

এখন আসিয়া মোরে জাগাইলে কি কারণ ॥ রামের ভজনা কর হ'বে তব কল্যাণ॥ ১ সে রামে কি নর মনে ভাব' নিশাচরপতি ॥ আসি' কহিলে না কেন প্রথমেই কাছে মোর ॥২ বিরোধ এনে'ছ টেনে' সে পরম দেবতার ॥ কহিন্তাম ছোমা তা'ই কিন্তু এবে অকারণ॥ ৩ গিয়া দরশনে করি সফল নিজ লোচন। খ্রাম-তন্ত্র সরসিজ-নয়ন জীবন-ধনে ॥ ৪

(দা--রাম-রূপ গুণ পরেতে যাচিল করিয়া স্মরণ স্থরা কোটি ঘট নিমেষ ভরে বিলীন। মহিষ গণনাহীন ॥ ৬৩

# বিশ্বীৰণ-কুম্বৰণ সংবাদ

(5)—মহিষ আহার করি' মদিরা ঢালি' গলায়। পরে সিংহনাল করে বজ্ঞাঘাত-রব যা'য়॥ মত্ত সমর-মদে মদিরায় লৌলীন। ডা' দেখিয়া বিভীষণ আগুয়ান হ'য়ে এ'ল। অমুদ্ধে তুলিয়া বুকে করে তা'য় আলিকন। বিজীষণ কৰে ডাত হিত-বাণী কহা-দোৰে। আসিয়াছি সে গ্লানির কারণে প্রভুর কাছে। ওন ভাই এবে কাল-কবলিত দশানন। ধক্ত রে বিভীষণ ডো'রে বলিহারী যাই। হে জ্রাড: তৃমিই কুল করিলে যশে উজল।

তুৰ্গ ভ্যজিয়া চলে একাকী সেনা-বিহীন ॥ ১ চরণে পতিত হ'য়ে নিজ নাম **গু**নাই**ল**। শ্রীরাম-ভকত জানি' ডা'র 'পরে প্রীত মন॥ ২ পদাঘাত দশানন ক'রেছিল মোরে রোধে u দীন হেরি' দাস ওা'র প্রসন্ধতা লভিয়াছে॥৩ পরা-শিক্ষা আর কড় লইবে কি সে এখন । রক্ষ:কুল-বিভূষণ হ'য়েছিস্ তুই ভাই ॥ ৪ ख्बारण स्थापत निर्धि ताम-शप-भाष्ठपण ॥ e

ছো-কার বাক মনে কাল-বশ আমি

কপটভা হাড়ি' নিজ পর জান-

ভ'লো রাম রণধীর। বিশ্বত যাও বীর । ৬৪

## কৃত্বকর্বের যুদ্ধ

**টৌ—ভাতার বচন ওনি' ফিরে আদে বিভীবণ। উপনীত যথা প্রভু তিনলোক-বিভূবণ।** कटर नाथ ध्राध्य-मृग मंदीय-ध्या। এ कथा अवरा यरत किना करत अवरा। कृलिया नरेन करत विष्नेभिन कृथत । কপি আর ভালু বীরগণ একএক বারে। মন তা'র অবিচল কলেবর নাহি হেলে। তথন পবন-মৃত মৃষ্টি করে প্রহার। উঠিয়া সে নিশাচর মারে পুন: হতুমানে। তা'র পর নল নীলে আছাডে ধরণী 'পর । বানর-বাহিনী দুরে ছুটিয়া পলায় তাসে।

দো—সূত্ৰীৰ সহ অঙ্গদ-আদি চলে মহাবীর স্থগ্রীবে চাপি'

(b) — इत क'न (पवि नत्रनीना कति'एकन त्राम । व्यविशंग मतन मिनि' यथा (थरन इति-याना ॥ জ্রকৃটি-বিলাসে যিনি করেন কালে সংহারে। করি'ছেন বিস্তার কীর্ত্তি ব্দগ-পুতকরী। মুৰ্জ্য অভীত হ'ল হমুমান পে'ল জ্ঞান। হারা-জ্ঞান স্থগ্রীব আবার ফিরিয়া পে'ল। জ্ঞান পেয়ে নাসা কাণ কেটে' নিয়ে দংশনে। সুগ্রীবে পদে ধরি' রক্ষ: আছাড় মারে। ভা'র পর প্রভু-পাশে ফিরি' স্বগ্রীব কয়। অভিশয় গ্রানি মনে দেখে' কাটা নাক কাণ। স্বভাবে ভীষণ-কাম্ব তাহে নাসা শ্রুডি-হারা।

(मा---दग्र क्य त्रच्-একযোগে ভা'র

কুলমণি হাঁকি' (मरह ছুড়ে' মারে

চৌ-রণমদে মাতি কুম্ব ক্রোধিত কিরে এমন। মহা ক্রোধ-ভরে কাল ফিরিয়া আলে থেমন॥ কোটি কোটি বানরেরে ধরিয়া ধরিয়া খায়। কোটি অপরেরে ধরি' ঘর্ষে মেতের সনে।

আসিতেছে কুম্বর্কর ধীর রণ-ধুরন্ধর ॥ ১ করিয়া হরম-রব ধায় যত বীরগণ ॥ কট্কট্রব করি' ছুড়ে ভা'র দেহ 'পর ॥ ২ কোটি কোটি গিরি-চূড়া ভাহারে প্রহার করে। অর্ক কলের ঘায় করী যথা নাহি টলে। ৩ মাথা ঠুকে' ধরা 'পরে পতন হইল ভ'ার॥ ঘূর্ণিত ধরা 'পরে পড়ে হছু সেইক্ষণে॥ ৪ यथात्र उथात्र कृत्म (कर्ण वीत-धुरुषत ॥ অতি ভয়ে ভীত সবে কেহ না নিকটে আসে ॥৫

> কপি মূর্চিছত করি'। আপন কক্ষে পুরি'॥ ৬৫

তাঁহার কি শোভে কড়ু সংগ্রাম এ প্রকার। ১ ভরিবে মানব ভবে যাহে কীর্ত্তন করি'॥ স্থাীব কোথা বলি' করে ভা'র সন্ধান॥ ২ মুত ভাবি' কৃক্ষি হ'তে নিশাচর ফেলে'ছিল। গর্ভিচলে নভে তবে কুম্ভ-করণ জানে।। ৩ স্থাীব ঝেডে' উঠে' মারে প্রতি-উদ্ধরে ॥ জয়তি জয়তি কুপানিধানের জয় জয়॥ ৪ মহা ক্রেম্ব-ভরে ফিরে নিশাচর বলবান ॥ ছেরিয়া বানরদল দারুণ ত্রাসেতে সারা॥ ৫

পঙ্গপাল বেন গিরি-গুহায় ঢুকিয়া যায় 🏽 ১ ধরণীর ধূলি সহ নিস্পেশিল কোটজনে।। व्यावात्र वाहित्र इ'एछ थाटक मटन मटन ॥ ३

ছুটে বানরের দল।

বিটপী গিরি সকল। ৬৬

रमन खर्वन नामा-भव मित्रा कशिपत्म ।

<sup>•</sup> बाबाद । ई शक्क ।

হেন রণমদে মত্ত গবিবত নিশাচর। দুরে খাড়া বীরগণ ফিরিয়াও নাহি ফিরে। কপি-সেনা ছারখার কুম্ভ-করণ করে। ছেরিলেন রঘুমণি আপন সেনা বিকল।

ধাতা যেন দিলা বিশ্ব ভরিতে পোড়া উদর । কাণে না গুলিতে পায় নয়নে নাহিক হেরে ॥ ৬ তা' শুনি' রাক্ষ্য-অনী ছুটে উল্লাসভরে ॥ অরাতি-বাহিনী আদে গণনা-অভীত দল ॥ ৪

দো—তন।বভীষণ দেখি দেনা আর স্ঞীৰ লক্ষ্য ष्ट्रहेन वन

রক্ষা কর সেনাগণ। রাজীব-লোচন ক'ন 🛚 ৬৭

(6)-কটিতে বাঁধিয়া তৃণ শাঙ্গ লইয়া হাত। অরাতি দলন তরে চলিলেন রঘুনার 🛭 আগে টকার দেন নিজ ধহুকের গুণে। সভ্যদন্ধ প্রভু শর ভ্যঙ্গিলেন একলক । চারাদকে ধায় যত গণনাতীত নারাচ। কাটে পদ বিধে বুক ছি ছৈ শির ছুল দণ্ড। কত বীর-কলেবর হ'য়ে গেল শতৰণ্ড। ঘূর্ণিত হ'য়ে পড়ে আহত ধরণী 'পরে। লাগিতে শায়ক করে মেঘ-দম গর্জন। চণ্ড বিশাল দেহ মুণ্ড বিহনে ধায়।

বাধর অরির দল হইল সে রব ওনে'॥১ কাল অহি যেন চলে আকাশে ধরিয়া পক্ষ। নিহত হইল তাহে বিকট কত পিশাচ। ২ সম্বরি' উঠি' পুন: সুবীরেরা যুদ্ধ করে 🛭 ৩ স্থকঠোর শর হেরি' বছ করে পলায়ন॥ ধর্ধর মার্মার খোর রবে গর্জায় ॥ ৪

(पा-कन-मार्व कडू-পুনরায় তাঁৰ

শায়ক নিক্র জুণীর-ভিডরে বধে পিশাচের প্রাণ। व्यादिम मक्न वान ॥ ५৮

(b)-- कुछकर्ग मत्न (मिल-विजात कति'। অতিশয় কোপ যুত হ'ল মহাবলী ধীর। ক্রোধভরে পর্বত উপাড়ি' লইল করে। প্ৰবৃত আসে হেবি' সংখ্যায় অগণন ! ভা'রপর ক্রোধ-ভরে আপনার ধন্ন টানি'। শ্রীরে প্রবেশ করি' বাহিরিয়া যায় শর। অ্সিত ব্যানে শোভে শোণিতের ধারা হেন। কজ্জল গিরি হ'তে গেরু ধারা ছুটে যেন।

ক্ষণ-মাৰো নিশাচর-বাহিনী নাশিলা হরি। করিলা কেশরী-নাদ অতি গুরু-গঞ্জীর॥ ১ মহা কপিবীরগণ-পানে নিক্ষেপ করে। भर-खारा धृति-मम करदेन क्यू **उ**थन ॥ २ করাল শায়ক বছ হানিলেন রঘুমণি॥ लुकां इ हिंगा यथा कनश्र मध्य ॥ ७ ব্যাকুল নিরাখ' তা'রে কপি ভালু ধেয়ে' আদে। নিকটে আদিলে পরে অমনি আবার হাসে ॥৪

(मा-विश्रम भातारव গল্বাজ সম

গৰ্জন করে ভূমিতে আছাড়ে

कां वान(तरत धति'। রাৰণ-শপথ করি' ॥ ৬৯

(5)-বানর ভালুক দেনা ত্রাদে পলাইয়া বায়। বুকে# বেরিয়া যেন মেষ্পাল ভরে ধার । **षाद्येय गाकूल श**ंग्र व्यार्जनातम् मान । ডেমনি ভবানি ভঙ্গ দেয় রাক্ষস-রণে ॥ ১ কৰে এই নিশাচর আকালেব রূপ খ'রে।
রাখ হে শরণাগত-তৃঃখ বিভঞ্জন।
সকরুণ আর্ত্তনাদ শুনিতেই ভগবান্।
আপনার সেনাগণে পশ্চাতে রাখি' রাম।
কর্ষিয়া শরাসন হানেন শতেক শর।
শরীরে বিঁধিতে বাণ ক্রোখ-ভরে দৌড়ায়।
উপাড়ি' লইল এক পর্বত ল'য়ে ধায়।
কথিত তৃই বাক্ ডা'রে হেরে' মনে হয়।
উগ্র নয়নে প্রস্কু পানে করে দরশন।

আদিল বানররপী অভাগা প্রদেশ 'পরে।
কুপা-জলধর বাম ধর রক্ষ: বিনাশন । ২
চলেন ধরিয়া করে শবাসন আর বাণ ॥
কোপ-ভরে মহাব'র নিজে হ'ন আগুযান। ৩
বেগে প্রধাবিত হ'য়ে ভেদ করে কলেবর ।
ধরাধর কম্পিভ বস্তুমতী হেলে ভা'য়॥ ৪
দে কর রাঘববর কাটিলেন একেবারে।
ভা'রেও ফেলেন ভূ'ম কাটিযা শরের ঘায়॥ ৫
পক্ষ-বিহীন গিরি মন্দর যেন রয়॥
যেন গ্রাদ করিবারে চাতে পাণী বিভূবন॥ ৬

পো—চীৎকার করি' গগনে ত্যাসিভ অভি ভয়**ত্ব**র সিদ্ধ **অ**মর ব্যাদিত বদনে ছুটে। হাহাকার করি' উঠে॥ ৭০

(চ)—মনে ব্ঝিপেন প্রভু ত্রস্ত অমরগণ।
ভারেন বদন তা'র হানিয়া শর নিকর।
বাণ-ভরা মুখ ল'য়ে দম্মুণ পানে ধায়।
তখন ক্রোধেতে প্রভু লইয়া নিশিত শর।
দে শির পড়িল গিয়া দশানন-সম্মুণ।
শির হীন ভীম দেহ তখন ছুটিয়া যায়।
নভঃ হ'তে গিরি সম পতিত হইল বলে।
ভা'র আত্মার ভেজ পশিল প্রভু-বদনে।
হরমে বাজায় দেব ত্নুভি অম্বরে।
মিনভির শেষে যত অমর ফিরিয়া যায়।
করিলেন অম্বরে থাকি' হরিজ্ঞণ গান।
ভরায় বধহ খনে বিলি' হালৈ মুনি।

শ্বন অবধি ধহু করি' বলে কর্ষণ ॥
তথাপি সে মহাবল না পড়ে ধরণী 'পর ॥ ১
কালরূপী প্রাণবান্ তৃণ যেন দৌড়ায় ॥
শরীর হইতে নির কাটিলেন ছবাপর ॥ ২
মিন-হারা ফ্লী সম বিকল হইল হুখে ॥
কম্পিতা ধরা প্রাভু কাটেন ছিলাগে ভা'য় ॥ ৩
রাক্ষস কপি ভালু প্রোধিত করিয়া ভলে ॥
ত্বর মুনি সকলেই বিস্ময় গণে মনে ॥ ॥ ৪
বর্ষে প্রস্ন-রা'ল সবে স্ত'ভগান করে ॥
সমাগত দেব-ঝাষ রাম-পাশে সে সময় ॥ ৫
বীররস-ভরা স্তুভি শুনি' শ্রীত প্রভু-প্রাণ ॥
শোভায় করেন রাম আলোকিত রণভূমি॥ ৬

ছ — ঘোর রপস্থল
মূপে শুমজল
ছ' করে ধারণ
ভূপসী না পারে

দো—নিশাচর যেবা অভি নীচ মতি করেন উঞ্জল আঁধি-শভদল শর শরাসন শোভা কচিবারে

শোভা কাহবারে নীচ মলাগার দে নর ভবানি অতুলিত বল কোশল-রায়। লোহিত শোণিত বয়ানে ভা'য়॥ চারিদিকে ঘিরে ভালু বানর॥ হারে শেষ বহু আনন-ধর॥

> ভা'বে দেন নিঞ্ধ'ম। যেবা নাহি ভজে রাম ॥ ৭১

## (मध्मारणत्र मुक्ष ; ७ ब्रीतारयत्र मागशाम

(b)--- मिरम चाछी छ र'न हिनन किरत' छ'मन। चाक्कित तर अंदम बीरत वा चिक्रन ॥ শ্রীরামের করুণায় বাডে কপিদল-বল। দিবারাতি রাক্ষ্সের সেইমত বল-হ্রাস। রাবণ বিলাপ বহু করি'ছে গভীর ছথে। বুকে করাঘাত করি' রমণী রোদন করে। হেন কালে মেঘনাদ করে তথা আগমন। কছে মোর বীরপণা দেখ' কালিকার রণে। রথ বল লভিলাম যাহা ইষ্টদেৰ হ'তে। ৰচন-বিলাসে হেন হ'য়ে গেল নিশি ভোর। এ দিকে বানর ভালু কাল-সম মহাবীর। करत तथ वीत्रभग निक निक करा-रहकु।

তণ পেয়ে আবো তেজ যথা হয় মহানল 1 ১ কহিলে আপন মুখে পুণ্য যথা পায় নাশ। সহোদর-শির তুলে' বারবার ধরে বুকে॥ ২ তাহার বিপুল বল ভেঞ্জের বাখান ক'রে। কহিয়া অনেক কথা জনকের তোষে মন॥ ৩ অধিক বডাই ভা'র কি করিব ও চরণে। পরিচয় না দিলাম তা'র তব সাক্ষাতে ॥ ৪ আবার বানর হানা চারিছারে দিল ঘোর॥ **७ मिटक तकनीहत का**कि छीम दर्गशीत । ৫ সে সমর-বর্ণন কি করিব খগ-কেতু॥ ৬

(पा-माग्रामग्र त्रप অট হাসিয়া

করি' আরোহণ গরজে বানর-

মেঘনাদ নভে ্যায়। সেনা মাঝে ভয় ছা'য়॥ ৭২

(চী---শক্তি শৃল ভরবারি কুপাণ আয়ুধচয়। পরশু পরিঘ শিলা হানিতে থাকে কেবল। আরত দশদিক নিশিত শায়ক-জালে। ধর্ধর্ মার্মার্ এই কাণে ওনা যায়। তক্ত গিরি ধরি' নভে বানরের দল ধায়। তুর্গম খাটি পথ যত গিরি কন্দর। কোপায় যাইবে ভাবি' বানর অভি ব্যাকুল। নল নীল অঙ্গদ বায়ু-সুত হতুমানে ভা'র পর লক্ষ্মণ স্থগ্রীব বিভীষণ। অবশেষে আক্রেমণ করিল দে রঘুবরে। নাগ পাশ-কবলিত হইলেন ধর-অরি। नानाविश चाहत्र करत्रन नहे-नमान। সমর-শোভার ভরে ঘটা'লেন বন্ধন।

বছ্র-আদি প্রহরণ সবে মহা ভেজোময়॥ বর্ষণ শর-ধারা করে ভূমে অবিরল ॥ ১ মহার ভারায় যেন বর্ষার জল ঢালে। যে মারে ভাহার কেহ সন্ধান নাহি পায়। ২ ছঃখে ফিরিয়া আসে দেখিতে না ভারে পায়॥ মায়া-বলে মেঘনাদ বাণে রচে পিঞ্জর 🛭 ৩ বাসবের বন্দী যেন হইল ভূধরকুল। মহা বলবান্ বীরে আকুল করিল প্রাণে॥ 8 শ্র-খায় জ্বজ্র-দেহ হ'ন স্ব জ্বন ॥ বর্ষিত শর সব লাগে নাগ-রূপ ধরে। ৫ খ-বশ অনস্ত যিনি অখণ্ড ও অবিকারী॥ সদা আপনার বশ অধিতীয় ভগবান্ ॥ ৬ নাগপাশ ছেব্লি' ত্রাস পা'ন যত দেবগণ। ৭

(म)-किश्रा गैशक বন্ধন-মাবে

নাম মুনিগণ কভু কি আসেন কাটেন ভবের পাশ। **छेमा (म क्ल**श-निवास ॥ १०

চৌ--রামের সঙ্গ-লীলা ভ্বানি মহিমাময়। বুদ্ধি কি ভাবা-বলে ওর্ক না করা যায়। এ বিচার করি' যত জ্ঞানী ও বিরাগী জন।

त्रात्मत खब्दना करत कर्क कति' वर्क्कन ॥ ১

ব্যাকুল করি' দিল সেনাগণে মেঘনাদ।

আখবান কহে ধল থাক্ ক্ষণ সংযত।
কহে বৃদ্ধ ভাবি' মনে মৃঢ় ছাডিলাম ভো'রে।
এ বলি' ত্রিশূল হানে অভি ধর ডা'র প্রতি।
মেঘনাদ বক্ষেতে দারুণ প্রহার করে।
ধরিয়া চরণ পুন: ক্রোধ ভরে ঘুরাইল।
বরলাভ করা-ফলে মারিলেও নাহি মরে।
করেন নারদ হেথা বিনতা-সুতে প্রেরণ।

আবার প্রকাশ হ'য়ে কছে বন্ধ কটুবাদ ॥

এ শুনি' ভাহার ক্রোধ হ'ল অভি বন্ধিত ॥ ২
আবার দেখাস্ ভয় রে অধম তুই মোরে ॥
ভাহাই ধরিয়া ধা'য় জাত্ববান্ ক্রেভগভি ॥ ৩
ঘ্রণিত হ'য়ে পড়ে সুরারি ধরণী 'পরে ॥
ধরায় আছাড় মারি' নিজবল দেখাইল ॥ ৪
ডধন চরণ ধরি' পুরী-মাঝে ফেলে ভা'রে ॥
ছবায় জীরাম-পালে করিল সে আগমন ॥ ৫

| দো—অহি-অরি সব | করিল ভোজন    | মায়া-অহি ছিল যত।        |
|---------------|--------------|--------------------------|
| পুলকে ভাসিল   | বানর নিক্র   | হ'য়ে মায়া-অপগত ॥ ৭৪(ক) |
| পাদপ পাণর     | নথ গিরি ধরি' | কুদ্ধ বানর ধায়।         |
| অতি ত্রাস-ভরে | যভ নিশাচরে   | দ্রগ উপরে পলায়॥ ৭৪(খ)   |

#### **म्बिमारमञ्ज्ञ यक्क-भ्वरम ७ (मधमाम वध**

(5)—ইম্প্রজিতের যবে মৃচ্ছা হ'ল ভিরোহিত।

দ্বিতে করিল গতি গিরির গুহার পানে।
এ দিকে যুক্তি করি' নিরূপণ বিভীষণ।
ছপ্ত মায়াবী সেই স্থান-অরি ইম্রাজিত।
এ যজ্ঞ পূর্ণ হ'তে দি অবকাশ পায়।
ক্ষবণ করিয়া অতি প্রীত রামের মন।
ক'ন লক্ষণ-সাথে সবে মিলি' যাও ভাই।
ভূমি ভা'রে সংগ্রামে ক'রো বধ লক্ষণ।
বৃদ্ধি ভা'রে সংগ্রামে ক'রো বধ লক্ষণ।
ক্ষাম্বান্ স্থ্যীব আর প্রিয় বিভীষণ।
আদেশ প্রদান যবে করিলেন রঘুবীর।
প্রাত্ত্ব প্রভাপ-কথা ক্ষদয়ে করি' স্থরণ।
আজে যদি ভা'রে বধ না করিয়া আসি ক্ষিরে'।
শত্ত ধূর্জনী যদি দহায় হরেন ভা'র।

জনকৈ হেরিয়া লাজে হ'ল অতি অভিভূত ॥
অজেয় হ'বার যাগ করিতে বাসনা মনে ॥ ১
কহিল শুনহ প্রভূ বলধর অতুলন ॥
আচরণ করিতেছে যাগ এক গঠিত ॥ ২
তাহ'লে বিজয় পে'তে হ'বে প্রভূ মহাদায় ॥
অঙ্গদ-আদি সবে কবিলেন আবাহন ॥ ০
যাগ যাহে পশু হয় উপায় করহ ডা'ই ॥
দেবতার ত্থ হেরে' অতি ত্থী মোর মন ॥ ৪
যাহে নিশাচর দল সম্বর পায় নাশ ॥
ভোমরা নিকটে থেক' সেনা সহ ভিনজন ॥ ৫
কটিতে ত্ণীর বাঁধি' করে ল'য়ে ধমু তীর ॥
জলদ-গন্তীর স্বরে কহিলেন লক্ষণ ॥ ৬
ভবে রম্পুতি-দাস আর না কহিব মোরে ॥
রামের দোহাই ভা'র বধে বারে সাধ্য কা'র ॥৭

বো-র বুমণি-পদে করিয়া প্রণাম লক্ষ্মণ হরা যা'ন।

অঙ্গদ নীল নল ময়ন্দ সহ বীর হন্নমান্ । ৭৫

বুচী-উপনীত হ'রে তথা সকলে দেখিতে পান। মহিষে ক্ষিরে যাগে হ'তেছে আহতি দান।

ধ্বংস করিল যাগ মিলি' কপিগণ যত। তথনো উঠে না যবে প্রশাসা করিল কত ॥ ১

ভথাপি অন্ত হেরি' করি' কেশ কর্ষণ।

ক্রিশুল লইয়া ধায় কলি করে পলায়ন।

অভি ক্রোধ-কবলিত হ'যে আলে নিশাচর।

ক্রোধিত পবনস্ত অঙ্গল দৌভায়।

হানে সে বিপুল শূল প্রভু লক্ষ্মণ প্রভি।

অঙ্গল আর হয়ু উঠি' ক্রোধে পুনরায়।

ক্রিরল ছু' বীর অরি মারিলেও নাই মরে।

হেরিয়া আসি'ছে ধে'য়ে কুদ্ধ কালের প্রায়।

বিবিধ আকার ধরি' ভখন সমর করে।

অক্সের হেরিয়া অরি কলিরা ভয়ে কাভর।

ভখন মনেডে ক্রির করিলেন লক্ষ্মণ।

রামের প্রভাপ-কথা হাণ্যে করি' স্মরণ।

এড়িতেই শর লাগে ভাহার বুকের মাঝে।

পদাঘাত করি করি সবে করে পলায়ন ॥
আসি উপনীত হয় লক্ষণ যথা র'ন ॥ ২
গর্জিয়া বারবার করে রব ভয়ন্কর ॥
ধরার পাতিত করে বক্ষে তিশূল-ঘায় ॥ ৩
দ্বি-ভাগ করেন শূলে শর হানি সম্প্রতি ॥
আক্রমে তা'বে তাও বার্থ হইয়া যায় ॥
রাক্ষম তবে ধায় নিদাকণ চীৎকারে ॥
হানিলেন লক্ষণ করাল শায়ক তা'য় ॥ ৫
করিল ছরিতগতি আপনারে সক্ষোপন ॥
কখনো প্রকট কভু ল্কাইয়া আপনারে ॥ ৬
লক্ষণ হ'ন মহাক্রোধ ভরা কলেবর ॥
পাপীব সহিত্ত ধেলা করা হ'ল বভুক্ষণ ॥ ৭
বীরমদে এক শর হানিলেন লক্ষ্মণ ॥
মরণের কালে ছল কপট সকলি তাজে ॥ ৮

**দো**—রামাত্ত কোথা ধক্ত ধক্ত ভব কোথায় শ্ৰীবাম মাভা বলি' উ⁄ঠ এ বলি' ভাজিল প্ৰাণ। অঞ্চল হনুমান॥ ৭৬

(চ) — বিনা পরিশ্রম তা'রে হলুমান্ উঠাইল।
তাহার মরণ শুনি' স্থর গন্ধর্বগণ।
কুস্ম বর্ষা করি' হুন্দুভি করে রব।
বলে শ্বয় হে অনন্ত জ্বয় হে জ্বদাধার।
স্থিতি করি' দেব সিদ্ধ নিজ নিজ ধামে যায়।
তনয় নিধন কথা শুনিভেই দশানন।

লক্ষা-ভোষণ 'পরে রাখিয়া ফিরে' আসিল ॥
সকলে আসিল করি' বিমানেতে আংহারণ ॥ ১
বিমল রামের যশ গাহিতে লাগিল সব ॥
তে প্রভু তুমিই কর দেবগণে নিস্তার ॥ ২
ফিরেন লক্ষ্মণ ভবে কুপা নিধানেব পায় ॥
ভোনহারা হ'য়ে হয় ধরণী 'পরে পড়ন ॥ ৩

## রাবণের যুদ্ধ বাজা

কত কাঁদে ময়-স্থতা বৰ্ণনা নাছি হয়। শোকে নিমগন হয় নগর-নিবাদিগণ। করাঘাত বৃকে বস্তু আর্তনাদ থেদময়। দুশাননে নীচ ব'ল' গালি দেয় সব জন। ও

দো—দশানন তবে বলে নিজ মনে রমণীগণেরে দেখ বিচারিয়া বুঝাইল নানাভাবে। নশ্ব সব ভবে॥ ৭৭

(5)—জ্ঞান-উপদেশ সবে দেয় ভাল দশানন। নিজে নাচ বটে ডা'র বচন গুভ পাবন। পারে উপদেশ দিতে অনেকে অতি নিপুণ। সে ভাবে করিতে কাজ কত জন ধরে গুণ। ১ রক্ষনী অতীত হ'ল দিবসের আলো আসে।
বোজাগণেরে ডাকি' ব'লে দিল দশানন।
ভাগার পলা'য়ে য'ওয়া প্রথমেই প্রেয়কর।
বাড়া'য়েছি এ বিরোধ নিজ ভূলে করি' ভর।
এতেক কচিয়া বায়ু গামী রথ সাজাইল।
চলিল সমরে বীর বলবান্ অতুলন।
অশুভ শকুন বহু হ'ডেছিল সেই কালে।

কপি ভালু চারি খারে হানা দিতে পুন: আসে ॥
আরির সমুখে রণে যাহার টলিবে মন ॥ ২
সমরে বিমুখ হ'লে ফল নহে শুভকর ॥
আরাতি আদিলে দিব নিজে তা'রে উত্তর ॥ ৩
বাজিতে লাগিল রণ বাস্থ সব যত ছিল ॥
মহাবেগে ধায় যেন কাজলের প্রভেল্পন ॥ ৪
কিছু না গণিল এত মদ নিজ বাছবলে॥ ৫

| ছ—না গণে ভভ কি ' | অভভ শকুন     | হাত হ'তে খদে আয়ুধচয়।     |
|------------------|--------------|----------------------------|
| বীর রধহ'ডে       | পড়ে ধরণীডে  | যুথ ছাড়ি' বাজি গজেরাধায়॥ |
| শিবা গৃঞ্জ-শর    | ভাকে ভয়ম্বর | কুৰুর ডাকে বিকট রবে।       |
| পেঁচা ডাকে ছেন   | যমদূত যেন    | রবে ভর পায় পরাণে সবে ॥    |
| দো—জীব-জোঙী যেবা | কাম-বশ মোহে  | অপ্ডত বিমুখ রাম।           |
| স্বপনেও কি সে    | সম্পদ আর     | মনেতে ল'ভে বিরাম ॥ ৭৮      |

(চ) — অদীম রাক্ষস সেনা সমরে করে গমন।
আরোগী কড়ই বিধ কত রথ কত যান।
অগণিত মদমন্ত বারণ বেগেতে ধায়।
সমর-কুশলী বীর বহুবিধ মায়া জানে।
বিচিত্র বাহিনী অতি শোভা পায় অতুলন।
চলিতে লাগিস চমু নিক্ করিসল দোলে।
ধূলি-আলে আবৃত হ'য়ে গেল দিবাকর।
ভয়াবহ নির্ঘেষে বাজি'ছে নাগাড়া ঢোল।
তৃথী ভেরী নিনাদি'ছে অমুক্ষণ অগণন।
বীরদল অবিরল করিতেছে ছভার।
দশানন কহে তবে শুন বীর সমুদয়।
আমি নিজে বিনাশিব নুণতি-মুত ছ'টারে।
এ বারতা বানরের অবংণ পশে যখন।

চতুরক্স অনীকিনী নাহি হয় বর্ণন ॥
বিবিধ বরণ কত পতাকা ধ্বক্সা নিশান ॥ ১
প্রাবৃট্ ক্সপদকালে পবন যেন পাঠায় ॥
নানা রং অন্তথ্যর অমিত সাহস প্রাণে ॥ ২
বীর বসন্ত যেন সেনা করে বিরচন ॥
পারবার ক্ষ্ হয়-ধরাধরগণ হেলে ॥ ৩
মরং স্থাগত হল ধরণী অতি কাতর ॥
প্রসায়ের ক্ষলধর বৃব্ধি বা তুলি ছৈ রোল ॥ ৪
বার স্থাপ্রদ মারু রাগ হয় আলাপন ॥
শৃহতার আম্ফালন করিতেছে যে যাহার ॥ ৫
মহিয়া দলিয়া ধ্বেল কপি ভালু যত রয় ॥
চেন বলি নিক্রে সেনা অত্যে চালিত করে ॥ ৬
হাঁকিয়া রামের ক্ষ্ম বেগে করে আক্রেমণ ॥ ৭

#### রাক্ষস-বাদরে যুদ্ধ

| <b>ভূ</b> —ছুটিল বিশাল | ক্পিরা ক্রাশ | কাল সম ভালু ছুটি'ছে রণে। |
|------------------------|--------------|--------------------------|
| ধেন পক্ষযুত            | উ'ড়ংছ অধৃত  | বিবিধ বরণ ভূধরগণে ॥      |
| গিরি নথ হদ             | মহাজেমায়ুৰ  | মহাবলী আণে রাখে না ভর।   |
| গাহে শত-করী•           | রাবণের অস্থি | শর্কয় রাম কেশরী-বর।     |

বে বাম অঞ্চে

করি' ছই দল রাবণে বাখানি' দশী বাছি' আপন। সমরে লাগে তখন॥ ৭৯

(চ)—রথার চ দশানন রথহীন রঘুবীর।
প্রীতির অধিকতার সংশয় প্রোণে আসে।
স্থান্দন নাহি প্রাভু না কবচ পদত্রাণ।
অবধান কর সথা কহিলেন কৃপাময়।
সেরথের ছাই চক্র শূরতা ধীরতা আর।
পরহিত দম বল বিবেক তুরগচয়।
বিভূর ভজনা তাহে সারধী জ্ঞান-আধার।
পরশু তাহার দান বৃদ্ধি শক্তি স্থভীবণ।
অমল অচল মন ত্ণীরের করে কাজ।
বাক্ষণ গুরু-পূজা অভেগ্র কবচ যত।
হেন ধর্মময় রথ সমরে থাকে যাহার।

হেরি' বিভীষণ-প্রাণ হইল অতি অধীর ॥
বিদ্দি' চরণমূগে করেন প্রাণয়-ভাবে ॥ ১
কেমনে পা'বেন জয় অরি অতি বলবান্॥
সেরথ নহেক এই যে রথে বিজয় হয় ॥ ২
পতাকা নিশান দৃঢ় সত্য আর সদাচার ॥
ক্ষমা কুপা ও সমতা-পাশ যোগে বাঁধা রয় ॥ ৩
ঢাল বিরাগ আর সস্থোষ তরবার ॥
ব্রেষ্ঠ অমুভব-জ্ঞান অতি দৃঢ় শরাসন ॥ ৪
নিজ্প-বশ মন শোচ নিয়ম নানা নারাচ ॥
বিতীয় উপায় নাই জয়লাভে এর মত ॥ ৫
জীবনে কোধাও রিপু ভাহার থাকে না আর ॥৬

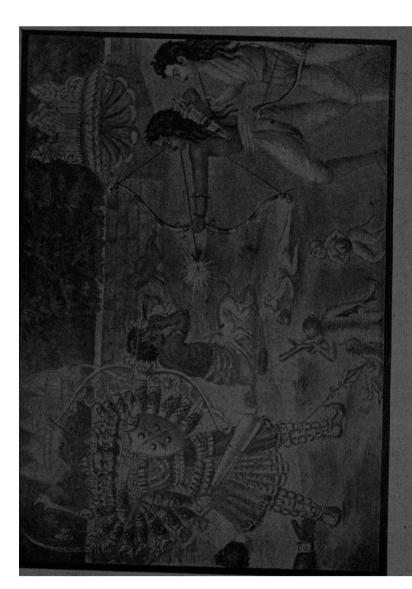
দৃঢ় হয় যা'র বেশ-হেন স্থান্দন ওন স্থা মতিধীর। সংসার-রিপু জিনিতে সে পারে বীর॥ ৮০(ক) এ মহা-অঞ্যে শুনি' বিভীষণ প্রাক্তুর বচন श्वरम हत्रण भरत । উপদেশ দিলে মোরে॥ ৮ • (খ) এ ভাবে কুপায় ওহে দয়াময় छ मिरक त्रावन ধিকারে হেথা অঙ্গ হহুমান্। যুঝে নিশাচর করি' প্রভু-গুণ গান।৮০(গ) ঋক বানর

(চ)—নানা সিদ্ধ মৃনি ঋষি অমর চতুরানন।
আমিও তাঁ'দের সনে পুলকে উমা তথন।
হু'পক্ষের(ই) মহাবীর রণ-রসে মাতোরারা।
একে অফ্র সনে বুঝে এ উহারে ধিকারে।
মারি'ছে কাটি'ছে কভু মারি'ছে ধরি' আছাড়।
উদর বিদার করে বাছ করে উৎপাটন।
রাক্ষ্য-বীরে ভালু প্রোধিত করে ধরায়।
অরি 'প্রে ফ্রোধযুত সমরে বানরগণ।

আকাশে বিমানে চড়ি' দেখেন দারুণ রণ ॥
রামের সমর-লীলা করিয়াছি দরশন ॥ ১
জয় লভে কপিদল রাম-বলে বলী যা'রা ॥
একেরে অপরে দলি' কেলে ধরণীর 'পরে ॥ ২
মুগু কাটিয়া পুন: ডা' দিয়া করে প্রহার ॥
ভূমিডে আছাড়ে বীরে চরণে করি' ধারণ ॥ ৩
ডাহার উপরে বালু প্রচুর ঢালিয়া দেয় ॥
মনে হয় ক্লুক কাল করিডেছে মহারণ ॥ ৪

ছ—কপিরা কুপিত , শমন বেষন
মধে নিশাচর- অনী-বীরবর
দংশে প্রহারে ডিরকার-ভরে
সবে চাৎকারে ছল-বল করে

শোণিতের ধারা শরীরে ঝরে।
বলী ঘন-সম গরক করে॥
পদাঘাতে করে রেপুর প্রায়।
ছষ্টের। যাছে বিনাশ পায়॥ ১



রাম রাবণের যুদ্ধ

ধরি' গাল মুধ চিৰে' ফেলে বুক অন্তে দোলায় গলেতে মালা। নানা ভতু ধরি' ষেন নর-ছরি भारत करतन विविध (थना॥ ভরা অত্বর আর চরাচর মার্কাট্ ধর্ এ ঘোর রবে। জয় রাম যিনি भगनित्र जुग कत्त्रन ज्या । २ कुरगरत्र ज्ञमनि (प)-निष वाहिनी व বিচলন হেরি' मम बरू विम करत्र। थति' त्रत्थ थात्र দশানন হাঁকি' (यन वे (यन वे पद करन ॥ ৮)

## লক্ষণ-রাবণের মুদ্ধ

(5)—দারুণ কুপিড হ'রে ছুটিভেছে দশানন।
পাদপ ভ্বর শি-াা করেতে গ্রহণ ক'রে।
বজ্ঞ-কঠোর ডা'র দেহে হ'রে প্রতিহত।
নিদারুণ ক্রোধ ভরে রগমন্ত রক্ষ্ণপতি।
সীমাহীন ক্রোধভরে করিতে থাকে দলন।
রক্ষা কর' রক্ষা কর' অঙ্গদ হন্তুমান্।
বলে প্রভু রক্ষা কর' রক্ষা কর' রবুবর।
হেরিল রাবণ যায় পলাইরা কপিগণ।

হুকার সনে ধায় আগুসরি' কপিগণ॥
সকলে রাবণ 'পরে ফেলিডেছে একেবারে॥ ১
চূর্ণিত হ'য়ে কেটে' যায় শৈল-শিলা যত॥
নিশ্চল রহে রথে করিয়া স্থানিত-গতি॥ ২
হেথা হোথা ভীরবেগে করি' কাপ আক্রমণ॥
বলি' পলাইতে থাকে ভালু কপি ভীত প্রাণ॥৩
কাল সম বধ করে এই ধল নিশাচর॥
দশ শ্রাসনে তবে করে শর বরষণ॥ ৪

ছ-করি' সন্ধান অহি সম উড়ে' লাগিছে গায়। ছাড়ে ধর বাণ धन्त्री व्यथन রহে ভরি' শর কোথা বা বানর পলাবৈ হায় ॥ কপি ভালুদল মহা কোলাহল অতীব বিকল কছে কাডরে। বিপদ-তারণ রক্ষ হরে ॥ করুণা-সাগর প্রভূ রঘুবর বিচলিত তৃণ (प)-एति' निक परन ক্সি' শরাসন করে। নমি' লক্ষণ চলিলেন কোপভরে॥ ৮২ রামের চরণে

(5)—ও কি রে খল বধিদ বানর ভাল্কগণে। রাবণ কহিল ওরে পুত্রখাতি কুটমতি। ভাগ্ এই কাল ভোর এবার আসিল রুণে। বিনাশ করিয়া ভোরে আজি জুড়াইব ছাভি । ১

## बाबर्णक मृत्र्ह्ी, बाबर्णक रख्य-ध्वरम्

এতেক কহিরা ছাড়ে শারক জ্জীব চণ্ড।
কোটি কোটি প্রহরণ রাবণ করে ক্ষেপণ।
আবার আপন বাপে করেন ভা'রে প্রহার।
মারিলেন দশশিরে শত শত ধর শর।
পুনরার শত শর মারেন ক্ষর পরে।
জ্ঞান পে' পুনরার সবলে উঠে রাবণ।

করিলেন গল্পণ সে শারক শতপণ্ড ॥
তিল তিল করি' কাটি করিলেন নিবারণ ॥ ২
সারখি নিহও তাহে স্তন্দন চ্রমার ॥
সিরির শিধরে বেন প্রবেশি'ছে ফণধর ॥ ৩
রাবণ হারা'য়ে জ্ঞান পড়িল ধরণী 'পরে ॥
শক্তি প্রহার করে বিধি-দেওয়া প্রহ্রণ ॥ ৪

#### 306

## প্রীরামচরিত মানস

|                    | _               |                               |
|--------------------|-----------------|-------------------------------|
| ছ—লাগে কক্ষ'পর     | শক্তিভয়ম্বর    | বিধাভা আদান করিলা যা'রে।      |
| পড়েন লক্ষ্মণ      | উঠায় রাবণ      | অতুল বলের মহিমা হারে॥         |
| ব্ৰহ্মাণ্ড-ভবন     | রহে অমু'শণ      | এক(ই) শিরে ধাঁ'র রেণুর প্রায় |
| তাঁহাৱে তুলিতে     | সাধ মৃঢ়-চিত্তে | ত্রিলোক-পতিরে চিনে না হায়॥   |
| দৌ—দেখিয়া মাক্রতি | ধার ভীম গভি     | কঠোর কহি' কন।                 |
| আসিডেই ভা'রে       | মৃষ্টিকা মারে   | দশানন স্বভীষণ ॥ ৮৩            |

চৌ-কার ভর করি' হয় পড়া হ'তে রক্ষাপায়। সম্বরণ করি' উঠে কোপেতে হাদয় ছায় ॥ ভবে মৃষ্টিকা এক রাবণে মারুতি মারে। মৃক্তিত নিশাচর পরে পে'ল হারা-ক্ষান। বীরভায় ধিক্ মোর ধিক্ মোরে কপি কয়। এত কহি' লক্ষণে রাম-পালে হযু আনে। রাম ক'ন হৃদি-মাঝে বুঝ ভাই লক্ষণ। বচন গুনিয়া উঠি' বসিলেন কুপাময়। পুন: লক্ষ্ণ করে ধরি' শর শরাসন।

ভূখর ঢলিয়া যেন অশনি-আখাতে পড়ে । ১ कशित विश्रम वरम ख्यम करत वाथान ॥ সুর-জ্বোহি এততেও ভোর দেহে প্রাণ রয় ॥ ২ **(ह्रिं विश्वय खिक मार्ग मधानन-मरन ॥** কালের ভক্ষক ভূমি দেবদল-রক্ষণ॥ ৩ শক্তি তথন যায় নভে ফিরে' পুনরায় ॥ অরির সমূখে পরা করিলেন আগমন॥ ৪

| ছ—পুন: দ্বা করি'     | রপ চূর্প করি'                | করেন সার্থি মারি' আকুল।    |
|----------------------|------------------------------|----------------------------|
| অধিক বিকল            | পড়ে ধরাতল                   | রক্ষ:-বুকে বাজে শতেক শূল 🛭 |
| · সৃত অ <b>গ্ৰ</b> ন | রথেতে স্থাপন                 | করিয়া রাবণে পুরীতে যায়।  |
| রঘুকুল-বীর           | রামাত্র ধীর                  | কৈরিয়া আংজুর নমেন পায়।   |
| দো—হোণা দশানন        | <b>ল</b> ভিয়া চে <b>ভ</b> ন | आरम्बन करत याता।           |
| মূঢ় শঠ হঠে          | রাম-সনে জোহ                  | ক্রিয়া বিশ্বর সাপে ॥ ৮৪   |

চৌ—এদিকে বারতা সব লাভ করি' বিভীষণ। ছরায় করেন ভাগা প্রভু পদে নিবেদন ॥ ক'ন দশানন করে এক যাগ-আয়োজন। দ্বায় পাঠাও প্রান্থ মহাবীর কপিগণে। প্রভাতেই পাঠা'লেন প্রভু বীর সমুদায়। লছা-উপর চড়ে ডা'রা কৌতুক ভরে। যেমন ভাগারে যাগ করিতে দেখিতে পায়। কহে ভা'রে লাজহীন সমরে পলা'রে এসে। এত ব'ল' অঙ্গদ এক পদাঘাত করে।

পূর্ব যদি হয় ভবে ভাহার নাহি মরণ ৪ ১ বিশ্ব করুক যাগে আমুক রাবণ রণে 🛭 হতুমান্ অঙ্গদ আদি সবে মিলি' ধায় । ২ প্রবেশে নিডর হ'য়ে রাবণ-পুরী ভিতরে । সব বানরের মনে নিদারুণ ক্রোথ ছার। ৩ ব্রের সমান ধ্যান করিস্ এখানে ব'সে । স্বার্থ-ভরা মন শঠ ফিরিয়াও নাহি তেরে। ৪

ছ-চাহन ना लिथे কেশ-কর্ষণে

বানরেরা ক্রখি क्षी वाहित्त्र भारम পদাঘাতে আর দংশে ভা'রে। अधि भीना हरत्र स्त्राक्षेत्र करत्र ।

|                 | ব্যক্ <b>ৰি</b> |                      |
|-----------------|-----------------|----------------------|
| উঠে দশানন       | শমন বেমন        | ধরি' পদ কেলে রানরগণে |
| मिष्ठे खरमदा    | यस्क माम (श्रुव | রাবণ নিরাশ হইল মনে ॥ |
|                 | রাম-রাবণের যুগ  | ,                    |
| (কা—যজ-নাশ করি' | কুশলৈ সকল       | ফিরে রম্বুপত্তি-পাশ। |
| অভি ক্রোধন্তরে  | নিশাচর চলে      | ভাজি' জীবনের আগ । ৮৫ |
|                 |                 |                      |

(চ)—গমনের কালে হয় কু-শকুন ভয়ছর।
সে তখন কাল-প্রাসে কিছু মনে নাছি মানে।
অগণিত রক্ষ: দেনা চলিল সমর তরে।
প্রেমুর সমুখ-দেশে আসে সবে সেইমত।
এদিকে দেবতাগণ মিনতি জানায় তাঁ'রে।
এবে এর সনে রাম খেলা করা ঠিক নয়।
দেবের মিনতি ভানি' প্রভু মুখে ক্ষীণ হাসি'।

উড়িয়া শকুনি বসে ভাহার মাধার 'পর য়
আদেশিল রণ-ডয়া বাজাতে গভীর স্থনে ॥ ১
বছ পদাতিক গজ রথ তুরেসম 'পরে য়
অনলের মুখে ধায় যেমন পত্র যত ॥ ২
নিদারণ তথ দিল এই ধল দেবতারে ॥
দেবী জানকীর তথ যেন দেব মনে রয় ॥ ৩
উঠিয়া শাণিত করি' লইলেন শররাশি ॥

#### রূপ-বর্ণনা

দৃঢ়ভাবে ভটাজুট শিরোপরে বাঁধা রয়। নরন অফণ-মাভা তফুজলধর শ্রাম। কটিডটে পরিকর শরাধার আঁটা ভা'য।

মাঝে মাঝে করে শোভা ভাগতে কুসুমচয় ॥ ৪ অধিল ভূবনবাসী-নয়নের অভিরাম ॥ করে শাল্পিয়ু সুভীষণ শোভা পায় ॥ ৫

| বর-নিযক্ত                | শায়ক-আধার কটিতে রয়।                                     |
|--------------------------|---|
| আহত উরসে                 | বিপ্ৰপদ আঁকা কি শোভামর ॥                                  |
| যেমনি চর্ঘি <sup>9</sup> | ফিরান শায়ক ধনুরে করে।                                    |
| কুৰ্ম নিধি মহী           | ত্রিভূবন কাঁশে ত্রাদের ভরে।                               |
| দেবভা হর্ষি'             | বর্ধে <b>ফুল</b> অপার।                                    |
| হে ক্লণাময়              | শোভা বল গুণাধার ॥ ৮৬                                      |
|                          | আবত উরসে<br>যেমনি চর্মি'<br>কৃশ্ম নিধি মহী<br>দেবতা হরষি' |

চৌ—এই সময়ের মাঝে রাবণের মহাবল।
হেরিয়া বানর বীর আগুরান হ'য়ে ধায়।
চমকি'ছে ডরবারি ঝ'কিছে বহু কুপাণ।
গব্দ রথ তুরগেরা চীৎকারে ভয়ন্তর।
বিপুল-আকার কপি-লালুল নভে ছায়।
উঠিতেছে ধূলি-রাশি মনে হয় বল-ধার।
ধরি' ধরি' ধরাধর ছ'লল করে প্রহার।
রোবভরে রখুরীর করি' শর-বর্ষণ।

আসিয়া পড়িল তথা অধীর সেনার দল ম প্রলয় কালের যেন জলদ-পটল যায় ॥ ১ দামিনী দমকে যেন জলদিকে অবিরাম ॥ মনে হয় গর্জন করিতেছে জলধর ॥ ২ ইস্রধন্থর মত অন্ধরে শোভা পায় ॥ বাণরূপী জল-কণা বর্ষিত অনিবার ॥ ৩ বন্ধ পড়ন যেন হইতেছে বারবার ॥ আহত করেন বৃত ছিল রক্ষ:-বীরগণ ॥ ৪ যেমন শায়ক' লাগে উঠে চীৎকার ক'রে। গিরি হ'ডে নিঝ'র-ধারা যেন বাছিরায়। খুঁরে খুঁরে পড়ে তা'রা যথা তথা ভূমি 'পরে ॥ সে রুধির-ধারা হেরি' কাপুরুষ ভয় পায়॥ ৫

| ছকাপুরুষ-হিয়া            | ত্রাসেতে ভরিদ্না         | অপুড়া ক্রধির-ডটিনী বয়। |
|---------------------------|--------------------------|--------------------------|
| ভট ছই দল                  | রণ শাসুদস                | চক্রে মহ লাগে পরাণে ভয়। |
| জল জীব-রাজি               | গ <b>ন্ধ</b> সেনা বাব্দি | বিবিধ বাছন গণনা-বা'র।    |
| অহি যেন শর                | শক্তি ভোমর               | চর্ম কৃশ্ম ধয় লহর ডার।  |
| <b>শে</b> —প'ড়েছে বীরেরা | ভটে ভক্ন যেন             | মজ্জা বছে কেপাকারে।      |
| ডা' হেরিয়া কাপে          | ভীকর হৃদয়               | বার-মন স্থাপ ভারে ॥ ৮৭   |

(b) — মান করে তাহে ভ্রু পিশাচদল বৈতাল। কাক চিল মুখে ক'রে হাত ল'য়ে উড়ে' যায়। কেহ কহে ওরে মূঢ় এ সব প্রচ্র এত। অর্দ্ধমূত বীরদল তটে প'ড়ে চীৎকারে। শক্নি ধরিয়া নাড়ী টানি'ছে তটের হ'তে। কত বীর ভেলে' যায় পাখী বলে ভছ্পরে। বোগিনীয়া সঞ্চয়ে ভরি' ভরি' ধর্পর। চামুখায়া গান গায় বীরের ল'য়ে কপাল। শক্নিয়া শব কাটে কট্কট্রব ক'য়ে। মুগুহীন কোটি দেহ ভ্রমিতেছে চারিখারে।

শখিত কেশধারী প্রমধ অতি করাল।

একের নিকট হ'তে কাড়িয়া অপরে খায়। স্লারিস্তা তোমার নহে এততেও অপগত।

অর্ধজ্ঞলৈ অন্তর্জলী-তরে যেন বহে প'ড়ে॥ ২
ছিপ ল'য়ে মাছ যেন ধরে সমাহিত চিতে।

নদীতে তর্মী-যোগে সবে যেন খেলা করে। ৩
প্রেতিনী পিশাচ-বধু নাচে অন্তর 'পর।

মহানন্দে কত ভাবে বাজাইয়া করতাল। ৪
খায় ভাকে কায়া-রবে তৃত্তি এলে অস্তেম মারে।

ধরার পড়িয়া মুগু জয় জয় রব করে। ৫

| ছ—কাটা মৃশু কয় | क्य क्य क्य    | শিরহীন ধায় বিরাট রুগু।     |
|-----------------|----------------|-----------------------------|
| ধর্ণর-ভরে       | পাখী ল'ড়ে মরে | একে অক্স বীরে করি'ছে হন্দ ॥ |
| কপি নিশাচরে     | মৰ্দ্দিত করে   | রাম-বলে বলী সকলে ভা'রা।     |
| ছে'য়ে রণাঙ্গন  | 💖 হয়ে বীরগণ   | রাম-শরে হ'রে জীবন-হারা।     |
| দৌ—ভাবিল রাবণ   | হৃদ্ধে আপন     | রাক্ষস হ'ল নাশ।             |
| শুধ আমি বাকী    | অগণিত কপি      | করিব মায়া-প্রকাশ । ৮৮      |

(b) — আমরেরা ছেরিলেন প্রান্থ রাম রথ-ছীন।
স্থরপতি নিজ রথ পাঠা'ন প্রাভুর পাশে।
মহা জ্যোভির্মময় রথ দিব্য ও অমূপম।
চঞ্চল চারি হয় মন-বিমোহন অভি।
বানরেরা করি' রামে রথাক্ষঢ় দরশন।
বানরগণের হানা সভিতে না পারা বাছ।

সমুদিত মহাক্ষোভে তাঁদের শুদর দীন ।

স্বরিতে পুলকে রখ মাডলি লইরা আসে । ১

হরবি' কোশলপতি করিলেন আরোহণ ।

আজর অমর ডা'রা মন-সম জেডগতি । ২

চুটিল প্রবল বেগে পে'রে বল বিলক্ষণ ।

বিজ্ঞাবে মারা ভবে দশানন রক্ষরোর । ৩

স্থাবণ-স্নচিত মায়া প্রভু <sup>9</sup>পরে না লাগিল। স্থাক্ষণ-কোনা মাজে নেহারে বানরগণ। ব পি সহ কল্পাণের প্রাকৃত্ট মনে হ'ল। র'য়েছেন বস্তু রাম সহ ভাতা কল্পাণ। ৪

ত্বির নারা হ'রে প্রক-ভিতরে

করি' ভালু কপি ত্রাসিত-প্রাণে।

দাঁড়া'রে রামের অফুজ সনে।

হাসি' ধমু-দার ধারণ করি'।

কপি-প্রাণ দেন পুলকে ভরি'।

পৌ—ডখন শ্রীরাম শ্রান্ত ডোমা সবে সব-পানে চাহি' ছন্দ্র-রণ এবে ক'ন বাণী গম্ভীর। দরশন কর বীর॥৮৯

চৌ—এ বলিয়া বিপ্রাপদ-পদ্ধক্তে নমি' শির।
তা' ছেরি' লক্তেশ-প্রোণে নিদারুণ ক্রোধ ছা'য়।
কহে রে তাপস তুই জিনেছিস্ রণে যা'রে।
রাবণ আমার নাম জ্ঞাড-যশ জগময়।
বিরাধ দূষণ খরে তুই ব'ধেছিস্ রণে।
রাক্ষদ বীরগণে রণে করেছিস্ হত।
সে সবের(ই) প্রতিশোধ করিব এবে গ্রহণ।
আজিকে কালের কোলে ক'রে দিব সমর্পণ।
তার হুর্বচন শুনি' কাল-বশ করি' জ্ঞান।
যা' কহিলে সে প্রভুডা প্রকৃত সব ভোমার।

চালা'ন আপন রথ রক্ষ: পানে রছবীর ।
ভজ্জিয়া গাজ্জয়া সম্মুধ পানে ধায় ॥ ১
ভাহার সমান কড় মনে না ভাবিস্ মোরে ॥
লোকপালাবধি যা'র কারাগারে প'ড়ে রয় ॥ ২
ব্যাধ সম সে বেচারী বালিরে বধিলি প্রাণে ॥
কুস্তুকরণ মেঘনাদ এই রণে গড় ॥ ৩
রণ হ'ডে যদি রাজা না করিস্ পলায়ন ॥
কঠিন রাবণ-করে এখন ডব পড়ন ॥ ৪
হাসিয়া বচন ক'ন ডখন কুপানিদান ॥
বুধা গর্বব ছাড়ি দাও পরিচয় বীর্ভার ॥ ৫

| <b>ছ—বুপা</b> ভাষে নিজ | সুযশ নেশ'না     | নীতি শুন এই আমারে ক্ষম'।   |
|------------------------|-----------------|----------------------------|
| সংসার মাঝে             | ত্ৰিবিধ মানব    | গোলাপ আন্ত পন্স সম 🛊 🏽     |
| একে ফুল ছ'য়ে          | ফল ফুল আর       | তৃতীয়েতে শুধু ফলই কলে।    |
| একে বলে ছ'য়ে          | বলে করে আর      | ভৃতীয়েতে করে মূপে না বলে॥ |
| <b>দো</b> —রামের বচন   | শুনি' হাসি' কৰে | আমারে শিশাস্ জ্ঞান।        |
| তখন বিরোধে             | লাগেনি ক' ভর    | এবে প্রিয় লাগে প্রাণ। ১•  |

(5)—কহি' এই কটুবাণী ক্রোধযুত দশানন। বিবিধ আকার কত নিশিত শারক ধার। অগ্নিবাণ সন্ধান করিলেন রঘুবীর। শক্তি হানিল তবে শক্তিত দশানন। কুলিশ সমান শর স্থাক করে বরষণ ॥
ধরণী গগন দিক্ বিদিক্ সকলি ছা'র ॥ ১
নিমেষ ভিতরে দতে যত নিশাচর-তীর ॥
বাণের স্মাঘাতে ফিরে পাঠা লেন নারায়ণ ॥২

চক্র ত্রিশূল কোটি করে পুন: সন্ধান।
খলের কু-অভিপ্রায় বেমন বিফল হয়।
ডখন সার্থি 'পরে প্রহারিল শত বাণ।
করণা করিয়া রাম তুলিলেন মাতলিরে।

তিলেক প্রয়াস বিনা মিবারেন সব রাম ॥
তেমনি বিকল হয় রাবণ-আয়ুধ্চয় ॥ ৩
মাতলি ধরায় পড়ে মুখে বলি' জয় রাম ॥
তথন প্রভুর হিয়া দারুণ ফ্রোধেতে ভরে ॥ ৪

| ছ – অরাতি-শমন    | জানকী-রমণ       | তৃণ হ'তে বাণ লইলা বরা।     |
|------------------|-----------------|----------------------------|
| কোদণ্ডের ধ্বনি   | রক্ষেরা শুনি'   | হয় সবে ঘোর ক্রাসেতে ভরা ॥ |
| মন্দোদরী-ছদি     | কাঁপে নিরবধি    | ভূধর কুর্ম কাঁপে সাগর।     |
| দাঁতে ধরা ধরি'   | ডাকে দিক্-করী   | কৌতৃক হৈরি' হাসে অমর ।     |
| দো—হাবণ অবধি     | টানিয়া শ্রীরাম | ছাড়েন বাণ করাল।           |
| রাম-শর <i>দল</i> | ছুটিছে সকল      | . লছরিত যেন ব্যাল ॥ ৯১     |

(চ)—পক্ষয়ত অধি মত শায়ক ছুটিয়া যায়।
চুৰ্গ করিয়া রব্ধ পতাকারে ছিল্ল করে।
লক্ষিত হ'য়ে অহ্যরথে করে আরোহণ।
সকলি বিফল হয় ডা'র উপ্তম যত।
ডখন রাবণ দশ শূল করে সন্ধান।
ডুরগে তুলিয়া ডবে সকোপে রত্নায়ক।
রক্ষঃশির-শতদল-কাননচারী করাল।
গুতি দশ শিরে লাগি' দশ দশ ধর বাণ।
বহি'ছে রুধির-ধারা ছুটে মহা বলধর।
রত্মীর-চাপ হ'তে আসিয়া ব্রিংশ শর।
কাটিতেই পুনরায় নুহন হ'ল আবার।
বহুবার কাটিলেন শির আর ভুক্ষরে।
জীরাম কোশলপতি কৌতুকা অভিশয়।
চেকে' রয় অস্বর মত্তক আর বাছ।

সূত্ত আর বাজিচয় প্রথমেই নাশ পায় ॥
ভীষণ গরজে রক্ষ: হুদয়ে তরাস-ভরে ॥ ১
সন্ধান করে পরে নানাবিধ প্রেছরণ ॥
পর-জ্যোহরত নর-মন হয় যেই মত ॥ ২
ধরায় পাতিত করে চারি হয় বলবান ॥
কর্ষণ করি' ধয়ু হানেন ধর শায়ক ॥ ৩
ছুটিল ভ্রমর-রূপী জীরামের শর-জাল ॥
ভেদ করি' যায় বহে ক্ষিরের ধর বাণ ॥ ৪
পুনরায় ধয়ু হ'তে হানিলেন প্রভু শর ॥
বাহুর সহিত শির পাড়ে ধরণীর 'পর ॥ ৫
জীরাম সে ভুক্ক শির কাটিলেন আর নার ॥
যেমনি কাটেন পুন: ঝটিতি নৃতন হয় ॥ ৩
বারবার কাটি'ছেন শির ভুক্ক সমুদয় ॥
মনে হয় জ্পণত যেন কেছু আর রাজ্ ॥ ৭

| ছ—শোণিত ক্ষরণ          | ক্রিয়া ভ্রমিছে | যেন নভে বহু রাছ ও কেতু।   |
|------------------------|-----------------|---------------------------|
| না পারে ভূমিতে         | আসিয়া পড়িতে   | ভীম রাম-শর লাগার হেডু।    |
| এক(ই) শরে সব           | শির ভেদ ক'রে    | নভে উড়ে শোভা করে এমন।    |
| দিনকর ক্র <b>ং</b> খ*⊕ | রাভ্রে ময়ুখেণ  | যথাতথা গাঁথে স্তে যেমনঞ 🛊 |

রোবাছিত হইবা। † সূর্বা-কিংশ। ‡ বাংমর এক এক বাবে রাব্বের উল্পত হৃতি কৃত মাধা তেল করিছ।
 আকাশে উড়াতে এমন শোভা হইবাছে, বেন বাগত হইবা সূর্ব্য-কিংশ ব্যাত্থা বাছপ্থকে বিভিন্ন বাথিয়াছে।

বেশ-বেমনি প্রীরাম বিষয় সেবিলে

কাটিছেন শির যথা নিত কাম

(क्यनि शकार्थं केर्रे । नृष्य नृष्य क्रिं। ३२

চৌ—কাটা শির গলাই'ছে এ হেরিয়া দশাদন। অভি মহা ক্রোধযুত ভুলিয়া নিজ মরণ ॥ মহা অভিমান সনে করে মৃত গরজন। निशंक्षण (काश्युक श्रमानन-मंत्र-शांत्र । দত্তেক ভরে রথ হয় না আখি-গোচর। করিয়া উঠিল যবে হাহাকার স্তর্গল। নিবারণ করি' শর কাটেন অরির শির। কর্ত্তিত শির যত আকাশে উত্তিয়া যায়। লক্ষণ সুগ্রীব কোধায় বানররাজ।

ভীম বেগে ধে'রে যার টানি' দল শরাসন ! ১ রামের ত্রিশিব রথ নিমেবে ঢাকিয়া বায়। কুহেলি মাঝারে যেন লুকাইল দিনকর ॥ ২ লইলেন ক্রোধে প্রভু কাম্মুক করতল। ঢাকেন ধরণী নভে সেই সিরে রপধীয় 🛚 🕹 बद्रक्य द्वर कदि' व्यार्थ छत्र छेशकाय । কোথায় বা রখুবীর কোশলের মহারাজ ॥ ৪

**ছ—काला द्रध्योत्र** হাসি' ধমু টানি' শিরের মালিকা শোণিতের সরে

বলি' সব শির इट्टे क्लि उद्य नगार्य इत्न। র্ঘুকুলমণি मिरतरत मरत विरिधन वरण । ল'য়ে অগণিত মিলে ভথার। করেতে কালিকা যেন স্নান ক'রে সংগ্রাম-বটে পুঞ্জিতে যায় ।

## বিভাষণের প্রতি রাবণের শক্তি-ক্ষেপ

**ছো**—আবার ভীবণ ধায় ছেন বেগে

(कार्ण ममानन বিভ বণ-আগে

শক্তি হানে প্রচংগ। যেন বা ধ্যের দণ্ড ॥ ৯৩

চৌ—হেরি' বিভাষণ পানে আসিছে শক্তি ছোর। ভাবি' প্রণতের তুখ দুর করা পণ মোর ॥ ভারবেগে বিভাষণে করি' নিক্স পশ্চাতে। छा'त करण छान किছू इहेग अश्रामन।

সেই শেল রখুবর লইলেন বুক পেতে 15 व्यञ्ज अ मौना (रुति' विव्निक (नवजन ॥

# রাবণ-বিভাষণের যুদ্ধ

প্রজুর লাগিল ক্লেশ ইহা দরশন করি'। ক্রেন রে হভ্ডাগা রে শঠ রে মন্দম্ভি। মছালেবে সমাদরে ক রলি লিরে ধারণ। ভাগার কারণে ধল এখনো আছিস বেঁ:5'। त्राध्यत्र विष्य श्राप मञ्जूष माथ करत्।

(ब'रम या'न विख्नेयन त्यानश्रहत नना बति' । २ স্থর নর মুনি নাগে করিলি বিরোধ অভি॥ একের বদলে কোটি পে'য়েছিস সে কারণ ॥ ৩ এইবার কাল ডোর মাথার উপরে নাচে ॥ এ বলিয়া ভীম গদা মারিলেন বক্ষোপরে 🛚 ৪

₩ -বুকের উপরে शकात टाशास দশ মুখ হ'তে ক্ষরিছে রুধির মল-আগ্ৰে লাগে চু'য়ে ডবে विक्रीवन मत्न वनी श्राम-वरन

ধরণী' পরে পড়িল লুটে'। সম্বরি' উঠি' ক্রোবেডে ছটে। মহাবীর একে অপরে মারে। फुगार्नि अझ ना श्राप फार्रेस ॥ (पा-तावरणव मिरक দেও যুবে আজ ক্ৰনো চাহিছে শমন-সমান

পারিড কি বিভীষণ। রামের প্রভাব ছেন ৷ ৯৪

## রাবণ-হলুমানের যুদ্ধ; রাবণের মায়া-গুষ্টি

চ্চী-বিভীবণে রণে অতি আছে করি' দরশন। ছুটিল পবন-মৃত ভূধর করি' ধারণ। তুরগ সার্থি রথ নিমেষে করে নিপাত। वायन माष्ट्रा देश देश देश का विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व व তথন রাবণ মারে হন্সমানে গালি দিয়া। রাবণ ধরিতে পুচছ হতুর সহিত উড়ে। আকাশ-মাঝারে বীর ছই সম-বলবান্। আকাশে সে কি বাহার করে বহু ছল বল। বৃদ্ধি বলেতে রক্ষে পেরে'ও হারা'তে নারে। তথন করিল হমু স্মরণ জীরস্থবীরে ॥ ৪

দশানন-বক্ষো-মাঝে করে ভীম পদাঘাত ৷ ১ জনগণ-ত্রাভা যথা তথা যা'ন বিভীষণ। যায় সে গগন-পথে লাঙ্গুল প্রসারিয়া ॥ ২ व्यावात्र (म महावनी त्रावन-छेभदत्र भए । প্রহারে অপরে একে ক্রোধে হ'য়ে কম্পমান ॥৩ খুমেরুর সনে বেন যুখে গিরি কব্ছল।

ছ-স্বরি' রঘুবীর হন্তু রণ-ধীর थिकात पित्रा तटकः भारत । পুন: উঠি' লড়ে ধরা 'পরে পড়ে **जग्रजग त्रव (मवर्ड) करत ॥** হসুর বিপদ হেরি' কপি বড ভালু ক্রোধাতুর হইয়া ধায়। মথি' বলে করে রেণুর প্রায় । অরি-বীরগণে मख मनानटन ধিকার শুনি' ছুটে কপিদল চণ্ড। **লো**—তখন রামের হেরি' মায়াবল অরিরে প্রবল প্রকাশ করে পাষ্ত ॥ ৯৫

চৌ—মুহুর্ত্তের ভরে হ'ল নিশাচর অন্তর্হিত। যেখানে বানর ভালু-অনীকিনী যত রয়। দরশন করে কপি অগণিত দশানন। পলায়ন করে কপি বারিলে না ধরে ধীর। দশদিকে ছুটিভেছে কোটি কোটি দশানন। প্লা'ডে প্লা'ডে বলে ত্রস্ত দেবতা সবে। এক রাবণেই জয় ক'রেছিল দেবগণে। ছিলেন ডথায় হর বিধাতা ও জ্ঞানী মূনি।

পরেই অনেক ব্লপ করে থল প্রকটিত 🛭 সেখানেই রহে তত দশানন হুরাশয় ॥ ১ যথা-তথা পলাইতে থাকে কপি ভালুগণ ॥ वरण त्राच' त्राच' व्यक्त लक्ष्मण त्रभूवीत ॥ २ অতি ভয়াবহ তমু করে ঘোর গরজন॥ বিজয় লাভের আশা বর্জন কর এবে॥ ৩ এখন ভ অগণিভ রহ এবে গিরি-কোণে ॥ বাঁহারা বিদিত কিছু রামের গুণ-কাহিনী॥ ৪

| ছ—ভয়হীন তা'রা     | জানেন বাঁহারা    | Ą |
|--------------------|------------------|---|
| ইহারি কারণে        | বলে সেনাগণে      | 4 |
| মহা বশবান্         | নল হতুমান্ `     | 4 |
| ধরা উদগত           | অঙ্কুর মড        | ( |
| (দ)—হেরি' স্থরদল   | ৰানর বিকল        | á |
| লাকে ত তার<br>জন্ম | শায়াক্তর স্বায় | 1 |

ভালু বানরেরা প্রকৃত গণে। তুপামর রাখ' ত্রাসিড **জ**নে 🛭 थक्क नोम वीरत्रका भिरम'। काछि मांग्रा ममानरनरत्र **परन** । শ্রীমূপ হাসিতে ভরে। সকল রাবণ মরে। ৯৬

CD — করিলেন দূর প্রভু ক্ষণমাবে সব মায়া। তপন উদয়ে যথা দূর হয় তম-ছায়া ৷ একই রাবণ হেরি' অমর পুলকারুল। বাছ উর্বোলন করি' বানরে প্রভু ফির'ান। লভিমা প্রভুর বল কপি ভালু এবে ধায়। স্বিতি-রড দেবগণে হেরি' ভাবে দশানন। হাঁকি' কয় মোর বধা সবাই ভ মৃঢ় ওরে। হাহাকার রব করি' অমর পলা'য়ে যায়। (मरवरत्र वाक्रिम दहति' (मोज़ाय अन्नम।

कित्रिया श्रेष्ट्रत 'भरत वतरव श्रोहत क्ला। > তথন অপরে একে করিতে থাকে আহ্বান। लाक निया त्राकृत्य (यांग (नय श्रूनताय ॥ २ ইহারা ভাবিল মনে একাকী আমি এখন। এত কহি' মহাকোপে ধেয়ে' যায় নভোপরে ॥৩ রক্ষ: কহে মোর আগে কোথা থল যা'ৰি হায় # ভূমিতে রাবণে কেলে লক্ষে আঘাতি' পদ॥ ৪

| ছ—ধরাশায়ী করি' | <b>ठद्र(१ व्यक्</b> दि | অঙ্গদ গেল প্রভুর পায়।    |
|-----------------|------------------------|---------------------------|
| উঠিয়া কঠোর     | গৰ্জন ঘোর              | দুশানন করে ত্রাসি' ধরায়॥ |

#### বোর বৃদ্ধ; রাবণের বৃদ্ধ1

| করি' ভীম দাপ   | ভরি' দশ চাপ#   | व्यक्तं भरतत वत्रवा करत । |
|----------------|----------------|---------------------------|
| हय वीत्रकृत    | আহত ব্যাকুণ    | নিজ বল হেরি' হরষে ভরে।    |
| দো—প্রীরাম তথন | রাবণের শির     | বাহুচয় শর চাপ।           |
| কাটেন বিপুল    | বাড়ে পুনঃ যেন | তীর্থেতে কৃত পাপ ॥ ৯৭     |

চৌ--অরাতির শির ভূক আবার বাড়িতে হেরি'। ভালু বানরের হিয়া রোধেতে উঠিল ভরি'। কাটিলেও বাহু শির এ পাপী না মরে হায়। অঙ্গদ বালিমুক্ত স্থুগ্রীব হনুমান। বিটপী ভূধর ল'য়ে রাবণে করে প্রহার। করেক বানর তা'রে নধরে করে বিদার। ডা'র পর নল নীল উঠিয়া মাধার 'পরে। क्रियत क्रितिष्ड द्वित अन्ति विवास अजि। ধরিতে নাহিক পারে ক্লিরে কপি কর 'পরে। व्यवस्थिय यस प्रश्रेष्ट्र माक मिन्ना दिकाथ छत्त । व्यावात महत्राह्य कहत मन प्रमानना হনুমান আদি যভ বানরে মূর্টিছভ করি'। দর্শন করি' যত কপি বীরে হতজান। শঙ্গের বড ভালু ভা'রা ভক্ন উঠাইরা। কুপিত ইহাতে অভি বলবান্ দশানন।

ক্রোধন্তরে ভালু কপি-বীরগণ দৌড়ায়॥ ১ महावीत नम नीम विविधापि वनवान्॥ সেই গিরি তক্ত ল'য়ে কপিরে মারে আবার । ২ কের বা পলা'য়ে যায় চরণ করি' প্রহার ॥ বিদারিতে নখাঘাত ললাট-উপরে করে॥ ৩ ধরিবার ভরে কর প্রসারে ভা'দের প্রভি ম ক্ষদ-কাননে যেন ছুইটি ভ্রমর চরে॥ ৪ আছাড় মারার কালে ধায় নিপীড়িয়া করে॥ করিল শরের খায় আহত বানরগণ । ৫ হরবিত-প্রাণ হয় প্রদোষ আগত হেরি'॥ থেয়ে যায় মহাবেগে রণধীর জাত্বান 🛚 🕭 মারিতে রাবণে শুরু করে থিকার দিয়া । चाष्टाष्ट्रि' हद्रश थति' मारत नाना वीद्रशन ॥ १

হেরি' আপনার অনী বিনাশিত অক্ষনাথ। ক্রোধে রাবণের বুকে করে ভীম পদাঘাত ॥ ৮

| ছ-বাঞে ক্লয়েডে   | ভীম পদাঘাত    | রথ হ'তে পড়ে বিকল-প্রায়।     |
|-------------------|---------------|-------------------------------|
| ধরে বিশ করে       | বিশ ঋক্ষ বীরে | যেন পদ্মে অলি বদে নিশায়॥     |
| মৃৰ্জিভ তেরি'     | পদাঘাত করি'   | জান্থ যায় প্রভূ-পাশে আবার।   |
| নিশা আদে জানি'    | সার্থি অমনি   | রথে তুলি' সেবা করে ভাহার ম    |
| দো—জ্ঞান লাভ করি' | ভালুক পি যত   | আ <sup>দি</sup> ল প্রভুর পাশ। |
| রাবণে খিরিয়া     | রহে রক্ষ:গণ   | হ্বদরে অভি ভরাস॥ ৯৮           |

#### बिक्रो-श्रीका मर बाह

(b)—দেই রাতে জানকী or নিকটে করি' গমন। ত্রিজটা সকল কথা করে তাঁতে বরণন ॥ অরু:ভির শির বাহু গঞ্জায় প্রবণ করি'। মলিন কমল-মুখ অভীব ভাবনা মনে। ব্যামৰ শাঘাক মাথা কাটিয়াও নাহি মরে। আমারি কৃভাগা যেন ভাগারে পুন: বাঁচায় : কপ্ট কনক-মুগ স্ঞান কারল যেই। ছেভাবে তু-সহ তুথ সে আমারে সহাইল। 🗃 বাম-'বরত-বিষ-শায়ক তানি' আমায়। এমন দৰেও যেবা হাথে প্রাণ অভাগীর। বারহার তেন করি' করুণানিদানে মনে। ব্রিকটা তখন বলে শুন রাজ-মুকুমারি। এ কারণে প্রভু ভা'র হৃদে না হানেন বাণ।

সীভার কদয়ে ত্রাস সীমাহীন উঠে ভরি'॥ ১ জনক-তৃহিতা কথা কছেন ত্রিজ্ঞটা সনে॥ कि इ'र्व भा छात्रा ह'रल त'रश्रह किन नीतरव। किमरन मतिरव छव-छ्थमाछ। व्यार्ग छरव॥ २ বিপরীত লীলা সব এ যে মা বিধাতা করে ॥ হরি-পাদপদ্ম হ'তে দুরে যা' রাখিল হায়॥ ৩ এথনো বিরূপ দেখি মোর প্রতি বিধি সেই॥ লক্ষণ-প্রতি মোরে কু-বচন কলাইল ॥ ৪ বারবার লক্ষা করি' আঘাতিল ডা'র ঘায় ॥ সেই বিধাতাই তা'রে বাঁচায় বৃষিত্ব স্থির । ৫ बानकी विलाभ वह करतन (भामत मत्न ॥ জনে লাগিলেই শর মরিবে অমর-অরি ॥ ৬ त्म कृषि भाषाद्व त्य भा कानकी विवासभान ॥ १

| ছ এর ছিয়া-মাঝে        | জানকী বিরাজে | জানকীর হাদে আমার বাস।   |
|------------------------|--------------|-------------------------|
| উদরে আমার              | ভূবন অপার    | শর-খায় চ'বে সবার নাশ 🖁 |
| হর-,খদ ভা'য়           | এ কেন কথায়  | क्ति' मरभन दिक्ठी क्या। |
| এভ'বে এখন              | হইবে মরণ     | বরাননে শুন তাজহ ভয়।    |
| ্রে—বারবার শি <b>র</b> | কাটায় বিকল  | হ'লে যা'বে ভব-ধ্যান।    |
| ভখন রাবণে              | জদয়ে আম্বাড | করিবেন ভগবান্। ৯৯       |

हो- এ বংশ করিয়া তাঁকৈ নানাভাবে বৃঞ্চাইল। ত্রিকটা তথন নিজ আলয়ে চলিয়া গেল। উভল বিয়হ-ভারে অভীব কাতর হন। ১ कारक कछाव श्रीषा कारत कवि सदग ।

রজনীতে শশধরে নিন্দেন কড মত। রামের বিরহ-জুৰে জনক-স্থৃতা কাডর। অতীব বিরহ-দাহে দঃছত যবে জ্বদয়। শুভদ শকুন বুঝি' মনেতে ধরেন ধীর। ক'ন যুগ-সম রাভি নাহি চর অপগও॥ বিলাপ আপন মনে করিছেন •ির্ভর ॥২ বাম আঁথি আর বাজ স্পন্দিতে সুকু চয়॥ বুয়োন পা'বেন পুনঃ কুপাল সে «ঘুবার॥ ৩

#### য়াবণ-বধ

এ দিকে আধেক-রাতে রাবণ লভিল জ্ঞান।
কহিল সমর-ভূমি ত্যাগ করাইলি মোরে।
সারথি চরণে ধরি' অনেক ভাবে বুঝায়।
ভূমিয়া সমর-ভূমে রাবণের জ্বাসমন।
যথাতথা হ'তে ল'য়ে উপাড়িয়া পর্বত।

ছ— চুটে মর্কট ঋক্ষ বিকট অতি কোপভরে ভূধর প্রচারে বিচলিত করি' অনীকিনী অরি চারি দিক্ হ'তে চপেট-আখাতে স্ত-প্রতি হানে র চ বচ নর খর বাণ॥
মন্দম'ত রে অথম শত থিক থাক তোরে॥ ৪
প্রভাতেই রথে উঠে' চুটে ২০ে পুনরায়॥
প'ত্রে গেল কপি-ম'ঝে অ'ডশয় বিচলন॥ ৫
কট্কট্রবে ফোধে ধায় কপিবীর যতু॥ ৬

লটয়া করাল ধরণীধরক।
পলাটয়া চলে রঞ্জনীচরণ ॥
বলী কপি লয় রাবণে ঘিরে'।
নধে দেহ ভি<sup>\*</sup>ড়ে' কাতর করে॥

**ড়ো**—হেরি' কপিদল হইযা গোপন

অতীব প্রবল নিমেষ মাঝারে রাবণ কৃথি বিচার। করিল মায়া প্রচার॥ ১০০

ছ-যেমনি করিল মায়া-প্রকাশ।
বেতাল যতেক ভূত পিশাচ।
বোগিনীরা অদি ধরিয়া করে।
করিয়া সম্ভ-শোণিত পান।
ধর মার রব সখনে করে।
ব্যাদিত বদনে গ্রাসিতে ধায়।
যে দিকেই কপি পলা'য়ে চলে।
অতীব বিকল বানর ভালু।
যথাতথা ক'প বিকল করি'।
লক্ষণ কপিপতি সংমত।
বলিয়া হা রাম হা রত্মাধ।
এ ভাবে বিবল করিয়া সবে।
বহু হস্মান্ করে স্কন।
সবে ভিরে গিয়া রাগমতে ভা'য়া।

ভয়াল জীবের হ'ল বিকাশ॥
ধরি' ধ'র' করে ধমু নারাচ ॥১
মানব-কপাল অপরে ধ'রে ॥
নাচে আর করে কটই পান ॥ ২
দিক্সয় সেই আরাবে ভরে ॥
তেরিয়া বানর ভয়ে পলায় ॥ ৩
সে দিকেই দেশে আগুন জলে ॥
তথন ভা 'পরে কর্যে বালু ॥ ৪
উঠে দশানন গরজ করি' ॥
সকল বীরেরা হ'ল অচেড ॥ ৫
কপি বীরগণ নিশীভে হাত ॥
অপর ছলনা ক'রল ভবে ॥ ৬
ধার যা'রা শিলা করি গ্রেহণ ॥
চারিদিকে বহি' সেনার কাবা ॥ ৭

<sup>•</sup> পर्काउः 🕇 सामग्रः।

মার্ধর্ যেন নাছি পলার।
দশদিকে করে হতু বিরাজ।

ত্তু অভিরাম

লাসুল তুলি' কট্কটার ঃ তাহাদের মাবে কোললয়াল ঃ ৮

শোভি'ছেন বহু হছুর মাঝে।

|                  | <b>—</b>                    |  |
|------------------|-----------------------------|--|
| তুক ভমালে        | <b>ঘেরি' বেড়াব্রালে</b>    | ইন্দ্রহু বহু যেন বা রাজে।                |
| হেরিয়া প্রাভূরে | <b>२</b> र्थ-८थम <b>७८३</b> | <b>জয়জয় রব দেবতা গা<sup>9</sup>য়।</b> |
| ক্রোধে রস্বীর    | হানি' এক(ই) ভীর             | ছরিলা নিষেবে সেই মারায়। ১               |
| মায়া অপগত       | কপি হর্ষিভ                  | ভক্ন গিরি বহি' সকলে কিরে।                |
| বছ শর হানি'      | কাটেন র্মণি                 | পুনঃ রাবণের বাত ও শিরে।                  |
| শ্রীরাম-রাবণ-    | সমর-কথন                     | बर कड़ बति विज्ञ शाहा।                   |
| . শত অহিপতি      | বেদ কি ভারতী                | ভবুডার পার কভুনা পায়।                   |
| দো—দে গুণের কিছু | করে বর্ণন                   | <b>জ</b> ড় এ তুলসীদাস।                  |
| মক্ষিকা যেন      | নিজ-বল মভ                   | উড়িয়া কিরে আকাশ। ১০১(ব)                |
| কাটিলেন শিরে     | ভূজ বছবার                   | রাবণ তবু না মরে।                         |
| খেলি'ছেন প্ৰভু   | ব্যাকুল সকলে                | ভাঁ'র ক্লেশ মনে ক'রে॥ ১০১(খ)             |

(5)—প্রতি লাভ-শেষে যথা লোভ আর(e) বেড়ে' যায়। কাটিলেই সেইমন্ত বাড়ে শির পুনরায়॥

মরে না অরাতি আম হইল নিরভিশয়।
কালের(ও) মরণ হয় উম। ইচ্ছায় য়'য়।
বিভীষণ ক'ন শুন হে প্রাজু অন্তর্যামি।
অমিয়-ভাণ্ডার রহে নাভিদেশে রাবণের।
বিভীষণ-বাণী এই অবণ করি' কুপাল।
তথন অশুভ নানা হ'তে থাকে চারিধারে।
অগত-অশুভ ঘোষি' পক্ষী করে আরাষ।
অগ্নিকাশু হ'তে থাকে অভিশয় চারিধারে।
ময়-স্বভা-ছালিভল কেঁপে' উঠে বারবার।

বিভীবণ-পানে ডবে চাহিলেন কুপাময়॥ ১ ভক্ত-প্রাণের প্রেম এ শুধু পরীক্ষা তাঁর॥ প্রণডের ছুখহারি স্থর-নর-মূনি-স্থামি॥ ২ তাহারি বলেতে নাথ প্রাণ রহে অধমের॥ হরষে নিলেন করে শায়ক অতি করাল॥ ০ কুকুর গর্মভ শিবা রোদনের হব করে॥ যথাতথা ধ্যক্তে নভে হয় আবির্ভাব॥ ৪ তিথি-ব্যভিরেকে রাহু গ্রাস করে দিবাকরে॥ নয়ন-জাসার বহে আঁথি-পথে প্রভিমার॥ ৫

| ছ—প্রতিমা-রোদন        | অশ্নি-পত্ৰ       | অনল-দহন কম্প-মহী।                  |
|-----------------------|------------------|------------------------------------|
| ववरव कलन              | কেশ রক্ত ধূলি    | কে পারে <b>অণ্ড ফু</b> রা'তে কহি'। |
| উৎপাত নভে             | বছ হেরি' সবে     | জরজয় করে ভীত অমর।                 |
| হেরিয়া ত্রাসিড       | বুন্দারক বড      | ৰমুতে জীৱান চড়া'ন শর।             |
| <b>ডো</b> —হানিশেন ধছ | আ-শ্রুভি টানিয়া | থর একত্রিশ শর।                     |
| রাদের শায়ক           | ছুটিয়া চলিল     | (यन कांग-क्यांवत ॥ ) • २           |

**(5)—নান্তি-ভাণার এক শায়ক করে শোবণ**। मित्र वास् (करिं) म'र्य वाग यात्र (क्रम करेत । **5७-८वर्ग ऋ७ डू.** हे थत्र**नी** श्विमश्च यात्र । কোণা রাম ধিকার দিয়া রণে মারি ভা'রে। যেমনি পড়িল ভূমে কাঁপিয়া উঠিল ক্ষিতি। শরীরের ছুই ভাগ কপি ভালু-বীরদলে। त्रापी मरन्यापत्री-व्यारभ त्रावरणत्र वाष्ट्र भित्र । আবার তৃণীর মাঝে ভাহারা প্রবেশ করে। প্রবেশ ভাহার ভেঞ্চ করিল প্রভূ-বদনে। জয় জয় জয় রবে ভ'রে গেল ব্রহ্মাণ্ড। वर्षिन कुलपल भूनि-अञ्जाति वृत्त ।

200

कांत्र रख यान भित्र यास करत वर्षन 🖁 भित्र कुछ शैन त्मर नाहित्य चारक करत । > বিভাগ করেন ভবে তা'রে ৫ ভূ শর খায় ঃ এ বলি' মরণ কালে খোর গংজন করে ॥ ২ **क्कूक ध्रमी नहीं फिक्-क्रे वाजिलिंछ** । প্রোথিত করিয়া সবে পড়িল ধরণীতলে। ৩ কেলিয়া শায়ক ফিরে যথা ৫ছু ংখুবীর। হেরি' হুম্পুভি-নাদ করে সুর অ্থরে॥ ৪ ভা' হেরি' হর্ষ ভড়ি বিধাভা মহেশ-প্রাণে॥ क्य अध्योत क्या व्यक्ति वन कुक्रम्थ ॥ द গান জয় হে কুপাল জয়তি জয় মুকুন্দ॥ ৬

| ছজয় কুপাকন্দ                | बन्द-र मूक्न्म          | শরণাগতের স্থদ প্রভু।            |
|------------------------------|-------------------------|---------------------------------|
| খল-বিদারণ                    | পরম কারণ                | মহাকাকণিক সভত বিস্থু॥           |
|                              | ক্লপ-বৰ্ণনা             |                                 |
| বর্ধে শুমন#                  | শ্রীত দেবগণ             | ছন্দুভি বাজে কড <b>ই</b> রঙ্গে। |
| রণভূমি 'পরে                  | রাম-কলেবরে              | বছ অনঙ্গ-মাধুরী ভঙ্গে ৮৫ ১      |
| শিরে জটাজুট                  | <b>জ</b> টার মৃকুট      | মাৰে মাৰে ফুল কি দেয় শোভা।     |
| নীলগিরি-শিরে                 | চপলার সনে               | ভারারাজি যেন বিভরে আভা।         |
| ভূজ-দণ্ডে শর                 | কোদণ্ড-প্রবর            | ডমু ভরি' কণ-ক্রধির রাজে।        |
| তমালের 'পরে                  | অভি স্থ-ভরে             | লালমন# বছ (যন বিরাজে॥ ২         |
| <b>দো</b> – প্রভূ কুপাদৃষ্টি | করি <b>' লাভ বৃষ্টি</b> | নির্ভয় শ্বরুদ্দ।               |
| কপি ভালুগণ                   | হর্ষে মগন               | গায় জয় হে মুকুন্দ। ১০৩        |

## बटमामत्रोत विमाश : तावरशत घटकाष्टि किशा

(5)—তেরিভেট রক্ষ:রাণী দয়িতের শির কর। আফুলি' হারা'য়ে জ্ঞান পড়েন ধরণী 'পর ॥ কাঁদিতে কাঁদিতে ছটে' যতেক রমনীগণ। হেরিয়া পতির দশা আর্তনাদ-বাণী মুখে। করের প্রহার বুকে করেন সহ রোদন। ভোমার এডাপে নাৰ টলমানুছ'ড ধরা। কৃষ্ম বাস্থকী ৰা'র সচিতে নারিড ভার।

ভাঁহারে রাবণ-পাশে শইয়া করে গমন। ১ এলায়িত কেশদাম বশহীন দেহ ভূখে। करत्रन क्रायण-वन वरुखारव वर्णन ॥ २ ছিল শনী ছড়াশন দিবাকর ডেজ-হারা। ধৃলি-ধুসরিভ হ'য়ে প'ড়ে রচে দেচ ৫৭'র ॥ ৩

<sup>•</sup> पूर्णः 🕇 त्याका करतः। 🕽 जानवन भाषीः।

-রণ কুবের বায়ু বিদ্বা দেবরাজ বার। বাছবলে পরাজিলে তুমি প্রভু যমে কালে। ভোমার প্রভাপ-কথা ধরাতলে সুবিদিত। রামের বিমুখ ত'য়ে তইল দশা এমন। ধাতার স্ক্রন যত সব তব পদানত। এখন সে শির ভুজ শবু নি-ছঠরে যায়। কাল-বশ হ'য়ে নাথ মানিলে না নিবারণ।

ভোমার সমুধে রণে কেহ না রহিত স্থির ৷ সে তুমি অনাথ-প্রায় আজি প'ড়ে ভূমি **র**লে ॥৪ সুত আত্মীয়-বল মুখে ক'য়ে ক'ব কত ! রহিল না কেচ তব তরে যে করে রোদন ॥ ৫ নোয়া'ত চরণে শির ভয়ে দিক্পাল যত 🛚 राम-(छाड-अल देहा कक्वें कि स्टाइ हाजू ॥ ७ অগ-জগ-নাথে নর করিলে হেন গণন ॥ ৭

| ছ দমুজ-কানন            | দহন পাবক      | হরিরে ভাবিলে মানব সম।       |
|------------------------|---------------|-----------------------------|
| ন্মেন বাঁহারে          | ধাতা হর স্থার | ভঞ্জিলে না তা'রে হে কিয়তম। |
| জন্ম হ'তে নিভ          | পর-দ্রোহরড    | পীপময় ভতু ভোষার স্থামি।    |
| ভোমারেও রাম            | দিশা নিজ ধাম  | সেই বেশ্ব রামে ৫ পমি আমি॥   |
| <b>দো</b> —আহা আহা নাথ | রঘুনাথ সম     | কুপানিধি নাহি আনু।          |
| যোগী-হল্ল ভ            | সেই পরাগতি    | দিলা ভোমা ভগবান 🛚 : • ৪     |

মহেশ চতুরানন দেব-ঋষি শনকাদি। নয়ন ভরিয়া করি' রখুপতি দরশন। রোদন করিতে হেরি' যতেক রমণীগণে। হেরি' অগ্রজ-দশা করেন তথ প্রকাশ। প্রবোধ অনেক মতে লক্ষ্মণ দেন তাঁবে। কুপা-আঁথিযোগে প্রভু তাঁ'র পানে চাহিলেন। শোক পরিহরি' শেষ-ক্রিয়া তরে করিলেন। দেশকাল-অনুরূপ উর্ন-দেহ ক্রিয়া যত।

(চী--রাণী মন্দোদরী-বাণী প্রবণ করিয়া কাণে। সুর মূনি সিল্প সবে মহাসুধ পা'ন প্রাণে ॥ ষে সকল মুনিবর প্রমার্থ-ভব্বাদী ॥ ১ অতি মুখ পে'য়ে হ'ন পরাপ্রেমে নিম্মন । বিভীষণ যান তথা অতীব কাতর মনে ॥ ২ আদেশ অমুক্তে তবে দিলেন সীতা-নিবাস ম স্মবশেষে বিভীষণ প্ৰস্তু-পদে যা'ন ফিরে'॥ ৩ माधित्मन विভौषণ ⊄खूत चारमम मछ ॥ 8

(प-मामानही कामि গেলেন ছবনে

সকলে রাবণে মনে মনে রাম-

**खिल-अञ्चल मिया।** গুণপ্রাম বর্গিয়া । ২০৫

## বিভীষণের রাজ্যাভিষেক

(5)—আসি'পুন: বিভীবণ চরণে নোয়া'ন শির। অমুক্তে অন্তবান তবে করিলেন রম্বুবীর 🛭 ভোষা সবে অজন কপিরাজ নল নীল। সকলে মিলিয়া বাও লক্ষা অধিপত্তি সাধ। পালিতে পিডার সভা নগরে নাতিক যা'ব।

कायवान इस्मान वानि वीत मीजि-नेन ! > त्राक-िकः ममालन कत क'न त्रचुनाव ॥ আশন সমান কপি ভফুজেরে পাঠ ইব ঃ ২

<sup>•</sup> চৰাচৰ পতি।

ক্ষেত্রগতি যায় কপি শুনিয়া প্রাকু বচন। স্মানরে বিভীষণে বসাইল রাজাসনে। জ্বোড করি' পাণিত্রল সবে শির নত করে। তখন স্ত্রীর কপিগণে আহ্বানি'।

করিল তথার গিয়া রাজ-টিকা আয়োজন। ডিলক-প্রদান শেষে স্থাতি করে সব জনে 🛭 ৩ পরে বিভীষণ সহ প্রভু-পদে আসে ফিরে' 🛚 করিলেন সুখী সবে কহি' শ্রুতি-সুখ বাণী ॥ ৪

| <b>ছ</b> —সুধামা <b>ধা বাণী</b> | ক'ন রপুমণি    | ভোমাদেরি বলে মরিল অরি।       |
|---------------------------------|---------------|------------------------------|
| পা'ন বিভীষণ                     | রাজ-সিংহাসন   | ভব যশে র'বে ত্রিলোক ভরি' 🛭   |
| মোর সনে তব                      | আচরণ-শুভ      | অভি শ্রীভিভরে নিত বে গা'বে।  |
| ভব পারাবার                      | অগাধ অপার     | ু অনায়াদে পার সে অন পা'বে 🛭 |
| <b>দো—প্রভু</b> র বচন           | করিয়া শ্রাবণ | ভৃত্তি আদে না মনে।           |
| নমে বারে বারে                   | সবে করে ধরে   | শতদশ সে চরণে 🛙 ১০৬           |

#### बस्यादम्ब भौडा-मबोद्ध श्रम

চৌ—ভা'রপর হয়ুমানে করা'লেন আহ্বান। জানকীরে সমাচার শুনাও গিয়া সকল। তখন নগর-মাঝে মহাবীর হতু যায়। বিবিধ প্রকারে পুরু। ক'রল সবে ভাহারে। प्रत शंख श्रूमान् ध्रवमिन **कानकी**रत । কহিলেন কহ ভাত প্রস্কুপা-নিকেতন। কুশল সকল বিধি শ্রীরামের হৃতুক্র। বিভ ষণ অ'বচল রাজা পা'ন অবশেষে।

লকায় যাও ভা'রে কহিলেন ভগবান্ ॥ চ'লে এদ পুনরায় ভাহার ল'য়ে কুশল ॥ ১ নিশাচর নিশাচরী সে কথা শুনিয়া ধায় ॥ (मथारेश मिन श्रनः सामकी(मर्वा-नीजारत ॥ २ রম্বুপতি দৃত বলি' চিনিলেন সীতা ভা'রে॥ অমুজ বা'হনী সান কুশলে ত সবে র'ন॥ ৩ क्रमि तावरण तरण क'त्ररहम क्षेष्ठ क्षत्र॥ কপির বচন শুনি' ভরে প্রাণ পরিতেযে। ৪

| ছ—মন চর্ষিত     | ভমু পুদকিত     | ক'ন বারবার স <b>ঞ্জ চ'থে</b> । |
|-----------------|----------------|--------------------------------|
| এ বারন্ডা-ভরে   | কি দিব .ভামারে | কিবা আছে দিতে এ ডিন লোকে।      |
| হতু কংহ বাণী    | ভন গো ভননি     | পাইয়াছি স্থির অধিল-রাজ।       |
| সমর-বি্ঞিত      | অমুক সহিত      | অনানয় রামে নির্ধি আৰু ॥       |
| দো—শ্বত কহি শুন | সব শুভ গুণ     | करम त'रव रुक्षभान्।            |
| वस्य गरन        | সদা অফুকৃস     | র্ছিবেন ভগবান্ 🛙 ১০৭           |

# নীভার আগমন: অগ্নি-পরীকা

(5)-এখন ছ'রত গভি কর ড'ড দে উপায়। নয়নে নির্ধি যাতে দে শ্রামল কম-কায়। হরুমান করে ছরা শ্রীরাম-পাশে গমন। ভ মুকুল-বিভূষণ বারতা করি' প্রবণ। কহিলেন যাও তুমি হয়ুমানে সাথে ক'রে।

কুশল-বারতা তাঁর পদে করে নিবেদন 🛊 ১ যুবরাল বিভীষণে করিলেন আবাহন # (मधी कानकीरत रहवा जान नमामत छरत । २ সকলে ছবিত যা'ন যথায় বহেন সীডা।
নিশাচনীগণে সব বুঝা'কেন বিভাষণ।
বসন ভূষণ কত পরায় যতন ভরে।
হরষ-পূবিত মনে ভছপরে আবোহণ।
বেত্র করে রক্ষক শিবিকার চারিপাশে।
দর্শন-ভরে আসে ঋক্ষ বানরগণ।
কহিলেন রঘুবীর কথা মোর ক্ষদে ধর।
দেশুক বানরগণ মাতারে দেখে যেমন।
ভূনিয়া প্রভূব বাশী কপি ভালু হর্ষিত্র।
সীতারে অনল-মাঝে রাখিয়াছিলেন আগে।

সেবা করে নিশাচরী তাঁহারে অতি বিদীতা॥
বছভাবে করাইল সীতারে অবগাহন॥ ৩
শিবিকা সাজা'য়ে আনে যা' হেরিয়া মন হরে॥
করিলেন বৈদেহী জীরামে করি' অরণ॥ ৪
চলে সবে মিলি' মন ভাসে মহা উল্লাসে॥
রক্ষকগণ কোধে করে সবে নিবারণ॥ ৫
জানকীরে পদত্রক্ষে স্থা আন্মন কর॥
হাসি-ভরা মুখে এই কহিলেন নারায়ণ॥ ৬
নভ হ'তে দেবদল কুমুম বর্ষে কত॥
প্রকাশ করিতে এবে হুদ্যে বাসনা জাগে॥ ৭

বেখা—তাহারি কারণে করুণা-নিদান
বিষাদে ভরিল যে কথা শুনিয়া

(চী— ৫৩জুর রচণ শিরে ধারণ করিয়া সীভা। কহিলে
ধর্মের সহায়ক হও মম লক্ষ্মণ। আয়ো
বিরহ বিবেক ধর্ম নীতি-রসে সিঞ্চিত। লক্ষ্মণ
ছ'নয়নে জল ভরে ভোড় করি' ছই পাণি। রহেন
য়াম-মনোভাব বুবি' ধাইলেন লক্ষ্মণ। করের
করিয়া অনল সীভা প্রস্কলিত দরশন। ফ্রন্মের

क'न यमि काग्र मन कमरत्र किया वहरत।

তবে ছতাশন যিনি জানেন সবার মন।

াদান ক'ন কিছু ক্-বচন।
তিনিয়া নিশাচরীগণ-মন॥ ১০৮
কহিলেন কায়মন.বচনে অভি পুণিতা॥
আয়োজন কর ৎরা আলিবারে হুতাশন॥ ১
লক্ষণ সীতা-বাণী শুনি' অভি বিষাদিত॥
রহেন প্রস্তুরে কিছু কহিতে সরে না বাণী॥ ২
করেন স্থাপিয়া বহিন সংগ্রহ ইন্ধন॥
হুদেরে না ভয় নাহি হর্ষের লক্ষণ॥ ৩
রঘুণতি বিনা মভি নাহি রহে অক্সজনে॥
শীতল মলয়-প্রায় মোর তরে তিনি হ'ন॥ ৪

| ছমিবিলা-কুমারী        | গ্রভূ-পদ শ্মরি' | পশিলা পাবকে মলং-প্রায়।      |
|-----------------------|-----------------|------------------------------|
| জয় কেশেলেল           | প্ৰিড মহেশ      | পৃত সীতা-মন যে পদে ভার।      |
| ছায়া-কায়া আর        | লোক-অপবাদ       | প্রবল পাবক-মাঝারে দছে।       |
| এ প্রাস্তু-চরিত       | কেহ না জানিল    | নভে স্বর মূনি চাহিয়া রহে। ১ |
| <b>यति' त्मर रू</b> ख | ধরি' বৈশ্বানর   | বেদ ধরা-খ্যাত প্রকৃত-সাভা।   |
| <b>खि</b> कारमञ करत   | দেন গ্রীতি ভরে  | পয়োধি রমারে দিলেন যথা।      |
| শ্রীরামের বামে        | ক্ষণীয় ঠামে    | বিরাজেন সীতা রুচির সাজে।     |
| वय नीत्नारशन-         | পাশে শ্ববিমল    | ক্লক ক্মল-কালকা রাজে 🛭 ২     |
| ८ए1—वरत्व स्थम+       | শ্রীভ দেবগ্রণ   | নাগাড়া বাজিছে নভে।          |
| কিল্পর পার            | कार्यक्ष मार्ट  | বিমানে উঠিয়া সবে॥ ১০১ (ক)   |

জনক-চুহ্নিডা-হেরি' ভালু কপি সাথেতে প্রভুর इत्रय ध्वनि'ছে

অগাধ শোভা অপার। জয় রাম সুধ-সার॥ ১০৯ (খ)

## দেৰগণের স্তব ; ইড্রের স্থা বর্বণ

CD -- त्रारमत आरमभ-वागी उपन माथाय धति' আসে সদা-স্বার্থরত দেবদল অত:পর। কহে সবে দীননাথ কুপাময় রখুপতি। চরাচর-জ্রোহরত এই ছুপ্ত আর কামী। তুমি সম-রূপ প্রভু ব্রহ্ম তুমি অবিনাশী। অৰও অগুণ অঙ্ক অ-কলুয অবিকার। তুমি মীন কুর্ম্ম-রূপ বরাহ নর-কেশরী। यथिन यथिन नाथ छ्थ भाष्र (एवर्गन। এই মন্দমতি খল দেব-জ্রোহে সদা মন। অধ্যের শিরোমণি তবু তব পদ পায়। হ'য়েও দেবভা মোরা উত্তম-অধিকারী। ভবের প্রবাহ মাঝে পডিত পুরুষোত্তম।

माछिन कितिया राम हत्रा थाना कति ॥ এমন বচন কচে যেন পরমার্থ-পর॥ ১ করিলেন অতি দয়া দেবতাগণের প্রতি। আপন পাপের ফলে মরিল কু-পথগামী॥ ২ সদা এক-ভাবময় আত্মরত ও উদাসী। অক্সে অমোঘ-বল প্রভু রাম কুপাধার ॥ ৩ ৰামন পরওরামে আস' ভীম বপু ধরি'॥ তুমিই বিনাশ' নানা শরীর করি' ধারণ ॥ ৪ কাম লোভ মদ-রত অতি ক্রোধ-পরায়ণ॥ বিশ্বয় এই প্রেডু আমাদের প্রাণে ছা'র॥ ৫ তবু সার্থ-বিজ্ঞাড়িত ভকতি-রীতি পাশরি'॥ শরণে পতিভগণে রাখ' ভব-নিবারণ॥ ৬

#### ভাৰার তব

বে — মিনতি জানা'য়ে করিলেন স্বতি

সিদ্ধ স্থুর রহে সপ্রেমে বিধাতা যথাতথা জোড়করে । त्रामां **किक करन**यत्र ॥ ১১०

**ऍ—**कग्र ताम जना ज्य-थाम हति।' ভব-বারণ-দারুণ সিংহ শ্রেডু। বছ কাম-সমান ওছু:অভূপ ছবি। यम পাবন তব ४११ त्रावग-मार्टिं। জন-রঞ্জন ভল্পন লোক ভীতি। অবতার উদার তুমি অপার গুণ। অজ ব্যাপক এক অনাদি তুমি। त्रचुराम-विकृषण पृष्णशाति । প্রণ জ্ঞান-অভগ্রিধি অ-মান অজ। **जूबन**श-প্रভাগে जूबि **म्बन्ती**।

রখুনায়ক কাম্মুক শায়ক-ধারি॥ গুণ-সাগর নাগর নাথ বিভু ॥ ১ গুণ কীর্দ্ধিত স্থারগণ মুনীশ কবি। গরুড়-সমান গ্রাস করিলে রাগে॥ ২ গত-ক্ৰোধ সদা তব জ্ঞানেতে ক্ছিভি 🛭 মহীভার-বিভঞ্জন জ্ঞান-খন॥ ৩ করুণাকর প্রভু রাম ভোমারে নমি। কৃত ভূপ বিভীষণে ও-পদচারী ॥ ৪ নিত নম্য হে বিভু রাম বিগত-রজ। थलदुन्त निभाष्ड मना महाकूमनी ॥ ৫ বিনা কারণে দীনের প্রতি দয়া হিত-ধাম। শোভা-আধার প্রণমি রমা সহিত জীরাম ॥ তুমি কার্য্য-কার্থ-পরে ভবের ভারণ। মন-সম্ভব নিদারুণ দোব-নাশন। ৬

<sup>•</sup> शक्किव रोगः

শর কাম্মুক মনোহর তৃণীরধারি। ञ्च-प्रन्मित ञ्चन्तत वानकी-त्रम्। অনবত্ত অতীক্রিয় খণ্ডবিহীন। যত বেদ এ ভণে নহে দম্ভ-কথা।। কৃতকুত্য শাখামুগ সকলে প্রস্তু। भंड धिकात (प्रव (प्रद कीवरन इति। এবে দীন-দয়াল এই করণা করি'। थन-मर्कन त्रक्षन त्रमा ध्रा। নূপ-নায়ক দেহ প্রভু এই বরদান।

অজ্ব-অরুণ-আঁখি ছরিভহারি॥ মোহ কাম অহং বুথা মোহের শমন ॥ ৭ সব-রূপ তথাপি কভু নহ তাহে শীন ॥ त्रवि मीखि भृषक् भूनः व्यक्षम यथा॥ ৮ সাদরে নিরুপে তব আনন বিভু॥ তব ভক্তি বিহীন মজে বিষয়ে জরি'॥ ৯ সেই বৃদ্ধি বিভেদ-করী হর ছে হরি ॥ যাহে কর্ম হা' বিপরীত করি আচরণ। ভাহে পার-হীন মুখ ভাবি' রহি নিমগন। ১০ পদ-পদ্ম স-শিব উমা সেবন-পরা 🛭 চরণাত্মজ যেন প্রেম রহে অবিরাম 🛭 ১১

দো—করেন মিনতি শোভা-পারাবারে শতদল-যোনি হেরিয়াও পাঁখি

প্রেম-পুলকিত কায়। তৃপ্তি নাহিক পায়। ১১১

## দশরবের জাগমন

অমুদ্ধের সনে প্রভু করিলেন প্রণিপাত। রাম ক'ন ভাত তব পুণ্য-প্রভাবে আজ। ভনয়-বচন শুনি' প্রেম অভি বেড়ে' যায়। জীবিত-কালের প্রীতি শ্বরণ করিয়া রাম। ভেদ-ভক্তি নুপতির জীবনে কামনা ছিল। সগুণ-ভকত যা'রা মোক্ষ কভুনা চায়। বারবার প্রভু-পদে জানা'য়ে নিজ প্রণাম।

(5)— সেই কালে দশরথ আসিলেন সেইখানে। তনয়ে নেহারি অস ভরে জাঁর চুনয়মে । ডনয় বুগলে পিতা করিলেন আশীর্কাদ ॥ ১ বিজয় ক'রেছি লাভ দশানন রক্ষ:-রাজ। সলিলে নয়ন ভরে রোমাঞ্চিত হয় কায়। ২ হেরিয়া পিভায় শ্রেডি বিভরেন দৃঢ়-জ্ঞান। এ কারণে মোক্ষলাভ ভাঁহার নাহিক হ'ল॥ ৩ নিজ-ভক্তি শ্রীরামের নিকটে ভাহারা পায়। হর্ষিত-ত্রাণ যা'ন দশর্থ সূর্ধাম ॥ ৪

## रेटल इ खन

হো-লন্ধণ সীতা-সে শোভা হেরিয়া ছু-- জন্ম রাম লোভাধার।

কুশলী কোশলপতি। সঙ্গেতে প্রভু বাসব করেন স্থাতি ৷ ১১২ হর্ষি গ্রমনে

ধৃত তৃণ শর চাপ। स्वय्र अत्र पृष्णाति । विश्वाल भरमास्त्र नाम ।

প্রণতের স্থাগার। প্ৰবল ভূত্ব-প্ৰভাপ । > রক্ষঃ মথনকারি 🛭 করিলে দেবে সনাথ 🛚 ২

| ধরাভার-হারি জন্ন।     | অপার মহিমাময়।         |
|-----------------------|------------------------|
| রক্ষঃ নি-মূলকারি।     | ছে কুপাল রাবণারি॥ ৩    |
| नक्ष्म वन-भटर्व।      | দলে শুর গদ্ধর্কে।      |
| সিদ্ধ মুনি নাগ নরে।   | হঠে অপকার করে॥ ৪       |
| পর-জোহ রভ ছষ্ট।       | পেল' ফল পাপ-পুষ্ট ।    |
| अन (र मीन-मग्राम ।    | অঞ্জ-আঁখি সুবিশাল ॥ ৫' |
| हिन साम चिमान।        | কেহ নহে মো' সমান ৷     |
| এবে হেরি' প্রস্তু-পদ। | গভ মান ত্ৰ-প্ৰাদ ॥ ৬   |
| কেহ জন্মে ধ্যান করে।  | বেদে নেভি কছে বাঁ'রে॥  |
| মোর প্রেম রাম রূপে।   | স-গুণ কোশলভূপে ঃ ৭     |
| ল'য়ে সীতা-লক্ষণে।    | রহ জাদ-নিকেত।ন॥        |
| ভেবে' মোরে নিজ দাস।   | ভক্তি দেহ এনিবাস। ৮    |
|                       |                        |

| ই—:দহ হে ভকতি       | জানকী-নিবাস             | ত্রাস-হারি স্থুখ শরণাগতে। |
|---------------------|-------------------------|---------------------------|
| ख्य-गम त्राम        | ভোমারে প্রণাম           | বহুকাম-ছবি কোশলপতে।       |
| স্থুরগণানন্দ        | বিনাশন ছম্ম             | নর-রূপধর অভুল বল।         |
| अचामि मरहम          | সেবিত অশেষ              | নমি রাম ওছে কুপা-কোমল।    |
| দে। —এবে কুপ'দৃষ্টি | করি' মোর 'পরে           | আদেশ দেহ কুপাল।           |
| কি সেবা করিব        | <b>ড</b> নি' প্রিয়বাণী | ক্রেন দীন-দহাল ॥ ১১৩      |

(5) -- রাম ক'ন স্বপতি মোর কপি ভালু যত। প'ড়ে আছে নিবাচরগণ-করে হ'য়ে হত ॥ আমার হিভের ভরে ইহারা ভাঙ্কিল প্রাণ। তান পগরাজ অভিগুড় এই প্রভূবাণী। ত্রিলোচ করিয়া নাশ শারেন প্রভূ বাঁচা'ভে। সুধা-থারে করিলেন কপি ভালু দঞ্চীবিত। সুধার বরষা হ'ল উভর দলের 'পর। ताम-मन र रेखिल तर्भ तकरमन मन। प्तर-अर्थ र 'रु काङ अक वानव मृत्य। রামের সদৃশ কেবা দীনে হিত পরায়ণ। ধল পাপাগার কামী রাবণ রাক্ষসপতি।

হ্রজান হরেশ কর উহাদের প্রাণ দান।। ১ মশ্ম ইহার শুধু বিদিত খুনিরা জ্ঞানী॥ ध ७५ डाहात मौमा वामटव लोतव मिट्ड ॥ २ উঠि' दब विशा दस धकु পদে **উ**পনাত ॥ किं छान् वाँटि अध् नत्रक बन्ननी हत् ॥ ७ मतिया भारत नरस पूर्व स्व-वद्धन ॥ ताम-देखात्र डारे नृहन कोवन शःछ ॥ 8 क्रिलिन पृक्ति नान तकः भाग विख्या । মুনিও নাপা'ন ভাহা দে লভিগ যেই গভি 🕫

#### महोदमदनत्र खन

(प)-कृष्य वत्रवि'

দেব বায় চড়ি হেরি' প্রস্তু-পাশে पिया विभान-वत्र। वामिलन मिशवत ॥ ১১৪ (क)

করবুগ জুড়ে' নয়নে ভরিয়া বারি। মহা প্রেমন্তরে কহেন ত্রিপুর-অরি ৮ ১১৪ (খ) পুলকিত ভন্ন গদগদ ভাবে

(5) — त्राथ' त्राथ' त्यारत त्राम त्राध्य-कृत्रनाग्नक । करत थता वत-ठाल मानम-ट्र भाग्नक ॥ মোহরপী মহা ঘন-জলদ-প্রভঞ্জন। गः भग्न-वनानम् (प्रवर्गन-वक्षनः ) व्यथन मधन थन-मन्दित सुमहत्। ভ্রম-ভ্রমে অভি বল ভেক্ক ভূমি দিবাকর ॥ কাম ক্রোধ মোহ মদ আদি রিপু-কুঞ্বরে। কেশরী সমান মন-থাক' জন-কাস্তারে॥ ২ বিষয়-কামনারূপী কমল-কানন ভরে। প্রবল তুষার তুমি উদার মনের(ও) পরে। ছব-নিধি-মন্দর কর দুর ছোর ভয়। ছস্তর যাওয়া-আসা কর রোধ কুপাময়॥ ৩ णामन य-करनवत्र ताकीव-नग्रनशाति । वक् मोत्नत वित्र क्षणाख्य इच्छाति॥ অমূল দয়িতা সীতা সহিত নিরস্কর। वाम कत ताका ताम मम श्रुषि-व्यञ्जत ॥ 8 मृनि-त्रथन मही-मधन मधन। कुननी मारमत व्यक्त जान-विख्यन ॥ ৫

বো-কোশল পুরীতে কুপা-পারাবার

হে প্ৰভু যখন আসিব তথম

ভিলক হ'বে ভোমার। হেরিতে লীলা উদার ॥ ১১৫

## বিভীষণের প্রার্থনা

(D)—মিনতি জানা'য়ে হর করিলা যবে গমন। প্রভুর সদনে হন উপনীত বিভীষণ ॥ চরণে নমিয়া শির কহিলেন মুত্বাণী। विधित त्रावरण मह कुल आत प्रमवन । অভি দীন বিমলিন নীচমতি হীন জাতি। এবে ভৰুতের গৃহ করহ প্রভু পাবন। मण्यम मन्द्रिय यन कति प्रत्भन। সব বিধি মোরে নাথ ক'রে লও আপনার। এ হেন মৃত্র বাণী পশিতে প্রস্তুর কাণে।

মিনতি আমার প্রভু শুন হে শাঙ্গ পাণি ॥ ১ পাবন যশেতে তব ত্রিভুবন ঝলমল। আমার 'পরেও কুপা করিয়াছ বহু ভাঁতি ॥ ২ মজ্জন করি' রগ-শ্রম কর বিদূরণ ॥ দেহ কুপাময় করি' কপিগণে বিভরণ ॥ ৩ ল'য়ে চল সাথে ক'রে কোশলপুরী ভোমার॥ कांथि-कन खंदा जन खुविमान छ'नग्रत्न ॥ 8

| দো—শুন ভাই তব   | গৃহ ধন যভ              | সভ্য মম সকল।                |
|-----------------|------------------------|-----------------------------|
| ভরতের দশ।       | মনে করি' মোর           | যুগ সম লাগে পল 🛚 ১১৬ (ক)    |
| ভাপদের বেশ      | কুশ-কলেবর              | মম নাম অবির্ভ।              |
| মরা হেরি যেন    | কর সে উপায়            | এই অমুরোধ ভ্রান্ত:। ১১৬ (४) |
| र्शिक भग-िमन    | পুরিবার পরে            | জীবিভ পা'ব না ভা'রে।        |
| ভরতের প্রেম     | শ্বরিয়া <b>গ্রভুর</b> | পুলকন কলেবরে । ১১৬ (গ)      |
| কল্প ধরি' প্রজা | করহ শাসন               | স্থ'র মোরে নিরস্তর।         |
| শেষে মমধাম      | ' পাইবে যথায়          | যা'ন যভ সাধুবর 🛭 ১৬ (ঘ)     |

#### লক্ষা কাও

#### विकोषट्वत वासन्तर्भव्य वश्च-क्षत्रकात विकत्र

(১)—বিভীষণ শুনি' কাণে পুতবাণী এরামের। হরবে পড়েন পায়ে সেই কুপা-নিদানের ॥ বানর ভালুরা সবে পুলকে অধীর প্রাণ। আবার কিরিয়া গুহে আসিলেন বিভীষণ। করেন পূষ্পক ল'য়ে প্রভুর আগে স্থাপনা। উঠিয়া বিমান 'পরে । কন স্থা বিজ্ঞীয়ণ। গগন-উপরে তবে আরোহিয়া বিভাষণ। দে লয় কুড়া'য়ে ভাহা ভাল লাগে যা' বাহার। মূবে দিয়া মণি কপি বাহিরে কেলে আবার ॥ কৌতৃক করি' রাম সীতা সহ লক্ষণ।

চরণ ধারণ করি' করে প্রভু-গুণগান ॥ ১ বিমানে ভরিয়া ল'ন মাণিক বসন ধন । করেন হাসিয়া স্থাম বচন ছেন রচনা ! ২ কর বাস অলম্ভার নভ: হ'তে বর্ষণ। করেন বসন মণি উর্জ হ'তে বরষণ॥ ৩ হাসেন কৌতুক ময় মহা কুপানিকেতন ॥ ৪

| (मी-शाम यूनि वां'रत | না প  |  |
|---------------------|-------|--|
| সেই কুপাময়         | কপি   |  |
| উমা যোগ জপ          | मान प |  |
| রামের করুণা         | ৰত ব  |  |

া'ন ভাবিয়া নেভি নেভি বেদ করে। সনে খেলা करतन व्यरमान खरत ॥ ১১৭(क) তপ নানা यस्क नियम खर्फ। নাহি হয় যত অবিচল প্রীতে # ১১৭(খ)

(5)-- খক বানরগণ বসন ভূষণ পায়। অগণিত জ্বাতি কপি করি' রাম দরশন। করিলেন দয়া-বৃষ্টি চাহিয়া সবার পানে। ভোমাদেরি বলে আমি রাবণে করি নিধন। আপন আপন বাসে এখন কর গমন। এ কথা ভনিয়া প্রেমে আকুল হ'ল বানর। যা' কিছু বলহ প্রভু সকলি শোভে ভোমারে। ত্রিভুবন-নাধ তুমি দীননাধ রমুনাধ। প্রভুর বচন শুনি' সবে মরি শঙ্জায়। 🕮রামের পানে চাহি' ঋক বানর যত।

পরিধান করি' সবে আসে জীরামের পায় 🛭 করিতে অক্ষম প্রেড় হ'ন হাসি-সম্বরণ॥ ১ কহিলেন রখুরায় কোমল বচন সনে। ভা'রপর বিভীষণে বদা'য়েছি রাজাদন ॥ ২ কা'রেও ক'র না ভয় আমারে ক'র আরণ। আদরে জ্বানায় পদে সবে করি' জ্বোডকর ॥ ৩ তব এ কথায় মোহ লাগে আমা-স্বাকারে॥ দীন বুকিয়াই কপি-সকলে কর সনাথ ॥ 8 করিতে গরুড-হিত মশকে পারে কো**থা**য়॥ গৃহ-পানে নাহি মন প্রেমে অভিভূত এত । ৫

| দো—গ্রভুর আদেশে |  |  |
|-----------------|--|--|
| হর্ষ-বিধাদ-     |  |  |
| স্থগ্ৰীৰ নীল-   |  |  |
| সহ বিভীষণ       |  |  |
| না পারে করিতে   |  |  |
| সম্মুখে চাহি'   |  |  |

| ત્રાય-દ્રાગ શ્રાપ્ત વાલ ।  |
|----------------------------|
| অনেক মিনতি করি' ॥ ১১৮(ক)   |
| व्यक्रम रुष्ट्रमान् ।      |
| সেনাপতি বলবান্ ॥ ১১৮(খ)    |
| ক্ষণেতে নয়ন ভবে।          |
| 위해를 도'7월 교1 위(NE # \\\-(항) |

ata asol acra ufal i

## त्राम मीका मक्बरभद्र करवाशांत्र भ्रमम

চৌ—ভাহাদের অভি-প্রেম করি' রাম দর্শন। স্বারে বিমান 'পরে করা'লেন আরোহণ। मत्न मत्न विरक्षत्र हत्राण त्नाग्रा नित्र। त्यमिन विभान हरण छिर्छ (चात कोलाहल। রথ-মাঝে রাজাসন উচ্চ মানসভর। দয়িতা সহিত রাম-রূপে দেই মত শোভা। ক্লচির বিমানবর বিক্রাৎ-বেগে ধায়। পরম সুখদ বচে তিনবিধ সমীরণ। হ'তে থাকে লক্ষণ স্থানর চারিধার। এই দেখ রণস্থল সীতারে প্রীরাম ক'ল। অঙ্গদ ও হতুর দারুণ আহাত-ফলে। व्यमत मृनिदत ए:थ-माछ। छाटे छूटे खन।

উত্তর দিকে রথ চালা'লেন রস্থবীর ॥ ১ জয় রম্বীর রব করিল মিলি' সকল ॥ জানকী-সহিত প্রান্ত বসিলেন ভতুপর 🛚 ২ সুমের-শিখরে ঘন মেঘে যেন ক্ষণপ্রভা ! কুসুম-বরষা করে অমর পুলক-কায় ॥ ৩ নির্মাল নীরে ভরে পারাবার নদীগণ ॥ নির্মাল নভঃ দিক প্রীত মত স্বাকার॥ ৪ এখানে করিলা বধ মেঘনাদে হক্ষণ ॥ বড় বড় রাক্ষস ঐ প'ড়ে ভূমিতলে ॥ ৫ এইখানে হত হ'ল কৃত্তকর্ণ ও রাবণ॥ ৬

| দো—হেথা সেতৃ হ'ল      | প্রতিষ্ঠিত আর | মতেশ্বর স্থ-ধাম।           |
|-----------------------|---------------|----------------------------|
| জানকী সহিত            | করেন 🎒 রাম    | মহেশ-প্রতি প্রণাম ॥ ১১৯(ক) |
| যেখানে যেখানে         | করিলেন প্রভূ  | বনে বাস বিশ্রাম।           |
| <b>(म मब (मधा</b> रेख | দেবী জানকীরে  | वरलन भवाति नाम ॥ ১১৯(४)    |

টো—অনতি কালেতে রধ চ'লে এল স্থানে দেই। অতি মহা রমণীয় দণ্ডক বন বেই। অগন্ত্য প্রভৃতি তথা যত মহাম্নিবর। সকল ঋষির কাছে লভিয়া ওড-আশীধ। তথা সম্ভোষ করি' যত মহামূনিগণে। অবশেষে দেখা'লেন জানকীরে রখুমণি। পুণ্যভোয়া গঙ্গা হ'ল পরেতে আঁখি-গোচর। এর পরে দেখা পা'বে প্রয়াগ ভীরধ-রায়। দেখিবে ভাহার পরে মহা পুত সঙ্গম। শেষে অযোধ্যার পুরী পুণিত নিরতিশয়।

সবাকার আদ্রমে যা'ন রম্ব-কুলেশ্ব ॥ ১ চিত্রকৃটে ভা'রপর আসিলেন জগদীশ। চলিল পুষ্পারথ ভীষণ বেগের সনে # ২ যমুনা কলির যত কলুষ মলহারিণী 🛭 প্রণাম করত দীতা কহিলেন রম্বর ॥ ৩ দেখা মাত্রেতে যা'র কোটি কোটি পাপ যায় । শোক-হর পরাধাম দিতে যা' সোপান সম 18 সববিধ ভাপ ভব-রোগ যথা দুর হয়॥ ৫

| ८५।गाठात्र गार्क              | অবে।ব্যাসুরারে | লামজেল ফুপাবার।                              |
|-------------------------------|----------------|--|
| নয়নেতে জ্বল                  | শরীরে পুলক     | শিহরেন বারবার ১২•(ক)                         |
| ডা'রপর প্রভূ                  | ত্রিবেশীতে আহি | দি' হরবে করেন স্নান।                         |
| কপিগণ সনে                     | বিপ্রগণেরে     | দিলেন বিবিধ দান 🛙 ১২০(খ)                     |
| চৌ-বুৰাইয়া প্ৰাস্থ রাম কচিবে | দন হকুমানে। এক | চারী-রূপ ধরি' যাও অযোধ্যার ধামে।             |
| আমার কণল-কথা ভরতেরে ও         |                | গ্রর বারতা ল'য়ে আবার ফি <b>রে'</b> আসিও । : |

শ্বরাগতি প্রস্থান করে তবে হলুমান্।
বিবিধ বিধানে পূজা করিলেন মুনিবর।
মুনির চরণ পূজি' যুক্ত করিয়া কর।
প্রস্তু শাসিলেন ইহা নিষাদ শুনিল যবে।
সেই অবসরে রথ সুরধুনী উন্তরি'।
তথন জনক-সুতা পূজি' মাতা গঙ্গায়।
হরষে আশীষ দেন হর-শির বিহারিশী।
উত্তরণ-কথা শুনি' প্রেমাকুল গুহু ধায়।
করিয়া ভাঁচার সনে জানকীরে দুহুলন।
ভাহার পরম প্রেমা নির্থিয়া রশ্বনাধ।

ভরদাক মৃনি-পাশে তখন জীরাম যান।
আশীর দিলেন তাঁরে স্কৃতি করিবার পর। ২
বিমান আরোদি' পুন: আগে যান রম্বর।
ভরী কোথা ভরী কোথা বলি' ভাকাইল সবে।
ভরিল অবভরণ কেভুর আদেশ ধরি'।
আনেক বিধানে পুন: পড়েন ভাঁহার পার। ৪
সোহাগ অচল ভব রহিবে বর-বদনি।
পুলক-বিভোর কাণে কেভুর নিকটে বার। ৫
পড়িল ধরণী পরে দেহ-বোধ বিসরণ।
পুলকে ধরেন চাপি' আপন বুকের সাধা। ৬

| ছুজানী-শির-ধন       | 🕮 রমা-রমণ     | আলিঙ্গনে ল'ন বুকেতে করি'।        |
|---------------------|---------------|----------------------------------|
| পাৰ্শ্বে বদা'য়ে    | তধা'ন কুশল    | কতে গুহ ভাবে মিনতি ভরি' <b>॥</b> |
| হেরিয়া চর <b>ণ</b> | কুশল এখন      | যে পদ সেবেন বিধাতা হর।           |
| কুখ ধাম রাম         | পরিপূর্ণ কাম  | নমি নমি ভব চরণ 'পর 🛭 🔰           |
| नियाम (य जन         | চরম অধ্য      | হৃদে ল'ন হরি ভরত-প্রায়।         |
| হীন-অভিলায          | রে তুলসীদাস   | মোহে সে প্রভুরে ভূলিলি হার।      |
| রাবণ-ভলন-           | চরিভ পাবন     | রাম-পদে রতি করতে দান।            |
| কামনাদি-হর          | ওদ্ধ জ্ঞান কর | স্থর সিদ্ধ মূনি করেন গান। ২      |

# 💐 রাম-লীলা মাহান্ত্য

| <b>দো</b> —সমব-বিজয়ী | রঘুপভি-লীলা | শুনে যেই জ্ঞানবান্।      |
|-----------------------|-------------|--------------------------|
| বিজ্ঞয় বিবেক         | বিভৃতি সভত  | দেন ভা'রে ভগবান্॥ ১২১(ক) |
| এই কলিকাল             | মলাগার মন   | দেশহ করি' বিচার।         |
| ভ্যজি' প্রভু রাম      | চির পৃত নাম | নাহিক কোন আধার ৷ ১২১(খ)  |

কলিবৃগের সমস্ত পাপধ্বংসকারী ঞ্জীরামচরিত-মানসের এই বর্চ সোপান সমাপ্ত হইল।

( লড়াকাও সমাপ্ত )

#### श्रीश्रात्मात्र नय:

## শ্রীভানকীবল্লভের ভয়

# শ্রীরামচরিত মানস

# সপ্তম সোপান

# উত্তরকাণ্ড

্লোক—ময়ুরকণ্ঠ-আভা শোভাগার-পীতবাস

> চাপ নারাচপাণি নমি হে পরম বিজু কোশলেশ ও চরণ চিস্তকের মন-ভৃক্ণ-

শহ্ম কৃন্দ বিধু-করুণার আয়তন দেবভার অগ্রগণ্য নলিন যুগল আঁখি

কপিদল-বেষ্টিভ জানকীর পতি রাম

মঞ্জু কঞ্চ থেন সঙ্গী দিবানিশি মরি

গৌর স্থল্ব কায় কমল-লোচনে নমি ভূষিত ভৃগু-পদদিফ

ম্রতি সদা স্থপ্রসন্ধ। সেব্যমান অমৃক্ষ চরণ

পুষ্পক-আরুড় ভগবন্॥ ১

স্থকোমল অজ লিব-বন্দিত। জানকী-সরোজ-কর-সেবিত।

অম্বিকার পতি সিদ্ধিদাতা।

শহর মকরকেজু-ত্রাভা।। ৩

## ভরত-বিরহ ও হলুমান-ভরত মিলন

**দো—তথু** এক দিন এ কথাই **তথু** শুভ-লক্ষণ প্ৰাভু-আগমন

অপু-আগমন হর্ম অপার যেন কাণে পশে ভর্ড-নুমুন

ওভ-লক্ষণ

রহে বাকী আর

নন্ধনারী-মুখে হেরি' চারিদিকে

যেন বা জানায়

বহি'ছে এমন আসিলেন প্রভূ

দক্ষিণ ভূজ জানি' প্ৰীত মন ব্যাকৃলিত পুরজন।

বিরহে কাতর মন॥ পুলকিত নরনারী।

রমণীয় লাগে পুরী ॥

রাম-মাভাদের প্রাণে।

বধু ও অমুজ সনে #

স্পন্দিত বারেবার।

করেন ভবে বিচার॥

(b)—প্রাণাধার গণাদিনেশ একদিন বাকী আরে। এ কথা পড়িয়া মনে বিধাদ জাগে অপার ॥ কি কারণে প্রভু ফিরে' না আসিলা এডদিন। কপট কুটিল বলি' ত্যক্ত কি দীনহীন॥ ১

<sup>•</sup> शक्कः । वात्यत्र किविवाव व्यवधाविक विद्राव ।

অনুজগণের মাঝে লক্ষন বড় ভাগী।
কপট কুটিল বলি' আমারে বুঝেন নাথ।
মোর আচরণ যদি হুদি মাঝে ভাবা যায়।
শুধু আশা ভকতের দোষ না দেখেন কড়।
সেই হেড়ু প্রোণে মম দৃঢ় আশা অভিশয়।
কিন্তু যদি গণাদিন-পরে মোর রহে প্রাণ।

(5)-হর্ষিত হয়ুমান করি' ছবি দরশন। অপার পুলক-সরে মঞ্জিত মন তাঁর। বাঁহার বিরহে প্রাণ অলি'ছে রজনা দিন। সেই রম্বুকুলমণি সক্তন-সুথদাতা। সমরে জিনিয়া অরি সহ সীতা লক্ষণ। ভরত ভূলেন খেদ বারতা করি' প্রবণ। হে ভাত কে তুমি কহ আগমন কোণা হ'তে। হে কুপানিধান শুন প্রন-ভনয় আমি। দীনের সহায় রাম রত্মপতি-কিন্ধর। মিলন-পুলক প্রেম জদয়েতে নাহি ধরে। ডোমার দরশে ছখ-নিশি আজ হ'ল ভোর। কুশল শুধা'ন ভা'রে কভই বিবিধ মতে। এ অধ্বণ-ভূধাকর সম কথা মোর কাছে। তোমার এ-ঋণ কড় পরিশোধ নাহি হয়। তখন প্রন-স্থুত চরণে নমিয়া মাথা। কহ কপি রখুমণি মহাকুপা পরায়ণ।

এ হেতু সে রাম-পদ-সরসিকে অফুরারী।
করিলেন অখীকার তাইতে লইতে সাধ। ২
শতকোটি কল্পেও নিস্তার নাহি হায়।
দীননাথ কুপানিধি কোমল-পরাণ প্রভু॥ ৩
ফিরে' পা'ব তাঁরে যেন লক্ষণ কাণে কয়॥
ডবে এ জগত মাঝে নীচ কে মম সমান। ৪

মগ্ন ভরত-প্রাণ।
উত্তরিলা হছুমান্। ১ (ক)
জটার মুকুট মাথে।
প্রেম-বারি নয়নেতে॥ ১ (খ)

(द्रामांकिक करणवंद्र मक्कण ह'ल (लाइन ॥ বলেন স-প্রেম বাণী প্রবণ-মুখ আধার॥ ১ অবিরল যাঁ'র নাম রটনায় লৌলীন। কুশলে আসেন কিরি' দেব মুনিজন-ত্রাভা॥ ২ আসি'ছেন ওই শুন জয় গা'ন দেবগণ॥ অমিয় লভিল যেন ব্যাকুল ভূষিত জন ॥ ৩ প্রবশের সুধাসম প্রিয় কথা ওনাইতে ॥ হরুমান্নাম মম কপি-জাতি রখুমণি॥৪ শুনিয়া ধরিত উঠি' ভরত মিলে সাদর॥ শিহরিত কলেবর প্রেম-নীর চ'থে বারে। ৫ তব দরশনে যেন পাইলাম রামে মোর॥ ক'ন কহ কিবা দিব এ বারতা সম্মানিতে। ৬ ধরণী মাঝারে বল স্থমধুর কিবা আছে॥ এখন প্রভুর কথা কহ মোরে সমুদয় ॥ ৭ বিস্তার করি' বলে জীরামের গুণ-গাথা ৪ কখনো কি দাস-ভাবে করিলা মোরে শ্বরণ ॥ ৮

 কখনো কি প্রাভূ বিনীত বচন শ্রীমূখে আপন সব-গুণাধার রবুকুলপতি শ্বরিলা মোরে।
পূলকিত কপি চরণে পড়ে।
বাঁ'র গুণ-গাথা সভত গা'ন।
কে হ'বে বিনীত স্থ-গুণবান।

বো-ভূমি নাথ রাম-শুনি' বারবার

প্রাণের সমান আদরে ভরত

সভা এ কথা মোর। নয়নে প্রেমের লোর॥ ২ (क)

সো-ভরত-চরণে করি' নভি কুশল-শ্ৰবণে প্ৰীত মতি

ফিরে হতুমান্ রাম-পায়। विभारन উঠেन तचुताय ॥ २ (४)

চৌ---আসিলা কোশনপুরী ভরত মোদিত মন। সব কথা গুরু-পদে করিলেন নিবেদন॥ রাণ-বাস মাঝে এই বারতা প্রকাশ পায়। এ কথা পশিতে কাণে ছুটেন জননী যত। পুরবাসী সমাচার করিয়া সবে এবণ। पूर्वा पथि शीर्वाहन नानाविध कुल कल। কনক থালায় ভরি' বত সব সোহাগিনী। যে যেমন ছিল উঠি' সেই ভাবে দৌড়ায়। যে'ডে যে'ডে এ উহারে করে এই সম্ভাষণ। অবোধ্যাপুরীতে ফিরে' আসি'ছেন প্রভু জানি'। ধরে বিমোহন রূপ পূর্ব শোভার খনি। वहिएक माशिम मुद्यमम सुत्रक्षि वाग्र।

কুশলে আসেন ফিরি' কোশলেডে রখুরায় ॥ ১ ভরত কুশল তাঁ'র নিবেদিলা কভমত॥ নরনারীগণ-প্রাণ পুলকেতে নিমগন ॥ ২ সকল ওভের মূল নবীন তুলসী-দল ॥ মঙ্গল-গান গাহি' চলিল গল-গামিনী ॥ ৩ **(इ.स. वृ**ष्णं क्लां वारम शाह (पत्री शंद्र यात्र ॥ দেখে হৈ কি ভূমি ভাই রখুকুল-বিভূষণ ॥ ৪ সর্য বিমল পুত সলিলে ভরিল কার ॥ ৫

| <b>দো</b> —হর্ষিত <b>গুরু</b> | পরিজন বভ       | অমুক্ত ভূ-সুরবৃন্দ। .   |
|-------------------------------|----------------|-------------------------|
| ভরতের সনে                     | প্রেম-ভরে যা'ন | ভেটিতে করণাকন্দ 🛚 🗢 (ক) |
| গৃহ-চুড়ে চড়ি'               | কত শত জন       | গগনে বিমান হেরে 🛭       |
| এদিকে বিমানে                  | দেব কলভানে     | মঙ্গল-গান করে॥৩ (৭)     |
| রাকা শশী রাম                  | করি' দরশন      | পুরী-সিন্ধু হরষিত।      |
| কোলাহল করি'                   | উদ্বেশ যেন     | রমণী লহরী-মত# 🛭 ৩ (প)   |

চৌ-এদিকে তপনকুল-তপনের দিবাকর। অঙ্গদ সুগ্রীব শুন লম্বার পতি। यपि देवकुर्भाम-महिमात विवत्र। সেও নহে প্রিয় এই কোশলপুরীর প্রায়। আমার জনমভূমি এই পুরী চাক্ল কারা। অভিশয় মোর প্রিয় হেথাকার অধিবাসী। বচন শুনিয়া কপি হর্মিত অভি ফুখে।

কপিরে দেখা'ন তাঁ'র নিজ পুরী মনোহর॥ পুণিত নগরী এই এদেশ পাবন অভি ॥ ১ পুরাণ বেদেতে গীত জানে তা জগত জন। অতীব বিরল জন এর গুঢ় ভেদ পায় ॥ ২ উত্তরদিকে বহে সয়য়ৄ পাবন-ভোয়া ॥ যা'র জলে অবগাহি' নিমেষে বিনা আয়াদ। আমার সমীপে জীব লাভ করে চিরবাদ ॥ ত ममशाम-व्यवाशिनो अ नगरी अथवानि ॥ थक नगरी व्यक् वाशायन निक्रमूर्य ॥ 8

काम एवन क्रांकानेने ( পूर्वक्रिय ); चाव चारवांशांभूको एवन मध्य ; পूर्वक्रिय वर्गन करियां मध्य एक चानरक केरबन बहेबा केरियारक। नाबीया त्में मानदबर कबरकब मधः

## প্রীরামচরিত মানস

## শ্ৰীরাম-ভরতাদি মিলন

| <b>দো</b> —অযোধ্যাবাদীরে | আসিতে হেরিলা    | কুপানিধি ভগবান্।          |
|--------------------------|-----------------|---------------------------|
| নগর-নিকটে                | প্রভু প্রেরণাতে | নামিল ক্ষিভি বিমান । ৪(ক) |
| উত্তরি' ধরণী             | পুষ্পকে ক'ন     | যাও কুবেরের পুরী।         |
| পুষ্পক কিরে              | মিলিত হর্ষ-     | বিরহের ভাপ ধরি' ॥ ৪ (খ)   |

🕩 🖚 🕒 🕒 ত্র সনে আসে পুরবাসী যত লোকে। কৃশ-ভমু 🕮 রামের বিরহ-জনিত শোকে। বামদেব মুনিপতি বশিষ্ঠে আসিতে দেখি'। ধাইয়া পড়েন মুনি-চরণ কমল 'পরে। কুশল শুধা'ন মূনি তুলি' করি' আলিজন। সমাগত ছিজ-পদে অবনত করি' শির। ধরেন ভরত আসি' সেই পদ-পদকে। তুলিলে না যায় ভোলা পতিত ধরণী 'পরে। ক্ম শ্রাম-কলেবরে রোমাঞ্চ দশুরুমান।

অফুজ-সহিত শর শরাসন ভূমে রাখি'॥ ১ পুলকে অবশ প্রাণ শিহর শ্রীকলেবরে ॥ কুশল করুণা তব হে প্রভু শ্রীরাম ক'ন। ২ নমেন ধরম-রত রাম রঘুকুল-বীর॥ যে পদে নমিত হর সুর মুনি আর অভেয়। ৩ कुপात निधान वरण धरतन छपरा छ। रत ॥ নবীন নলিন-চ'খে প্রেম-জলে বহে বাণ॥ ৪

| ছ—রাজীব-নয়নে   | জল-ধারা মরি     | পুলকিত দেহে লাবণী কিবা।          |
|-----------------|-----------------|----------------------------------|
| আলিঙ্গন-পাশে    | অমুজের সনে      | বাঁধা০প্রভু ক'ব কিবাদে বিভা॥     |
| সে স্থ-মিলন     | শোভার সদন       | বরণিতে কা'র শক্তি রয়।           |
| শৃঙ্গার-সনে     | ভমু ধরি' যেন    | প্রণয় মিলিয়াস্থমালয় ॥ ১       |
| কুশল ওধা'ন      | বিপুল পুলকে     | ভরতের মুখে কথা না আসে।           |
| যে পায় সে জান্ | ভাষা মনাতীত     | যে স্থ-সাগরে ভরত ভাসে॥           |
| এখন কুশল        | ব্যাকুল নির্খি' | দিলে যবে প্রভু দরশ দান।          |
| বিরহ-অততে       | ছিলাম ডুবিয়া   | হাত ধরি' তুলি' বাঁচা'লে প্রাণ॥ ২ |
| দো—অনস্তর প্রভূ | শত্রুংসুর সনে   | করিলেন আলিঙ্গন।                  |
| লক্ষণ মিলেন     | ভরতের সনে       | <b>ফুল মন ত্ইজন</b> ॥ ৫          |

(5)--লক্ষ্মণ মিলিলেন ভরত-অমুব্দে পরে। ব্দানকী-চরণতলে ভরত অমুক্ত সনে। व्यष्ट्र-भारत नित्रविद्या व्ययमिक भूतवानी । প্রাণরে বিকল সবে করি' প্রান্থ দরশন। গণনা-অভীত রূপ তখন করি' ধারণ। कृशायत्र कृशा व्यापि वत्रवंग मत्व कति'।

ছু-সহ বিরহ-জাত ছুঃখ তখন হরে ॥ শির অবনত করি' বড় সুখ পা'ন মনে ॥ ১॥ বিরহ-জনিত খেদ খুচি' মুখে ফুটে হাসি॥ पिया को ठूक **এक कत्रा'रमन पत्र**मन ॥ २ य रयमन खथा खाँत रमन त्राम मत्रमन । সবার বিপুল খেদ নিমেষে হরিল। হরি॥ ৩

এ ভাবে নিমেষ-মাঝে সব-সনে ভগবান্-। এক্সপে সবারে মুখ বিভরণ করি' রাম। কৌশল্যা-আদি মাভা ছটেন ব্যাকুল চিভ। মিলনের ভেদ উমা কেহ নাহি টের পা'ন॥ আগুদার পুরী-পানে হ'ন ভবে গুণধাম॥ ৪ বংস ভরে বংস-হারা গাভী ধায় যেইমভ॥ ৫

| ছপর-বশে যথা    | চরিতে কাননে     | ধে <del>য়ু</del> যায় ফেলি' বংসে খরে। |
|----------------|-----------------|--|
| ভ্সার করি'     | দিবা-অবসানে     | গৃতে कित्र एव छत्न छ वत्र ॥            |
| অভি প্রেম-ভরে  | মাভাগণ-সনে      | মিলি' বছ মৃত্বচন ক'ন।                  |
| বিয়োগ-ব্যসন   | সব অবসান        | স্থ-সরে এবে মগন মন॥                    |
| বে —রামের চরণে | মতি জানি' স্থতে | স্থমিত্রা মি <b>লেন স্থথে</b> ।        |
| রামেরে মিলিতে  | সংশ্বাচে ভাঙ্গে | কেকয়ীর জনি হথে॥ ৬ (ক)                 |
| মিলেন লক্ষণ    | সব জননীর        | আশীদ ধরি' মাপায়।                      |
| কৈকেয়ী-পদে    | নমি' বারবার     | হৃদি-ছোলা নাহি যায়॥ ৬ (খ)             |

(চ) — স্থানকী মিলেন যত খঞ্জাগণের সনে।
কুশল গুধা'য়ে সবে ক'ন গুভাশিস্-বাণী।
রঘুপতি-মুখশশী সবে করে দরশন।
লইয়া কনক থাল আরতি করেন উা'র।
রত্ন ধন নানাবিধ বিলা'ন কত প্রচুর।
কৌশল্যার হু' নয়ন তৃপ্তি নাহিক মানে।
চাহিয়া শ্রীমুখ-পানে অবিরত মনে হয়।
আমার এ হুইজন অতি বড় সুকুমার।

তাঁদের চবণে নমি' অতি ফুখ পা'ন মনে॥

চির সৌভাগ্যবতী হও স্বামি-সোহাগিনী॥ ১

শুভ-অবদর ভানি' করে আঁথি সম্বরণ॥

প্রভ্রেক্স প্রীক্ষর পানে নিরখে'ন বারবার॥ ২॥
পরম বিলাদ-রদ হুদেয়েতে ভরপুর॥

হেরেন ভৃষিত চ'থে বাববার বাম-পানে॥ ৩॥

কেমনে ফু'জনে করে রাবণেরে পরাজয়॥

দে রাক্ষর ভুজ্য়ে অতি বলশালী আরে॥ ৪

**দো—লন্মণ** আর সীভার সহিত পুলকে শরীর বারবার তাঁ'র প্রস্থ-পানে মাতা চা'ন। সুখ-সরে ভূবে প্রাণ॥ ৭

C5)—লক্ষার অধিপতি কপিপতি নল নীল।
হন্মান্ আদি করি' কপি-বীর সব বত।
তা'রা সবে ভরতের ত্যাগে শীল প্রায়েরে।
মোহিত নিরশি' যত নগরবালার রীতি।
তথন স্থারে সব ডাকিয়া কাছে শীরান।
ইনি প্রা কুলগুরু বশিষ্ঠ মহর্ষিবর।
অংধান মুনিরাজ এঁরা সব স্থা মোর।
জীবন আছেতি দিলা আমার হিতের তরে।
প্রভুর বচন ভানি' সকলে মোদিত মন।

জাস্বান্ বালি-স্ত অঙ্গণ শুভণীল।
ধারণ করিলা সবে আকার নরের মত।। ১
বর্ণন করে অভি প্রণরে আদর ভরে।।
প্রভূর চরণে কত বাধানে তা'দের প্রীতি।। ২
শিধা'ন মুনির পদে করিতে সবে প্রণাম।।
ত'লার কুপার বলে রবে হত নিশাচর।। ৩
হ'লেন তর্ণী-সম সমর-সাগরে ঘোর।।
ভরত হ'তেও সবে প্রিয়ন্তর লাগে মোরে।।
এইবিধি পলে পলে নব সুধে নিমগন।। ৫

#### 7-08

## ঞীরামচরিত মানস

| <b>ৰো</b> —কৌশল্যা মাতার | চরণে তখন   | করেন সবে প্রণাম।            |
|--------------------------|------------|-----------------------------|
| হর্ষি' আশীষ              | দেন রাম-সম | হও মম অভিরাম ॥ ৮ (ক)        |
| কুস্থম-বৃষ্টি-           | সঙ্গুল নভ: | গৃহে যা'ন <b>মুখ-কন্দ</b> । |
| গৃহ-চুড়া হ'ডে           | করে দরশন   | পুর-সরনারীরন্দ ॥ ৮ (४)      |

চৌ—বিচিত্র মণির সাজে সাজা'য়ে সোণার ঘট। যতনে রাখেন সবে নিজনিজ ছার-ভট । সহিত তোরণ-মালা ক্ষচির পতাকা কেত। স্বরভি সেচন করে নগরের পথে পথে। সজ্জিত চারুপুরী নানা মঙ্গল-সাজে। যথা তথা নারী করে মণি ধন বিভরণ। সালা'য়ে আরতি হেম-থালে স্থলোচনাগণ। আর্ত্তি-হরণ যিনি তাঁহার আরতি করে। নগরীর শোভা যত বিভব কি কল্যাণ। এঁরাও অ-বাক্ যবে কহিতে গুণ অগাধ।

সাজায় ভবন নিজ মঙ্গলাচার-হেতু । ১ দেয় বস্তু আলিপন গল-মোভি দিয়া ভা<sup>2</sup>ভে॥ বিপুল হরষ ভরে বিবিধ বাজন বাজে ॥ ২ শুভাশিস দান করে হরষে হ'য়ে মগন । মঙ্গল-গান গায় পরম পুলক-মন ॥ ৩ রত্ত্বল-শতদল-বিশিনের দিনকরে॥ আগম কি শেষ বাণী করিতে নারে বাধান॥ ৪ তখন নরের উমা কহ কিবা অপরাধ। ৫

| দো—অযোধ্যা সরসী       | নারী কুমুদিনী         | রামের বিরহ সূর্য্য।        |
|-----------------------|-----------------------|----------------------------|
| অস্ত গতে পুনঃ         | <b>কৃটিভেছে</b> হেরি' | রাকেশ রাম-মাধ্য্য≉ ॥ ৯ (ক) |
| <del>ওড়-লক্ষ</del> ণ | হয় অগণন              | নাগারা বাবে আকাশে।         |
| নরনারীগণে             | সনাথ করিয়া           | ভগবান্ যা'ন বাসে ॥ ৯ (খ)   |

(চী—হে ভবানি প্রভু জানি' কৈকেয়ী লঞ্জিতা। সবাকার আগে তাই গমন করেন তথা ॥ করিয়া প্রবোধ দান মহা স্থুখী করি' তাঁয়। আপেন মহলে তবে যা'ন রাম রম্বুরায়॥ ১ কুপাধাম আসিলেন নিজ মন্দিরে যবে।

পুর-নরনারী মনে অতি স্থুপ পায় তবে ॥

#### ৰামের বাজ্যাভিষেক

বিজ সকলেরে ভাকি' তথন বলিষ্ঠ ক'ন। দেহ ত্রাহ্মণগণ হর্ষে অফুশাসন। বশিষ্ঠ মুনির কথা অতি শ্রুতি-সুধকর। তথন বচন মৃত ক্রেন বিজ অনেক। কাল ক্ষয় নাহি কর এ পরম শুভকালে। मत(है) बाब बिंड शुंछ किया पिन किया करा ॥२ আক্রই করুন রাম রাকাসন আরোহণ। প্রবণে মোদিত অতি যত সব বিজ্ঞবর ॥ ৩ জগ-আনন্দ দাতা শ্রীরামের অভিবেক। এখনি ভিদক-ক্রিয়া কর শেব মহারাজে ॥ 8

বো-বাল-গুরু তবে সচিবে কছেন বাজি গল-আদি

শুনি' যা'ন প্রীত মন। দ্বার সাজা'য়ে ল'ন ঃ ১০(ক)

चारवाद्या (वन महावद, नावीशन कृष्णिनी, बाद वायहास्त्र विवृश्हे (वन पूर्व); (महे वाय-विवृश्यां चलविक इदेश वामहत्यक्रमी भूर्वप्रत्यत्र माधुर्व। (मधिया खाहाता (यन खाताव विक्रमित हरेएक्टर ।

চারিদিকে দুত পাঠা'য়ে আনা'য়ে মাক্সলিক সমুদয়। মুনির চরণম্বয় । ১০(খ) পুলকের ভরে ফিরি' পরশে'ন

(5)—মনোহর সাজে সবে সাজায় কোশলপুরী। জলের প্রপাত-ধারে ঢালে ফুর্ল অম্বরারি ॥ কছেন জীরাম ভবে ডাকিয়া সেবকগণ। अमिटक-छमिटक थात्र वागी **क्**नि मामश्रग। ডা'র পর ভরতেরে আবাহন করি' হরি। ভকত-বংসল রাম কুপাময় ভা'র পরে। ভরতের ভাগ্য স্থার তাঁ'র হৃদি-কোমলতা। म्बारिक जाशन करे। श्रृमित्मन श्रुगशाम । স্নান-শেষে স্থাভাত হ'লেন ভূষণে সাজে।

করাও স্থার সব আগে স্থান সমাপন ॥ ১ স্থাীবাদিরে হরা করায় অবগাহন। निक करत जां'त कहा मिलन त्याहन कति ॥ २ লাভা ভিনন্ধনে স্থান করা'ন যভন ভারে ॥ শত কোটি শেষ নারে কহিবারে সেই কথা ।৩ গুরুর আদেশ বাচি' স্নান সমাপেন রাম ॥ তমু-শোভা হেরি' শত অতমু মৃরছে শাবে॥ ৪

| (म-भव्यता व्यानदत | ল'য়ে জানকীরে | স্থান করাইয়া পরা।                    |
|-------------------|---------------|---------------------------------------|
| সাজা'ন দিব্য      | বসন ভূষণে     | প্রতি অংশ মনোহরা ॥ ১১(ক)              |
| শ্রীরামের বামে    | শোভেন অপার    | রমা রূপ- <b>গুণখ</b> নি।              |
| হেরি' মাভাগণ      | হর্ষে মগ্ন    | জনম সকল জানি' ॥ ১১(খ)                 |
| শুন পগরাজ         | এই অবসরে      | निव विधि भूनिवृन्तः।                  |
| আৱোহি' বিমান      | আসে দেবগণ     | হেরিবারে <del>স্থ্ধ-কন্দ। ১১(গ)</del> |

(b)--थाकृत्त नित्रि क्रित असूत्रार्ग मूनि-मन। রবি-সম ভেজ ভা'র বর্ণিতে ভাষা হারে। खनक-छृहिछ। সনে রামে করি' দরশন। বেদমপ্ত উচ্চারণ করে विक সমুদায়। विश्वि पिरम्म निरक्ष क्षथम जिनक-मान। প্রাণের তুলালে হেরি' অতি স্থাী মন মা'র। विविध विधारन मान विकाश श्रमानिना। রাজ-সিংহাসন 'পরে হেরি' ত্রিভূবন-পতি।

করা'ন ছরিড দিব্য রাজাসন আনয়ন। শ্রীরাম বসেন ভাহে ছিলেরে প্রণতি ক'রে॥ ১ অভীব মুগন-মন যত সব মুনিগণ ॥ জ্মতি জ্মতি জ্ম নভে: সুর মুনি গা'য়॥ ২ আদেশ লভিয়া পরে বিপ্রগণ আগুয়ান। প্রেম-প্রথে বারবার আর্ত্তি করেন **তাঁ**র 🛭 ৩ याहकशार्गात हित्र-व्ययाहक क्रतारेना ॥ বাদ্রা'ন নাগারা সবে অমর হরব-মডি 🛚 ৪

| নব জলধর-            | বরণ অফে           | পীতবাদে ভব-জুলান' রূপ ॥        |
|---------------------|-------------------|--------------------------------|
| রমা সনে রবি-        | বংশ-ভূষণ          | বছ কাম-সম শো <b>ভা অমু</b> প।  |
| বিরাজেন ধরি'        | চামর ছত্র         | ব্যঞ্জনী কুপাণ আয়ুধ্চয় 🕽 🤉   |
| বিভাষণ হত্ন         | কপিগণ যত          | ভরতাদি রাম-অ <b>মূক</b> ত্রয়। |
| অব্দরা নাচে         | পরমান <b>ন্দে</b> | মঙ্ক্ৰিড সুনি দেবতা-প্ৰাণ।     |
| ₹—ન(७: જ્રુમ્ત્ર્િક | বাজি'ছে বিপুল     | ত্রিদিব-গায়ক গাহি'ছে গান।     |

# শ্ৰীরাষচরিত মানস

| -                                   | N                   |                                   |
|-------------------------------------|---------------------|-----------------------------------|
| মুকুটাসদ                            | ভূষণ কতই            | প্রতি অকে মরি কি শোভা হায়।       |
| ଅଞୋକ-ଅୀବି≉                          | বিশাল বকঃ           | ভূজ ধক্ত যেবাদরশ পায় ॥ ২         |
| <b>বে</b> —দে শোভা সমা <del>জ</del> | আর সেই সুধ          | খগেশ কহানা যায়।                  |
| শ্ৰুতি শেষ বাণী                     | বাখানে সে রস        | মহেশ জানেন তা'য় 🛭 ১২(ক)          |
|                                     | চারিবেদের গুৰ       |                                   |
| পৃথক্ পৃথক্                         | শ্বতি করি' দেব      | যান নিজ নিজ ধাম।                  |
| ১ ৭ ৭ ৭<br>চারি বেদ ভবে             | চারণের বেশে         | আগত যথা শ্রীরাম ॥ ১২(খ)           |
| সর্ক-জ্ঞানী প্রভূ                   | করিলেন অভি          | व्यानत कुर्शानिनान ।              |
| কেহ না বুঝিল                        | মরম ইহার            | আরম্ভিল গুণ-গান 🛙 ১২ (গ)          |
|                                     | •                   | স-গুণ অ-গুণ স্থরণ জয়।            |
| ছ—অনুপম রূপ                         | জ্প-শিরোমণি         | ভূকবলে তুমি করিলে জয় <b>।</b>    |
| দশ-শির আদি                          | খল নিশাচর           |                                   |
| নর-অবতার                            | সংসার-ভার           | ভঞ্জিয়া হৃথ করিলে ভন্ম।          |
| হে প্রণত-পাল                        | জয় হে কুপাল        | শক্তির সহ তৃমি নমস্ত ॥ ১          |
| ভোমারি মায়ায়                      | নর সমুদায়          | স্থ্যাস্থ্য নর অচর চর।            |
| খুরে দিনে রাতে                      | ঘোর ভব-পথে          | ক্রিয়া কাল গুণে করিয়া ভর ।      |
| কুপা-আঁ।খিপাত                       | কর' যা'রে নাথ       | ছংখ ত্রিবিধ হ'তে সে তরে।          |
| রক্ষ ভব-পাশ-                        | ( <b>६</b> १ न- १ क | প্রণতি ভোমার চরণ 'পরে ॥ ২         |
| জ্ঞান-মদে যেবা                      | হ'য়ে প্রমন্ত       | পরা-ভক্তি তব ঠেলে হেলায়।         |
| দেব-ছন্ন'ভ                          | লাভয়াও পদ          | দেশা যায় চ্যুত হইতে তা'য়।       |
| ড্য <b>জি'</b> সব আশ                | হ'য়ে তব দাস        | যেবা রছে আশ ডোমায় করি'।          |
| ভরে বিনাশ্রম                        | জপি' ভব নাম         | এমন ভোমারে প্রণাম করি।। ৩         |
| পূজ্য শিব অজ                        | বে চরণ-রজ           | যা' পরশি' ভরে মুনির নারী।         |
| যা'র নথ হ'তে                        | লভিল জনম            | মূনি-বন্দিভা পাবন বারি॥           |
| ধ্বজ্ব বজ্ঞা স্কুশ-                 | ক মল-অহ             | ষে পদে বিপিনে কী <b>লক সূ</b> টে। |
| যে চরণযুগে                          | হে রমেশ রাম         | এ মানস-অলি সভত লুটে ॥ ৪           |
| বাক্যাতীতণ-মূল                      | অনাদি পাদপ          | ত্বক্ চারিঞ্বেদ আগম কয়।          |
| স্কন্ধ ছয়§ শাৰা                    | পঞ্চ-বিশ বছ         | ঘন পল্লব কুন্থ্সময়॥              |
| ভিক্ত মধুর                          | ছই ফল॥ ভা'হে        | বল্লরী এক জড়া'য়ে রহে।           |
| পল্লবিভ নব                          | পুষ্পিত নিত         | সংসার-ক্রম ¶ প্রণমামতে ॥ ৫        |
|                                     |                     |                                   |

পছচকু। । অংকুড় অফুডি। । চারিবেল। । রুক্রপন। । পাপ ও পুরা। ব মলোব-বুকরণী বিশ্বরূপ।

| হৈছজীন মন-            | অভীত ব্ৰহ্ম    | অমুভব-জেয় অঙ্গে যে বশ।  |
|-----------------------|----------------|--------------------------|
| বেষন সে জানে          | বলুক ভেমনি     | অমিড' হে গা'ব সঞ্জণ-যশ ॥ |
| কক্ষপার ধনি           | প্রভূ গুণাকর   | এই বর দাস চরণে চায়।     |
| কায় বাক মন           | বিকার ভ্যবিয়া | অনুরাগ বেন পদেই রয়॥ ৬   |
| <b>ডো</b> —সবার সকাশে | চারিবেদ এই     | উদার মিন্ডি করি'।        |
| অন্তর হ'য়ে           | করিলা প্রায়াণ | ব্রহ্মলোক-সরাসরি । ১৩(ক) |
| ত্তন বিহুগেশ          | মহেশ তথন       | আসি' জীৱামের পাশ।        |
| করিলেন স্তব           | পুলক-শরীর      | প্রেম-গদগদ ভাষ ॥ ১৩(৭)   |

#### মহাদেবের রাম-স্তব

ভব-তাপ-ভয়াকুল ত্রাহি জনং। ছ--- अयु त्राम त्रमा-त्रमणः नमनः। শরণাগত প্রার্থিত ত্রাহি প্রভু ॥ ১ व्यवस्था सूर्यम ब्रायम विकृ। অপদারক মহা মহী-ছ:খ-রাছ ॥ प्रभागीय-विभागन विश्मवाङ् । শর দীপ্ত হুতাশনে দশ্ধকারী। ২ রজনীচর-নিকর-পডঙ্গ জারি'। ধৃত শায়ক চাপ নিষঙ্গবর॥ মহীমগুল-বিভূষণ চারুতর। তম পুঞ্জে দিবাকর-ডেজ-অনী॥ ৩ মদ মোহ-মহা-মমভা-রজনী। गृग-त्नाक-श्वपट्य शिनि' निপा**छ क**द्रि ॥ মন-জ্বান্ত কিরাত কুভোগ-শরে। বধি' নাথ রাধহ দেব অনাথগণে। যত পামর বিষয়-বন-ভান্ত কনে ॥ ৪ বস্থ রোগ বিয়োগ-ছুপগ্রস্ত রহে। **७व চরণ-নিরাদর-শাস্তি সহে ॥** ভব-সিন্ধু অতল মাঝে মহুজ পড়ে भन भद्रक (श्रेम ना (य काठारत । e নাহি প্রীতি যাহার পদ-সরোজ 'পরে। অতি দীন মলিন নিত হুংখে মরে। প্রিয় সাধু পরম-ঈশ ভা'র সদনে ॥ ৬ অবলম্ব ভোমার কথা যা'র জীবনে। মদ রাগ লোভ কি মান বাকে না কদা। সম বিপদ বিভব-মুখ ভাহার সদা a पूनि पुरवन रमवाद निष्ठ सूथ-मद्ररम ॥ १ (यात्र-छत्रना छान्निया छाहे मन-हत्रः । ধরি' প্রেম নিরস্তর নিয়ম ক'রে। **পদ-পদ্ম সেবেন সদা শুক্ষিভরে s** গণি' আদর নিরাদর সমান মনে। সব সন্ত ভামেন মহী ফুল প্রোণে॥ ৮ মনি-মানগ-কমল-অলি ভোমারে ভলি। রঘু নায়ক সমর-ধীর অলেরে পুলি। জুপি ও নাম ডোমার নমি ডোমারে হরি। মহা জুল-মরণ-রোগ মান-অরি ॥ ৯ ভূমি স্থ-গুণ বিনয় কুপা পরম নিধান। আমি প্রণমি ভোমারে নিত 🕮-মভিরাম। আঁখি-কোণায় ভূপতি হের এ দীনজনে। ১০ त्रश्-नम्प नि-मृश कत षण पति । স-প্রীতি দেহ 🗒রক। যাচি হে চরণে দো—বারবার বর मना माधूकन-मन्न । >8 (क) **७ भग-मद्रांट्य** অচলা ভক্তি

## শ্রীরামচরিত মানস

70

বাধানি' মহেশ রাম-গুণাবলী ञ्च देकनाम या न। প্ৰভু ভবে কপি-গণেরে করা'ন স্থ-ভরা বাস দান # ১৪ (খ)

(5)--হে বিহগরাজ ওন ফু-পাবন এই কথা। নাশ করে তিন তাপ জন্ম-মরণ-ব্যথা॥ শুনি' কল্যাণময় গাথা-রাম-অভিষেক। श्वित लाख करत नरत वित्रांश ख्या विरवक ॥ ১ কামনার ভাব ল'যে যেবা ওলে যেবা গা'য়। মুখ সমুদ সেইখন নানা ভাঁতি পায়। দেব-ত্বন্ত সুখ হেপা করি' উপভোগ। শেষে গিয়া বাস করে শীরপুপডির লোক ৷ ২ যেবা ওনে কি বিষয়ী মৃক্ত জীব কি উদাসী। মৃক্তি ভকতি পায় নবীন বিভব রাশি। কহিলাম রাম-কণা যেইমত নিজ জ্ঞান। জন্ম মরণ ভয় ত্থ যাহা করে ত্রাণ। ৩ বিরাগ বিবেক আর ভক্তিরে দৃঢ় করে। এ ভরণী যোগে মোহ-নদীতে মানব ভরে॥ কোশলপুরীতে নিভ্য নব সমারোহ হয়। জনগণ সব বিধি হর্ষতি প্রাণে রয় ॥ ৪ নিত্য নব অমুরাগ রাম-পদ-পঙ্কলে। প্রণত যে বাঙা পায় সদাশিব মুনি অভে 1 যাচকে লভিল বহু আভরণ ও বসন। বিবিধ প্রকার দান লভেন ভূ-সুরগণ॥ ৫

## বানরগণ ও গুহককে বিদায় দান

(मा-बन्न-मूर्य मीन বানর সকল প্রভুর চরণে মন। দিন কেটে'যায় জানে না কেমনে বৰ্ষ-আধ গেল হেন ৷ ১৫

(5)-- विश्व छ शृह-कथा अनात नाहि मान । नत-हानि-कथा यथा नाहि माधू-मन काल ॥ ডাকা'ন এরখুনাথ খেষে সখা সকলেরে। পরম প্রীতির মনে বসা'ন কাছে আপন। ভোমরা সকলে যভ করিলে সেবা আমার। করিলে আমার তরে গৃহ-সুধ বর্চ্চন। রাজ্য অনুজগণ কি জানকী কি বিভব। ভোমাদের সম প্রিয় কিছুই নাহিক মম। সবারি সেবক বিশ্রে এ রীতি জগতময়।

আসিয়া আদর ভরে চরণে প্রণাম করে । ১ ভকত-সুধদ মৃত্ভাষে মধু-কথা ক'ন ॥ সমূপে কেমনে করি মহিমা বাখান ভারে ॥ ২ ভোমা-সবে প্রিয় অতি লাগে মোর সে কারণ ৷ আপন শরীর ধাম কুটুত্ব সধা যেসব॥ ৩ প্রকৃত এ কথা সভ্য নাহি করি অভিক্রম । মোর ড' দাসের 'পরে শ্রীভি নিরভিশয়॥ ৪

গৃহে ফিরে' যাও (ए)-- मथानन मत्व দুঢ়-ব্ৰডে ভব্ধ মোরে। সৰ্ব্ব-হিত জানি' मर्क्-गङ महा বেঁধ মহা প্রেম-ডোরে ॥ ১৬

(5)—শুনিয়া প্রভুর বাণী প্রেমে ভাসে সব জন। কে আমি আছি বা কোথা দেহ-জ্ঞান বিশারণ। পলক না পড়ে চ'বে করজোড়ে রহে আগে। কহিছে না আসে বাণী অভি-প্রেম অমুরাগে ॥ ১ তা'দের পরম প্রীতি করি' প্রভু দরশন। করিলেন অমুভব-জ্ঞান বহু বর্ণন ॥ প্রভুর সমূপে কিবা কহিবে নাহিক জানে। বারবার চাহে ওধু কমল-চরণ পানে ॥ ২

ভৰন আনা'ন প্রস্কু বেশ স্কৃষা ফুল্মর। প্রথমেই সুগ্রীবে ভরত আপন করে। প্রভুর প্রেরণাবশে বিভীবণে লক্ষণ। व्यक्तम निकामत्न विभिन्ना वहन-श्राय ।

नाना दर नानाविध अञ्चलम महनाइद ॥ বদন ভূবণ যোগে সাঞা'ন আদরভরে ॥ ৪ সাজা'ন নির্থি' ফুর হ'ল জীরামের মন। অসুরাগ হেরি' ভা'রে না ভাকেন রখুরায় । ৪

| দো-নীল জাম্বান্ | আদি সকলেরে       | সাজা'লেন রঘুবীর।        |
|-----------------|------------------|-------------------------|
| রাম-রূপ হাদে    | রাখিয়া চলিল     | চরণে নমিয়া শির॥ ১৭ (क) |
| অঙ্গদ ভবে       | ্ উঠিয়া প্রণমি' | জ্বোড় করি' পাণিবয়।    |
| অভি বিনম্র      | প্ৰেম-মাৰা বাণী  | সম্বল নয়নে কয়॥ ১৭ (খ) |

চৌ—শুন হে সর্বজ্ঞ মহা কুপা- রুখনিকু। আমার জনক বালি মোরে পরমাত্মন। অনাথ শবণ ওহে ভকতের হিতকারি r বল' মহারাজ বল' ভূমিই বিচার করি'। হে নাথ বালক আমি জ্ঞান মতি বল হীন। নীচ হ'তে নীচ সেব। করিব প্রহের যত।

नीनक्रत प्रामय व्याख्त वक्रा মরণে তোমারি কোলে ক'রেছেন অর্পণ ॥ ১ আমারে ঠেলো'না পায়ে আপনার পণ শ্বরি'। তুমি তাকে পিতা মাতা তুমিই আমার স্বামী। ও পদ-কমল ছাড়ি কোথা আর যা'ব আমি॥২ গৃহে মোর কিবা কাজ প্রভু তোমা পরিহরি।। রাথ হে শরণে তব ডোমার সেবক দীন । ৩ নির্ধি' কমল-পদ হ'ব ভব-উত্রিত। হে প্রস্থৃ রাধহ মোরে যাইতে ব'লো না ঘরে। এ বলি' পড়িল গিয়া রামের চরণ 'পরে ॥ ৪

| <b>দো—শুনি' অঙ্গ</b> ণ- | বিনীত বচন      |
|-------------------------|----------------|
| উঠাইয়া প্রভু           | थरत्रन कामरत्र |
| নি <b>জ গল-</b> হার     | রভন ভূষণে      |
| <b>मिट्टान विमाय</b>    | শেষে ভগবান্    |

কুপা-সীমা রখুনাথ। সঞ্জ নয়ন-পাত॥ ১৮ (ক) সাজা'ন বালির স্থতে। বুঝাইয়া নানা মতে ॥ ১৮ (খ)

(b)-छत्र नम्बन चति-स्मात नहेशा मार्थ। অঙ্গদ-হূদে ভরা ভক্তি সামাক্ত নয় ৷ रात बात पर मम मुठा'रत व्यवाम करत । রামের চাহনি-ভঙ্গি চলন কথা-ভঙ্গিমা। চাহিয়া শ্রীরাম-পানে অনেক মিনতি করি'। অভীব আদরে সব বানরে বিদায় ক'রে। ভারে পর হনুমান ধরি' স্থাীব-পায়। मिय आदा मिन मम स्मिवि शम त्रधुशि । পুণ্য-निमन्न रस् পবন-ডনর ভূমি। এন্ড বলি' চলে সব বানর ছরিত গতি।

ভকতের সেবা শ্বরি' চলেন বিদায় দিতে। ফিরে' ফিরে' বারবার 🕮রামের পানে চার 🛚 ১ মন যেন চায় রাম থাকিতে বলেন ভা'রে॥ সহাস মিলন-রীতি স্মরি' নাহি ছখ-সীমা॥ ২ চলিল জনয় মাঝে কমল-চরণ ধরি<sup>?</sup>। ভরত অমুক্ত সনে আবার আসেন কিরে<sup>9</sup>॥ ৩ মিনতি অনেক রীতি প্রকাশ করিল ডা'য় ॥ ভোমার চরণ তলে আবার করিব গভি ॥ ৪ যাও সেবা কর রাম কুপাধাম গুণমণি 🛭 অলদ ভবে এই বলে হয়ুমান-প্রতি। ৫

| দো—ওন হতুমান্       | করছোড়ে কই    | দশুবৎ 🕮 রামেরে।            |
|---------------------|---------------|----------------------------|
| ভানা হৈ। আমার       | ভা'রে বারবার  | শ্বরণ করা হৈ। মোরে॥ ১৯ (ক) |
| <b>এ</b> फ विन' हरन | বালির তনয়    | আসি' ফিরে' হতুমান্।        |
| প্ৰভূ-পাশে বলে      | ভা'র অন্ধ্রাগ | প্রেম-মগ্ন ভগবান্॥ ১৯ (খ)  |
| कर्छात्र क्लिम      | হ'তে রাম-চিত  | কোমৰ কৃত্ম হ'তে।           |
| বল' থগরাক           | কাহার শক্তি   | এ লীলার ভল পে'ডে 🛚 ১৯ (গ)  |

(5)— অবশেষে কুপাময় ভাকিয়া নিষাদরাক। প্রীতিভরে করিলেন প্রদান বসন সাক্ত ॥ গ্রহে যাও রহ মোর শ্বরণেতে নিমগন। ভরত-সমান তুমি ভাই মম তুমি স্থা। এ বচন শুনি' প্রাণে উপজিল মুখ ভারি। নিলিন-চরণ হৃদে রাখি' গুহ প্রহে যায়। প্রভূ-আচরণ কথা ওনি' কাণে পুরবাসী।

কায় বাক্ মন সনে ধর্ম কর আচরণ॥ ১ এ পুরীতে যাভায়াত রাখিয়া করিও দেখা। নয়ন ছাপিয়া পড়ে চরণ-উপরে বারি ॥ ২ প্রভুর চরিত-কথা পরিজন-পাশে গায়॥ বারবার বলে ধন্য ধন্ত রাম সুধ্রাশি॥ ৩

#### वाध-वाका-वर्धम

রাম রাজ-অভিষেক শেষ হ'লে তিন লোক। বিরোধ নাহিক করে কেহ আর কা'রো সনে।

> বরণামুসরি' অপগত ভয়

বিলাসে পুরিত হ'ল বিদ্রিত সব শোক। ভেদ-ভাব দুরে গেল রামের প্রভাপ-গুণে॥ 8

(वनविधि-त्रष्ठ लाक। নাহি রোগ নাহি শোক। ২০

সকল মানবে করে এ উহার সনে প্রীতি। পূর্ণ চারি ধর্ম-পদ সভ্য শৌচ দয়া দান। রাম-ভক্তিতে রত যত সব নরনারী। অকাল মরণ নাহি নাহিক পীড়ার ভোগ। কাঙাল নাহিক কেহ নাহি কেহ তুথী দীন। দম্ভ রহিত সবে পুত-প্রাণ ধর্মরত। গুণজ্ঞ পণ্ডিত সবে সবাই তথায় জ্ঞানী।

**চৌ—দৈহিক । দৈবিকণ ভৌতিক# তাপ তিন । রাম-রাজ্য-মাঝে কা'রো নাহি লাগে কোনদিন ॥** স্ব-ধরম রত হ'য়ে চলে মানি' বেদ-নীতি॥ ১ স্বপনেও জগমাঝে নাহিক পাপের নাম॥ সকলেই পরাগতি পাইবার অধিকারী॥ ২ সবে ফুল্বকায় শরীর বিহীন রোগ। মূর্থ নাহিক কোনো ওছ-লক্ষণহীন॥ ৩ নরনারী সকলেই স্থচতুর গুণ-যুত। নাহি কৃতন্মতা নাহি ধুর্ত্তা-ভরা প্রাণী॥ ৪

দো-নভগেশ শুন

দো-নক আশ্ৰম

मना स्थल त्रय

রাম-রাজ মাঝে সভাবৰ গুণ

চরাচর জগময়।

কৰ্ম কাল কিবা

ष्ट्रथ का'त्रा नाहि त्रत्र । २১

চৌ-সপ্ত-সাগর যা'র মেধনা এহেন কিজি। এক-ছত্র রাজা তা'র গুণাগার রমুপতি। কডই ভূবন বাঁ'র প্রতি লোমকুপে রয়। তাঁ'র এ প্রভাপ কিছু নহেক নির্ভিশয় ॥ ১

<sup>•</sup> শাৰীবিক। † দেবভাৰ কুড়। 🕽 প্ৰাকুডিক।

অপার মতিমা তাঁ'র যদি জনে গাঁথা রয়। তথাপি খলেদ যেবা জানিল মচিমা তাঁর। रेखिय-दाधकाती क'न महामृति नव। যে বিভব আর যত তথ রাম-রাজ্যে রয়। সকলে উদার আর সবে পর-উপকারী। এক জায়ারত নর তেমতি সব বনিতা।

তেন বিষয়ণে ভবে চীনভাই করা হয়॥ মহাপ্রেমে প্রাণ ডা'র ডিজা থাকে অনিবার ॥ ২ মতিমা জানিলে তবে হয় লীলা অনুভব ৷ বাস্ত্রকি কি বীণাপাণি কহিতে পারগ নয় 🛚 ৩ বিপ্ৰ-চরণে মতি যত সৰ নরনারী ॥ কায় বাক মনে নিজ পতি-ছিত-আচরিতা॥ ৪

বো-নাহি অরি নাহি দণ্ড যজি-করে

অপরাধী তথা নট-পাশে ভেদ অমুকুল সবে রয়। भारत्य कार्याक कार्य । २२

পশু পাখী পাশরিয়া হন্দ্র প্রকৃতিগত। মধুরে কৃজনে পাখী পশুগণ নানাজাতি। শীতল সুরভি বার বহে সদা মৃত্মন্দ। বিটপী লভিকা হ'তে চাহিতেই মধ ঝরে। শস্তে পুরিত ধর। হিত প্রতি নিয়ত। জগদাত্মা ভগবান জগতের ভূপ জানি'। শীতল সুধার স্বাদ পরাণ শীতলকারী। সাগর রহিত নিত নিজ মর্যাদা ভরে। কমলে কমলে ভরা যত সব জলাশয়।

(5)—বিটপী কানন ভরা ফলে ফুলে বার' মাস। কেশরীর সনে করী প্রীভিভরে করে বাস। এ উহার সনে থাকে পরম প্রণয় যুত।। ১ সকলে বিগত-ভয় বিচরে পুলকে মাতি'॥ গুঞ্জরি' চলে অলি আংরিয়া মকরন্দ ॥ ২ রসনার তপ্তিকর পয়: দান ধেমু করে। নেভায় হটল যেন সভা প্রতি-আগত ॥ ৩ প্রকাশ করিল গিরি বিবিধ মণির খনি॥ বহিত সকল নদী সুবিমল বর-বারি॥ ৪ র্ভন ছড়া'ত ভটে নরে আহরণ ভরে॥ সকল বিদিক দিক মোদিত নির্ভিশয় ৷ ৫

(मा-विश् खरत शता যাচিতে জলদ

ময়ুখে তপন অমনি বরুষে

প্রয়োজন মত ভাপ। <u>শীরম্বনাথ-প্রতাপ ॥ ২০</u>

**(5)**—কোটি অখমেধ প্রভু করিলেন সমাপন। আশার অতীত ধন লভিলেন বিজগণ ॥ (वम-भथ त्रकाकाती धर्मात धुतकतः।

গুণের অভীত আর ভোগে সম পুরন্দর॥ ১

## সীভার রাম-দেবা

পতিপদ-অমুগামী অভি কুকুমারী সীতা। বিদিতা করণানিধি 🕮 রাম-মহিমা বত।

বিমল প্রেমের খনি সুশীলা অতি বিনীতা॥ সেবেন চরণযুগ প্রাণ মনে অবিরভ ॥ ২

<sup>🍨</sup> ৰাজ্য পালনে সাম, লান, ভেল ও নও এই চারি প্রকার নীতি অবলখিত হইয়া থাকে। 🌣 ভ্রাম-বাজ্যে चांद चनवांदोरक क्थ विष्ठ क्य मां, छात्रा अथन "वक्षी"द (महार्गीद) शएक निवा केंद्रेवारकः नकरनहे चस्कृत, ভাই ভেৰ ভাৰ উঠিয়া গিয়া এখন ভাষা নতিক সমাজে ( সময়, ভেৰ, অৰ্থাৎ ভাল বাধার ) সীমাৰত চুইয়াছে ; আৰু ভয় रुविराव गंक नारे, फारे अथन बनदर क्य करारे अस्त्राज कांक।

বদিও সম্ভত গৃহ সেবক-দাসীতে ভরা। ভবু নিজ করে করি' গৃহ-সেবা সমাপন। কুপানিধি-মনোমাঝে বাহাতে হরব আসে। কোশল-ছহিতা-আদি ভবনে শ্বাশুড়ীগণে। শিব ক'ন মহাদেবি ধাতাদি পুঞ্জিতা রমা।

সববিধি সেবা-কাজে সদা অনিপুণ তা'রা 🖁 শ্রীরাম-আদেশ সীতা করেন অনুসরণ ॥ ৩ সেবা-বিচক্ষণা শ্রীর ভাহাতেই মন বাসেও। সেবেন স্বারে কিছু মদ মান নাচি মনে॥ ৪ জগত-জননী সদা অনবভা অনুপ্ৰাঃ ৫

(मी-री'त कुना-वाबि-সে-সভাব তাজি'

লালায়িত দেব রহেন চাহিয়া

নিমেষ-ভরে না পা'ন। রাম-পদে অবিরাম ১ ১৭

চৌ—অমুকৃল অমুক্তাতগণ সেবা-পরায়ণ। কখন কুপাল কা'রে করেন আদেশ কিবা। রামের হৃদয় মাঝে অনুক্র-উপরে প্রীতি। পুলক-মগন যত রহে সব পুরবাদী। দিবানিশি বিধি-পাশে প্রার্থনা করে বর।

ঞীরাম-চরণযুগে রত স্বাকার মন । এ আশায় মুখ পা'নে চেয়ে র'ন নিশিদিব। । > নিয়ত কভই মতে শিখা'ন তাঁ'দের নীতি॥ উপভোগ করে স্থর-ছন্নভ ভোগরাশি 🛚 ২ থাকে যেন অমুরাগ ব্রীরাম-চরণ 'পর।

### সন্তান-জন্ম; অযোধ্যার রমণীয়ভা

লব-কুল স্থকুমাব কুমার জানকী পা'ন। ए'रत्र व्यक्षां ना वीत विनशी यू-छनाकत। প্রতি ভাই লভিলেন ছইছই সুকুমার।

যাঁ'দের চরিত করে বেদ পুরাণেতে গান ॥ ৩ যেন শ্রীহরির ছুই প্রতিরূপ মনোহর ॥ তা'রাও সকলে শীল গুণ আর রূপাধার॥ 8

দো-জ্ঞান মতি বাণী সৎ চিৎ শ্বথ-

ইম্প্রিয়াতীত ঘন বিভু তাঁ'র অ-জ মন গুণ পা'ব। মানব-লীলা অপার ॥ ২৫

চৌ-সর্যু-ধলিলে করি' প্রভাতে অবগাহন। সভায় বসেন রাম সহ বিজ সাধুজন ॥ (वन भूतांगानि-कथा क'न मुनिभुक्रव। ভোজন করেন সব অনুজগণের সনে। অমুদ্ধ ভরত রিপু-সুদন দোঁতে মিলিয়া। বসিয়া শুধা'ন রাম-গুণ কথা প্রাণারাম। শুনিয়া বিমল গুণ অভি স্থাধে নিমগন। সবারি আলয়ে হয় পুরাণাদি কীর্ত্তিত। সকল রমণী নর রাম-গুণই গান করে।

শ্রনেন শ্রীরাম তাহা যদিও জানেন সব। ১ নির্বিয়া ভরে স্থ জননীগণের মনে ॥ সহিত প্রন-মৃত উপ্রন মাঝে গিয়া ॥ ২ সুমতি-সলিলে ডুব দিয়া কহে হয়ুমান # করা'ন মিনতি করি' বারবার কীর্ত্তন ॥ ৩ অথবা অনেক বিধি জীৱাম-কথা পুণিত 🛊 নাহি জানে দিন রাত অতীত কেমন ক'রে॥ ৪

বে—শত শেষ হারে বিরাজিত যথা

কহিতে প্রস্থার নিজে ভগবান

সম্পদ স্থধ-প্রাম। নুপতির রূপে রাম। ২৬ (5)--नात्रम भमक-वामि भूनि-व्यथिभिष्ठिशन। প্রজিদিন সমাগত সকলে কোশলপুরী। মণি হেমময় যত প্রাসাদ মানসহরা। **भूतौ-को मिरक विशः शकु অভি म**नाहत । নয় গ্রহ একযোগে সাঞ্চা'য়ে বাহিনীচয়। রভনের বস্তু চাকু চম্বর পথ-মাঝে। थवन প্রাসাদ-চূড়া অম্বরে যায় মিশি'। মণিতে খচিত বহু বাতায়ন শোভা পায়।

কোশল-অধিপ রামে করিবারে দরশন ॥ वित्रांग जुलिया या'न नित्रचिया त्म नगती । > কিবা চছর ঢালু বিধিধ রক্ষভরা। ভাহাতে রচিত চূড়া রঙ্গ রঞ্গ বর ॥ ২ অমরাবভীরে যেন চারিদিকে ঘিরে' রয় ॥ নির্থিয়া যা'র শোভা মুনির মানস নাচে ॥ ৩ কলস-আভায় যেন নিন্দি'ছে রবিশশী॥ ঘরেঘরে মণিময় প্রদীপ শোভা বাড়ায়॥ ৪

ছ--চিত্রশালা চাক্র 🗃 রাম-চরিত

E factor = first

প্ৰত্যেক গৃহে या' नित्रचि' मूनि-

27 (a) 71 211

আঁকা আছে দেসবায়। মানস(৩) হারা'য়ে যায় ॥ ২৭

(5)—কু থুম-বাটিকা চারু নিজনিজ ঘরে ঘরে। রচিল কভই বিধ অভীব যতন ভরে॥ ললিত লতিকা বছ জাতির মানসহর। মধুকর মনোহর রবে করে আলাপন। বালকেরা পালে কত বিহঙ্গ নানাজাতি। মরাল সারস শিখী-আদি করি' পারাবত। যথায় তথায় হেরি' প্রতিক্রপ আপনার। শুক ও শারিকা দলে শিখায় যত বালক। রপতি-দ্রয়ার তথা সববিধি মনোহর।

মধুঋতু-সম শোভা দেয় অতি স্থাপর ৷ ১ শীতল স্থরভি মৃত্ বহে সদা সমীরণ। কিবা শোভা করি' উড়ে কুজে শ্বমধুর অভি।২ ভবন-উপরে থাকি' বাড়ায় বা শোভা কত ॥ সুমধুর করে কৃষ্ণে নাচে ভা'রা কত আর॥ ৩ বল' রাম রখুপতি সকল জন-পালক। वीषि कि विभिन हाक होगाथा श्रम्मत ॥ 8

| <b>2</b> —14714 4164 | વદ્રાળ ના વાસ |
|----------------------|---------------|
| নূপতি ষ্ণায়-        | 🕮 রমা-নিবাস   |
| বদন-অর্থ-            | বণিক কভই      |
| কিবা নর নারী         | বৃদ্ধ বালক    |
| দো—উত্তর দিকে        | সরযু বহিছে    |
| নিৰ্শ্বিভ ঘাট        | তথা মনোহর     |

विना-मूल उथा विकाय भग्र। কে ক'বে বিভব কভ যে ধশ্য ॥ कृरवरत्रत्र व्याग्र विभूल-विश्व। স্থন্দর স্থানী সচ্চরিত্র॥ বিমল-জল গভীর। প্র-বিহীন ভার ॥ ১৮

চৌ- পুরেতে পৃথক এক ঘাট ছিল অধিষ্ঠান। জল-আহরণে নানা ছিল ঘাট মনোরম। রাজ-ঘাট সব হ'তে শ্রেষ্ঠ ও মনোহর। ভটিনীর কুলে কুলে মন্দির অগণন। কোথাও নদীর তীরে অগত গৃহ-উদাস। তুলসী গণনাহীন সংযুৱ ভীরে ভীরে।

গজ-বাজিদল জল করিত তথায় পান 🛚 স্থান তথা না করিত পুরীর পুরুষগণ ॥ ১ ব্যবহার করিত থা' সব-বর্ণের নর # ঘেরি' ভা'র চারিদিক স্থুন্দর উপবন॥ ২ छ्यान-পরায়ণ মুনি উদাসী করেন বাস ॥ রোপণ করিলা যাহা কড শভ মুনিবরে ॥ ৩ শো

নগরীর শোভা কিছু নাহি আর কহিবার। পুরী-দরশনে হয় অধিল পাপের ক্ষয়। নগর-উপাস্ত-শোভা ভাহারে। অতি বাহার। বন উপবন আর বাপীডট অলাশয়॥ ৪

| ছ—অমুপম বাপী  | তড়াগ অমুপ         | মনোহর কুপ বিশালায়তম।             |
|---------------|--------------------|-----------------------------------|
| সোপানের সারি  | স্থবিমল বারি       | হেরি' শ্বর মুনি বিমোহে মন।        |
| বিবিধ বরণ     | সর <i>সিজ্ব</i> গণ | মধুপ গুলে পাৰীরা হাঁকে।           |
| চারু উপবনে    | কোকিল-কৃজন         | পথিকেরে যেন আদরে ডাকে <b>॥</b>    |
| দা-ধথা রমাপতি | রূপতি দে পুরী      | কধন কভু কি যায়।                  |
| অণিমাদি স্থৰ- | मञ्ला महा          | কাশলেতে রহে ছা <sup>'</sup> য়॥২৯ |

চৌ— যথায় তথায় নর রঘুণতি-গুণ গায়।
ভক্ত প্রণত-পাল রঘুকুলপতি রাম।
দেই সরসিজ-আঁথি শ্রাম ব লেবরধারী।
ধৃত শর সুন্দর কার্ম্মুক আর তৃণ।
কাল-করাল ব্যাল-কাল সে খগোনেরেও।
লোভ মোহ-মুগদল-কিরাতে কর প্রণাম।
সংশয় শোক-রপ নিবিড় ভমের ভায়ু।
অনক-মুতার সনে ভবভয়-ভঞ্জন।
মনের বাসনা বহু নাশকারী হিমরাশি।
মুনিমন-রঞ্জন গঞ্জন মহীভারে।

ব'সে ব'সে এ উহারে এক শুধু এ শিথায় ॥
সেই এক রূপ শীল শোভাধার গুণধাম ॥ ১
পলক-দিঠিতে সেই ভকতের ত্রাণকারী ॥
সন্ত-কমল-রবি ধীর রণ-মূনিপুণ ॥ ॥ ২
অকাম-প্রণামে শুধু মমতা যেজন হরে ॥
মনসিজ্প-করী হরি ভকতের প্রাণারামণ ॥ ৩
দম্জ্ব-গহন খন-দহনকারী কৃশাদ্ধঃ ॥
শীরাম-চরণতলে কেন না সঁপ্র মন ॥ ৪
সভত যে এক রস অ-জনম অবিনাশী ॥
তুলসী দাসের প্রভু মহান অতি উদারে ॥ ৫

(দা—এইমত যত পুর-নরনারী অনুকৃল র'ন সবাকার 'পরে

করে রাম-গুণ গান। শ্রীরাম কুপানিধান॥ ৩০

(চ)— যখন হইছে রাম-প্রভাপ-বিহগরব।

তবে হ'তে সে প্রভাপ প্রকাশে ত্রিলোকময়।
পে'ল সন্তাপ যা'রা কহি সব পরকাশি'।
লুকাইল যথাতথা কলুষ-পেচক যত।
বাঁধনে অড়ায় যত কর্ম গুণ ও স্বভাব।
অহকার মোহ মান আর মদ-তক্ষরের।
জ্ঞান অমুভব-জ্ঞান ধর্ম-তড়াগ সাঝে।
সম্ভোষ সুধ আর বিবেক-আদি বিরাগ।

উদিত হইল বথা সুপ্রথর দিনকর ॥
বছজন সুখী এতে আর বছ তুখা রয় ॥ >
প্রথমে ত ভোর হ'ল অবিপ্রা-ভামসী নিলি ॥
কাম-ক্রোধ-কুমুদ সেরবি-তেজে কুঞ্চিত ॥ ২
সে সব চকোর-মনে ঘটিল সুখ-অভাব ॥
পূর্ণ অচল হ'ল কারিগরী উহাদের ॥ ০
বিক্ষিত হ'ল নানা শভদল নানা সাজে ॥
ইহারা বিগত শোক ধেন সুখী চক্রবাক্ ॥ ৪

কাল-কপ করাল সর্পের কাল-করণ প্রকৃত (বিনি)। † কাল-কপী হন্তীর বিনি সিংহক্ষপ । ‡ রাজসন্ধন্দী
খন বন বছবে বিনি খনল-ভূপা।

**বেনি—এ প্রভাপ রবি** বৃদ্ধি পায় যত

যাহার **হ**দয়ে শেষেতে উক্ত যখনি প্রকাশ পায়। প্রথমেরা নাশ পায় ॥ ৩১

## मनकाषित्र ज्ञाम-मकाटम आशमन

(চ)—অন্তলগণের সনে প্রান্থ একবার।
হেরিবার ভরে যা'ন স্থান্দর উপবন।
শনকাদি আসিলেন বৃঝি' শুভ অবসর।
আত্মা তাঁহা-সবাকার ব্রহ্মস্থ-সরে লীন।
যেন বা স্বব্ধপ ধরি' স্থাকাল চারিবেদ।
দিখসন সবাকার শুধু এই অন্তরাগ।
যেইস্থানে বিরাজেন জ্ঞানী কৃষ্ণজ মুনি।
গাহিলেন মুনিবর অনেক জ্ঞানা-কথা।

সহিত পরম সধা পবন-প্রিরকুমার ॥
নব-পল্লবময় পুল্পিত ভক্ষগণ ॥ ১
মুশীল স্থ-গুণ আর তেজাময় কলেবর ॥
দোধতে বালক যেন কিন্তু সবে স্পুপ্রবীণ ॥ ২
সমদর্শী তাঁ'রা সবে হুদি অপগত ভেদ ।
প্রীরাম-চরিত কথা শুনিতে সহ সোহাগ ॥ ৩
আসেন সেধান হ'তে শনকাদি হে ভ্রানি ॥
যাহাতে উপজে ভ্রান অরণিণ অনল কথা ॥ ৪

দো—মুনিগণে রাম স্থাগত করিয়া আসিতে দেখিয়া নি**ন্দ পী**তবাস

নমেন হরষ-মন। বিছা'য়ে দেন আসন॥ ৩২

(b)—তিনভাই হমুমান্ সহিত পুলকভরে।
রঘুপতি-রূপশোভা নিরধিয়া অতুলন।
অমৃজ-অম্বক নবখন-কলেবর।
অনিমেয়ে চেয়ে র'ন পলক না পড়ে কভু।
ভকতি-বিভল দশা হেরি' রাম-রঘুবর।
ধরিয়া সবার কর বসা'ন মহর্ষিগণে।
বড় ধন্ম আজ আমি হে মুনি-অধীশগণ।
বহু ভাগ্যেতে তবে সৎসক্ষ পাওয়া যায়।

মুনিগণে ভা'র পর সবে দণ্ডবং করে ॥
মগন হ'য়েন প্রেমে বশে নাহি রয় মন ॥ ১
ভবভয়-ভঞ্জন ফুচিরভা-আকর ॥
যুক্ত যুগলপাণি নভ-মস্তক প্রেভু ॥ ২
নয়নেতে জলধার শিহুরিত কলেবর ॥
কহিলেন অতি প্রোণ-মনোহারী স্ববচনে ॥ ৩
খৌত সকল পাপ করি' লাভ দরশন ॥
শ্রম বিনা যাহে ভবভয় চির নাশ পায় ॥ ৪

**ডো**—কবি পণ্ডিভ কামীদেরঞ্চ পথে সাধু**জ**নে ক'ন ভবের বাঁধন বেদ-পুরাণাদি গ্রন্থ। মোক সঙ্গে সস্ত ॥ ৩৩

(5) — প্রভুর বচন শুনি' প্রমোদিত মুনিগণ। জয়জয় ভগবান্ অন্তহীন অবিকার। জয় নিশুণি জয় জয় হে গুণ-সাগর। জয় হে কমলাপতি ধরা-ধর ডোমা জয়। জারস্কিল। স্তাভিগান অতি হর্ষিত মন॥
অপাপ অনেকরূপ অ্বিভীয় কুপাধার॥ ১
ফুপের আলয় জয় স্মৃচতুর সুন্দর॥
অনুপ জনমহীন আদিহীন শোভামর॥ ২

অগঞ্জা মৃতি । † একজাতীয় কাঠ, বাহা প্ৰশাবের সহিত বর্ষণ করিলে অন্নি উৎপন্ন হয় । ‡ কারনা-প্রায়ধ্যণের ।

অপরেরে মানদাতা মানহীন জ্ঞানময়। তৰ্জ কৃতজ্ঞ তুমি অজ্ঞানতা-বিনাশম। मर्क्तक्रभ मर्क्वगानी मर्क्वन्नि-व्यक्षितामी। দেশ্ব বিপদ যত দুর কর ভব-পাশ।

পাবন সুযশ ভব গান করে বেদচয়। অনস্ত ভোমার নাম নামহীন নির্থান 🛚 ৩ মোদের শরণে লও হে অসীম স্থরাশি । क्लि-भारक विनि' त्राम मह काम कर्त्र नाम ॥ 8

বেশ-পরা-ত্রথময় অবিচঙ্গ প্রেম কুপাধার ভূমি **७ भए-मद्राट्य** 

পুরাও মনের কাম। কুপা করি' দেহ রাম ॥ ৩৪

Сচ)—দেহ হে জানকীপতি পুণিত ভকতি তব। তিনবিধ তাপ যাহা বিনাশে দহনভব ॥ প্রণতের কামধেমু স্থর-তরু প্রার্থিজনে। এই ভব-বারিধিতে কুম্বঞ্জ-সম রাম। मन-উপজাত হথ দাহণ দীৰ্ণ কর'। বিষয়-বাসনা ভয় ঈ্রধার নিবারক। ভূপতি-মুকুটমণি অবনীর আভরণ। (र भूनि-मानममद-विनाम-भद्र मदान।

এই বর দাও প্রভু মোদের মোদিত মনে। ১ ভকত-মুলভ অতি সকল আনন্দ-ধাম ৷ হে দীন-শরণ সম-দৃষ্টি বিধান কর'॥ ২ বিনয় বিবেক ভব-বিরাগের প্রসারক॥ বিতর ভক্তি জন্ম-মরণ-বারি ভারণ 🛚 ৩ সতত পৃঞ্জিত-পদ অজ্ঞ-যোনি বিধু-ভাল। স্বভাব করম কাল গুণাদির ভক্ষক॥ ৪ ত্রাডণ তুমি তুমি ত্রাতা সকল দোষ-হরণ। তুলসী দাসের প্রভু ত্রিভুবন-আভরণ॥ ৫

দো-স্তুতি বারবার শনকাদি সবে

তপন-কুলের কেডু বেদ-পরিরক্ষক।

করি' অমুরাগে বিধি-পুরে যা'ন প্রথপমি' চরণ 'পর। লভি' মনোমত বর। ৩৫

# রাম-সকালে হনুমাম-কর্তৃক ভরতের প্রশ্ন-জিজাসা

(5)-শনকাদি মূনিগণ বিধি-লোকে গেলে চলি'। রামের অমুক্রগণ আসি' ল'ন পদধূলি ॥ প্রভুৱে শুধাইতে সঙ্কোচ রহে মনে। প্রবণ করিছে চা'ন জীমুখের বর-বাণী। व्यस्तरयाभी व्यक्त कानित्मन भव कथा। कत्रात्कारक रुष्ट्रमान् करत्र शाम निर्वापन । ভরত অমুক্ত তব চা'ন কিছু শুধাইতে। কহেন শ্রীরাম তুমি জান' ভাল কপিরাজ। প্রভুর বচন শুনি' ভরত ধরেন পায়।

প্রন-ভনয় পানে চা'ন সবে এ কারণে ! ১ যাহাতে জুড়ায় প্রাণ হয় সব ভাম-হানি॥ বলেন প্রন-মুভে ক্ছিডে মর্ম-ক্থা ॥ ২ শুন দেব দীনজনে দয়াময় ভগবন্। সক্ষোচ প্রাণে রয় তব পদে নিবেদিতে॥ ৩ কি আছে ভরতে মো'তে অন্তর **জ**গ-মাঝ k শুন হে শরণাগভ-ত্রাণকারি রমুরায়॥ ৪

(प)-नाहि नाव प्रम হে কুপা-আধার

मत्मर किंदू হরবের নিধি শোক মোহ নাহি অপনে। সে কেবল ভব অ-গুণে ৷ ১৬

७क गांवाक वांश किछ कर्किर क्कन ना (क्न, जांश केंश्रिक स्व ना । † विनि निष्म क्क ।

চৌ—করণানিধান ক্ষম' এক বাচালভা মম। **ट्र त्रभू-कृरम**त मिन निमा (यम श्रूतार्गरक। 🖲 মুখে আপনি প্রভু কর' সাধু-গুণগান। ভনিতে ভৃষিত দেব সাধুজন-লক্ষণ। সাধু ও অসাধু-মাঝে কি প্রভেদ দেখাইয়ে। 🗃রাম বলেন শুন সাধুজন-লক্ষণ। সাধু আর অসাধুর আচরণ সেইমত। পরশু ছেদন করে মলয়ের বিটপেরে।

ভকত ভোমার আমি তুমি ভক্ত-সুথ ঘন ॥ সাধুর মহিমা-গা**থা** গান করে নানামভে॥ ১ সাধু 'পরে সমধিক প্রীতিময় তব প্রাণ॥ কুপার সাগর তৃমি গুণ-জ্ঞান-বিচক্ষণ ॥ ২ रह क्षेत्रफ-भाग मारम व'रम मा**७ वृक्षाहे**रय ॥ শ্রুতি পুরাণেতে যাহা বাধানিত অমু'ধণ। ৩ চন্দন কুঠারের ব্যবহার যেইমভ । নিজগুণে সুবাসিত মলয় তা'রেই করে॥ ৪

দো—ভা'তেই আদরে পোড়াইয়া মুখ

রহে দেব-শিরে পিটান'র তথ

জগত-প্রিয় জীখণ্ড। পরত সহে এ দণ্ড ॥ ৬৭

(5) -- বিষয়েতে অ-জড়িত শীল ও গুণ-আকর। পর-ছথে ছখী অখী মখী নিরখিলে পর॥ সম ভাব অবিরোধী মদহীন অ-বিরাগী। (कांभन-भेतांग यिनि मौनखरन मना पर्या। সবে মান দেন নিজে অ-মানী থাকিয়া যিনি। বিগত-কামনা সদা মম নাম-পরায়ণ। শীতলতা সরলতা সধা-ভাব সব-সনে। এই नक्ष याँ त समरयुष्ड असू थे। সম দম বিধি নীতি-বিচলিত কছু নহে।

লোভ আর ক্রোধহীন ভয় বা হরষ ভ্যাগী॥ ১ মন বাণী কাজে মোর প্রতি মডি গত মায়া॥ প্রাণের সমান মম হে ভরত সেই প্রাণী॥ ২ শাস্তি বিনয় বিনি বিরাগ আনন্দ মন ॥ ধর্ম-দায়িনী প্রীতি বিপ্রের জীচরণে। ৩ তারেই জানিবে' তাত অকপট সাধ্জন । কঠোর বচন কভু কাহারেও নাহি কহে॥ ৪

দো—শ্বতি অবিনয় সেই সাধুজন

সমান উভয় মম প্রাণ-সম অমুরাগ চরণে আমার। গুণধাম সুথাগার॥ ৩৮

চৌ—এবে শুন অসাধুর স্বভাবের দোষ যত। ত্ব:খ-আগার সদা অসাধুর সাথে বাস। थरणत छपरा भारक निपाक्रण छान्न तरह। यमि कप्रू चारतित निम्मा खना वाग्र । কাম ক্রোধ লোভ আর অহঙ্কার-পরায়ণ। অকারণে সব-সাধে বিরোধ ভাছার রয়। মি**ধ্যার লেন-দেন মিধ্যার কা**রবার। স্থমধুর কেকা-রব ময়ুর যেমন করে।

ভ্রমেও তা'দের সাথে থেকো' না নিমেষ মৃত্য যেমন কু-গাভী করে কপিলার গুণ নাল ॥ ১ অপরের সুধ হেরি' প্রাণ ডা'র সদা দহে॥ হর্ষিত যেন পথে নিধি কুড়াইয়া পায়॥ ২ নিদয় কপট ছল কলুষের আয়তন ॥ উপকার যেবা করে ভা'রি অপকারী হয়॥ ৩ শয়নে অশনে শুধু মিথ্যার ব্যবহার॥ অথচ কঠোর প্রাণ কণীতে **অ**ঠর ভরে 🛭 ৪

(प)-- भन्न-निम्मा भन्न-পাপময় সেই

ধনে রত মন পামর মানব

পর-দার। পর-জ্যোহে। ब्राक्तम नव-१मरह ॥ ७৯

(Б)—(लाफ्टे नवन छा'त लाफ (पट-व्यावतन)। यम-छत्र नाहि व्यातन भित्नापत-अवावनक। পরের মহিমা-গান যদি কভু কাণে যায়। পরের বিপদ যবে করে সেই দরশন। অফুক্ষণ স্বার্থবৃত বাদ আত্মীয় সনে। পিতামাতা নাহি মানে নাহি মানে গুরুজন। মোহের বশেতে সদা জোহ করে পর সনে। দোষের সাগর বেন কৃট-মভি ব্যভিচারী। বিপ্রের সনে জোহ পর-জোহ সবিশেষ।

বুক ভাঙা হা-ছতাল খেদ ভরে বাহিরায়॥ ১ পরা-সুথে হয় প্রাণ পুলকেতে নিমগন । কাম লোভে বিজঞ্জি নিদারুণ ক্রোধ মনে ॥২ প্ৰভিত অধ:তে নিজে ডুবায় অপরজন ॥ সাধুসঙ্গ হরি কথা ভাল নাহি লাগে মনে ॥ ৩ (वप-विधि-निम्मक श्रवधन-अशहाती॥ দল্প কপট প্রোণে পরিধান চাক্ত বেশ । ৪

দো—এমন অধম ৰাপরেতে কিছু কুটিল মানব হইবে প্রকাশ

নাহি সত্য-ত্ৰেতাযুগে। वह रहन कशियुर्ग ॥ Ho.

সকল পুরাণ বেদে নিরূপিত হ'ল যাহা। মানব-শরীর ধরি? পরে তুপ দেয় যেই। স্বার্থ-জড়িত হ'য়ে নানা পাপ করে নরে। তা'র কাছে আমি ভাই কাল-ক্লপে প্রকাশক। অণ্ডত অথবা ণ্ডভ-ক্রিয়াফল প্রদায়ক। এ বিচার রাখি' মনে পর্ম চতুর যেবা। এ কারণে তাব্ধি' কাব্ধ শুভাশুভ-বিধায়ক। সাধু অসাধুর গুণ করিলাম বিবরণ।

টৌ—ধর্ম হেন নাহি ভাই পর-উপকার প্রায়। এমন নীচডা নাই পর পীড়া পায় যা'য়। কহিলাম ভা'ই এবে জ্ঞানীরা জানেন ভাহা॥১ জন্ম মরণ ছোর ছখ-রাশি সয় সেই।। ভা'র ফলে পরলোক-হারা হ'য়ে মুরে' মরে ॥ ২ ছুখের আগার ধরা জানি' মোর করে সেবা॥ ৩ ভজেন আমারে স্থর মানব মুনি-নায়ক। স্মরণে রাখিলে জালে নাহি পড়ে কদাচন # 8

(मी-मव मांच राग গুণ দোষ-গুণে মায়া-জাত মায়া না দেখা নয়নে

গুণ ও দোষ অনেক। (हर्य (पर्श चविरवक ॥ 8)

करत्रन विनय श्रम-भडमरम वात्रवात । নিজ মন্দিরে ভবে যা'ন রাম রখুপতি। দেবঋষি কডবার আসিয়া অবনী 'পরে। নিত নব লীলা ঋষি আসি' করি' দরশন। 🗢 নিয়া ধাডার প্রাণে পুলকের বহে ধার। भनकापि मूनि य**७ क'न ४४ (प**रश्चि। ভথাপি সমাধি ভূলি' হ'য়ে অনক্স-মন।

চৌ- সমুধ-নিংম্ভ বাণী ওনিয়া অমুক্ত যত। পরাণে পরম সুধ প্রণয় ধরে না এত। চমুমান-ছাদে বচে অপার হরষ-ধার ॥ ১ এমনি লীলায় কাল অপগত নব নিতি॥ ঞীরাম-চরিত পুত-গীত গা'ন প্রেম ভরে ॥ ২ করেন ধাতার পাশে অকপট বর্ণন ॥ ক'ন রাম-গুণগান কর' ডাড বারবার। ৩ যদিও তাঁ'-সবে সদা ধাডায় রছেন মিশি' ॥ সাদরে শুনেন রাম-গুণকথা-কীর্ত্তন । ৪

বে কেবল আহার ও ছী-সহবাদ ভালবাদে।

**(দ)—ত্রহ্ম-পর যবে** হরি-কথা শুনি'

শনকাদি শুনে ভিজে না যেজন

রাম-কথা ত্যক্রি ধ্যান। কে পাষাণ সে-সমান # ৪২

#### রামের প্রজাগণকে উপদেশ

চৌ-একবার রশ্বনাথ-আদেশ ধরিয়া শিরে। ব্যেন আসনে নিজ বিজ গুরু সভ্জন। ওনহ ওনহ সবে পুরবাসি মম বাণী। অধবা অ-নীতি নাহি প্রভুতা নাহিক তা'য়। সে-ই মম প্রিয়ভম পরম ভক্ত সেই। যদি বলি হেন কোন কথা নীভ-বিরহিত। বড় শুভ ভাগ্য-বলে মিলে'ছে এ নর-কায়। সাধন-আগার ইহা মোক্ষের সিংহছার।

ছিল গুরু পুরবাসী উপনীত রাজ-পুরে। ভক্তের ভবহারী মধুর বচনে ক'ন ॥ ১ এ বচন নাহি বলি মমতা হৃদয়ে আনি'॥ শুনিয়া বুঝিয়া কর' যা'র যা' পরাণ চায়॥ ২ আমার অনুশাসন কায়-মানে মানে যেই। বিনা ডরে সেই ক্ষণে ক'রো মোরে নিবারিত॥ঙ দেব-চল্লভ এর মহিমা সকলে গায় ৷ এ পে'য়ে যে না সামালে পরলোক আপনার ॥৪

দো—দে তথায় গিয়ে কর্ম কাল আর মাথা चूँ एए कारन বিধাতার 'পরে

করে নানা তথ ভোগ। বুথা করে অভিযোগ ॥ ৪৩

(5)—নতেক বিষয় ভোগ এ দেহ পাওয়ার ফল। স্বরগেও অল্প সুথ শেষে চুথ অরিবল। মানব-শরীর পে'য়ে ভোগেতে যে দেয় মন। পরশ মণিরে ফেলে' কুঁচ যে আদরে লয়। চৌরাশির লক্ষ♦ যোনি স্বেদ-জরাযুজ যত। মায়ার প্রেরণা-বশে স্বভাব করম কাল। অহেতৃকী-প্রেমময় করুণানিধান বিভু। মানব-শরীর ভব-সাগরের তরী সম। মুদৃঢ় তরণী 'পরে সৎগুরু কর্ণধার।

সে মৃত সুধার ভূলে বিষে হয় নিমগন ॥ ১ কোনজন ভা'রে কভু জ্ঞানবান নাহি কয়। অমর অজর এই জীব ঘুরে অবিরত॥ ২ তিন গুণ-বল হ'য়ে খুরে মরে জীব-পাল। वित्राणहे पर्या कति' नत्र-रापश रापन कडू॥ ० অমুকৃদ সমীরণ ভাছাতে করুণা মম। কঠোর সাধন এবে স্থ-সহজ্ব এ প্রকার ॥ ৪

(प)-(यक्न ना छत्त সেই মন্দমতি

ভবের সাগরে অকুডন্ত অভি পে'য়েও মানব কায়। আত্মঘাতী-ফল পায় ॥ ৪৭

(b)—(यवा এ कीवरन आंद्र भद्रालारक स्थ ठाउ। आमात्र वहन छनि' श्राल मृह (मेंरव' में अ সুলভ সুধদ পথ এ নর-জীবন কালে। তুর্গম জ্ঞান-পথ বছ বাধা সেই পথে। অনেক ক্রেশের পরে যদি বা কেচ ডা' পায়। ভকতি অ-বশ আর সকল সুধের খনি। বিপুল স্থকৃতি বিনা সম্ভ না যায় পাওয়া।

আমার ভক্তি এই বেদে ও পুরাণে বলে॥ ১ সাধনা কঠিন মন অাধার পায় ন। ভা'তে॥ ভক্তি-বিহীন ব'লে ক্রণা মম না পায় ॥ ২ সৎসঙ্গ করা বিনা কভু নাহি পায় প্রাণী। সন্ত-সঙ্গ দূর করে ভব-আসা-যাওয়া॥ ৩

সাধাৰণত: লোকে "চোরালি-লক্ষ" বোনি বলিরা থাকে ; কিছ প্রকৃত পক্ষে এই "লক্ষ" নাম্বের অর্থ পুসা।

📆 এক পুণ্য ভবে তা'র সম নাহি আর। অকপট মনে যেবা দ্বিজ্ব-পদ সেবা করে।

কায় বাক্ মনে ছিজ-পদে নতি অনিবার ॥ অমুকৃল দেব মুনি হ'ন সেই নরবরে॥ ।

দো-আর এক মত নাহি পায় নর

অভি গোপনীয় আমার ভক্তি

করজোড়ে কহি সবে। না ভজিলে মহাদেবে॥ ৪৫

(5)-বল'ত' ভকতি-পথ মাঝে আছে কি প্রয়াস। যোগ নাই যাগ নাই জ্বপ তপ উপবাস। সরল সভাব হ'বে নাহি র'বে কুটিলভা। মোর নাম দাস ধ'রে রাখে মানুষের আশ। অতি বিস্তার করি' আর কি বলিব কথা। অবিরোধী অ-বিগ্রাহ যা'র আশা ত্রাস নাই। সুখনম চারিদিক তা'র পাশে সর্ব্বদাই॥ ইচ্ছা-অভীত যিনি গৃহ-হীন মান-হান। চাতেন প্রীতিতে সদা সাধুক্ষন-সংসর্গ। ভকতি-বিষয়ে মনে বাঁ'র দৃঢ় অফুরাগ।

याहा भारत जारे उठाव कार सर्वा कर्ता व ना ॥১ তা'র ভকতির 'পরে থাকে বল কি বিশ্বাস। আমি ড' অধীন রহি আচরণ যা'র যথা। ২ অ-পাপ অ-রোষ দক্ষ বিজ্ঞানী ভকতি-সীন ॥৩ তৃণ সম যাঁর পাশে হেয স্বর্গ অপবর্গ#। শঠতা মূঢ়তা নাহি কু-তর্ক দে'ছেন ভ্যাগ ॥ ৪

(पा-भम खन-गान হৃদয়-দেবতা

নামে রতি যা'র যেজন পে'য়েছে

মায়া মদ মোহ গত। সে-ই জানে সুথ কত ॥ ৪৬

(5)-छनिया स्थात मम खीतपूनारथत वानी। জনক জননী গুরু স্থা তুমি স্বাকার। ধন ধাম তত্ত্ব রাম তুমি সব-উপকারী। তুমি বিনা কেবা আর আমাদের এ শিশা'বে। স্বার্থ-বিহীন ভবে উপকারী দুইজন। স্বার্থের সখা সব জগত জুড়িয়া রয়। প্রেমরস-উপচিত সবার বচন শুনি'। আদেশ লভিয়া তবে যা'ন সবে ভবনেতে।

চরণ-কমলে সবে নমিল প্রশি' পাণি॥ করুণানিধান প্রিয় প্রাণের অধিক আর ॥ ১ তুমি হে সকলবিধি প্রণতের ছখহারী॥ পিতামাতা-আদি সব স্বার্থ-জড়িত ভবে॥ ২ তুমি তব ভক্ত আর হে অম্বর-নিস্দন॥ স্বপনেও ভাহাদের ধরমের ভাব নয়॥ ৩ হাদয়েতে প্রমোদিত অতি রমুকুলমণি ম বিমোহন প্রভু-বাণী কীর্ত্তন করি' পথে॥ ৪

**বো**—হর ক'ন উমা নুপতি যথায়

অযোধ্যা-নিবাসী রম্বুপত্তি রাম

নরনারী সব ধস্তু। সৎ-চিৎ-সুথ ব্ৰহ্ম । ৪৭

# 🗒রাম-বশিষ্ঠ সংবাদ

চৌ—একবার আদিলেন বশিষ্ঠ মহর্ষিবর। অভীব আদর ভরে করিলেন আবাহন।

বিরাজিত য়থা রাম স্থ্যাম মনোহর 🛭 পাদোদক न'न कति' পদ-यूग প্রকালন । ১

👽ন রাম গুণধাম মুনি ক'ন করজোড। মানব-শরীরে তব লীলা হেরি' অবির্ভ। অমিত মহিমা তব বেদ নাহি জানে সামা। পুরোহিত-কার্যভার স্থির কহি নীচ অভি। কুল-পুরোহিত-ভার অস্বীকার করি যবে। পরমপুরুষ আসি' ধরিবেন নররূপ।

হে কুপা-সাগর কিছু মিনতি আছুয়ে মোর। মনোমাঝে সীমাহীন ভ্রম হয় সমুদিত ॥ ২ শঘুমতি আমি কহ কি জানিব সে মহিমা। নিন্দিত শাস্ত্রেতে বেদ কি পুরাণ খড়ি॥ ৩ বিধাতা কহেন এতে বৎস উপকার হ'বে॥ হ'বেন রাঘবকুল-বিভূষণ জগ-ভূপ । ৪

দো-তথন হৃদয়ে

সব গুডফল

করিমু বিচার লভিব ইহায়

যোগ যাগ ব্ৰভ দান। ধর্ম নাহি হেন আন॥ ৪৮

৫চী — জপ তপ যোগ-বিধি অথবা আপন ধর্ম। বেদের বিহিত আর ষত সব ক্রিয়াকর্ম॥ জ্ঞান দয়া দম কিম্বা তীর্থ-নীরে মজ্জন। আগম নিগম আর পুরাণাদি পাঠ-বলে। সে তোমার পদ্ম-পদে অমুরাগ নিরস্তর। মলিনতা অপগত ধু'লেই কি হয় মলে। প্রেম অমুরাগ-বারি বিহনে হে রম্বরায়॥ সক্ষানী ভত্বিদ পণ্ডিভ গুণধাম। দক্ষ স্থাসকণযুত অবনীতে সেইজন।

করম ধরম যাহাবলে সাধ-সজ্জন # ১ व्यथवा ध्यवरण काकु धाकरे यम छ। इ करण । সব সাধনেরি এই ওভফল মনোহর॥ ২ হবিঃ কি উপজে কড় বারি মন্থন-কলে॥ জদরের মলিনতা কখনই নাহি যায়। ৩ সেইজন শুধু খণ্ডহীন অমুভববান । তব পদ-সরোজেতে মতি যা'র অমু'ধন। ৪

ব্যো—প্রভু এক বর क्रनाम क्रमाम

করি হে কামনা তব পায়ে প্রেম কুপা করি' দেহ রাম। নাতি হয় উপরাম ॥ ৪৯

(5)—এত বলি' মুনিবর যা'ন নিজ গৃহ পা'নে ৷ করুণা-সাগর রাম প্রমোদিত অতি মনে ॥ অনস্তর ভকতের সুধদাতা রঘুনাথ। নগরের সামুদেশে সকলে করি' গমন। হেরিয়া প্রভুরে দবে প্রেমে করে জয়গান। প্রা ন্ত হেরেন নিজে ধরণীর প্রমহারী। ভরত দিলেন নিজ উত্তরী বিচাইয়ে ৷ আপনি পবন-স্তুত ব্যঞ্জন করেন তাঁ'য়। হে ভবানি তাঁ'র সম ভাগ্যবান নাহি আর। আপনি জীরাম তাঁ'র সেবার মহিমা-গান।

হমুমান ভরতাদি অহুজে শইয়া সাথ॥ ১ আদেশে'ন রথ গঞ্জ করিবারে আনয়ন 🛭 याहरकदार रम मकरण श्रुमरक करतन मान ॥ २ স্থাতিল আত্রবনে যা'ন রাম ধরুধারী ॥ বাসলেন প্রভু ভা'য় সেবেন সকল ভা'য়ে ॥ ৩ পুলকিত কলেবর প্রেমবারি আঁখি ছা'য়॥ রামের চরণে ছেন অচলা ভক্তি যাঁ'র॥ এ বারবার নিজমুখে পুলকে করেন গান ॥ ৫

(प)-(महे व्यवमात গা'ন স্থমধুরে দেবঋষি আসি' প্রাণ মনোহর

করতলে ধরি' বীণ। এরাম-কীর্ত্তি নবীন। ৫০

#### मात्रदणत त्राय-मकारम जाश्यम ও खब

নীল-সর্সিজ শ্রাম অতমু মনোজ-অরি-। রাক্ষস নিশাচর দল-বল-ভঞ্জন। তৃষিত বিপ্র-প্রাণে নব জল প্রদায়কণ। বিপুল ধরার ভার ভুক্তবলে খণ্ডিত। রাবণ অরাভি তুমি স্থবরণ ভূপবর। ভোমার মহিমা গা'ন পুরাণ নিগমাগম। পরম করুণাময় বুথা মদ-খণ্ডন। মমভা-হরণ নাম কলিমল-মর্দন।

श्रमग्र-कश्र-मकत्रम्य-मधुश हदि। ) সাধু মূনি রঞ্জন কলুষ বিভঞ্জন ॥ অ-শরণ-শরণ হে দীনের পরিপালক ॥ ২ বিরাধ দ্যণ খর-নিস্দন পণ্ডিত । জয় দশরথকুল-কুমুদের সুধাকর 🛭 ৩ গা'ন সব সুর মুনি সাধ্জন-সমাগম ॥ কুশলী সকল বিধি অযোধ্যার আভরণ॥ ৪ जूननी नारमत टाजु तक' टान्डकन ॥ e

দো-প্রেমেতে মাতিয়া জদে ধরি' রূপ

দৈব ঋষিবর শোভার আধার

বাখানিয়া ঋণগ্ৰাম। যা'ন চলি' বিধি-ধাম । ৫১

## হর-পার্বভী সংবাদ

চৌ—অবধান কর সতি বিস্তারে এই কথা। জ্ঞীরাম-মহিমা-গ্রাম করিবারে কীর্ত্তন। সীমাহীন সীভাপতি অগণিত গুণ ডাঁর। मिलात क्या किया धूनि यनि श्या यात्र। স্থবিমল এই কথা হরি-পদপ্রদায়িনী। প্রবেশের প্রীতিকর কহিলাম সব কথা। রাম-গুণকথা কিছু কহিনু সংক্ষেপ ক'রে। এ প্রম কথা ক্রমি হর্ষিতা উমা অভি। ধস্য ধস্য আমি শত ধস্য ত্রিপুরারি।

সকলি কহিনু ভোমা মোর অমুভব যথা : না পারে বাম্বকি বাণী শতকোটি অগণনঃ ১ জন্ম কর্ম নাম সব(ই) গণ্নার বা'র ॥ তথাপি রামের গুণ কহিলে না শেষ পায় ॥ ২ অচলা ভকতি জাগে এ গুণ-কাহিনী গুনি'। গরুড় বিহগরাজে ভুষুণ্ডি কহিল যথা। ৩ যা'কহিবে হে ভবানি কহিব ডা' এর পরে॥ কহিলেন মুত্তভাবে করিয়া অতি মিনতি॥ ৪ শুনিলাম রাম-গুণকথা ভব-ভর্যারী 🛚 ৫

| <b>দো—কুডার্থ কুপা</b> য় | হে ক্বপা-নিশয় | মোহ-অপগত মন।             |
|---------------------------|----------------|--------------------------|
| জানিলাম প্রভু             | ঞ্জীরাম-প্রভাপ | জ্ঞান ও আনন্দ-ঘন। ৫২ (ক) |
| ভব মুখশশী-                | বিচ্যুত স্থধা- | সম কথা-রখুবীর।           |
| শ্রুতিপুটে পান            | করিয়া এ মন    | তৃপ্ত নহে মভি-ধীর ৫২ (খ) |
|                           |                |                          |

প্রাণ যা'র ভ'রে যার জ্রীরাম-মহিমা ওনে'। मूनि-त्अर्थ यिनि मूक जीवकारण यरेजन।

ভাহার বিশেষ রস কিবা সে নাহিক জানে ! তনেন ঞ্ৰীহরি-গুণকথা তিনি অমুক্ষণ। ১

<sup>•</sup> ८६ हरि ! फूमि नील-कमरलन मक भाग-काव, जार कामरलर-जित महास्तरत खनव-कमरलन मनु ( ध्यान-सनु ) शाकारी अवत-चत्रण। † वृष्टन (मरचर चत्रण)

ভবের বারিধি পার হইতে যে লালায়িত। বিষয়ী জনের তরে ঞ্জিহরির গুণগ্রাম। শুবণ-শকভিধর কেবা আছে লগ-মাঝে। রষুপতি-গুণগাধা না লাগে মধুর যা'র। শুহরি-চরিতগাধা করিলে যা' কীর্তন। ভূমি যে কহিলে এই চরিত মানসহর। রাম-কথা তা'র পাশে স্থৃদৃঢ় তরণী-মত।
শ্রবণ-স্থদ অতি আর মন-অভিরাম। ২
রামের মহিমা যা'র মধুর না কাণে বাজে।
শাস্থ-হনন সেই মৃঢ় করে অনিবার। ৩
শ্রবণ করিয়া নাথ অমিত পুলক-মন।
গঙ্গুড়ে কহিল যাহা ভুষুণ্ডি থগবর। ৪

পৌ—কাক-কলেবরে বিজ্ঞান বিরাগ শ্রীরাম-ভক্তি দৃঢ়-জ্ঞান পে'ল চরণে গভীর রতি। এড়ে সম্পেহ অভি॥ ৫৩

চৌ—সহত্র নর-মাঝে শুন প্রভু ত্রিপুরারি।
কোটি ধর্ম-শীল-মাঝে অভিশয় অরজন।
নিগম এ কথা বলে কোটি বিরাগীর মাঝে।
জ্ঞানবান্ কোটিজন মাঝে জ্ঞাবন্মুক্ত কেছ।
ডেমন সহত্র মাঝে সকল সুখ-আকর।
ধর্ম-অমুরাগী আর আসক্তি-হীন জ্ঞানী।
ভা' সবার মাঝে প্রভু ত্প্প্রভি সেইজন।
হরির ভক্তি হেন কি প্রকারে কাক পে'ল।

বিরাজে বিরল যেবা রহে ধর্ম্ম ব্রত ধরি' ॥
বিরাগ-সংযুক্ত হ'য়ে বিষয়ে অ-রত মন ॥ ১
প্রাকৃত জ্ঞানাধিকারী অভীব বিরল আছে ॥
অভীব বিরল ভবে ভাহে নাহি সন্দেহ ॥ ২
ব্রহ্ম-পীন বিজ্ঞানী মেলা অভি হুছর ॥
জীবদ্মুক্ত আর ব্রহ্ম-পদে লীন যেই প্রাণী ॥ ৩
শ্রীরাম-ভকভি-রত গত মদ-মায়া মন ॥
ভব নাথ কুপা করি' দাসীরে বুঝা'য়ে বল' ॥ ৪

দো--রাম-পরায়ণ বল' নাথ সেই জ্ঞান-রত যেবা কিসের কারণ গুণধাম মতি ধীর। লভিল কাক-শরীর॥ ৫৪

(5)—প্রভুর রচিত-কথা এই মহা পুণামর।
তুমিই বা কি প্রকারে শুনিলে এসব গাধা।
গরুড় ত' মহাজানী আর সব গুণ-রাশি।
দে-ই বা কি কারণে ছাড়ি' বত মুনিগণে।
বল' নোরে কি প্রকার কথা প্রতি-উন্তর।
শুনিয়া উমার বাণী সরল মানসহরা।
ধক্ত সতি ধক্ত তব প্রাণ অতি পুণাময়।
শুনহ পরম পুণাময় এই ইতিহাস।
উপজে রামের পদে বিশাস অমুপম।

কাক কোথা হ'তে পে'ল বল' ইহা কুপামর॥
বড় কুত্হল প্রাণে শুনিবারে সেই কথা॥ ১
প্রীহরি-সেবক তাঁরে অভীব নিকটবাসী॥
যাইয়া কাকের পাশে হরির মহিমা শুনে॥ ২
হইল শুকতে চুই কাক ও বিহগবর॥
ফুল্ল-হুদরে হর বলেন আদর-শুরা॥ ৩
প্রীরাম-চরণে প্রেম ডোমার ড' কম নয়॥
যা' শুনে' সকল-লোকে হয় শুম-ভুমোনাল॥ ৪
ভবনিধি ভরে নরে বিনা লেশ-পরিশ্রম॥ ৫

**ডো**—এমনি প্রশ্ন অভীব আদরে · कतिन शक्र् कहि (म मक्न বায়স-সদলে গিয়া। শুন উমা মন দিয়া। ৫৫

দক্ষ-আলয়ে আগে এসে'ছিলে একবার। দক্ষ-যাগ মাঝে তব হ'য়েছিল অপমান। সে যাগ করিল নাশ মোর অফুচর যত। তথন মনেতে প্রিয়ে হ'য়েছিল অভি শোক। স্থন্দর গিরি বন সারত ভডাগচয়।

(5)-এ ভব-মোচন কথা যেক্সপে এ'ল প্রবণে। সে কাহিনী শুন তবে হে সুমূবি সুলোচনে । সে জনমে সভী-নামে প্রচার ছিল ভোমার ॥ ১ নিদারুণ ক্রোধে তুমি তাজে ছিলে নিজ প্রাণ। সে সকল কৰা তুমি সবিশেষ অবগত ॥ ২ হ'য়েছিমু অতি ছখী সহিয়া তব বিয়োগ। ফিরিয়া বিরাগ-ভরে হেরি কৌতৃকচয় ॥ ৩

## কাক-ভুষুতির উপাধ্যান

গিরিবর স্থমেরুর দূরে উত্তরভাগে। ক্মকের আভাময় চূড়া তা'র মনোরম। ভাহাদের 'পরে ক্রম এক এক অভিকায়। ভূধরের 'পরে শোভে সরোবর স্থন্দর।

অতি মনোহর নীল পর্বত এক জাগে॥ তা'র মাঝে চারি চূড়া লাগে মোর বিমোহন ॥ ৪ অংশথ পাকুড় বট সহকার শোভা পায়। মণি-সোপান দেখি' বিমোহিত অন্তর ৷ ৫

দো-শীতল কোমল তুলি'ছে মরাল

স্থমধুর জল স্পলিত রব সরসিজ নানারজ। গুলে মঞ্ ভ্লা ৫৬

চৌ—সেই পর্বত 'পরে বিরাজে বায়সবর। মায়া-জানিত বহু গুণ কিবা দোষচয়। সে গিরির নিকটেতে কদাচ নাহিক আসে। ভখায় নিবসি' কাক যেভাবে হরিরে ডাকে। थाक त्र व्यथ्य-मृत्य महाशास्त्र निमर्गन। মানস-পূজন সারে সহকার ভরুমূলে। বটতক্ল-তলে করে হরি-কথা কীর্ত্তন। অভিনৰ দীলা-গাথা সদা অতি সমাদরে। মরাল বিমল মতি সবে তা' করে এবণ। হেরিত্ব সে কৌতুক তথায় গমন করি'।

কর-শেষেও তা'র নাহি নাশ কলেবর ॥ মোহ মন-জাত আদি অবিবেক যত রয়॥ ১ চির শাস্তি পাবনতা সতত তথায় ভাসে॥ অমুরাগ-ভরে শুন কহিব উমা তোমাকে॥ ২ পাকুড়ের তলে করে জপ-যাগ সমাপন ! আর কাজ নাহি তা'র হরির ভজনা ফেলে। ৩ আসে তথা শুনিবারে বিহুগেরা অগণন। নানাভাবে গান করে খগবর প্রেমভরে ॥ ৪ সেই সরোবরে যা'রা বাস করে অফুক্ষণ । অভীব পুলকে মোর হৃদয় উঠিল ভরি'॥ ৫

**ছো-**মরাল-আকার আদরে শুনিয়া

ধরি' কিছুকাল রাম-গুণগান

তথা করিয়াছি বাস। ফিরিয়াছি কৈলাস॥ ৫৭

## গল্পড়ের মোহ

(5)—বলিলাম ভোমা উমা সেই সব ইতিহাস। ধগবর-নিকটেতে যধন করিয় বাস ॥ এবে ওন সেই কথা কাক-পাশে যেই হেডু। রছনাথ দীলা হেন করিলেন যবে রণে। वन्ती इ'लान निष्य प्रचनात्र-वाङ्यल ।

যাইল গরুড় চরাচর-খগকুল-কেড় ৷ ১ শ্মরণ হ'লেই বাহা বড় লাজ পাই প্রাণে । পাঠা'লেন গরুড়েরে দেবঋষি সেইকালে ॥ ২

নাগপাশে ত্রাণ করি' প্রক্রুরে গরুড় যায়। প্রভূ-বন্ধন কথা নানাভাবে শ্বরি' মনে। **बन्ध** यिनि वानी मन-वडीड विकादशीन। ভেবে'ছিম্ব এসে'ছেন ডিনি এই ধরা 'পর।

প্রবল বিষাদ ভা'র অস্তর মাঝে ছায় ॥ গরুড বিচার করে মনোমাঝে স্বভনে। ৩ চরাচর-ব্যাপ্ত মায়া-মঙাত আপন-দীন ম এবে দেখি সে প্রভাব নাহি এক কণা ভর 18

বে —ভবের বাঁধন ছার রাক্ষ্স

হয় বিষোচন वाँ धिन कर्छा इ

জপ করি' ধার নাম। নাগপাশে সেই রাম # ৫৮

বিষাদে বিষণ্ণ মন কুতর্ক উঠায় শত। অভীব বিকল হ'য়ে দেবঋষি-পাশে যায়। নারদের মনে শুনি উপজে করুণা অতি। যে মায়া-চলনে কত জ্ঞানী পরাভব পায়। যেই মায়া আমারেই নাচাইল কতবার। গকড় যে মহা মোচ তব মন ছে'য়ে রয়। দেব-পিভামহ পাশে যাও হে বিহগরাজ।

চৌ—নানামতে বুঝাইল গরুড় আপন মনে। জ্ঞান নাহি জাগে তবু অম নাহি প্রশম্পে । হ'য়েছিল ভ্ৰান্ত মন উমা তব যেইমত ৷ ১ উদঘাটি' कृषि वाथा निरंतमन करत्र भाग्र ॥ ক'ন ধীরে রাম-মায়া কহি শুন প্রপতি 🛚 ২ স্থগভীর মোহ-জালে বিজ্ঞড়িত করে যা'য় । সেই মায়া-বিজ্ঞড়িত তুমি এবে খগবর॥ ৩ আমার কথায় তাহা দুরিত হ'বার নয়॥ যেমন আদেশ তা'র সেইমত কর কাল। ৪

**দো**—এতেক কহিয়া গেলেন চলিয়া

হরি-মায়া বল দেব-ঋষিবর

বর্ণিয়া বারবার। গাচি' রাম-গুণ সার ॥ ৫৯

চৌ--গরুড তখন যার বিধাতার নিকেতনে। রাম উদ্দেশে বিধি নমিত করেন শির। বিধাতা বিচার তবে করেন আপন মনে। হরির প্রেরিভ মায়া অমিত প্রভাব ভা'র। আমারি সঞ্জিত যবে চরাচরময়ী ধরা। এত ভাৰি ক'ন বিধি এ বচন স্থব্দর। খগরাজ যাও তুমি দেবেশ শিব-সদনে। সেইখানে হ'বে ভব সংশয় নিবারণ।

নিজ সন্দেহ খুলে' বলে তাঁ'র জীচরণে ॥ প্রভাপ ব্রিয়া প্রেমে শিহরি' উঠে শরীর 🛚 ১ সকলেই মায়া-বশ কি পণ্ডিত জ্ঞানিজনে ! মোহিত প্রভাবে যা'র আমি নিজে কতবার ৷ ২ অভিনৰ কিবা ইচা বিমোহিত হ'বে তা'রা ম শ্রীরাম-মহিমা গুঢ় অবগত শব্ধর ॥ ৩ এ পরম প্রশ্ন যেন ক'রো না অপর জনে ॥ চলিল গরুড ছাড়ি' বিধি-লোক মান মন॥ ৪

(শা-পরম আতুর কুবের-সদনে

বিনতা-ভনয় याहे यत्व स्मिव আসিল আমার পাশে। রাখি' ভোমা কৈলালে ॥ ৬•

**(5)—সাদরে আমার পারে শির অবনত করি'। বলে শে**ষে আপনার সন্দেহ বিস্তারি'॥ ভাহার সে দীন ভাষা ভাহার বিনীভ বাৰী। মিলে'ছ বিহুগরাজ প্রিমাঝে আমি হেখা। क्रथन इंडेरन खन मध्यम मन छन ।

**अ**निया जामत छात कशिमाम (ह छवानि ॥ ) কেমনে বিশদ ক'রে বুঝাইব সব কথা ! বছকাল ধ'রি যবে আচরিবে সংসম # ২

স্থমধুর হরি-কথা করহ প্রবণ তথা। যে মহিমা-কথনের আদি মধ্য অবসান। যথায় হরির কথা নিভপ্রতি হয় ভাতা। শুনিয়া হইবে ডব সংশয় নিবারণ।

কভমতে মূনিগণ গান যথা গুণ-গাথা। প্রতিপাদ্য শুধু এক প্রস্তু রাম ভগবান্ 🛚 ৩ ভনিবারে একমনে পাঠা'ব ভোমায় তথা। উদিবে চরণ-যুগে অমুরাগ অতুলন 🛭 ৪

(ए)- मरमक विना মোহ না খুচিলে

না হরির কথা রামের চরণে

ভা' বিনা মোহ না যায়। দৃঢ় প্ৰেম নাহি পায়॥ ৬১

উত্তর-অভিমূথে নীল গিরি মনোহর। ব্ৰীরাম-ভক্তি পথে অতীব প্রবীণ তিনি। অবিরশ রাম-কথা সুধা পানে নিমগন। তাঁ'র পাশে গিয়া শুন হরি-কথা স্থমধুর। বুঝাইতে এই ভাবে শুনিয়া ধৈৰ্য্য ধরি'। রামের কুপায় এর ভেদ স্থবিদিত মোর। ভগবান খুচাইতে চা'ন তা'র অভিমান। অপর কারণ ভা'রে পাঠা'তে কাকের পাশে। 🕮 হরির মারা শিবে বলবতী অভিশয়।

**টৌ—থাণে অনু**রাগ বিনা নাহি মিলে রমুপতি। আচর যতই যোগ জ্ঞান তপ কি বিরতি a যাও তথা যথা কাক ভুষুপ্তি সুশীলবর ॥ ১ সকল গুণের ধাম প্রাচীন পরম জ্ঞানী। শুনে যত বিহগেরা সাদরে পুলক-মন॥ ২ অপগত হ'বে মোহ ছ:খ হইবে দূর 🛭 চলিল পুলক ভরে আবার প্রণাম করি'॥ ৩ গরুড়ের মনে বৃঝি আছে অভিমান ঘোর॥ বিরত হলা'ম তাই দিতে উপদেশ দান॥ ৪ যে যাহার নিজ ভাষা বুবে ভাল অনায়াদে॥ জ্ঞানী আছে কে এমন মোহিত যে নাহি হয়॥ ৫

কুল-শিরোমণি **দো—জানী** যে ভকত-হরির বাহন যেই। করে মৃঢ় নর অহন্ধার কিবা মায়া-পাশে বাঁধা সে-ই॥ ৬২ (ক) ৰিমোহিত যবে বিধাজা মছেশ कि कथा चशत खता। ভৰেন মুনিরা মায়াপতি এই সার কথা রাখি' মনে ॥ ৬২ (খ)

## গৰুড়ের কাক ভূষভির নিকট গমন ও রাম-কথা প্রবণ

চৌ — সুষু তি যথায় থাকে গরুড় তথায় যায়। পড়িতেই চ'ঝে গিরি অমনি মোদিত মন। তভাগেতে স্নান করি' জগ পান করি' ভা'র। তথা সমাগত সব স্থবির বিহগ যত। পুণিত লীলার কথা স্থুক হওয়া-অবসরে। গরুড় বিহগরাজে হেরি' তথা উপনীত। महा मनान्द्रव कति श्रे श्राप्ट्रव व्यानगात्रन । ডা'র পর পূঞ্চ। করি' সহ অভি অনুরাগ।

অথও ভক্তি যা'র সদা মতি হরি-পায় । মায়া মোহ অনুভাপ নিমেৰে অপনোদন ॥ ১ বটভক্র-তলে যায় হরষ হিয়ে অপার। শুনিবারে মনোরম রাম-কথা অমৃত ৷ ২ ভাগ্যবান্ ধগরাজ উতরিল সভা'পরে। ফুল্ল বায়সবর সহ খগপণ যভ 🛭 ৩ ৬ धाँदत्र कृषत जिल विभिवादत सूर्यामन 🛚 বচনে অমির ভরি' কহিতে লাগিল কাক॥ ৪ (प)-- मश्रम वाकि হইলাম পে'য়ে र्थंगतांख एत्रभन । করহ আদেশ কি করিব প্রভু কোন কাজে আগমন ৷ ৬৩(ক) মৃত্বাণী কয় বিনতা-তন্য কুভার্থ-মুরতি নিজে। গুণ-গান যাঁ'র করেন মহেশ আপনার মুখাসুজে ॥ ৬৩ (খ)

চৌ-তন তাত যে কারণে হেথা মম আগমন। নিমেষে সফল তাহা লভি' তব দরশন। হেরিয়া নয়ন ভরি' আঞ্চম তব পৃত। 🕮রাম-চরিত কথা পুণ্যময় নিরস্তর। সাদরে এখন ভাত সে কথা শুনাও মোরে। শুনি' গরুড়ের কথা পুণিত বিনয় ভরা। বায়দের প্রাণে বহে উৎসাহ অমুপম। প্রথমেই অমুরাগে হইয়া বিভোর-প্রায়। অনম্ভর নারদের মোহ করি' বর্ণন। প্রভু-অবতার কথা কহিল ভাহার পর।

সংশয় মোহ ভ্রম সব মম অপগত। ১ সকল সুথদ যাহা ত্থ-ডমোরাশি-হর ॥ ভব পাশে এ মিনতি করি প্রভু বারেবারে॥ ২ সরল স-প্রেম আর স্থাদ মানসহরা।। আরম্ভ করিল রাম-গুণকথা-কীর্ত্তন ॥ ৩ রাম-লীলা-সরোবর রূপক কচে বুঝায় ॥ কহিল ভাহার পরে রাবণ-দেহ গ্রহণ ॥ ৪ তা'র পর বাল্যলীলা বাখানিল মনোহর ॥ ৫

(দা-মহা প্রেমভরে কৌশিকী-সনে

I

করি' কার্ত্তন মিলন কহিয়া বাল সে চরিডচয়। বিবাহ-কাহিনী কয় ॥ ৬৪

(চ)—নত:পর শ্রীরামের রাজ-অভিষেক কথা। দশরও-অঙ্গীকার পুরবাসী-ছদিব্যথা॥ শ্রীরামের বিরহেতে সকলের কি বিষাদ। বনেতে গমন-কথা ভকত গুহে মিলন। প্রভু-সনে বাল্মীকি:মিলন কথন করি'। সচিব-প্রতিগমন দশরথ-দেহত্যাগ। নুপতির ক্রিয়া-শেষে সাথে ল'য়ে পুরবাসী। রাম-সনে বহুবিধ অমুরোধ আলাপন। জরতের ব্রহ্মচর্য্য জয়স্টের ব্যবহার।

কহিলেন শ্রীরাম ও লক্ষণ-সংবাদ ॥ ১ প্রয়াগেতে অবস্থান জাহনী উত্তরণ। বলিলা যেমন র'ন চিত্রকৃট শৈলে হরি॥ ২ ভরতের আগমন রাম পদে অমুরাগ॥ কহিল ভরত-যাত্র। যথা প্রভু সুধ-রাশি ॥ ৩ তাঁহার পাছকা ল'য়ে কোশল প্রতিগমন ॥ প্রভু অত্রিশ্ববি-সনে মিলন-সুথ অপার॥ ৪

(पा-- वित्राथ-इनन

পরে যে প্রকারে কহিয়া বরণে

ভাব্দে কায় শরভঙ্গ। कुछव मदमक ॥ ७१

চৌ-বাধানিয়া দণ্ডকের পাবনতা অমুপম। যে প্রকারে পঞ্চবটী বনে প্রভু নিবসিলা। ্রপুনঃ লক্ষ্ণ-প্রভি করেন যে উপদেশ। **भ**त्र ७ पूर्वन-वथःविवित्रेल श्रूनद्राग्न ।

স্থভীক্ষের প্রেম

क्रोज़ूत मथा-कथा वर्गिन मरनातम । निवाति' मुनित जान महाश्वान व्यनानिना ॥ ১ যে ভাবেতে সুর্গণখা কুরূপা হইল শেষ॥ वर्गन करत्र यथा त्रावण मरवाष भाग्न ॥ २

ভা'র পর স্থনিপুণ বর্ণিল বিবরণ। মায়া-সীতা হরণের ইতিহাস বিস্তার। य थकारत करें। भूत উद्धातह-किया है ल। অতঃপর রমুবীর-বির্তের বর্ণন।

মারীচ-রাবণ সনে বেইমত আলাপন 🛭 বিবৃত করি' কহে রামের বিরহ-ভার 🛚 ৩ কবন্ধের বধ যথা শবরী সুগতি পে'ল। পম্পা সরগী-ভীরে যে প্রকারে আগমন ॥ ৪

| <b>(मोथ</b> ्रञ्-नात्रापत | সংবাদ কহে      | মিশন হতুর সনে।             |
|---------------------------|----------------|----------------------------|
| স্থগ্রীব-মিলন             | আর প্রভু যথা   | বালিরে বধেন প্রাণে # ৬৬(ক) |
| স্থগ্রীবে টীকা            | ক্রিয়া প্রদান | প্রবর্ষণ-গিরি বাস।         |
| বরষা শরৎ-                 | বর্ণন আর       | রাম-রোষ কপি-ত্রাস। ৬৬(খ)   |

টে -- যেইরপে কলিরাজ কলি-সেনা পাঠাইল। সীতা-উদ্দেশ তরে দিকেদিকে প্রধাবিল। পর্বত-গুহা মাঝে যেইরূপে প্রবেশিল। সম্পাতি-মুখে শুনি সব কথা হতুমান্। যে প্রকারে হতুমান্ পুরীদার হয় পার। ধ্বংসি' অশোক্ষ্যন দশাননে বুঝাইয়া। मकल वानव मतन वाम-भाग वामि' किरव'। যেইমত সেনা-সহ প্রভু রাম রঘুবীর। মিলিল রামের পায়ে বিভীষণ যেপ্রকারে।

সম্পাতি-সনে দেখা কপির তথায় হ'ল॥ ১ উত্তাল বারি লাফে লভ্যন করি' যা'ন। প্রবোধ প্রদান করে জানকীরে যে প্রকার ॥ ২ পুড়াইয়া লক্ষায় পুন: বারি লাফাইয়া। मौडात कूमल-कथा शरम निरंत्रमन करत ॥ o মহা বিক্রমে পার হ'লেন সাগর-নীর॥ সাগর-শাসন কথা শুনাইল বিস্তারে॥ ৪

**८नी—**दाॅशिया मानत কপি-সেনা সহ বীরকুল-বর দুত-রূপে যায় রক্ষঃ-বানর-ভীষণ সমর বলে মেঘনাদ কুম্বকরণ-

অঙ্গদ বালি-কুমার ॥ ৬৭(ক) विविध क्षकात्त्र वरण। প্রতাপ বধ-কৌশলে॥ ৬৭(খ)

পহুঁছি' সাগর-পার।

চৌ —বিবিধ প্রকারে কভ মরে নিশাচরগণ। রাবণ-মরণ আর বিভীষণে রাজাসন। কহিল মিলন পুনঃ সীতা সনে রম্মণ। পুষ্পক চড়ি' পুন: সহ কপি-সেনাগণ। যেইমত রঘুমণি উতরেণ অযোধ্যার। রাম-রাজ-অভিষেক করি' পুরী-বর্ণন। রাম-কথা সমাপন করিল বায়স-মণি। পুণিত চরিত-কথা গরুড করি' প্রবণ।

রাবণ-রাঘব রণ করে সব বর্ণন ॥ ময়-স্বভা-শোকগাথা শোক-হীন দেবগণ॥ ১ দেবগণ-শুভিবাদ যোড করি' ছই পাণি ॥ কুপাধার শ্রীরামের কোশলেতে আগমন ॥ ২ বায়স বিশদ করি' কহে সেই সমুদায়। গুণধাম-নীতি-কথা অনেক করি' কথন ॥ ০ তব পাখে যে সকল কহিলাম হে ভবানি। কহিল বচন মনে উৎসাহ অমুপম॥ ৪

# কাক ভুষ্তির নিজ পূর্ব্য-জন্মকথা বর্ণন

ব্যে-সন্দেহ অপগত মোর ভোমার প্রসাদে ধর্গবর

ওনিলাম রাম-লীলা যত। রাম-পদে প্রেম উদ্গত । ৬৮(ক) হ'য়েছিল অভি মোহ রণে চিদানন্দ-খন যেই রাম

চৌ-মানব-সমান হেরি' সব আচরণ তাঁ'র। এখন বৃঝিত্ব ভ্রম আমারি হিভের ভরে। দাকণ আতপ-তাপে দক্ষ হয় যেইছন। বিষম বিকার যদি না জাগিত মোর মনে। শুনিভাম কেমনে বা হরি-কথা মনোহর। নিগম আগম আর পুরাণেও এই কয়। যা'র 'পরে @ীরামের হয় কুপা-ঈক্ষণ। ভব দরশন মম রামের করুণা ভরে।

বন্ধ প্রভু করি দরশন। বিকলতা তাঁ'র কি কারণ ॥ ৬৮(খ)

ব'ছেছিল মনোমাঝে অতি সংশয়-ধার॥ কুপানিধানের ইচা করণা আমার 'পরে। ১ সেই জানে ছায়া করে কি আমিয় বরষণ । কেমনে মিলন ভাত হ'ত বল ভোমা সনে॥২ করিলে যা' গান ভূমি প্রাবণ-মুখ আকর। ক'ন মূনি সিদ্ধ যত সংশয় তিল নয় ৷ ৩ সেইজন ওধু পায় সম্ভের দরশন॥ ভোমার প্রসাদে এবে সব সম্পেহ হরে 1 8

| দো—শুনি' খগরাজ- | বাণী স্থললিত   | সবিনয় অফুরাগ।            |
|-----------------|----------------|---------------------------|
| পুলকিত কায়     | সঞ্জ লোচন      | হর্ষিভ-মন কাক ॥ ৬৯(ক)     |
| স্পীল স্মতি     | পুতৰুণা-প্ৰেমী | রস-ঘন হরিদাস।             |
| পে'লে মহাদেবি   | গোপন কথাও      | করে সাধু সূত্রকাশ ৷ ৬৯(৫) |

(5)-একথা ভাবণ করি' বায়দ-প্রবর ক'য়। সকল প্রকারে নাথ প্রজনীয় ভূমি মম। দ্বিধা নাঠি তব মনে নাঠি তব মোই মায়া। মোহ-ছল করি' ভোমা প্রভু হেথা পাঠাইল। নিজ মোহ-কথা যাতা কতিলে বিহগবর। দেবঋষি মহাদেব ধাতা মুনি সনকাদি। কহ মোরে মোহ কা'রে অন্ধ বা নাহি করে। ८कान करन नाहि करत वामना भागल-ध्याय ।

নভগ-নাথের 'পরে রাম-প্রীতি কম নয় ॥ তুমি রখনায়কের কুপাধার প্রাণসম । ১ হে নাথ আমার 'পরে কডই করিলে দ্যা॥ দয়া করি' রাম মোর গৌরব বাড়াইল। ২ ধরণী-উপরে তাহা নহে বিম্ময়কর ॥ মানব মুনি-নায়ক আত্মতম্ব-ভেদবাদী ॥ ৩ কে আছে জগভী-ভলে কাম না নাচায় যা'রে॥ क्यारियत महत्व का'त व्याग नाहि मरह हाय ॥ a

| মৃগ-নয়নীর             | নয়নের বাণ   | কে আছে লাগে না যা'য় 🛭 ৭০(খ) |
|------------------------|--------------|------------------------------|
| মদ-বক্ত কা'রে          | রমা নাহি করে | কৰ্ণহীন প্ৰস্কৃতায়।         |
| বিভূমনা নাহি           | করে কা'র সনে | বল' লোভ সংসারে # ৭•(ক)       |
| <b>ৰো</b> —জানী পণ্ডিত | ভপোরত কবি    | গুণাধার স্বেতারে।            |

যৌবন-স্থর ভাপে কে আপনা না ভূলিল। অহমার মসী-ছাপ দেয় না কাহার গায়। চিন্তা-সাপিনী কা'রে না করিল দংশন।

চৌ-ভিনগুণ-মুদ্দিপাত-রোগে রোগী কেবা নয়। মান মদ কা'রে নাহি পরশে জীবনময় ॥ মমতা কাহার যশ কহ মোরে না নাশিল 13 কোন জন বিভাডিত নাহি হয় শোক-বায় । ধরা-মাঝে কেবা নাছি সছে মান্তা-বন্ধন ৷ ২

চিন্তাই কীট আর এ শরীর দারু-খান। ধন সন্তান আর প্রতিষ্ঠা-কামনা তিন। মহা বলবান্ এরা সব মায়া-পরিবার। মহেশ চতুরানন যা'র ভয়ে ভয়-যুত। এ ঘৃণ ধরে না কা'রে কে হেন ধীর্যবান্ ॥
কা'র মন হেন আছে করিল না যা' মলিন ॥ ৩
প্রবল অপার সবে কহিতে শক্তি কা'র॥
ভূচে জীবের কথা কেবা গণে কহ তাভ ॥ ৪

| দো-সংসার-মাঝে          | প্রসারিত রহে   | মায়ার কটক চণ্ড।             |
|------------------------|----------------|------------------------------|
| কামাদি সকলে            | সেনাপতি সেনা   | দম্ভ কপট ভণ্ড । ৭১(ক)        |
| ভবে এই মায়া           | গ্রীরামের দাসী | वृक्तिल यमिछ मिथा।           |
| রাম- <b>কু</b> পা বিনা | খুচেনাক' ভ্ৰম  | জ্ঞান হয় যেন নিভ্যা ॥ ৭১(४) |

GD— যেই মায়াময়ী মায়া ত্রিভুবনে নাচাইল।
প্রভুর নয়ন-ভল্লি-ভরে দেই ধগবর।
দেই সং-চিং-তুধ-ঘন রঘুবর রাম।
ব্যাপ্য ব্যাপক আর অ-বিকল ধওঁহীন।
অমলিন সর্ব্বদর্শী মায়া গুণ বিরহিত।
নির্গম নিরাকার মোহ নাহি ছোঁয়ে যাঁবে।
প্রকৃতি-অতীত প্রভু স্বার জ্বদয়-বাসী।
রামের স্থদয়ে মোহ কভু স্থান নাহি পায়।

যাহার মরম কেহ বুঝিবারে না পাইল ।
নচী-সম নাচে নাচ সহ নিজ অমুচর ॥ ১
জনম-অভীত বিজ্ঞানরূপ বলধাম ॥
অমিত অমোঘ-বল ভগবান্ অস্তহীন ॥ ২
অজেয় মহান্ আর বাণী ইন্দ্রিয়াতীত ॥
নিত্য অ-পাপ বিভূ সুথরাশি চরাচরে ॥ ৩
বিরক্ষ অভীত-ইচ্ছা ব্রহ্ম তিনি অবিনাশী ॥
তমোরাশি কখনো কি দিনকর-পাশে যায় ॥ ৪

| দো—ভকতের হেতু | প্রভু ভগবান্     | স্থৃপ-কলেবর ধরি'।       |
|---------------|------------------|-------------------------|
| পুত-দীলা নিজ  | দেখা'ন সবারে     | মানবেরে অমুকারি'॥ ৭২(ক) |
| নুট যথা নানা  | বেশেতে সাঞ্জিয়া | ফিরে অঙ্গন-ময়।         |
| বেশ-অনুরূপ    | ভাব সে দেখায়    | নিজ-ভাব তাহা নয়॥ ৭২(খ) |

চৌ—দেইমত রঘুপাত-শীলা ওতে উরগারি।
মলিনতা-ভরা মন বিষয়ের বশ যা'রা।
পাণ্ড্-রোগেতে রোগী হয় যেবা অফু'খন।
যদি কা'রো দিক্-অম হয় তবে উরগারি।
নৌকা-আরোহী হেরে মেদিনী চলিয়া যায়।
ঘূর্ণিত শিশু হেরে ঘুরিতেছে গৃহ আদি।
হেন কল্পনা শুধু হরিতে মোহ-আবেশ।
কিন্তু যেবা মায়াবজ্ব-মন্দমতি ভাগ্যহত।
যুক্তি ঠেলি' সেই মৃঢ় সন্দেহ পুষে প্রাণে।

দিভিস্থত-বিমোহন জন-মন-স্থকারী॥
এইমত করে মায়া প্রভুতে আরোপ তা'রা॥ >
পীত বরণের শশী করে সেই দরশন॥
দে বলে প্রতীচী হ'তে সমূদিত তমোহারী॥ ২
মোছের বশেতে ভাবে নিজেরে অচল-প্রায়॥
সভ্য কহিলে বলে এ উহায় মিথ্যাবাদী॥ ৩
স্থপনেও ভগবানে নাহি অজ্ঞতা-লেশ॥
প্রাণে যা'র প'ড়ে আছে আবরণ বইশত॥ ৪
আপনার অজ্ঞভা আবোপ করে শীরামে॥ ৫

ৰো—কাম কোধ লোভ মোহ-বশ যেবা ত্ব-রূপ গৃহাস্ত । কেমনে চিনিবে সে ড' ডমোকুগ-রক্ত 🛚 ৭৬(ক) সে রম্বাথেরে নির্হুণ রূপ বুৰিতে সহজ ग-७१ वृका ना वात्र। স-सर्पत्र मीला মুনি পরাভব পায় । ৭৩(খ) স্থাস অগম

**(5)—ত**নহ বিহগরাজ জীরাম-মহিমা-কথা। মোহ-সঞ্চার মম হ'য়েছিল বে প্রকার। তুমি তাত রখুনাথ রামের কুপা-ছাজন। এ-কারণে গোপনীয় কিছু নাহি তব পাশে। রামের শ্বভাব-কণা করি তাত বর্ণন। জন্ম-মরণরূপ সংসার মূলাধার। এহেতু করেন মোহ বিদুরিত কুপাধার। ষেমন শিশুর দেহে হইলে দৃষিত ব্রণ।

জ্ঞান-মত কহি সেই প্রাণ-মনোহর গাথা 🛭 শুনাই ভোমারে সেই স্বিশেষ স্মাচার ॥ ১ व्दिश्चन-अञ्चाती त्याद खनि-दक्षन ॥ পরম রহস্ত-কথা বলিব তব সকালে # ২ ভক্ত জনের মোহ না রাখেন কদাচন ! বন্ত ক্রেশ-প্রদ আর নিদারুণ শোকাগার। ৩ করুণা ভকত 'পরে জীরামের এ প্রকার । জননী চিরা'ন তাহা হইয়া পাষাণী সম। 8

| <b>দো</b> —যদিও থাতনা | শিশু পায় ডাহে  | কাভরে রোদন করে।            |
|-----------------------|-----------------|----------------------------|
| বেদনা ভাহার           | না ভাবেন মাতা   | ভারি ব্যাধি-নাশ ডরে॥ ৭৪(ক) |
| ভণা দাস-হিত           | হেতু রঘুনাথ     | খুচা'ন ভাহার মান ।         |
| এমন প্রস্তুরে         | ভ্রম ভেয়াগিয়া | কেন না সঁপিব প্রাণ॥ ৭৪(খ)  |

চৌ-- শ্রীরামের কুপা আর মূর্থতা আপনার। যভবার নরক্রপ ধারণ করিয়া রাম। ভভবার আমি সেই কোশল নগরে যাই। জনমের উৎসব করি গিয়া দরশন। অভীষ্ট দেবতা মম জীরাম বালকরপ। আপন প্রভুর মুখ নির্ধি' নয়ন ভরি'। শাবক-বায়সরূপ ধরি' ফিরি তাঁ'র সাথে।

এই কথা বলি কর অবধান এইবার 🛭 ভকতের তরে লীলা আচরে'ন গুণধাম॥ ১ শিশুলীলা নির্ধিয়া অভিশয় স্থুপ পাই ॥ পঞ্চ বরষ লীলা হেরি মন-বিমোহন ॥ ২ শতকোটি কাম জিনি' তমু-শোভা অপরপ। নয়ন সফল মম করি আমি উরগারি ॥ ৩ রামের বালক-লীলা হেরি কত বিধিমতে ! ৪

| (मा-यथा यथा या'न | শি😙 ভগবান্    | সাথেতে উড়িয়া যাই।      |
|------------------|---------------|--------------------------|
| পড়িলে ভূমিতে    | প্রসাদ তাঁহার | অমনি খুঁটিয়া ধাই॥ ৭৫(ক) |
| একবার লীলা       | অতি অপরূপ     | করিলেন রখুবীর।           |
| সে লীলা প্রভুর   | স্মরণ করিয়া  | পুশকি' উঠে শরীর॥ ৭৫(খ)   |

(6)--कहिर्छ बायुग छत्व छन्द अग-नायुक। व्यवाम-ठिव्रिडकथा छक्छ-खुबनायुक। চারু ত্রপ-মন্দির সব বিধি স্থান্দর।

कनरक पठिष मिन-पिष्ठ व्यामाप-वत्र ॥ >

মনোহর অঙ্গন কি শোভা কহিব কা'রে।
নীলায় বিনোদ করি' জননীর প্রাণ মন।
মরকত মণি-সম মৃত্-কলেবর শ্রাম।
নবীন রাজীব সম কোমল চরণদ্ম।
সুক্দর রেখা ধ্বক কুলিশাঙ্কুশ চারি।
কনক-রচিত কিবা খচিত রতনবর।

চারি ভাই যেইখানে খেলেন পুলকডরে ।
করেন সে অঙ্গনে শিশু রাম বিচরণ ॥ ২
সারাদেহে শোভা করে যেন শতকোটি কাম ॥
পদজ রুচির নথ শশী-ভাতি হ'রে লয়॥ ৩
সে পদে নুপুর-মৃত্ব মধু শুঞ্জনকারী ॥
কটি-কিছিণী কল-মুখর মানসহর ॥ ৪

**(দা**—নান্ডি রমণীয় বিশাল উরস গোপুর উদর ভাহে বালোচিত

ত্রিবলীর রেখা ভা'য়। বেশভূষা শোভা পায়॥ ৭৬

(5)—পাণিতল হিন্ধুল অঙ্গুলী নথ শোভে।
কম্বু-কণ্ঠ বাল-কেশরী-অংস গ্রীবা।
আধ আধ লিশু-ভাষা অধরে অরুণ-ভাতি।
লালিত কপোল নাসা স্থাঠিত মনোহর।
স্থালীল কমল-আঁখি ভবভয় বিমোচন।
জম্বা স্থবছিম শ্রাবণ-মুগল সম।
শীত অজরাখা গায়ে মরি কিবা গোভাময়।
দশরখ-অঙ্গন-বিচরণকারী হরি।
করেন আমার সনে বিবিধ কতই খেলা।
কল-হালি হেসে যবে আমারে ধরিতে বা'ন।

ভূষিত বিশাল ভূজ-যুগল মানস লোভে ।

চিবুক আনন-ছবি অতুলন শোডা কিবা ॥ ১
কুল্ল-থবল শোডে তৃই তুই রদ-পাঁতি ।
প্রাণ-বিমোহন হাসি যেন রাকা শশধর ॥ ২
শোভিত ললাট 'পরে ভিলক গোরোচন ॥
কুক্ষিত কেশদাম শ্রাম-শিধিপাধা যেন ॥ ৩
মোহন দিঠিতে ভাবে প্রাণে বড় সুখ হয় ॥
নাচেন পুলকভরে আপনার ছায়া হেরি' ॥ ৪
পাই লাজ বিবরিতে তাঁ'র সেই সর লীলা ॥
পলাই মুখের গ্রাস তখন মোরে দেখান ॥ ৫

**দ্যে—নিকটে আ**সিলে চরণ ছুঁইডে উপ**জিল** মোহ চিৎ-সুখ-খন হাসেন শ্রীহরি যাইলে পলান ক্রদয়ে আমার চরাচর-প্রভূ

কাঁদেন পলা'লে পরে।
চাহিতে চাহিতে ফিরে' ॥ ৭৭(ক)
সেই শিশুলীলা দেখি'।
তাঁ'র ছেলে-খেলা একি॥ ৭৭(খ)

(b)—বেমনি একথা মনে উদয় হইল মোর।
তবে রাম-কুপাবলৈ আমারে না ছপ দিল।
অপর কারণ কিছু আছয়ে ইহার কোন।
তথু এক সীতাপতি অপও জ্ঞান-রূপ।
জীবের রহিল বদি হেন অপও জ্ঞান।
মারার বশেতে জীব রহে মোহে বিজড়িত।
পর-বশ জীব আর জীনাথ অ-বশে রান।
বদিও জলীক এই জ্যেদ মারা-বিরচিত।

রামের প্রেরিড মায়া অমনি ব্যাপিল ঘোর ॥
কিন্তা আর জাব-মত ভবখোরে না ঘুরা'ল ॥ ১
এবে সে কারণ-কথা অবহিত হ'য়ে শুন ॥
বাকী জড় কি চেতন সজ্জিত মারা-কূপ ॥ ২
তবে বল কি প্রভেদ জীব আর ভগবান্ ॥
সে শুণ-জননী মারা রহে বিভূ-পদাঞ্জিত ॥ ৩
চরাচরে এক প্রভূ কিন্ত জীব অগণন ॥
তথাপি শ্রীহরি বিনা নহে ইহা নিবারিত ॥ ৪

| <b>(प</b> -त्र <b>म्</b> नाथ-अन | ভৰনা না করি'    | বে চাহে মুক্তি-পদ।      |
|---------------------------------|-----------------|-------------------------|
| হইলেও জানী                      | শৃঙ্গ পুক্তহীন্ | পশু সেই চারিপদ ॥ ৭৮(ক)  |
| শৰ গিরি-চূড়ে                   | দাবানল-ভাত্তি   | রাকা শশী ভারা সাথে।     |
| মিলিলেও রবি                     | বিহনে কখনো      | ডমোদুর নহে ডা'ডে॥ ৭৮(খ) |

(b)---সেইমভ ৰগরাজ জীহরি-ভলনা বিনা । কখনো মিটে না জীবে দারুণ তথ-যাভনা s হরির ভক্তজনে কখনো লাগে না মায়া। একারণে ভকতের কথনো বিনাশ নাই। যবে হেরিলেন রাম ভ্রমেতে চকিত মোরে। ভাঁহার লীলার কেহ না বুঝিল ভেদ সার। চলেন ধরিতে মোরে জামু-পাণি যোগে হরি। ছই পাথা ছড়াইয়া উড়িয়া চলিফু আমি। যতদুর আকাশেতে উভিয়া পলাতে যাই।

প্রভুর প্রেরিভ জ্ঞানে উত্তল ভাহার হিয়া ॥ ১ অন্তরে ভেদভক্তি বাড়ে ডা'র সর্বাহাই ॥ शिमित्म पृद्शिम अन मीमा जा'त भारत ॥ २ কিবা সহোদরগণ মাতা কি জনক আর ॥ অরুণ-চরণ কর শ্রামল ব্যানধারী ॥ ৩ ধরিতে আমারে ভুক বাড়া'ন ভুবনস্বামী ॥ তত্ত্ব তাঁতার বাস্ত নিকটে দেখিতে পাই ॥ ৪

| <b>দো</b> —বিধি-লোকে উড়ে' | পৰাইফু ভয়ে     | দেখিত্ব ফিরিয়া পাছে।       |
|----------------------------|-----------------|-----------------------------|
| রাম-বাজ্ত আর               | আমার মাঝারে     | দ্র' আঙ্গুল দূর আছে ॥ ৭৯(ক) |
| শত আবরণ                    | ভেদ করি' মোর    | গতি ছিল্যত দুর।             |
| সেধানে গিয়াও              | প্রভূ-ভূজ হেরি' | হ'লাম ভয়ে আতুর 🛭 ৭৯(৭)     |

G)—অভি ত্রাণ হ'ল ববে আঁথি হ'ল নিমীলি ছ। চেরে দেখি পুন: কিরি কোণলে মামি আগত। চাহিয়া আমার পানে হাসিলেন রম্বনাথ। হে অওজ-রাজ ওন দেই উপরের মাঝে। কত অভিনব লোক কি রচনা অগণন। কোটি কমল্যোনি কোটি উমাপতি হর। গণনা-অভীত যম কাল আর লোকপাল। অসংখ্য গহন নদ সরোবর পারাবার। স্থুর মূনি থগ নাগ গন্ধর্ব কিল্লর নর।

वाक्ति वक्त वामि अतिमिन्न व्यक्ति। ১ হেরিত্র গণনাভীত কত ব্রহ্মাণ্ড রাজে। এক অন্ত হ'তে বড কি করিব বর্ণন। ২ অগণিত গ্রহ ভারা শশধর দিবাকর ॥ কতই ভূধর কত মহীতল স্থবিশাল॥ ৩ অনম্ভ-প্রসার কত রচনা নানা প্রকার॥ বেদ ব্যায়ুব্দ কীব কতই সচরাচর॥ ৪

| <b>দো—কথ</b> নো দেখিনি | কাণেতে শুনিনি           | মনেতে ভাবিনি যাহা।            |
|------------------------|-------------------------|-------------------------------|
| সে-সব অম্বৃত           | হেরিমু স্থান            | কেমনে কহিব ভা <b>ল</b> ॥৮∙(ক) |
| শতেক বরষ               | ক্রিন্থ তথায়           | বাস প্রত্যেক খণ্ডে।           |
| এমন করিয়া             | দে <b>খিয়া</b> ভ্ৰমিত্ | অনেক ব্ৰহ্ম-অংগু ৷ ৮০(খ)      |

61-প্রভ্যেক পোক 'পরে পৃষ্কু ভাগ্য-বিখাতা বিঞু লিব লোকশাল সকলি পৃথকু ভব।।। গন্ধৰ্ক কিল্লৰ নর বেডাল পিলাচগণ। সে সকলি ভিন্ন ভিন্ন পশু পাৰী অপ্ৰথম ১ দেবতা দমুদ্ধগণ তথার বিবিধ ভাঁতি। व्यत्नक पृथिवी शित्रि नमी मत्र ७ माश्रत । প্রত্যেক লোক-মাঝে দেখে'ছি আমারে নিজে। প্রত্যেক লোকে দেখি র'য়েছে কোশলপুরী। দশরথ কৌশল্যা তথা দেখিবারে পাই। প্রতি ব্রহ্ম-অণ্ড মাঝে অবতার রূপে রাম।

জীব সব তথাকার নানাকার প্রতিকৃতি॥ সকল রচনা তথা নানাবিধ কলেবর ॥ ২ অমুপম জব্যচয় দেখিয়াছি কত কি বে ৷ বিভিন্ন দর্যু তথা ভিন্ন যত নরনারী ॥ ৩ সবই বিভিন্ন রূপ ভরতাদি তিনভাই ॥ (पश्चित्रां कि मिलानीना व्याक्त्यन व्यानादाम ॥ 8

| দো—সকলি পৃথক্       | করি দরশন      |
|---------------------|---------------|
| অগণন লোকে           | দেখিত্ কেবল   |
| সেই শিশুরূপ         | সেই এক শোচা   |
| <b>ভূ</b> বনে ভূবনে | কিরিলাম হেরি' |

পৃথক্ পৃথক্ ধাম। দেই এক প্রভু রাম ॥ ৮১(ক) ल्यामय बच्चीत । ভাজিত মোহ-সমীর ॥ ৮১(খ)

(5) - अभग कतिएक अहे कुरन भगनाहीन। ভ্রমিতে প্রেষ্ কিরি' নিঙ্গ আবাদেতে। ত্রনি' পুন: অ্যোধ্যার প্রস্তু-অবভার-কথ।। कतिलाभ प्रतमन सन्दापत भरहा ५ मत्। রামের জঠর মাঝে হেরে'ছি জগত যত। অযোধ্যায় আদি' পুন: ट्रिक्ट खपग्रवामी। व्याननात्र मन्त्रामार्थः विज्ञातिक वात्रवात् । अक्र मण माद्या (यन द्वित्राहि अ मक्ता।

ভেবে' দেখ বছ কল্প কালোদরে হ'ল দীন। যাপন করিত্ব কাল তথা পুন: নানামতে॥ ১ প্রেমেতে পুরিত প্রাণ চলিমু স্বরিত তথা। যেমন কথন আগে ক'রেছি তোমারে সব॥ ২ দেখিবাতে সেই সব বর্ণিয়া ক'ব কত # কুপার আধার প্রভু সবার অন্তর্যামী ॥ ৩ মোহের আবিদ পাঁকে মঞ্জিত মন আমার॥ বিশেব মোহেতে মন হইল অভি বিকল ॥ ৪

| <b>ৰো</b> —বিক্স চেরিয়া | হাদেন আবার   | কুপানয় রষ্ট্রবীর।       |
|--------------------------|--------------|--------------------------|
| সে হাসির কাঁকে           | আদিলু বাহিরে | শুন ওঃহ মতি ধীর । ৮২(ক)  |
| বাললীলা রাম              | করিতে লাগিশা | আবার আমার গনে ।          |
| কোটি মতে কত              | বুকাইলু ভৰু  | শান্তি নাহি চ মনে। ৮২(খ) |

(5) — निविधानीन। আৰ প্ৰভূচাতে विधा है। वानेन प्रतिक काने दवन देन स्थानिक পড়িলাম ধরা 'পরে মুখে নাই আর কথা। (थ्रमाकून (मारत श्रष्ट्र कवित्रा अवरनाकन। সরোক্ত কর নিহু রাধিয়। আবার শিবে। করিলেন মোরে রাম এককালে মোহশুক্ত। প্রথম-দর্মার কথা প্রস্তুতা করি' স্মরণ। खक्रबंद अकि पदा मिथेवा अ**ब्रुद म**नि। হরষ-সঞ্জল চ'বে জুড়িয়া যুগল পাণি।

রকা কর রকা কর আর্ত্তন-ভয়ত্রাতা । ১ আপন প্রভাব মায়া করিল৷ অপহরণ 🏾 দীননাথ সব থেক ছবিল। নিমেবভারে 🛚 ২ ভকত-আনন্দদাতা দয়ালুর অপ্রাগণ্য॥ हहेन खडीर मन श्रारक्ट निमनन ॥ ७ অভুগন অনুৱাগ উপজিগ মোর প্রাণে 🛊 কহিত্ব অনেক বিধি মিনজি-পুরিত বালী ॥ ৪

| বো—প্রেমেতে প্রিভ | মোর কথা শুনি'        | হেরি <sup>*</sup> দীন নি <b>জ দাস</b> । |
|-------------------|----------------------|---|
| সুধদ-বচন          | গম্ভীর মৃত্          | কহেন রমা-নিবাস। ৮৩ (ক)                  |
| হে কাক-ভুষ্ণ্ডি   | যাচ'বর অভি           | প্রীত ভোমা 'পরে বানি'।                  |
| অষ্টদিদ্ধি কিবা   | য <b>ত ঋদ্ধি ল</b> হ | মোক্ষ-সূথের ধনি।৮৩ (খ)                  |

চৌ—বিরতি বিজ্ঞান জ্ঞান বিবেক আছমে যত। মূনিজন-চুলুভ এ জগতে গুণ শত। প্রদান করিব ভোমা নাহি সংশয় ভা'য়। প্রনিয়া বচন প্রাণ ভ'রে গেল অমুরাগে। সব দান দিতে প্রভু করিলেন অঙ্গীকার। ভক্তি-বিহীন গুণ সব সুখ এইমত। ভলনা-বিহীন হ'রে মুখে মোর কিবা কাল। সত্য যদি দাও বর হেনাথ হ'য়ে সদয়। ভবে প্রস্থাই বর প্রার্থনা পদতলে।

তা'ই চাহ মোর পাশে তব মন যাহা চায়॥ ১ ভাবিতে লাগিমু বর নিক্ন হাদি-পুর-ভাগে। ভক্তি-দানের কথা ক'ন নি ড' একবার॥ ২ লবণ-বিহীন বহু সিদ্ধ ভোজন যত। ভাবিয়া জুড়িয়া কর কহিলাম খগরাজ ॥ ৩ সত্য যদি দীন 'পরে কর কুপ। কুপাময়॥ कति (र अश्वतयाभि (पर यत्र मीन य'तन ॥ 8

পো-অবিরল ভব শুদ্ধা ভকতি যোগী-পতি মুনি পুঁজে যা' সভত ভক্ত-সুরভক্ প্রণত-তারণ **সে নিজ ভকাত** হে প্রভু আমারে

ৰেদ পুরাণে যা' গায়। কুপাতে কদাচ পায়॥৮৪ (क) कुलानिधि ज्ञ्यशाम। দয়াকরি'দেহ রাম। ৮৪ (খ)

চৌ-'এবমস্তু' বলি' তবে রমুর কুল-নায়ক। পুনহ বায়স ভূমি স্বভাবতঃ মতিমান। সকল সুখের খনি ভকতি চে'য়েছ তা'ই। ष्म थागानम-भारक पश्चिम व्यापन काम। তব চতুরতা হেরি' প্রীতি-ধার হাদে বয়। **ওনহ বিহগ কহি আমার দ্যার ফলে।** বিরাগ অথবা যোগ ভকতি কি তৰজান। ভব অমুভবে হরা আসিবে সকল ভেদ।

বলেন বচন প্রভু অভীব স্থ্প-দায়ক ॥ **(मह्बर् वाहित्म और मह्मवाख्य वंद्रमान ॥ )** ভাগ্য ভোমার সম জগ-মাঝে কা'রো নাই 🛚 कउरे यजन कति' मृनि रेश नारि পाय ॥ २ চে'য়েছ ভক্তি-বর পুল্কিত অভিশয়। সবগুণ বিরাজিবে ভোমার স্থদয়-তলে 🛭 ৩ আমার লীলার বহু রহস্ত অথবা ভ্রান ॥ व्यामात्र व्यनारम माहि माशिरव माधन-(धन# ॥ ८

| <b>ৰো</b> —মায়া-জ্বাত যত | ভ্ৰম সৰ আমার     |
|---------------------------|------------------|
| জানিস্ অনাদি              | স-গুণ অ-গুণ      |
| ভক্ত আমার                 | প্রিয় প্রাণাধার |
| কায় বাক্ মনে             | ক'রো মোর পরে     |

কছু না লাগিবে ভোৱে। बन्ध विद्या त्यादा ॥ ৮৫ (क) এ বিচারি' শুন কাক। অবিচল অমুরাগ ৷ ৮৫ (খ)

<sup>•</sup> नायनाव कहे।

চৌ-এবে শুন বাণী মম নিশ্মল স্থললিত। নিজ সিদ্ধান্ত এই কহিব তব গোচরে। মম মায়া হ'তে এই জগতের উদ্ভব। সকলেই প্রিয় মম আমা হ'তে উদ্ভত। মানবের মাঝে ছিজ ছিজ-মাঝে শ্রুতিধারী। निष्ठां होते ने भारत दिया य खानी वित्रां १ - यु । তাহাদের মাঝে প্রিয় লাগে মোর নিজ্ঞ-দাস। সতাই তব পাশে কহি আমি বারবার। खक्छ-विशीन यपि श'न-e postinn । ভক্তি-বিশীন চিত হইলেও নীচ প্রাণী।

সত্য সহজ যাহা নিগমাদি বাধানিত ! শ্বরণে রাখিও আর সব তাকি' ড'জে। মোরে ॥> निवटम विविध यथा ठत्राठत खोव मव ॥ মানৰ স্বার হ'তে মোর পাশে আদৃত ॥ ২ তাহাদের মাঝে পুন: বেদধর্ম-নিষ্ঠাচারী। বিরাগী-ভিতরে অভি প্রিয় অমুভব-যুত। ৩ যে সম-অন্যুমতি অপরে না রাখে আশ ! ভকতের সম প্রিয় কেহ মম নাহি আর॥ ৪ সাধারণ জীব সম তিনি মম প্রিয় হ'ন। প্রাণ-সম প্রিয় সেই এ মোর খোষণা-বাণী ॥ ৫

দো-পুণিত সুশীল এ নীতিতে ভরা

স্থুমতি সেবকে শ্বতি বেদ সব

ভিজে না কাহার প্রাণ। কর ইহা অবধান ॥ ৮৬

চৌ-একই পিভার হ'লে একাধিক সম্ভান। কেহ পশুভ কেহ তপ-রত কেহ জ্ঞানী। কেহ মহা-জ্ঞানী কিম্বা ধর্ম-রত কোনজন। কিন্ধ যে পিডায় রত সব করি' পরিহার। সে তনয় প্রিয় হয় পিতার প্রাণের সম। এইনত চরাচর-মাঝে যত জীব রয়। মো' হ'তে উন্ত এই অধিল ভূবন মাঝে। কিন্তু ভাহার মাঝে পরিহরি' মদ মায়।।

হয় তা'রা ভিন্ন মত শীল আর গুণবান্।। কেহ ধনবান কেহ সুধীর কেহ বা দানী ॥ ১ সবারি উপরে থাকে পিতার সমান মন। স্থপনেও নাহি জানে এ বিনা ধরম আর॥ ২ হ'লেও অপর যত স্বত হ'তে হীনতম ॥ দেব নর আদি করি' দমুক্ত অম্বরচয় ॥ ৩ স্বারি উপরে মোর সমান করণা রাজে। যে ভবে আমারে সঁপি' মানস বচন কায়া॥৪

(পা—হ'ক দে পুরুষ অৰুপটে সব-অন্তা অ-কাম মনে এ বিচারি

অথবা রমণী ভাবে যে ভঞ্জিবে মম-রভ মতি জগ-আশা ছাড়ি' "

কিম্বা আর জীব কোন। (म-इ इ'रव शिव्रडम ॥ ৮१ (क) क्षान-मम श्रित्र छक । মো'তে হও অনুরক্ত । ৮৭ (খ)

(5)-छव 'भारत काल नाहि (नथा'रव श्रष्ठाव छा'त। (काल छाविछ स्मारत आत छक्क' अनिवात # তৃত্তি প্রভুর বাণী শুনি' হুদে নাহি আদে। कि ख्रथ अपरा कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य भन । এ নয়ন জানে মোর প্রভুর রূপের শোভা। এভাবে প্রবেধি ধর করি বহু ফুবে মোরে। ধেলিতে লাগিলা পুন: ভেমনি-ই লীলা-ভরে । नशरन व्यानिशा वन पूप किছु ज्ञान कति'।

শিহরিত কলেবর অতি স্থাধে মন ভাসে॥ ১ কমনে তা' রসনার করি আমি বর্ণন। কানে কেমনে ক'ব কি সে বিভা মনোলোভা ॥২ চাহেন अन्नी-পানে अडीव कृषिङ इति ॥ ०

কাতর নেহারি' মাতা উঠিয়া আসেন হরা। যভনে বসা'য়ে কোলে করা'ন পীয়ধ পান।

ধরেন চাপিয়া বুকে বলি' বাণী স্লেছ-জরা॥ खाँहार कहिए कीका खामर करिया शांस । १

| <b>দো</b> —বে স্থাপর ভরে | ত্রিপুর-অরাতি | অশুভ-বেশেতে র'ন।         |
|--------------------------|---------------|--------------------------|
| যে <b>স্থ-স</b> †গরে     | কোশলের বাসী   | নিড-প্রতি নিমগন । ৮৮ (ক) |
| সে স্থাপের অমু-          | পরমাণু যেবা   | বারেক স্বপনে পায়।       |
| ব্ৰহ্মপদ-সূথ             | ভা'র গণনায়   | না আদে বিহগ-রায় 🛭 🛶 (খ) |

টে—আরো কিছদিন আমি রহিলাম অযোধ্যায়। হেরিলাম শিশুলীলা প্রেমের মগনভায়।

রামের প্রসাদে লভি' ভক্তির বরদান। এইরুপ্রে যে অবধি নে'ছেন আপন ক'রে। স্থ-গোপন লীলা এই করিলাম কীর্ত্তন। আমার যা' অফুভব ভোমারে কহি পগেশ। শ্রীরামের কুপা বিনা ওন হে বিহগ-রায়। শকতি নাজানা হ'লে স্থায়ী নতে পরতীতি। দৃঢ় প্রীতি না থাকিলে ভক্তি নাহিক রয়।

আঞ্জমে এরু ফিরে' তাঁহারে করি' প্রণাম ॥ ১ সে অবধি মায়া নাহি বিমোহিত করে মোরে॥ হরির প্রেরিত মায়া নাচা'ল মোরে যেমন ৷ ২ হরির ভক্ষনা বিনা না হয় ক্রেশের শেষ। তাঁহার শক্তি কত কভু নাহি স্থানা যায়॥ ৩ বিশ্বাস বিনা কচ কেমনে জাগিবে প্রীতি। সলিলের ঝিকিমিকি কভটুকু স্থায়ী হয়॥ ৪

| <b>দো</b> —গুরু বিনা জ্ঞান | হয় না কথনো   | ভা' বিনা বিরাগ নয়।     |
|----------------------------|---------------|-------------------------|
| হরিভক্তি বিনা              | নাহি কোন স্থপ | বেদ পুরাণেতে কয়॥ ৮৯(ক) |
| শাস্তি কি প্রাণে           | পায় কভু যা'র | সস্থোষ নাই স্বভাবে।     |
| শন্ত উপায়েও               | চলে কি কথনো   | তরণী জলের অভাবে॥ ৮৯(খ)  |

চৌ-সন্তোষ বিনা নাশ নাহি হয় কামনার। রামের ভজনা বিনা কামনা না নাশ হয়। পরা-জ্ঞান না জাগেলে সমতা আসে কি প্রাণে। দুরতা রহে কি কড় নভঃ অবর্তমানে ॥ ধৰ্ম নাহিক থাকে প্ৰজা না যদি রয়। তাপ বিনা তেজ কভু কেমনে প্রসার পা'বে। প্রিড-সেবা বিনা সদাচার নাহি আসে। আত্ম-আনন্দ বিনাতির কি হে হয় মন। প্রজীতি না এলে প্রাণে সিদ্ধি কি কন্তু হয়।

কামনা থাকিতে সুখ কড়ু নহে লভিবার। थत्र**नी विश्रम एक ऐश्र कि क**ण्ड हम्र । ১ ক্ষিতিতল বিনা বাস্ত থাকা সম্ভব নয় ৷ ২ জলের বিহনে রস কিসে সম্ভব হ'বে। তেজ বিনা রূপ যথা কখনও না প্রকাশে । ৩ সমীরণ-ভব বিনা হয় না ক' প্রশন । **ঐ**হরি-ভজনা বিনা ভবভয় নাশ∙নয় । র

| <b>দো</b> —বিখাস বিনা | নাহিক ভক্তি | ভা <sup>°</sup> বিনা <b>জবে না রাম।</b> |
|-----------------------|-------------|---|
| রাম-কুণা বিনা         | স্বপনেও জাব | শভে না ক' বিশ্বাম ॥ ৯০(ক)               |

## **জীরাষ্চরিত মানস**

এ বিচার মনে ভজ রঘুবীর

রাখিয়া সভত কর্মণা-আকর- ভৰ্ক সংশয় ভাঞি'। সুখদ চরণে মঞি । ৯০(খ)

(5)-নিজমতি অমুসরি' করিলাম বর্ণন। দেখেছি' এসব আমি আপনার আঁখি যোগে। অসীম অপার সব রঘুনাথ-গুণগ্রাম। নিজনিজ মতি-মত মুনি হরিগুণ গা'ন।

প্রভুর প্রভাপ নাথ খগকুল-বিভূষণ । অভিরঞ্জন নাই যুক্তির সহযোগে॥ ১ কিবা রূপ কিবা লীলা অথবা পাবন নাম। নিগম মহেশ শেষ অভ্যনাতার পান। ২

#### রাবের মহানভা

ভোমা হ'তে আদি করি' মশক অবধি ধায়। সেইমত রঘুপতি-মহিমা অ-গত তল। শতকোটি কাম-সম স্থন্দর ততুধারী। বিলাস-বিভবযুত যেন কোটি সুরেশ্বর।

আকাশ মাঝারে তবু অন্ত না কেহ পায়। অন্তনাকেহ পায় অ-প্রমেয় অভিবল। ৩ কোটি ঈশানী-সম অমিত অরাভিহারী। কোটি আকাশ-প্রায় প্রসার বিহুগবর 🛚 ৪

দো-শতকোটি বায়ু-শভকোটি শশী শতকোটি কাল শতকোটি ধুম-

সম বলশালী সমান শীতল সমান আবার কেতুর সমান

শতকোটি রবি-ভাষ। শমন সকল-ভব-ত্রাস ॥ ৯১ (ক) ছন্তর ছুর্গ# ছরন্ত । হর্জয় ভগবন্ত ॥ ৯১(খ)

তীর্থ সহস্রকোটি-সম তিনি পুতধাম। কোটি হিমালয়-সম অবিচল রঘুবীর। কোটি কামধেত্ব-সম দয়াময় কুপাবান। শত বাদেবী-সম অ-প্রমেয় চতুরতা। कांि दिवारि विकृ-मम शामन-ভव-कात्रग । কুবের সহস্রকোটি-সমান বিভববান্। ভারধারী যথা শতকোটি অহি-**ঈশ্ব**র।

(5)—অগাধ পাতাল-সম-শতকোটি প্রভু মোর। করাল শমন-শতকোটি-সমান ছোর॥ অখিল-পাতক চির-বিনাশন তাঁ'র নাম ॥ ১ শতকোটি পারাবার সম মহাগস্তীর ॥ সকল কামনা-ফল-বিধায়ক ভগবান ! ২ শতকোটি বিধি-সম সৃষ্টির নিপুণতা ॥ রুত্রদেব কোটিশভ-সমান জগ-নাশন॥ ৩ কোটি মায়া জিনি' তাঁ'র স্ক্রনের উপাদান ! সব(ই) সীমা-বিরহিত অমুপ জগদীশ্বর । ৪

ছ-নিক্লপম নাহি সম শতকোটি-এইমত নিজ প্ৰভু শুধু ভাব-দো-অণের অতল-

সম্ভের কাছে

খন্ডোত রবি মন অহুসরি' টুকুল'ন অতি সাগর জীরাম শুনে'ছি যেমন

উপমা আর

রাম(ই) সম রাম নিগম কয়। উপমায় যথা লম্বুতা হয় ৷ মূনিগণ তাঁ'র মহিষা গা'ন। মুধ কুপাময় ভাহাতে পা'ন। কেহ নাহি তল পায়। কহিলাম সমুদায় । ৯২(ক)

প্রেমজাব-বশ নানকী-পভিরে তথু ভগবান্ ভজিও সভত সুথাকর কুপাধাম। ভাজি' মায়া মদ মান 🛚 ১২(৭)

(ठो-एनि' पृष्ठित वानी अवरनत स्वकत । নয়নে ভরিল জল মন অভি হরষিত। শ্বরি' পূর্ব্বের মোচ অনুভাপ এল এবে। বার বার বায়সের চরণে সুটায় শির। গুরু বিনা ভবনিধি তরিতে নাহি শক্তি। সন্দেহ-অহি তাত দংশিয়াছিল মোরে। ভোমা-সম অহি-বৈছ দিয়া ঞ্ৰীঞ্চানকী-নাথ। ভোমার প্রসাদে মোর মোহ হ'ল খণ্ডন।

হর্ষিত খগপতি শিহরিত কলেবর 🛭 শ্ৰীরাম-প্রভাপ হ'ল জদিমাঝে দৃঢ়ীভূত ॥ ১ পরম পুরুষে ভ্রমে মান্তুষ-সমান ভেবে ॥ বাড়ার প্রণয় মানি' তা'রে সম রখুবীর ॥ ২ হ'লেও বিধির সম কিন্তা শিব উমাপতি # ছ্থদ ভর্ক-কৃট বাহিরিল বেগভরে। ৩ জিয়া'লেন পুন: মোরে করুণা করি' অগাধ॥ ব্রীরামের ভেদ এবে আনিলাম অতুলন । ৪

(मा-कति' माध्वाम প্রেম্ভরা মৃত্ হে প্রভু আপন কুপার সাগর

বছবিধ তা'র বিনীত বচন অবিবেক-হেতু

দাও সহস্তর

নতি করি' আছ্ডি' কর। বলে ভবে থগবর ॥ ৯৩(ক) শুধাই ভোমার পাশ। कानि' (मारत निक्रमात्र ॥ ৯৩(४)

(5)—তুমি হে সর্বজ্ঞ জ্ঞাত-তত্ত্ব আর মায়াহীন। মতিমান্ শীলবান্ সরল আচার-লীন ॥ জ্ঞান ও বিরাগযুত অফুভব-পরায়ণ। তুমি কহ কি কারণে লভিলে বায়স-কায়। শ্রীরাম-চরিতরূপ অমৃত-সরোবর। মহাদেব-জ্রীবদনে এ কথা ওনেছি প্রভু। অপলাপ নহে কভু শ্রীমুখের সে বচন। চরাচরময়ী ধরা সহ দেব নর যত। সংখ্যাহীন ব্ৰহ্ম-অগু বিশাল ভূবনময়।

তুমি রখুনায়কের অতি প্রিয় নিজ্জন ॥ ১ হে ভাত কুপায় কহ বৃঝাইয়া সমুদায়॥ আস্বাদ কোথা হ'তে পে'লে তুমি নভচ্চর ॥২ মহা প্রলয়েও তব অভাব না হয় কছু। ভাহাও এ মনে করে সন্দেহ উৎপাদন॥ ৩ সকল জগত কাল-মুখগত খাল্ত-মত। প্রকৃতই কাল সদা অনিবার্য্য অভিশয়। ৪

বো—তব 'পরে তা'র তব জ্ঞান-বলে তব আঞ্জাম এ কথার(ও) প্রস্থ

লাগে না প্ৰভাব रुरेन चरेन আসিতেই হ'ল

কারণ জানিতে

কি তা'র কারণ বল'। অথবা ভা' যোগকল ॥ ১৪ (ক) মোহ ভ্ৰম সব ভ্যাগ। ত্তদে বড় অনুরাগ । ১৪ (খ)

(5)--গরুড-বচন শুনি' হরবিত হ'ল কাক। ধক্ত বিহগপত্তি ধক্ত তব পৃত-মতি। ত্তনি' তব প্রেমভরা জিজ্ঞাসা মনোহর। আপনার সব কথা বর্ণন করি যথা।

কহিল ভবানী বাণী সহ অভি অনুবাগ॥ প্রশ্ন ভোমার মোরে মধুর লাগিল অভি॥ ১ বহু জনমের কথা উদিল স্মৃতির 'পর॥ नमामन छरत छाछ धन छरन संहे कथा। २

## **জীরানচরিত নানস**

জপ তপ যতঃ যাগ সম দম ব্রত দান। সকল ক্রিয়ার ফল রাম পদে প্রেম সার। এ শরীর পে'য়ে তবে পে'য়েছি ভক্তি তাঁ'র। যাহা হ'তে কিছু নিজ স্বার্থ সাধিত হয়।

বিরাগ বিবেক যোগ আর অমুভব-জান ৷ তা' বিনা কল্যাণ-প্রদ কিছুই নাহিক আর ॥ ৩ সে কারণে এই দেহে মমতা বেশী আমার। তত্বপরি সকলেরি অধিক মমতা রয় # ৪

| দো—হে পন্নগ-অরি | <b>শ্রুতি-সম্মত</b> | শাধু-উক্ত এই নীতি।                 |
|-----------------|---------------------|------------------------------------|
| হিতকারী জানি'   | নীচের(ও) সহিত       | করিবে পরম শ্রীতি॥ ৯৫ (ক)           |
| গুটি-কীট হ'তে   | উপক্ষে তম্ভ         | পট্টবাদ তাহা হ'তে।                 |
| ভা'তে হেয় কীটে | গ্রাণের সমান        | পালে সবে নানামতে ॥ ৯ <b>৫ (</b> খ) |

(b) — জীবের প্রকৃত স্বার্থ কেবল ইচারে বলে । কায় বাক্ মনে প্রেম রামের চরণতলে ॥ সুপবিত্র আ**র পুন: সুন্দর সেই** কায়। ব্রীরাম-বিমুখ যদি ব্রহ্মার দেহ পার। মোর এই কাক-দেহে শ্রীরাম-ভকতি জাগে। ইচ্ছা-মরণ তবু এ শরীর বরজি না। মোহের বশেতে শুধু কুগতি ভূগে'ছি ছখে। অনেক জনম ধরি' আচরিমু ক্রিয়া কত। कान यानि नाहि द्वन कहि दह विहाপि । वात्रवात पूरत' यादि हमनि वामात गिछ ॥ 8 তে নাথ সকল ক্রিয়া করিয়া দেখে'ছি ইহা। वक् क्रमाप्त्र कथा ब्र'रम्राह् च्यातरण स्मात्र।

যাহারে লভিয়া রাম-মারাধনা পাওয়া যায়। ১ কবি পণ্ডিত কভুমহিমানা তা'র গা'য়। সে হেতু এ কলেবর মোর অতি প্রিয় লাগে॥ ২ বেদে কহে নাহি হয় ভঞ্জনা শরীর বিনা॥ শ্রীরাম-বিমুধ মনে খুম না আসিত সুধে॥ ৩ করিলাম কত যোগ জ্বপ তপ যাগ ব্রত। কভু না পে'লাম স্থুধ এ দেহে পে'য়েছি যাহা। শিবের কুপায় মোরে ব্যাপে না ক' মোহ-ছোর ॥ ৫

### কলি-মাহান্ত্য বৰ্ণন

| <b>८म</b> ि-क्षथम कनम | যে ভাবে কাটিল | শুন কৰি এবে ভাহা।                  |
|-----------------------|---------------|------------------------------------|
| প্রভূপদে জাগে         | রতি আর মিটে   | কষ্ট শুনিলে যাহা। ১৬ (क)           |
| পূর্ব-কল্পে পাপ-      | মৃল যুগ কলি-  | যুগ ছিল একবার।                     |
| অ-ধরম ভরা             | हिन नात्रीनव  | (वरमत्र विरत्नाथी ष्यात्र ॥ ৯৬ (४) |

(5)—সেই কলিযুগে আমি আসিয়া কোশলপুরী। শৃত্ত-শরীর ধরি' জনম গ্রহণ করি । মহেশ-ভক্ত ছিমু কায় মন আর বাণী। ধন-মদে মন্ত ছিন্থ কটু-বাদী অভিশয়। यक्षि निवान किन त्रभूनाथ-त्राव्यानी। এখন জেনে'ছি ভাল কি প্রভাব অযোধ্যার। কোন জনমেও যদি অবোধ্যায় কল পায়।

নিশিতাম অস্ত দেবে এড বোর অভিযানী। ১ উপ্র মতি ছিল মম পত্তে ভরা এ বাদয়। उधानि महिमा किছু उधन ना छाँ द सानि ॥ २ गर भारत देश गा'स अथवा श्रुतात आद ॥ হয় রাম-পরায়ণ নাহি সংশব তা'ব । ৩

षर्याशा-धान करव वृत्त कान त्रहे धानी। বড়ই কঠিন সেই কলিকাল উরগারি।

বসেন হৃদরে যবে সীভানাথ ধন্তপাণি ৷ পাপে মঞ্জিড ছিল যত সব নরনারী। 8

| <b>ৰো—কলি</b> র পাতক | হ'রেছে ধরম    | পুণ্য-গ্ৰন্থ গুপ্ত।        |
|----------------------|---------------|----------------------------|
| मश्चिरमञ्ज्ञ भव      | কল্পনা-যোগে   | বছ মত তথা উপ্ত॥ ৯৭ (ক)     |
| মোহ-ৰশ যত            | মানব তথায়    | সদাচার লোভ-গ্রস্ত।         |
| বিবরিব এবে           | ধৰ্ম যা' কিছু | ছিল কলিযুগ-ক্তন্ত ॥ ৯৭ (খ) |

(5)- हिन ना क' वर्ष-धर्म अथवा आक्रम हाति। त्वरापत्र विरत्नांशी हिन यक नव नवनात्री ॥ বিপ্রে বেচিত বেদ নপতি প্রজা-শোষক। সে ধরিত সেই পথ যা'র যাহা প্রাণ চায়। বুণা আডম্বর আর দম্ভ রত যেই জন। পরধন-অপহারী সে-ই বড় বৃদ্ধিমান। भिषाा-कथन भंद्रे विक्रमभाती यव।। আচার-বিহীন যেব। #ভ-পথ পরিভাগী। ভার-নত যেবা বড নথে আর জটালালে।

বেদের অনুশাসন লাগিত না ক' রোচক ॥ ১ যে গাল-ৰাজান' পটু বলিত পণ্ডিত তা'য়॥ সেইজন সম্ভ-নামে পে'ত তথা বিজ্ঞাপন ॥ ২ দন্ত করে যেই জন সেই সে আচারবান ॥ কলিযুগে সেই পায় গুণবান্ ৰলি' সেবা ॥ ৩ किन्यूश-मास्य मिट छानी भात मि विताशी॥ সেজন ভাপদ নামে বিখ্যাত কলিকালৈ **।** ও

(मा-वमन कृष्य অভ্ৰত যাহার সেই যোগী সেই সিদ্ধ পুরুষ পরের অভিড-আচরণ যা'র ত্ৰিকয়াবাক্ষন মিথ্যা-কথনে

ভক্ষাভক্ষা ধায়। সকলের পূজা পায়। ৯৮ (क) সে-ই গৌরব-ধন্ম। वका विनया माख ॥ ৯৮ (४)

(5)-- রমণী-বিবশ সবে দে কালের নর যত। শুদ্রেরা বিজ্ঞগণে জ্ঞান উপদেশ করে। সব নর কাম-বশ লোভ-রত আর তেনধী। গুণের আকর অভি স্থন্সর পতি ত্যঞ্জি'। সধবা সেধানে থাকে সূবণেতে অ সুবিত। निया नाहि कान आंत्र आंधि-शैन शक यन। मिया-थन रुद्ध (यव) अञ्चल नाहि रुद्ध। মাতাপিতা আপনার সন্তানে ধ'রে ধ'রে।

বাজিকর-হাতে নাচে মর্কট যেইমত 🛚 গলে উপবীত ধরি' কু-দান গ্রহণ করে॥ ১ সস্থ ত্রাহ্মণ বেদ দেবভাগণ-বিরোধী 🛭 অভাগিনী নারী ভজে পর-পুরুষেতে মঞ্চি'॥ ২ বিধবা সভত করে শৃঙ্গার কড মত ॥ না শুনে বচন অত্যে জ্ঞান-দৃষ্টি নাহি কোন । ৩ ভেমন পামর গুরু খোর নরকৈতে জরে ॥ শিশায় দে ধর্ম শুধু যাহাতে উদর ভরে ॥ ৪

(पी-अञ्चलान विना নরনারী তথা অন্ত কথা নাহি কয়। লোভে কড়ি-মূলে প্রস্তু-বিজ-বধ ভাহাতে নাহিক ভর ৷ ১৯(ক) भुक्ष विक्र गरन शैन किरम वन' सिब । विवाप. मिथारन ৰিপ্ল সেইজনে श्चित करत जैवि । ৯৯(४) অমে বেবা জানে

(ठो-- भवनाती-ब्रज य्यवा क्रभवे जा-क्रुड्ड । त्म दग्र व्यक्तन-कानी व्यात त्म-दे खानी कन। আপনি পতিত অধে: অপরে পাতিত করে। (वप-निन्मा करत रयवा विखाति' छर्क साम । ভেলি কৃষ্ণকার কিম্বা হীন বংশে উৎপন্ন। বনিতা-বিয়োগ-শোকে কিন্তা গৃহনাশ-পরে। করায় নিজের সেবা তা'রা দ্বিজ্ঞগণ সনে। তথা আহ্মণ লোভী নিরক্ষর কাম-রত। অ-ব্রাহ্মণ করে জপ তপ ত্রত অগণন। আচার পালন করে নিজনিজ মক্তি মত।

বিরোধ মমভা আর অহমিকা-ভরপুর॥ क्रियूग-मीमा नित्य क्रियाहि प्रम्भ । ১ নষ্ট করে ভা'রে ধেবা সৎ-মার্গ সেবা করে। প্রতি নরকে সে মজে ধরি' করকর কাল।। ২ ভীল কোল কিরাত কি অক্স যত অধ্য-বর্ণ। মাথা মুড়াইয়া যা'রা সন্ন্যাসী-বেশ ধরে ॥ ৩ নিজ-করে নাশ করে ছই লোক এ কারণে ॥ আচার-বিহীন কিম্বা ঋলিতা-রমণী-ত্রত । ৪ ব্যাসাসন 'পরে বসি' করে কথা-কীর্ছন 🛭 কত যে অ-নীতি ভধা সে কথা কহিব কভ। ৫

ব্যে-বর্ণ-সম্বর মৰ্য্যাদা-হত কলে তা'র মোহ পাপ-রভ রচে শ্রুতি-সম্মত হরি-ভক্তি পথ সে মত তেয়াগি' মোহবশে রচে

কলিবুগ মাঝে লোক। দ্বখ ভয় রোগ শোক। ১০০(ক) জ্ঞান ও বিরাগ যুত। নুডন ধরম কড 🛚 ১০০(খ)

GD - छेमानी क्या'रत धन यख्टन नाकात्र चरत। ভাপদেরা ধনবানু নিধ ন গৃহী যত। বিভাড়িত করি' নর পতি-রভা বনিভারে। মুত দেখা পিতামাতা ততদিন করে মাশ্য। শ কর-ভবন ভা'র ধবে হ'তে লাগে প্রিয়। পাপ পরায়ণ নৃপ আপনার ধর্মহীন। धनवान्-शैनकां कि कृतीन-मावादत शन्। (वह वा श्रुवाक-श्रुक्ति य नष्ट मर्वाहानाना । কবি তথা অগণিত নাহিক কবি-পোষণ। অকাল যাজনা দিজে আসে তথা বারবার।

বিরাগ নাহিক তা'য় বিষয় ল'য়েছে হ'রে। কলির মজার কথা বিবরিয়া ক'ব কত॥ ১ কদাচারী সে আসনে দাসীরে বসায় ভরে ॥ यङ मिन विश्वभूषी निव्रषि' ना दश शक्त ॥ २ অবাতি লাগিতে থাকে নিজ প্রমান্তীয় ॥ দণ্ডি' প্রজারে করে বিভৃত্বনা প্রতিদিন 🛭 🗢 বিজ্ঞাবের চিহ্ন নাহি উপবীত ভিন্ন অস্ত । সম্ভ বলিয়া সেই কলিযুগে পূজ্যবান্ ॥ ৪ खन-निम्मक वह नाहि खनवान् सन ॥ অর বিনা লোক সব মরে করি' হাহাকার॥ ৫

সেই কলিযুগে বে —ধগবর শুন কামাদি বিকার মান মোহ আর মানবেরা করে ভাষস-আচারে দেব না বরবে সময়ে ডথায়

हलना एख (द्वा প্রসারিত সবিশেষ 🛭 ১০১(ক) ত্রপ ত্রপ যাগ দান। (प्रक्रिनी (पद्र ना शन । >>>(४)

স্ত্রধান্তিলাবিয়া অভি মতি নহে ধর্ম-রত।।

(5)—त्नवात्न नात्रीत ७५ वास्त्रत्न (कमनाम । धनहीना वह-कृषा मधला व्यपृर्व-काम ॥ বৃদ্ধি লবু স্থকঠোর নাজি লেখ-কোমলভা ॥ ১ রোগেতে পীড়িত নর না পায় স্থাধর লেশ। পঞ্চাশ-বর্ষব্যাপী ভা'রা অল্ল-আর্থর। বে-হাল ক'রেছে এই কলিকাল মানবেরে। নাহি ভোষ# না বিবেক কিম্বা নাহি শীভলভা। त्रैर्श लालमा कर्ने-वहरम श्रृतिख धता। মহাশোকে হথে কিন্তু সকল মানব ভবে। ইব্রিয়-রোধ দান নাহি দয়া কি স্থমতি। নর নারী সবে এবে শরীর-পরিপোষক।

অকারণ অভিমান বিরোধ রহে বিশেষ **॥** মনে অচমিকা যেন রচিবে কল্লান্ত-পর ॥ ২ **उन्या कि मरशामश किছू ना विठात करत ॥** সব জাতি কি কু-জাতি বেছে' নে'ছে যাচকডা ॥৩ একেবারে অপগত সমতা মানসহর। । আচরণ বর্ণাশ্রম ধর্ম-কর্ম্ম গত এবে॥৪ পর-প্রতারণা আর জড়তা ছে'য়েছে ক্ষিতি। অবনী ভরিয়া রহে যত পর-নিন্দক। ৫

| <b>দো—ত</b> ন ব্যাল-অরি | এই কলিকাল         | দোষ ও পাপ-আগার।             |
|-------------------------|-------------------|-----------------------------|
| কিন্তু এক গুণ           | আছে স্থ-মহৎ       | প্রয়াস-বিনা নিস্তার ১•২(ক) |
| সভ্যযুগে পু <b>ৰু</b> । | ত্ৰেভায় দ্বাপয়ে | যভা যোগে যেই কল।            |
| <b>দেই গ</b> ভি এই      | কলিষুগে হরি-      | নামেতে লভে কেবল 🛙 ১০২(৭)    |

চৌ—সভাগুগেতে যোগী হয় অমুভব-যুত। ত্রেভার বিবিধ যাগ আচরণ করে নরে। ষাপরেতে রত্বপতি-চরণ করি' পুঞ্জন। কলিযুগে শুধু এক হরিগুণ-ভলনায়। किनियुर्ग नाहि योग नाहि योग नाहि छ्यान । अन्छ-आधात त्राम त्रपूर्ण छ-छन्गान ॥ সব আঞ্জর তাজি' যেজন রামেরে ভজে। সে ভবসাগরে তরে সংশয় নাহি তা'য়। কলির মহিমা এই অতি মহা-পুণ্যময়।

🕮 হরির খ্যান করি' হয় ভব-উভরিত ॥ প্রভুরে সমপি' ফল ভবের বারিধি তরে ॥ ১ ভবনিধি-ভরা বিনা উপায় নাহিক কোনো । অভল ভবের এই পারাবারে পার পায় ॥ ২ প্রেমের সভিত যেবা গুণাবলী-গানে ম**লে** ॥ ৩ কলিযুগে নাম-ফল সবে হাতে হাতে পায় ॥ मञ्जूत मानम-भूगा भाभ मञ्जूत नग्र॥ 8

| <b>দো</b> —যুগ নাহি আর | কলির সমান     | विश्वाम इग्न यनि ।       |
|------------------------|---------------|--------------------------|
| রাম গুণগান             | গে'য়ে ভরে নর | বিনায়াস ভবনিধি। ১০৩ (ক) |
| সভ্য দয়া তপ           | দান এর মাঝে   | क्लिए क्थिम मान ।        |
| যেন্তাবে সেন্তাবে      | যাচকেরে দিলে  | করে দান কল্যাণ। ১০৩ (খ)  |

(5)-রাম-মায়া-প্রেরণার সব-জ্বদে অবিরত। নিৰ্মাণ সম্বন্ধণ সমতা ও অমুভব। সৰ-প্রধান কিছু রক্ত: আর কর্মে রভি। বভ রক্ষঃ সম্ভ অৱ কভক ভামসভাব।

নিজ নিজ যুগ-ধর্ম হইডেছে আচরিত ॥ মোদিভ মান্দ সদা সভ্যযুগ-গুণ সব ॥ ১ মোদিত সদাই মন ত্রেভাবুগ এ প্রকৃতি। ঘাপরের ধর্ম এই কিছু হর্ষ-ভয় ভাব॥ ২

ভম: বছ রজ: অল্ল বিসম্বাদ চারিদিকে। ञ्चलिक सन यिनि त्रांषि भरन काल-धर्मा। প্রীরাম-চরণ রক্তে দত মতি রহে বাঁ'র। বাজিকর-মায়াজাল দর্শকে ভীত করে।

বিশিষ্ট ধ্রম এই কহিলাম কলিষুগে। অধর্মেরে পরিহরি' প্রেমে আচরেন কর্ম। ৩ যুগ-ধর্ম তাঁহারে না কভু করে অধিকার। প্রভাব না লাগে ভা'র নিজ-অমুচর <sup>প</sup>পরে ॥ ৪

### গুরু-অপমান ও নিবের শাপ প্রদান

| <b>দো</b> হরি-মায়া-কুত  | দোষগুণ হরি-  | ভলনাবিনানা যায়।           |
|--------------------------|--------------|----------------------------|
| এ বিচারি' ভ্য <b>কি'</b> | সকল কামনা    | লাগ' রযুবর পায়॥ ১০৪ (ক)   |
| সেই কলিযুগে              | অনেক বরষ     | অযোধ্যায় বাস করি'।        |
| আকাল আসিলে               | বিদেশে গেলাম | অতীব বিপাকে পড়ি'॥ ১•৪ (খ) |

টো--গেলাম কোশল ছাড়ি' উচ্জমিনীপুরী-মূবে। দরিজ মলিন দীন কাতর হইয়া ছবে। किছुकान গডে किছু ধন করি' আহরণ। বিপ্র এক বেদবিধি-যুত ধুর্জ্জটি-ভক্ত। অতি সাধু-ভাবাপর পরমার্থে জ্ঞানবান্। করিভাম তাঁ'র সেবা কপটভা ফ্রদে ধরি'। বাহিরে বিনয় হেরি' অভিশয় দয়া ভরে। मिव-मञ्ज विक्ववत स्मारत कतिरामन मान। मित-प्रस्मित शिया निक प्रत खेश करि ।

भक्रत-व्याताश्यम व्याचात्र मिलाभ भन ॥ > অন্য কাজ নাহি তাঁ'র সদা শিব-অমুরক্ত । শস্ত-উপাসক তবু 🖺 হরিরে ভক্তিমান্॥ ২ অতীব দয়ালু দ্বিদ নীতি-যুত অহি-অরি॥ তনয়ের মত করি' দ্বিদ্ধ পড়া'তেন মোরে ॥ ৩ কত সাধ-উপদেশ কৈ করিব সে বাখান। দস্ত অনুস্থারে মোর জ্ঞানর উঠিল ভরি'॥ ৪

| <b>দো—</b> হীন <b>লা</b> তি আমি | মতিতে মলিন    | অতি খল বশ-মোহ।              |
|---------------------------------|---------------|-----------------------------|
| হরিভক্ত আর                      | বিপ্রের সনে   | ছিল নিদারুণ জোহ। ১০৫ (ক)    |
| বুঝা'তেন গুরু                   | হ'ডাম রাগভ    | ছ্ৰিত হ'ভেন নিভা ।          |
| নীজি কি ভাচার                   | ভাল লাগে যা'র | দন্তেতে ভরা চিন্ত ॥ ১০৫ (খ) |

(5)—একবার গুরু মোরে ডাকিয়। পাশে আপন। স্থনীতি অনেক বিধি করিলেন বর্ণন । হে স্থক ভবানী-পত্তি ভন্তনার এই ফল। আপনি বিধাতা শিব ভঙ্গনা করেন ভাঁর। বাঁছার চরণে নিজে শঙ্কর অনুগত। शक भद्रत इति-स्मर्क कर्टन श्राम । বিশ্বালাভ করি' আমি নীচলাতি খগবর। कृष्टिन कू-डागा यामि याख्यानी नीवनाडि। महावान् अंडि शक द्वारम् नाहिक स्मर्थ।

প্রিরাম-চরণে জাগে অফুরাগ অবিচল ॥ ১ পাপ-রভ মানবের কথা কিবা বল' আর ॥ তাঁ'র সনে জোহ করি' মুখ চাও ভাগ্যহত ॥১ खनिया छेठिन श्रांग निमाद्रग दायां छान ॥ হইলাম পয়: পান করি' যথা কণ-ধর ॥ ৩ করিভাম বিজ-সনে জোহ সদা দিবারাভি। वात वात ज्ञान-भिका पिर्णन भारत वर्णन ॥8

যথা নীচ যা'র পাশে অধিক আদর পায়। অবি হ'তে উৎপন্ন ধুঁয়া ভাই যেইমত। পথের উপরে ধূলি অনাদরে প'ড়ে রয়। যে বায়ু ভাহারে তুলে প্রথমে ভা'রেই ভরে। अन दर विरुशनाक विठातिया व वहन। কি কবি পণ্ডিত আর সবে কছে এই নীতি। রেখ' না ক' সম্বন্ধ কভু কৃটিলের সনে। আছিলাম থল আমি প্রাণে কৃটিলভা ভরা।

| अध्य जारतर वर करत्र राष्ट्र ध्रतामन ।                     |
|---|
| মেঘ-রূপ ধরি' করে অনলেই নির্বাপিড 🛭 ৫                      |
| চরণ-প্রহার সদা স্বাকার শিরে বয়॥                          |
| তা'র পর নৃপ-শিরে মুকুটের <sup>'</sup> পরে প <b>ড়ে॥</b> ৬ |
| জ্ঞানবান্ নীচ-সঙ্গ নাহি করে কদাচন ।                       |
| ধন-সনে ভাল নহে কলহ অথবা প্রীতি ॥ ৭                        |
| ধল সারমেয়-সম পরিহর খল জনে।                               |
| ভাল না লাগিত গুরু-কচন মানসহরা॥ ৮                          |
|   |

| <b>ড়ো</b> —শিব-মন্দিরে | গিয়া একবার                 |
|-------------------------|-----------------------------|
| আসিলেন গুরু             | অ <b>হস্কা</b> র-ব <b>ে</b> |
| দয়ার মূরতি             | না কহিলা কিছু               |
| গুরু-অপমান              | এ ভীষণ পাপ                  |

ৰূপিভেছিলাম নাম। উঠি' না করি প্রণাম 🛭 ১০৬ (ক) श्रुप नाशि त्याय-त्याम। সহিতে নারে মহেশ # ১০৬ (খ)

চৌ-মন্দির-মাঝে তবে হইল আকাশ বাণী। রে অভাগা জ্ঞানহীন আত্ম-অভিমানি। যদিও গুরুর ভো'র পরাণে নাহিক ক্রোধ। তথাপি দহিব ভো'রে আমি মহা শাপানলে। প্রদান না করি যদি ওরে থল সাজা তোরে। গুরুর উপরে রাখে দ্বেষ যে অধম ধল। তা'রপর পশু-পাখী যোনিতে ঘুরিয়া শেষ। গুরু হেরি' ছিলি পাপি বদি' অব্দগর-প্রায়। এ অধম গভি লভি' বিটপি-কোটরে গিয়া।

व्यक्तीय मग्नात विख व्यार्थ ममाक् रवाथ ॥ > নীতির হেলনে মোর পাশে নাহি ক্ষমা মিলে। ভ্রষ্ট ভবে হ'বে মোর বেদ-পথ চিরভরে॥ ২ কোটি যুগ ধরি' রহে রৌরব নরক-তল ॥ অযুত জনম ধরি' সহে নিদারুণ ক্লেশ 🛭 ৩ হ' ভুদ্ধগ মতি ভো'র পাপে অবলোপ-প্রায়। थाक दा व्यथमाधम त्यरेशात निवित्रा । 8

| <b>খো</b> —হাহাকার করি' | উঠিলেন গুরু   | শুনিয়া দারুণ শাপ।          |
|-------------------------|---------------|-----------------------------|
| ৰম্পিড মোরে             | নির্ধি' জাগিল | অন্তরে পরিতাপ ॥ ১০৭ (ক)     |
| প্রেম-ভরে করি           | হরেরে প্রণাম  | করি' ছই কর জোড়।            |
| शन-शन खारव              | করেন মিনভি    | বুঝিয়া নিয়তি মোর॥ ১০৭ (খ) |

## কুলাইক

ঈশান ঈশ্বর নির্বাণ-রূপ ভোষা নমি। ভূমি হে অব্লপ-স্থিত গুণ ইচ্ছা-বিরহিত। তুমি নিরাকার আর ভূরীয় ওঁকার-মূল। মহাকাল-কাল ভূমি করাল হে কুপাত্রান। বিসূ একা বেদ-রূপ ব্যাপক অন্তরবামি 🛭 চিদাকাশ আকাশ-বাস# চরণ ভল্পে প্রণন্ত 🛚 ১ অতীত ইন্দ্রিয় মন বাক্য ঈশ-গিরিকুল॥ সংসার-অপার-পার নতি মম গুণধাম ৷ ২

<sup>🍨</sup> তুনি চৈতভবর, আকাশ্বৎ এবং আকাশ ভোৱার বস্তু ; অর্থাৎ তুনি বিরন্ধর ।

হিমাজি-সঙ্কাশ তুমি গৌর গম্ভীর হর। কুরিত মৌল কল্লোলিনী সুরধুনী। চলত-কুগুল आंथि विभाल का मताइत। মুগাধীশ-চর্ম-বাস মুগু-হার শোভা পায়। প্রচন্তঃ প্রকৃষ্টণ তুমি প্রগল্ভ পরমেশ্বর। ত্রি-শূল নিম্মূলকারি হে প্রভু ত্রিশূল-পাণি। কল্যাণ-রূপ কলা-অতীত কল্পান্তকারি। জ্ঞান-মুখ-পারাবার সব মোহ-অপহারি। ইহ কিবা পরলোকে মানব না যত দিন। তত দিন শান্তি নাই তাপ নাহি দুরে যায়। नारि कानि योग क्र ना कानि श्रृका छक्न। জন্ম জরার হথে তাপিত হথারে প্রস্তু।

ধর্ক মনোজ-শোভা-নিন্দিত তম্ব-ধর। কঠে ভুৰগ শোভে ভালে বাল-নিশামণি । ০ প্রসর আনন নীলক্ঠ তুমি দয়াকর ॥ চরাচর-প্রিয় নাথ শঙ্কর নভি পার 🛚 ৪ অথণ্ড অজন্ম আর কোটিভাত্র-জ্যোতিধর ॥ ভজি হে ভাবের গম্য ভবানী-ঈশ্বর আমি ॥ ৫ সক্ষন-মুখদাতা সদা ওহে ত্রিপুরারি॥ व्यनीत व्यनीत व्यकु मानन-मधन-व्यति॥ ७ উমানাথ তব পাদ-পর্যুগে হয় শীন ॥ প্রভু সর্ব-ভূতবাসি প্রীতমনে রাখ পায়। ৭ ভোমারি চরণে সদা সর্বদা মোর মন। রক্ষাকর নমি ভোমা শিব ভগবান বিভু ৮৮

শ্লোক-এ ক্স-অইক স-ভক্তি পাঠ হর-প্রীতি হেত করিলে মানবে विक निर्वितना या'त। শস্কর-প্রীতি পায়॥ ৯

### লিবের লিকট ক্ষা-ভিকা

| <b>দো</b> —মিনতি শুনিয়া  | সর্বজ্ঞ শিব           | দেখি' দিজ-অনুরাগ।                      |
|---------------------------|-----------------------|--|
| করেন মন্দিরে              | দেব-বাণী পুনঃ         | <b>জিজ</b> বর বর মাগ'॥ ১ <b>০৮</b> (ক) |
| প্রসন্ন যদি হে            | মোর 'পরে <b>প্রভু</b> | यनि अरे मौति स्त्रह।                   |
| প্রথমে বিভরি'             | ও পদে ভক্তি           | পরে আর বর দেহ। ১০৮(খ)                  |
| ভব মায়া-বশে              | এ জড় মান্ব           | ফিরি'ছে হারা'য়ে জ্ঞান।                |
| এর <sup>১</sup> পরে ফ্রোধ | নাকরিও প্রভু          | কুপানিধি ভগবান্ ॥ ১০৮(গ)               |
| হে শহর প্রভূ              | দীনে দয়াময়          | কুপা কর এই দীনে।                       |
| ভোমার কুপায়              | শাপ বর হয়            | (यन (इ व्यक्कमिरन ॥ ১०৮(च)             |
|                           |                       |  |

(5)—কক্লানিধান এবে এই কুলা কর' এরে। মহা কল্যাণ বাহে এ মানব লাভ করে । পরহিত-সিঞ্চিত ত্রাহ্মণ-বাণী শুনি'। যদিও অধম-মতি ক'রেছে দারুণ পাপ। ভথাপি ভোমার হেরি' সাধুত। বিকোত্তম। পত্ৰ-উপকারী যেবা আর ক্ষমা-পরায়ণ। বিষল না হ'বে কভু মোর অভিশম্পাত।

'এবমক্ষ' বলি' শেষে হটল আকাশ-বাৰী # ১ তাই এর প্রতি আমি দিয়াছি গভীর শাপ । করণা ইহার পরে করিলাম অতুলন ৷ ২ মোর পালে রাম-সম প্রিয় সেই আছাণ # সহস্র যোনিতে স্থির ফিরিবে এ অচিরাৎ 🛊 🔸

<sup>•</sup> रक्क्योः † व्यक्तिः

ভবে জন্ম-মরণেতে যে ছ-সহ ছব পার।
জ্ঞান দূর নাহি হ'বে কোন যোনি-মাবে গিরা।
একে ড' জনম তব হ'ল রছুনাথ-পুরী।
পুরীর প্রভাবে আর অন্ধ্রাহ-ভরে মোর।
বৎস শুনহ এবে সভ্যভাষা এ আমার।
আর যেন করিও না কভু ছিল্ল-অপমান।
ইন্দ্র-কুলিশ কিবা বিশাল ত্রিশূল মম।
এদের(ও) প্রহারে যা'র জীবন নাহিক যায়।
এ বিবেক যত্নভরে শ্বরণে রাখিলে পরে।
অপর রহিল ভব 'পরে মম আশীর্বাদ।

তাহার কিছুই নাহি কখনো লাগিবে ভা'র ॥
ধ্বেব মন বাণী শুভ শুন এবে মন দিরা॥ ৪
ভাহাতে আমার সেবা করিলে পরাণ ভরি'॥
রামের ভকতি স্থির জাগিবে হাদরে ভো'র॥ ৫
ভিজ্ব-সেবা ব্রভ শুধু হরি-মন ভূষিবার॥
সস্তে করিও মনে অপার জীভগবান॥ ৬
কাল-করণ্ড দও স্থান্ন মুভীষণ॥
ভিজ্ব-জোই জনলে সে ভক্ষ হয় নিশ্চয়॥ ৭
তৃত্বর ভা'র আর কিছু নাই সংসারে॥
ফ্রচিমত সব ঠাই রহিবে গতি অবাধ॥ ৮

# কাক-ভুষুভির পূর্বকথা

| দো—শিব-বাণী ভনি' | পুলকিত গুরু             | 'এবদল্প' এই বলি'।             |
|------------------|-------------------------|-------------------------------|
| আমারে বুঝা'য়ে   | শিব-রভ মনে              | ভবনে গেলেন চলি' 🛭 ১০৯(ক)      |
| কাল-প্রেরণায়    | বিন্ধ্য-গিরিডে          | যাইয়া হ <b>'লাম ব্যাল</b> ≉। |
| কোন ক্লেশ বিনা   | সে-ভন্ন ত্য <b>ঞ্চি</b> | গত হ'লে কিছুকাল 🛭 ১০৯(ৰ)      |
| যে শরীর ধরি      | তাহা <b>ই</b> আবার      | ত্যবিতাম অনায়াদে।            |
| সে যেন ধারণ      | নৃতন বসন                | ড্যজিয়া জীর্ণ বাদে ॥ ১০৯(গ)  |
| হর রাখিলেন       | বেদের সম্মান            | আমি নাহি পাই কট্ট।            |
| নানা কলেবর       | খগবর ধরি                | জ্ঞান নাহি হয় নষ্ট॥ ১০৯(ঘ)   |

চৌ—ভির্যাগ দেব নর যে শরীর ধরিতাম।
সব স্থা-মাঝে ছিল শুধু এক ছ্থা-ভার।
শেষের শরীর মোর হ'ল এক বিপ্রের।
সে বোনিতে মিলি' যত অপর বালক সনে।
কিশোর হইলে পিডা দেন মোরে শিক্ষাদান।
মনের বাসনা যত সমুদয় ভিরোহিত।
কহ খগরাজ হেন কেবা আছে ধরা'পরে।
কিছু না লাগিত ভাল এই প্রেম-লীন মনে।
পরলোক গত যবে কাল-বলে পিডামাতা।
বন-মাঝে যথা য্থা ম্নিগণে হেরিডাম।

তা'তেই ভক্ষনা রামে যথাবিধি করিতাম ॥

অমন দয়ার গুরু-সনে রুঢ় ব্যবহার ॥ ১

দেব-ত্বর্লভি যাহা গীত বেদ-পুরাণের ॥

শ্রীরাম-চরিভলীলা খেলিতাম একমনে ॥ ২

শুনি বুঝি স্ব তবু তাহাতে মঞ্চে না প্রাণ ॥

রামের চরণ-পানে শুধু টান প্রধাবিত ॥ ৩

যেবা কামধের ছাড়ি' গর্দভৌ-সেবা করে ॥

পরাজিত পিতা মোরে পড়াইয়া এ-কারণে ॥ ৪
বনে চলিলাম তবে ভজিতে ভকত-জাতা ॥

তাঁপেরি আবাসে গিয়া পদতলে নমিতাম ॥ ৫

সাপ।

শুধা'তাম রাম-গুণ তাঁ' সবায় প্রেমন্ডরে।
কিরিতাম শুনি' শুনি' হরিগুণ-অনুবাদ।
স্থাত ধন মান-আশা মন হ'তে অপগত।
স্প্রীরাম-চরণ যবে হেরিব নয়ন জরি'।
বাঁহারে শুধাই সেই মুনিই এ কথা ক'ন।
আমারে অ-গুণবাদ কিছু ভাল না লাগিত।

কহিলে সে গুণগান গুনিভাম গ্রীভিডরে।
অবারিত ছিল গতি শক্ষর প্রসাদাৎ ॥ ৬
গুধু এক মহানল অন্তরে ধুমায়িত ॥
তখন মানিব মোর জনম সকল করি' ॥ ৭
ভগবান্ সর্ব্ব-ভূড-অধিগত হ'য়ে র'ন ॥
বিভূর সংগুণ লীলা তরে প্রাণ লালায়িত ॥ ৮

পে-শুকুর বচন স্মরণ করিয়া প্রেম রাম-পদতলে। রশ্বপতি-গুণ গাহিয়া বেড়াই নব অন্তরাগ-বলে ॥ ১১০ (ক) লোমশ-মূমির সকালে গমন ও শাপ-বর লাভ সুমেক্র-শিধরে লোমশ মূনি আসীন। বটডক্ল ডলে ছেরিয়া চরণ প্রণতি করিয়া ক্ছিলাম বাণী দীন # ১১০ (খ) ওনি' বাণী মম বিনীত কোমল কুপাবান মুনিরাজ। আসিয়াছ কোন কাজ ৷ ১১ (গ) ব্রাহ্মণ তুমি সাদরে ভ্যা'ন কুপানিধি ভূমি সব জান' গুণবান। কহিলাম প্রভু

আরাধনা দেহ

(5)-छ्यन चामरत मूनि त्यागळान-भतायग । আমারে জানিয়া সেই পরাজ্ঞান-অধিকারী। ব্রহ্ম-উপদেশ মুনি করিলেন আরম্ভন। রূপ-হীন বৃদ্ধি আর ইচ্ছার অগোচর। মন ইল্লিয়াডীত মল-হীন অবিনাশী। ভিনিই সে ভূমি মাঝে নাহিক কিছুই ভেদ। व्यटनक विशासन भूनि एमन स्मारत छेशरमम । আবার কহিতু তাঁর চরণে প্রণাম করি'। জীবাম-ভকতি নীরে আমার মানস মীন। কুপা করি' কর প্রাম্ভু সেই উপদেশ দান। আমার প্রভুরে আগে নির্থি নয়ন ভরি'। শুনি' মনি পুনঃ কহি হরি-কথা অমুপম। খণ্ডন করি' তবে নিগুণ-মতবাদ। উন্তরে দিমু প্রতি-উত্তর মূনিবরে। শুন প্রাক্ত যদি বছ অপমান-শর বয়। चकि-वर्षण यक्ति कक्तु करत्र कान कन।

স-প্রণ ব্রহ্ম-

কীর্ত্তন করি' কিছু রম্বপতি-গুণগণ । ব্রহ্মজ্ঞান-রড আর পরম বিবেকাচারী॥ ১ অতৈত অ-জন্ম তিনি অতীত বিষয় মন। অফুভবগম্য ওধু অধণ্ড পরমেশ্বর ॥ ২ বিকার-অভীত আর অবিচল স্থপরাশি। क्रम स महत्र यथा अहे भारत मन (वन । ० নিক্ত্র-মতবাদে না লাগিল মন লেশ। সপ্তণ-সাধনা প্রস্তু কছ মোরে দয়া করি' ॥ ৪ কেমনে পুথক করি তাহারে মুনি প্রবীণ। নয়নে যাহাতে পাই হেরিতে 🕮ভগবান। ৫ পরে নির্গুণ-বাদ ওনিব যতন করি'। খিং। নিপ্রণ-মত করিলেন নিরূপণ । ৬ मक्रान्त्र शाक कति हर्त्र-छत्त द्यक्रियाम । ভাহাতে রোবের চিহ্ন মূনি-দেহে উঠে ড'রে ॥१ कानीत(७) अपराय ज्या द्वार्यत जेपस रस ॥ চন্দন(ও) তা'হে করে অনল-শিখা স্থান ! ৮

বুঝাইয়া ভগবান্ ৷ ১১০ (ঘ)

| <b>দো</b> —কোপ-ভরে মূনি | যবে বারবার   | স্থাপন করেন জ্ঞান।                                  |
|-------------------------|--------------|---|
| ৰসিয়া ডখন              | মনোমাঝে করি  | বছবিধি অনুমান 🛚 ১১১ (ক)                             |
| ভেদ-বুদ্ধি বিনা         | কেন আসে রোষ  | ভেদ বিনা-অজ্ঞান।                                    |
| <br>মারা-ব <b>ছ জ</b> ড | সীমাবদ্ধ জীব | হয় কি বি <del>ভূ-স</del> মান ॥ ১১১ ( <del>৭)</del> |

(D)-- সর্ব্ব-হিডকামী যেবা তুখী কভু সে কি হয়। স্পর্শমণি যা'র কাছে দীনডা কি ডা'র রয় ॥ পর-জোহী কখনো কি হয় ভয়-বিরহিত। 🔭 বিপ্র-অহিড করি' বংশ কি রতে আর। স্থমতি জাগে কি যেবা খলের সাথেতে রয়। পরমাত্মা-বিৎ ভব-সাগরে কন্তু কি পড়ে। নীতি-জ্ঞান বিনা রাজ্য কখনো কি রক্ষা হয়। পুণ্য-বিহনে কেহ পায় কি বিমল যশ। হরিভক্তি-সম লাভ হয় অন্য প্রকারেতে। ধরা-মাঝে এর প্রায় আর হানি কিলে হয়। অসাক্ষাতে নিন্দা করা কিবা পাপ এর চেয়ে। দয়ার অধিক আর কি ধরম **জ**গ ছে'য়ে॥ € এমনি যুক্তি কত উঠে মনে অগণিত। সগুণ-স্থাপনা যেই করিলাম শেষবার। রে মৃট পরম শিক্ষা না ধরিলি ছার মনে। প্রত্যয় না করিয়া প্রকৃত বচনে মম। টান ভোর অভিশয় আপন অধম মতে। হরবে মুনির শাপ লইলাম তুলি' শিরে।

কামী কি রহিছে পারে কালিমায় অ-লেপিড ॥১ কর্ম সম্ভবে পরা-জ্ঞান লাভ হয় যা'র ॥ পরস্ত্রী-গামীর কহ স্থ-গতিকি কভু হয় 🛚 ২ 🖰 কভু সুখী হয়, কি যে হরি-নিন্দা সদা করে। হরির মহিমা-গান-পরেও কি পাপ রয়। ৩ পাপ না করিলে ভোগ কড়ু কি করে কুযশ। নিয়ত করে যা' গান যত বেদ পুরাণেতে 🛙 ৪ শরীর ধরিয়া যদি রামে মতি নাহি হয়। মূনি-উপদেশ নহে অন্তরে প্রবেশিত। গর্ভিজ' উঠেন মূনি ক্রোধের ভরে অপার ॥ ৬ তর্ক-বিতর্ক বহু করিলি আমার সনে। সকল যুক্তিতে ডর করিলি বায়স-সম॥ ৭ হ' গিয়া চপ্তাল-খগ মোর অভিশ**ম্পা**তে ॥ দীনভাব নাহি মনে ভয় নাহি অক্সরে । ৮

| দোৰবিত-ধবিষ্ | কাক-কলেবর     | মুনিপদে করি' নতি।         |
|--------------|---------------|---------------------------|
| র্যুকুলমণি   | রাম-পদ শ্বরি' | উড়িয়ু হরষ-মতি 🛭 ১১২(ক)  |
| হে উদা যেজন  | রাম-পদে রভ    | গত কাম মদ ক্ৰোধ।          |
| প্রসাম জগ    | ষে ভেৱে মানসে | আসে না বিরোধ-বোধ। ১১২ (४) |

চৌ-শুন ধগরাল এতে মূনি-দোষ নাহি কোন। স্বারি প্রেরক সেই রপুকুল-বিভূষণ। কুপার সাগর করি' মূনির মানস-ভ্রম। জানি' প্রভু মোরে তাঁ'র কায়-মন-বাক্য দাস। আমার ধীরভা হেরি' ক্রোধ-বিরহিত প্রাণ। অভিশয় খেদ-ভরে পরিতাপ করি' তিনি। অনেক প্রকারে মোরে পরিডোব করি<sup>2</sup> দান।

পরীক্ষা আপন পদে করিলেন প্রেম মম ॥ ১ मनित खराय स्या कतान भूनः व्यकान ॥ ঞ্জিরাম-চরণে মম প্রতীতি অ-পরিমাণ । ২ বিশেষ আদর করি' আবার ডাকেন মূনি। ভবিলেন বাম-মন্ত্র হরবে আমারে দান # ৩

মম আজীবন-প্রিয় শিশু রাম-রূপ ধ্যান।
প্রাণ-মনোহর কত কত স্থুখ ভরা রূপ।
তা'র পর কিছু কাল রাখিয়া আপন পাশো।
অতীব আদর ভরে শুনাইয়া সেই বাণী।
এ গোপন রাম-লীলা প্রেমের অপার উৎস।
এখন ভোমারে জানি' পরম ভকত তাঁ'র।
হে তাত নাহিক যা'র শ্রীরাম-ভকতি প্রাণে।
বৃষা'ন আমারে মুনি কডই বিবিধ ভাঁতি।
আপন কমল-পাণি পরশি' আমার শিরে।
শ্রীরাম-চরিত তো'র হুদয়েতে অবিরল।

দেন বলি' বিধি সেই পরম কুপানিধান ॥
সে রূপের ধ্যান আগে ব'লেছি হে ধগভূপ ॥ ৪
শ্রীরাম-চরিত কথা শুনা'ন বিবিধ ভাষে ॥
শ্রবণের স্থধকর বচন বলেন মুনি ॥ ৫
মহেশ-প্রাদে তবে করিয়াছি লাভ বংস ॥
অকপটে উদ্ঘাটন করিলাম ভেদ ইহার ॥ ৬
না উঠা'য়ো এই কথা কভু তা'র সন্নিধানে ॥
করিলাম মুনি-পদে প্রেমের সহিত নতি ॥ ৭
আশীষ দিলেন কভ ভাসিয়া পুলক-নীরে ॥
আমার আশীষে এবে রহিবে সদা অচল ॥ ৮

| <b>দো—শ্রী</b> রামের প্রিয় | হও সদা মান-    | <b>অতীত স্থ-গুণ</b> বান্।    |
|-----------------------------|----------------|------------------------------|
| কামরূপ আর                   | ইচ্ছা-মরণ      | বিরাগ জ্ঞান-নিধান 🛭 ১১৩ (ক)  |
| <b>যে</b> খানেই ভূমি        | করিবে নিবাস    | শ্বরিয়া শ্রীভগবান্।         |
| যোজন ব্যাপিয়া              | মান্না মোহ তথা | কভু না পাইবে স্থান 🛭 ১১৩ (খ) |

চৌ-কাল করমের গুণ কিম্বা অপগুণ্চয়। রামের রহস্তলীলা ললিত বিধান যত। আয়াস বিহনে তব মানসে উদিত হ'বে। বাসনা উদিবে যাহা হ'বে ভাহা স্থপাধিত। আশীষ-বচন এই যেমনি কছেন মুনি। সভ্য হো'ক জ্ঞানী মুনি ভোমার আশীস বড। অপার হরষ প্রাণে দেববাণী শুনি' কাণে। করিয়া মিনতি মুনি-আদেশ করি' গ্রহণ। অতীব হরব ভরে আসিম্ব এ আঞ্চমে। করিতে হেথায় বাস হ'য়ে গেল এইমভ। বসিয়া নিয়ত করি রম্বপতি গুণ-গান। যখনি কোশলপুরে আসি' রাম রখুরায়। মহ। উল্লাসে গিয়া তখন কোশলে রই। আবার প্রভুর মম সে মোহন বালরূপ। সকল কথাই তোমা করিলাম বর্ণন। শভা ভোমার সব মিটা'রেছি পগবর।

না লাগিবে স্বভাবজ দোষ গুণ সমুদয় 🛭 ইভিহাস পুরাণে যা' গুপ্ত বা প্রেকটিত ॥ ১ নিভ নব অমুরাগ রাম-পাদপদ্মে র'বে । श्रित क्षेत्रारम किছू ना त'रव व्यनिश्रेण ॥ २ গভীর নিনাদে নভেঃ হ'ল পুত ব্রহ্ম-বাণী ॥ এ মোর ভকত প্রিয় কায় মন কর্ম-গত। ৩ সব সংশব্ধ গত প্রেম ওত-প্রোত মনে ॥ চরণ-সরোজে করি' বার বার প্রণমন ॥ ৪ ছন্ন ভ বর পে'র প্রভুর ভক্তি-গুণে । সপ্ত-বিংশ কল্প এবে কাল-কোলে নিপতিত। ৫ শ্রনে যন্ত বিহুগেরা পরম পুলক-প্রাণ ॥ মানবের হিড-ভরে ধরেন মানব-কায় । ৬ তাঁহার বালক-লীলা নির্থিয়া ধন্ত হই ॥ क्षप्रदेश विद्या किर्दर्भ व्यामि रहेशा स्था-कुल ॥ १ এই নীচ কাক-দেহ লভিগাম যে কারণ ঃ কি কৃতিৰ আহা রাম-ভক্তি কি মনোহর ॥ ৮

| <b>দো—ভা'</b> ই এ শরীর | প্রিয় মম অভি | পে'ন্থ এতে রাম-স্লেহ।       |
|------------------------|---------------|-----------------------------|
| পে'লাম ইহাতে           | ध्येषु-पत्रमन | অপগত সন্দেহ ॥ ১১৪ (ক)       |
| ভক্তির প্রতি           | পক্ষপাত করি'  | পাইলাম ঋষি-শাপ।             |
| মূনি-ছল্ল ভ            | বর পে'মু দেখ  | ভব্দনার কি প্রভাপ ॥ ১১৪ (খ) |

**চৌ—ভক্তির এ প্রভাপ ক্ল'নেও** যে ত্যাগ করে। প্রম ক'রে মরে যেবা অবির**ল জ্ঞান ড**রে ॥ মুর্ব সে মহা মোহে কামধেমু পরিত্য कि। <del>ত্</del>রন ধগনাথ হরি-ভক্তিরে পরিহরি'। মুর্থ সে বিনা ভরী পারহীন পারাবার। पुष् थित्र এ बहन अनि' जार्व दर खवानि । ভোমার প্রসাদে প্রভু আমার হৃদয়-মাঝে। শুনিলাম মহাপুত শ্রীরামের গুণগ্রাম। আর এক কথা প্রভু করি'ভোমাঞ্জিজাসা। দব সাধু মৃনি এই ক'ন বেদ পুরাণেতে। সেই জ্ঞান-উপদেশ দিলেন ভোমারে মনি। হে প্রেমি হে কুপাধাম মোরে কুপা দেখাইয়া। ভক্তি ও জ্ঞানে ভেদ কিবা দাও বুঝাইয়া। ভুষ্ণ্ডি গরুড়-বাণী শুনিয়া মোদিত মন।

व्यर्क-विवेद्ध कृत करत मृत भू कि' भू कि' ॥ ১ অপর উপায়ে যেবা চাহে স্থুখে কাল হরি। সাঁতারি' আপন বলে প্রয়াদে হইতে পার ॥ ২ গৰুড় মোদিত মন কহিল কোমল বাণী। সংশয় মোহ ভ্রম শোক কিছুনাহি রাজে॥৩ শান্তি ভোমার কুপা-বলে জদে লভিলাম। বুৰা'য়ে বলহ মোরে মিটাও মম পিপাস। ॥ ৪ চুল ভ নাহি কিছু জ্ঞানের সম জগতে । অধ্চ ভক্তি সম আদর না হ'ল শুনি'।। ৫ সমাদর ভারে কাক আরম্ভিল বর্ণন ॥ ৬

### জান-ভঁজি নিরূপণ

ভকতি ও জান-মাঝে কিছুই নাহিক ভেদ। তথাপিও মুনিরাজ প্রভেদ করেন বাহা। জ্ঞান কি বিরাগ আর বোগ কিন্তা অমুভব। পুক্ষ-প্রতাপ হয় প্রবল সকল ভাতি।

छूरे-रे रुद्रग करत खत-मख्डत (थ्रम• ॥ অনহ বিহগবর অবহিত হ'য়ে ভাচা॥ ৭ এ সব পুরুষ-বাচ্য শুন বগ-পুসব॥ বভাবে অবলা মায়া আ-জন্ম জড়জাতি॥৮

| <b>দো</b> —নারী ত্য <b>জি</b> বারে | পারে সে পুরুষে | যে বিরাগী মতি-ধীর।           |
|------------------------------------|----------------|------------------------------|
| পারে না ক' কামী                    | বিষয়ে মগন     | চ্যুত পদ-রখুবীর ॥ ১১৫ (क)    |
| পরাজ্ঞান-খনি                       | মুনিও বিবশ     | বিধুমুখী আঁখি হেরি'।         |
| নিজ বিষ্ণু-মায়া                   | আপনি প্রকাশে   | ভবে মায়া-রূপ ধরি' ৷ ১১৫ (খ) |

চৌ---এ বিচার-মাবে মোর নাহি কোন পক্ষপাত। এ শুধু বাধান করি সাধু বেদ সস্তু-মত ॥ কি মঞ্চার রীত্তি এক দেখ ভাবি' আহ-অরি। মায়া ও ভক্তি-বলি' এই তুই যাহা আছে। ভা'র মাঝে রম্বরীর ভকতিতে অভি প্রীত।

नाती-कर्भ विश्वादिङ नाहि इत कडू नाती ॥ > ्नात्री-वर्ग विल' अता विलिख भवात्र कार्छ। निष्ने त्रात्री मात्रा विन' ७६ कीर्खिङ ॥ २

<sup>•</sup> স্বার্থাত ত্রে।

### প্ৰীৱামচব্ৰিত মানস

অনাবিল ভক্তিতে তাঁ'র অতি প্রীতি হয়। উপমা-রহিত ওদ্ধ রামপদ-প্রেম রসে। তাহারে হেরিয়া মায়া রহে সদা কৃষ্ণিত। এ বিচার করি' যেবা মহামুনি পরাজ্ঞানী।

সেই হেতু মায়া তাঁরে ভয় করে অভিশয় ম ভাঙিয়া সকল বাধা বাহার মানস রসে । ৩ কভু না করিতে পারে তা'রে তিল প্রভারিত। ভিনিও যাচেন নিভ প্রভু-প্রেম মুখ-খনি। । ।

| •                      |                      |                                     |
|------------------------|----------------------|-------------------------------------|
| বেশ—এ গোপন ভেদ         | <b>ঞ্জিরখু</b> নাথের | সহজে কেহ না পায়।                   |
| যে পায় <b>কুপা</b> য় | মোহ ভা'র পাশে        | স্বপনেও নাহি যায় । ১১৬ <b>(</b> ক) |
|                        | জ্ঞান-দীপক           |                                     |
| অপর প্রভেদ             | জ্ঞান ভক্তিতে        | শুন এই স্থপ্রবীণ।                   |
| যা'র ফলে প্রেম         | রামের চরণে           | विदाखित्व व्यमनिन । ১১৬ (४)         |

পরম বিভুর অংশ এই জীব অবিনাশী। মায়ায় বিবশ হ'য়ে সে আসি' ধরণী 'পরে। চেতনের 'পরে গাঁঠ জডের পডিয়া গেছে। त्म इ'एक मेद्रश खन्म मरह खीव ममूनाय । খোলার উপায় বছ বেদ ও পুরাণে গা'য়। कीरवत समस्य महा व्यक्तान-वाधियात। यि जगवान (पन ककु मः (यारा এই। সত্থণ-প্রজাগাভী যা'র অস্তরে বসে। ক্রপ তপ ব্রত আদি বিধি সংযম আর। এই সব তৃণ সেই উদরে যখন ভরে। বিখাস-ত্ম-ভাও নিবৃত্তি ছাদন-পাশ। দোহন করিয়া এই পয়: ঝোর্চ ধর্ম ময়। শীতল ভাহারে করে সম্ভোষ ক্ষমা-বায়। প্রসন্ধতা-মুৎভাতে বিচার-মন্থনী দিয়ে। মন্ত্রন করিয়া লভে সে পরম নবনীত।

(5)-कथन-कछीछ এक कथा अन कात्र हेश। कथरनट नाहि बारम वृत्रिवात अधू छाहा। জ্ঞান-ময় অমলিন স্বভাবত: সুধ-রাণি 🛚 ১ স্বকরে জড়িত যথা পশু পাখী কি বানরে। খুলিতে কঠিন বড় যদিও সে গাঁঠ মিছে। ২ নাহি খুলে সেই গাঁঠ আর না সে স্থুপ পায় ॥ भिश्रित मा इ'त्य कार्ता अधिक क्रजा'र्य यात्र ॥० চ'খেই ঠেকে না গাঁঠ খুচিবে কেমনে আর । মোচিত কঠিন গাঁঠ তবেই কদাচ সেই ॥ ৪ कक्रना-निधान विष्टु औदितित्र कुलावरम ॥ বেদ-বিধি-বিবৃচিত শুভ-ক্রিয়া ও আচার ৷ ৫ ভাব-রূপ বৎসেরে লভে মহাস্থ্-ভরে ॥ আহীর অ-পাপ মন সদা আত্মরত দাস 🛚 ৬ নিছামভাব-অগ্নি 'পরে যবে উত্তলর# 1 মন-নিগ্রহ ভক্ত ধীরভার যোগ পায় 🛭 ৭ দম-দণ্ডাধার 'পরে সভ্যবাণী-পাশ দিরে ॥ বিমল বিরাগ অভি মনোহর স্থ-পুণিত ॥ ৮

| <b>দো</b> —যোগাগ্নি ভ <b>খ</b> ন    | করিয়া আলিড   | ওভাওভ কাৰে আলি'।             |
|-------------------------------------|---------------|------------------------------|
| বৃ <b>দ্ধি</b> তেশ <b>জ্ড়া'</b> বে | জ্ঞান-ছবি যবে | মোহ-মলা যাবে জ্বলি'। ১১৭ (ক) |
| দে পরম হবি:                         | যতনে লভিয়া   | विकान-क्रेगी वृद्धि ।        |
| চিত্ত-দীপ ভরি'                      | नम-मीপमारन    | রাধিবে সহিত শুদ্ধি 🛭 ১১৭ (খ) |

<sup>•</sup> बान (मक्ता । । निक्तांबिको वृद्धि । »

| স্থপ্ন জাগরণ   | গাঢ় খুম-আর             | ত্ৰিগুণ-কাপাশ# হ'ডে।         |
|----------------|-------------------------|------------------------------|
| ভূরীয়ের ভূলা  | করি' আহরণ               | স্থদৃঢ় বৰ্জি-সাথে 🛭 ১১৭ (গ) |
| করিলে স্বালিড  | ভে <del>জ</del> -মণ্ডিভ | বিজ্ঞানময় দীপ।              |
| নিমেষে পুড়িবে | মোহ-আদি সব              | বেমনি যা'বে সমীপ। ১১৭ (খ)    |

(5)—"আমি সেই" এই ভাব খণ্ডহীন এই বৃদ্ধি। এ বিচিত্র প্রদীপের চণ্ড শিধার দীরি॥ আত্ম-অমুভব রশ্মি এ হ'তে ছডা'বে যবে। অবি**ছা-জ**নিত সব মাহা মো**হ-অ**াধিয়ার। তথনি বিজ্ঞান-বন্ধি আত্ম-অফুভবালোকে। এ গাঁঠ খুলিতে বৃদ্ধি যদি হয় সক্ষম। একটি মজার কথা কচি ভোমা খগরায়। তথন সে ঋষি সিদ্ধি সবারে করি' প্রেরণ। কল বল ছল করি' ভাহার নিকটে যায়। ভবে যদি এই বৃদ্ধি হয় স্বচভূৱ অভি। এই ভাবে মায়া-বাধা যদি তা'র নাহি ঘটে। দেহ-ঘরে বাভায়ন সম ইন্দিয় যত। আসিতে দেখেন যেই বিষয়ের সমীরণ। বিষয়ের মহাবায়ু জন-কক্ষতলে গিয়া। किरम आत गाँठि थूटन क्रमि-छता आधिशात। ই ক্রিয় কি দেবতা জ্ঞান নাহি ভালবাসে। विषएत्रत नभीत्रण वृक्षि भक्षांन यत ।

সব ভব-ভেদ ভ্রম সমূলে বিনাশ হ'বে। ১ চিরতরে নাশ হ'বে সহ যত পরিবার ॥ क्षप मन्मिदा विन' अ-गाँठ थुला श्रुनारक ॥ २ কুডার্থ এ জীব ভবে পাইয়া পরম ধন # শুলি'ছে এ গাঁট ভবু মায়া হয় অস্তরায় i ৩ বৃদ্ধিরে কভমতে দেয় নানা প্রলোভন ॥ वाँ 15ल-मभीरत निक कारनत मीर्प निदास ॥ 8 বিশ্ব জানিয়া সবে চাহে না তা'দের প্রতি ! তথন দেবতা-বাধা উপাধি আসিয়া আটে। ৫ প্রতি ইন্দ্রিয়-দ্বারে এক দেব অধিষ্ঠিত॥ অমনি ভাহার হার ক'রে দেন বিমোচন ৷ ৬ আত্ম-অমুভব দীপ দেয় তবে নিবাইয়া ॥ কুলে এসে ভরী ভূবে প্রাণ করে হাহাকার। ৭ সদাই ভা'দের প্রীতি ইন্সিয়-ভোগরসে u আবার সে দীপ বল' কে আর জ্বালা'বে ভবে ১৮

| <b>দো</b> —ডখন আবার | ব <b>হু</b> ভাবে জীব | ভোগে সংসার-ক্রেশ।            |
|---------------------|----------------------|------------------------------|
| হরি-মায়া অতি       | ভরিতে কঠিন           | সহজে নহে খগেশ। ১১৮ (ক)       |
| বলিতে কঠিন          | বুঝিতে কঠিন          | জ্ঞান-সাধনায় কষ্ট।          |
| यनि कनाहिष          | জ্ঞান কেচ পায়       | বিশ্ব করে ভা' নষ্ট ॥ ১১৮ (ব) |

(5)—खान-পথ ৰগপতি কুপাণের ধার যেন। পতন হইতে দেরী লাগে না ক' এক কণ॥ এ পথে যে বিনা বাধা হ'তে পারে উভরিত। কৈবলা তা'র তরে র'য়েছে অবধারিত॥ ১ কৈবল্য পরা-পদ অভিশয় ছন্ত্র ভ। হে প্রভু পরা সে-পদ অনিচ্ছায় ঝোর ক'রে। এরাম-ডলনা ফলে আসে ভক্তের পরে ॥ ২

্ সম্ভ পুরাণ কিবা নিগমাদি ক'ন সব ॥

স্থল বিনা জল যথা ডিষ্টিডে নাহি পায়। সেই মত মোক্ষ-মুখ শুন খগকুল-পতি। এ কথা ব্রিয়া মনে চতুর ভক্তজন। ভক্তি করার ফলে বিনায়াস অ্যাচিত। যেমন তপ্তির তরে মানবে আহার করে। সেইমত হরিভক্তি স্থগম পুলক-ধাম।

কক্ষক না কেন কেহ কোটি যতন ভা'র ॥ হরির ভক্তি ছাড়ি' রহিছে নাহি শক্তি॥ ৩ ভক্তিতে প্রলোভিত ত্যঞ্জিয়া মৃক্তি ধন ৷ সংসার-মায়ামূল অপবিদ্যা বিনাশিত ॥ ৪ অনিচ্চায় সে ভোজন জঠর-মাঝারে জরে ॥ কে আছে পামর যা'রে নাছি লাগে প্রাণারাম 16

| দো—দেব্য দেবক-      | ভাব বিনা ক <b>ভু</b>   | ভব-ছ্থ নহে অস্ত।                     |
|---------------------|------------------------|--------------------------------------|
| সেই হেডু ভঞ্        | রামের চরণ              | দৃঢ় করি' সি <b>দ্ধান্ত॥ ১১৯</b> (ক) |
| চেডনেরে <b>অ</b> ড় | করেন যেজন              | ব্দড়ে দেন চৈডশ্য।                   |
| · শক্তিমান্ হেন     | <b>ঞ্জীরত্ম</b> নাথেরে | (य ভ∉ে म कीव थग्र । ১১৯ (४)          |

#### ভজিব মাচাছা কীর্ত্তন

(5)—জ্ঞান ও ভক্তি-কথা কহিলাম সমুদয়। ভক্তি শুনহ এবে ক্তই মহিমাময়॥ শ্রীরাম-ভক্তি যেন চিন্তামণি সন্দর। দীপ্ত জ্যোতি:তে নিজ রহে সেই দিবারাতি। কিছু নাহি প্রয়োজন প্রদীপ কি মৃত-বাতি। মোহরূপী দরিজভা নিকটে ৰুভু না যায়। অবিভারপেণী মিটে স্থনিবিড় আধিয়ার। যাহার হৃদয়-মাঝে ভক্তি বিরাজ করে। বিষ হয় সুধা আর অরি হয় স্থা ভা'র। रयमव मारूग मरनाष्ट्ररथ कीव छ्बी ब्राट । যাহার হৃদয়ে রহে জ্রীরাম-ভক্তি ধন। ধরণী মাঝারে সে-ই চতুরের শিরোমণি। যদিও এমন মণি এ জগতী-ভলে রয়। উপায়(৪) সহত্র অতি এই ভক্তি শভিবার। বেদ ও পুরাণ অতি পৃত পর্বাত-মত। মরম-বিজ্ঞানী সাধু কোদাল স্থ-মতিমান। ভাবের সহিত যেবা সন্ধান তথা করে। আমার মনেতে প্রভু অভিদৃঢ় বিশাস। জীরাম সাগর ধীর সঞ্জন মেঘ বেন। সকল সাধন-ফল 🕮 হরি-'পরে ভকতি। এ বিচার করি' মনে সৎসক্ষ যেবা করে।

এতেন রডন রতে যা'র জদি-অন্তর 🛚 🕽 লোভরূপী মহাবায়ু কভু না তা'রে নিবায় ॥ ২ হার মানে মদ-আদি পতগোরা কাছে ভা'র । কণটভা কাম লোভ ভা'র কাছ হ'তে সরে ১৩ সে মণি বিহনে স্থুখ কছু নছে লভিবার । না লাগে সেসব এরে প্রাণে চির-স্থব বছে ॥ ৪ অপনেও চুধ-লেশ নাহি করে পরশন ॥ উচিত যতন যেবা করে লাগি' এই মণি ॥ ৫ শ্রীরাম-করুণা বিনা প্রাপ্ত না কেহ হয়। ভবু ভাগ্যহত জন পদাঘাতে বারবার 🛚 ৬ **ঞ্জিরাম-চরিতকথা তাহাতে আকর শত** । জ্ঞান ও বিরাগ ডা'র বেন ডীব্র হ্র'-নয়ান। ৭ স্থাপর আকর ভক্তি-মণি সেই লাভ করে। **এ**রাম হ'তেও বড় **এ**রামের নিজ-দাস ॥ ৮ চন্দনভক হরি সাধুজন সমীরণ। সম্ভ বিহনে কেহ নাহি পায় সে যুক্তি। ১ য়ামের ভক্তি অভি সহজেই লাভ করে। ১০

দ্যো—বেদ-পারাবার মন্দর জ্ঞান সাধুরাই দেবগণ।
পারাবার মধি' করেন মধুর কথা-স্থগ আহরণ। ১২০ (ক)
বিরাগ-চর্ম জ্ঞান-অসি-ঘার লোভ মোহ অরি মারি'।
বিজয়ে যা' পাবে ভাহাই ভক্তি ধগেশ দেখ বিচারি'। ১২০ (খ)

#### ধকুড়ের লাভ প্রশ্ন

(চী-পুনরায় প্রেমভরে কহে ধগ-ঈশ্বর। ভবে নাথ মোরে ভব সেবক করিয়া জ্ঞান। প্রথমেই বল'মোরে হে নাথ বায়সবর। কিবা সে পরম শ্রুখ সব-চেয়ে দুখ ভারি। সাধু-অসাধুর ভেদ নহে ভব অগোচর। বেদ-বিখ্যাত কোন আছে যা' পরম পুণ্য। ভা'র পর কহ দেব মন-রোগ বুঝাইয়া। কাক বলে শুন ভাত মন দিয়া সহ প্ৰীতি। নর সম দেহধারী অপর কেহই নাই। ন্ধর্গ-নরক আর মোক্ষ-সোপান এই। এ শরীর ধরি' যেবা না হরি-ভক্তি-'পর। হাতে ঠেলি' দুর করি' কেলিয়া পরশমণি। জগতের মাঝে ছখী নাহি ধনহীন-সম। পর-উপকার করা মানস বচন কায়। সন্ত সহেন ছথ পরের হিত-কারণ। ভূর্জ-ভক্তর প্রায় সম্ভ করণাময়। শণের মৃতন ধল পারে বন্ধন ভারে। স্বার্থ নাহিক তবু খল পর-অপকারী। পর-সম্পদ নাশ করি' নিজে নাশ পায়। ছুষ্টের আগমন জগডের ছুপ্-হেডু। সম্ভের আগমন সদা পর-সুধকারী। হিংসা-অভাব পরা-ধর্ম এই বেছ বয়। भिव अक्र-निमक मधुक र'रय बरह। विक-निमाक वह महारक्ष वान कति'। (यम आंत्र (मद-विन्ना करत (यह अधिमानी। (शहक-क्षनम धरतं शाधु-निकात करण।

কুপা-পরায়ণ যদি তুমি প্রভু মোর 'পর । এই সাত প্রশ্নে মম উত্তর কর দান ॥ ১ সব হ'তে হলভি কোন দেহ ধরা'পর ॥ সংক্ষেপ করি' ইহা বলগ বিচার করি'। ২ তা'দের স্বভাব কহি' করহ মম গোচর 🛚 কিবা সে ভীষণ পাপ সবাকার অগ্রগণ্য ॥ ৩ সব তুমি জান' আর কুপারাশি-ভরা হিয়া ॥ সংক্ষেপে কহি আমি ভোমা এই সব নীভি ॥ ৪ চরাচর-জীব যাহা কামনা করে সভাই ॥ জ্ঞান ও বিরাগ ভক্তি কল্যাপদায়ী এই ॥ ৫ সে হয় বিষয়-রত মন্দ মন্দভর 🛚 वनरण कूषां रत्र नय मृजाशीन काठवानि ॥ ७ সুথ আর কিছু নাই সস্ত-মিলনোপ্ম। সম্ভ-শভাব ইহা কহিলাম প্রায় 🛭 ৭ অসাধু পরের ছখ সভত করে স্জন # হিতেতে সহেন নিজ বিপদ নির্ভিশ্য ॥৮ व्य काशन विद्या छः थ-भद्रव वटत ॥ যেমন মৃহিক আর অহি ওছে অহি-অরি॥ ১ শস্ত নাশিয়া যথা নীহার গলিয়া যায় 🛭 স্বার বিশিক্ত যথা গ্রাহের অধ্য কেতৃ ॥ ১০ বিশ-সুবদ যথা শশধর তমোহারী # নিক্ষার সম পাপ কিছু নাই ধরাময় ॥ ১১ হাজার জনম ধরি' সে শরীর সেই বছে। कन्य कश्र कार्य वायरम्ब क्रम श्रीव । ১३ রৌরব-মাথে হয় পডিড সে হেয় প্রাণী। মোৰ-নিশি প্রিয় যা'র জ্ঞান-রবি অস্তাচলে : ১৬ নিন্দা সকল জনে করে যেই মৃতজন। তে ভাত এখন শুন মন-রে।গ যেসকল। চৰ্ম-চটিকা⊕ দেহ কৰে সে পরিগ্রহণ,॥ যা' হ'তে সকলে ভোগে অতি বিষময় কল ॥ ১৪

#### ৰল-বোগ

মনের ব্যাধি যে সব অজ্ঞান তা'র মূল।
কাম যেন বাযু কফ প্রলোভন সীমাতীত।
এ তিনের সনে যেবা প্রীতি-আচরণ করে।
বিষয়ের মনোরথ ক্লেশে যা' পুরণ হয়।
নমতা দক্ত-সম ঈর্ষা সে কণ্ড্যন।
অপরের স্থা দেখে জ্লানেরে বলে ক্ষয়।
অহমিকা গ্রন্থিবাত ক্লেশ দেয় অতিশয়।
উদরী অ-পরিমিত বৃদ্ধি পাওয়া বাসনার।
অবিবেক মাৎস্থ্য সে-ও ছ' প্রকার জর।

এই শৃল হ'তে হয় সংষ্ট অপর শৃল ॥

রোব পিন্ত তাহে প্রোণ হয় নিত জব্জরিত ॥১৫

ঘোর সন্ধিপাত রোগে নিশ্চয় তা'রে ধরে ॥

শৃল বলি' অভিহিত সে ভাবনা সমৃদয় ॥ ১৬

গলগণু গশুমালা হর্ম খেদ-রোগগণ ॥

মন-ছেইডা যাহা কুর্ছেতে পরিচয় ॥ ১৭

দক্ত কপট মদ মানে চর্ম্মরোগ কয় ॥

মুড ধন মান-সাধ ত্রাহিক অরাধিকার ॥ ১৮

এমনি কতই রোগ কত ক'ব ধগবর ॥ ১৯

দ্বো—একেতেই ভূগে' মরে লোক এ ভ' প্রাণিগণে এরা পীড়ে অবিরল নিয়ম ধরম তপ ও আচার কোটি ঔষধ আছে তবুরোগ অসাধ্য অনেক ব্যাধি।
কেমনে পা'বে সমাধিশ ॥ ১২১(ক)
ভৱান যাগ জপ দান।
যায় না ক' হরি-যান ॥ ১২১(ধ)

(b)—এইরূপ রোগে রোগী ভবে জীব সমুদয় ।
মনের রোগের কিছু করিলাম বর্ণন ।
রোগ আছে এ বুজিলে কডক শমতা পায় ।
বিষয়-কুপথ্য পে'য়ে মুনির(ও) হৃদয়-মাঝে ।
রামের হইলে কুপা নাশে এই সব রোগ ।
সংগুরু-কবিরাজ-বানী 'পরে বিশাস ।
জীরাম-ভক্তি রোগে সঞ্জীবনীতরু-মূল ।
সংযোগ হ'লে হেন ডবেই বিনশে রোগ ।
তথনি জানিবে রোগ একেবারে নিরাময় ।
স্থমতি-ক্রপিণী কুধা বাড়ে ভা'র প্রতিদিন ।
বিমল জ্ঞানের জলধারা-যোগে করে সান ।
বিধাতা মহেশ শুক সনক নারদ মুনি ।

হর্ষ শোকাদি আর প্রীতি বিয়োগ ভয় ॥
আছে ত' সবার আছে জানে তা' বিরল জন ॥>
তবে ভাহে ছখ-দায়ী রোগ নাহি নাশ পায় ॥
উদ্গত হয় রোগ নরের কি কথা আছে ॥ ২
কাহারো ললাটে যদি ঘটে গুভ-সংযোগ ॥
সংযম এতে গুধু না রাখা বিষয়-আশ ॥ ৩
প্রজাভরা মতি তা'র অফুপান গভ-তুল ॥
নতুবা যতন কোটি কে তা'র ঘূচা'বে ভোগ ॥৪
যখন প্রদয়-মাঝে বিরাগ প্রবল হয় ॥
দুর্ববলত। ভোগ-আশা নিবারিত দিন দিন ॥৫
তখন রামের প্রেম জনে করে অধিষ্ঠান ॥
ব্রহ্ম-বিচারে বাঁ'রা বিশিত জ্ঞানের খনি ॥ ৩

#### SEA-SISTER

হে খগ-নায়ক মত সবাকারি এক এই। শ্রুতি কি পুরাণ সব গ্রন্থ ইহাই কয়। कृत्मंत्र भिर्छ त्कन यमि क्ष्रु छेह्रत्व। নভোমাঝে নানাক্ষাতি বিকশিত হয় ফুল। মুগ-ভৃষিকার জলে যদি ভুষা নিবারিত। व्याधात यपि वा क्यू पिवाकरत नाम करत। हिम ह'एड यनि कड़ अनल क्षकि है है।

শ্রীরাম-চরণে মতি হওয়া বিনা পথ নেই। রামের ভকতি বিনা কড় স্থপ নাহি হয় ॥ ৭ বন্ধা-ভন্যে কেচ হড করে মহাচবে+ ৪ জীব নাহি পায় সুখ হরি যদি প্রতিকৃল ॥ ৮ শৃঙ্গ শশক-শিরে হইলেও উদগত 🛚 শ্ৰীরাম-বিমুখ স্থুখ তথাপি না লাভ করে॥ ৯ শ্ৰীরাম-বিমুখে স্থুখ ভবাপি পা'বার নয়। ১০

| <b>দো</b> —সলিলে মথিয়া  | মৃত পার যদি          | ভেল মধি' বালুকায়।          |
|--------------------------|----------------------|-----------------------------|
| তবু হৈরি পূজা-           | বিনা না ভরিবে        | এ কথা বুণা না যায়। ১২২ (ক) |
| মশকে বিধাতা              | পারেন করিতে          | অজেশ মশা হ'তে হীন।          |
| এ বিচার রাখি'            | সংশয় ত্য <b>ঞি'</b> | 🕮রামে ভজে প্রবীণ॥ ১২২ (খ)   |
| <b>্লোক—কৃ</b> ত-নিশ্চয় | মানস আমার            | অক্তথা এর নয়।              |
| শ্রীহরি-ভঙ্গনা           | করিয়া মানব          | ভবনিধি পার হয় ॥ ১২২ (গ)    |

চৌ—এই কহিলাম নাথ নিক্ষ মতি অনুসারে। অনুপম চরি-লীলা সংক্ষেপে বিস্তারে। বেদের ইহাই শেষ কথা ওচে উরগারি। প্রভুরামে তাজি' আর কা'বে সেবা করা যায়। তুমি বিজ্ঞান-রূপ মোহ না জিনিতে পারে। শুধাইলে রাম-কথা পুণিত নিরতিশয়। मख-मक मना इल छ मःमादा। **(एथर शक्**ष थेडु याशन मतन विहाति'। বিহগ-অধম আমি সব বিধি অ-পাবন।

পরিছরি' সব কাজ ভজ' রাম ধ্রুধারী। ১ মম সম মচ-প্রতি ভরা যিনি মমভায়॥ তে নাথ কভই দয়া করিলে আমার 'পরে॥২ 😎ক শনকাদি হর ত্রিপুরারি-মনোময়॥ হউক সে একবার আর ওধু ক্ষণভরে॥ ৩ আমি কিহে রখুপতি-ভঞ্জনার অধিকারী। করিলেন প্রভু মোরে বিদিত জগ-পাবন 🛭 ৪

| সে—ধক্ত ধক্ত আৰু | অতিধতা আমি  | হ'লেও অধমাধম।            |
|------------------|-------------|--------------------------|
| নিজ দাস জানি'    | দিলেন 🗒 রাম | হেন দাধু-দমাগম ॥ ১২৩ (क) |
| যথা-জ্ঞান সব     | কহিলাম আমি  | কিছু না করি' গোপন।       |
| ঞ্জীরামের লীলা   | অভল-সমান    | তল পায় কোন্জন 🛭 ১২০ (খ) |

চৌ—স্মরণ করিয়া নানা 🖺রাম-গুণনিকর। নিগম কহিয়া নেতি বাঁহার মহিষা গায়। যে চরণ চিরপুজ্য ক্রক্ষা-জাদি মহেশের। এমন মহিমা আর নাহি হেরি নাহি ওনি।

বার বার হরষিত বায়সের কলেবর ॥ শক্তি অতুল তাঁর প্রভাপে কে তল পায়। ১ অতীৰ ককুণা ঠা'র উপরে এ অধ্যের 🛭 খগনাথ রখুপতি-সমান কাহারে পণি॥ ২

निष्क नाथक किया जीवन्युक्त कि छेनानी। শুরবীর যোগী আর তাপদ অথবা জ্ঞানী। আমার প্রভুর সেবা বিনা কেহ নাহি ভরে। শরণ লওয়ার পরে পাপ-যুত মম সম।

কৰ্মবিৎ কবি কিম্বা বিভাৱান কি সন্মাসী। কর্ম-নিরত আর পণ্ডিত বিজ্ঞানী। ৩ এমন এরাম-পদে নমি আমি বারে বারে ॥ শুদ্ধ করেন যিনি ভাঁহারে প্রণাম মম। ৪

| ( | দো—ধাঁ'র নাম ভব-     | ভেষ <b>ভে</b> র সম | হারী ভিনভাপ-শৃল ।       |
|---|----------------------|--------------------|-------------------------|
| - | সে কৃপাল যেন         | আমারে সবারে        | র'ন চির-অনুকৃল॥ ১২৪ (ক) |
|   | <b>ও</b> নি° বায়সের | বচন পাবন           | হেরি' প্রেম রাম-পদে।    |
|   | গত-সন্দেহ            | কংহন গক্তড়        | এ বচন গদগংদ ॥ ১২৪ (४)   |

রামের চরণে এবে লাগিল নুডন রভি। মোহরূপী জগধির তুমি হে তর্ণী মম। কি আর করিব প্রভু এর প্রতি উপকার। রাম-পদ-অমুরাগী তুমি দেব পূর্বকাম। मस विवेती नहीं धर्मी अध्वाधत। সম্ভ-জনয় যেন স্থকোমল নবনীত। নবনী গলিত হয় আপনার উত্তাপে। জনম জীবন মম সফল হইল আৰু। আল হ'তে লে'ন মোরে তব এক কিছর।

(5)—তোমার বচন শুনি' কৃতকৃত্য আমি আজ। <u>এ</u>রাম-চরিত-সুধাসিঞ্চিত খগরাজ। মায়ালাভ মোহ মোর বিগত বিমল মতি॥ ১ ভোমার প্রসাদে নাথ প্রাণে মুখ অমূপম ! ভোমার চরণ-ভলে নভি মম বার বার॥ ২ ভোমার সমান ভাত কেহ নহে ভাগ্যবান্॥ পরহিত-হেতৃ শুধু রহেন ধরণী 'পর ॥ ৩ কবির বচন কিন্ধ উপমানহে প্রকৃত। সন্ত জবিত হ'ন সদা পর-পরিতাপে ॥ ৪ সংশয় অপগত তব কুপা খগরাজ। ছে ভবানি বার বার কহিল বিহগবর ॥ ৫

| <b>বো</b> —করিয়া প্রাণাম | বায়সের পায়  | প্রেম-শীন মতি-ধীর।]             |  |
|---------------------------|---------------|---------------------------------|--|
| চলিল গরুড়                | বৈকুঠে ভবে    | कटम त्रांषि' त्रचूरोत ॥ ১২৫ (क) |  |
| माधू-मगांगम               | বিনা মহাদেবি  | লাভ নাহি ৰূপম্য।                |  |
| সেই সমাগম                 | হরি-কুপা বিনা | নাহি হয় বেদ কয়॥ ১২৫ (খ)       |  |

#### বাৰায়ণ-দাহাল্য

(5)-कश्नाम अ भवम भुगुमम देखिशाम। প্রণতের সুরন্তরু করুণা-আগার রাম। ন্তির চিতে বেবা করে শ্রীরাম-কথা ঋবণ। ভীর্থ-ভ্রমণ আর সাধনা যতেক সব। বছবিধ ধর্ম কর্ম আর যভ বভ দান। कीवग्रत महा त्मवा खड़ किया विकादन।

अवत्नहे निमाक्न छव-भाग हम्र नाग॥ ताकीय-व्यवकारण दश्यम कारण व्यविदाम ॥ > সব পাপ ছুচে ভা'র কায়া কর্ম কি বচন। **८याग कि विदाश किया खानमां ७ विख्य ॥ २** যম । ইন্দ্রিয়-রোধ জপ তপ কি যাজন। विद्या विनय बात वित्वक-वार्थि प्रत्न । ७

এ সব সাধন যত কথিত নিগমাদিতে। त्म क्कि **क्रि**बास्मत (बामरक हेडां वाल ।

সকলেরি পরিণতি' জীরামের ভক্তিতে # विश्रात डीशांत्र कुला कवांठ ना का'रत मिर्ल । ४

(पी-प कथा (य कन ঞ্জীহরি-ভক্তি

स्त्र नवक्र মুনি-অগোচর মনে ধরি' বিশ্বাস ৷ পায় সে বিনা-প্রয়াস । ১২৬

C5)—সে-ই গুণী সে-ই জ্ঞানী সে-ই ভবে সব জ্ঞাতা। পণ্ডিত ধরাতল-বিভূষণ সে-ই দাতা। কুলের ভারক দে-ই দে-ই ধর্ম-প্রায়ণ। নীডিতে নিপুণ দে-ই স্বচ্ছর দেই জন। मिट कवि स्म विदान स्म-हे बौत त्रश-धौत। थक महे पन यथा श्रवाहिनी खुत्रस्तो । সেই নরপতি ধরা যে পরম স্থায়বান। थवा-थन रम्हे धन मार्च या वाश्विक हथ । महारच महेबन (यवा माधुमक करतः।

রামের চরণতলে চির-রত যা'র মন 🛚 ১ বেদের মীমাংসা ঠিক বুঝে'ছে ভাহার মন ॥ अक शहे-श्राट्य (यवा स्मर्वा करत त्रवृतीत ॥ २ ধক্ত সেই পতি-ব্ৰত পালে পূৰ্ণ যে রমণী। थका त्महे विक निक-शत्म यावा निकारान ॥ ७ ধক্ত সে প্রবীণ-মতি পুণ্যে যাহা রভ র'য়॥ धना-स्वत्र विस्तृ अवश्व (य क्रस्ति धरत ॥ 8

CT1-49 37 CFT রাম-পরায়ণ

সেই মহাকুল ভকত ভনয

**পুঞ্য स**गठौ-छल । আসিয়াছে যেই কুলে । ১২৭

(5)-কহিলাম সব কথা যেমন আমার মতি। হেরি' অন্তরে তব প্রীতি-হিলোল বয়। ना करिछ এই कथा धुई क्रभंहे स्ता काधी लाखी कामी स्थान ना कहिरव कमाठन। **ठ**बाठब-अछ बारम रय नाहि करवे पूक्त ॥ २ क्षनहे छना'रव ना या'त विज-त्याह मिछ। **শ্রীরাম-কথা-সুধার সেইজন অধিকারী।** গুরুপদে প্রীতি যা'র আর নীতি-রত যেব।। এ কথা তাহার কালে লাগিবে অমির সম।

এ मत क्रमय-मात्स शालात आहिन अंडि ॥ বলিলাম উদ্ঘাটি' রাম-কথা সমুদ্র ॥ ১ অবিচল মন দিয়া হরিকথা যে না ওবে । যদিও সে ইল্ফের সম হয় নরপতি 🛚 সন্ত-সঙ্গ যা'র অভি প্রাণ-মনোহারী । ৩ (क' न (म-डे अधिकाती विध्ये (य करत (मवा ॥ **ब**वाम-ठवन या'त এ कोवरन द्यारनार्थम । 8

CFI-AICHA BACA সে জন করিবে

যে চাহে ভক্তি अक्षि-यूग मिरव

किया हाटड निक्शा । क कथा यहान भाग । >२४

(5)--किलाम महारमित त्राम-कथा असूलम । कलि-मलाहात्री मन-मिलनेका-विमृत्त ॥ ভব-রোগ বিনাশক সঞ্চীবনীর প্রায়। সম্ভ-সোপান চাক ইহাতে র'য়েছে অভি। 🕮 हित्र कुना या'त 'नदा हम अञ्चनमा

ৰিমোহন রাম-কথা বেদ পশুিত গা'য় । ১ পথের মতন এরা সাধিতে রাম-ভক্তি । (महे करत a (माभान-छेनरद भव-बादन # २

## **এরাৰচরিত বানস**

290

কপটভাহীন হ'য়ে যে গাহে এ হরি-কথা। প্রে গায় আর যেবা করে তা' অনুমোদন। শুনিয়া এ সব কথা শ্ৰতিশয় প্ৰিয় লাগে। ভোমার কুপায় প্রভু গত সন্দেহ যত।

মনের কামনা ভা'র পুরণে সন্দেহ কোথা ॥ গো-পদ সমান ভবনিধি করে উত্তরণ॥ ৩ কহেন ভবানী তবে অতুলন অনুরাগে ॥ কত প্রেম রাম-পদে এবে ভাহা ক'ব কভ 🛭 ৪

দো-শত ধকা আমি সব হুথ গিয়া 🕐 ভোমার কুপায় রামের চরণে

ওরে মৃচ্মন

বিশ্বের অধিপতি। উপঞ্চিল দৃঢ় প্রীতি। ১২৯

পতিত-পাবন ভঞ্জিয়া রামে।

(5)—ভবানী-ভবানীপত্তি-শুভদ এ সংবাদ। ভব-ভয় ভঞ্জন সন্দেহ-অন্তক। ব্দগত মাঝারে যত রামের ভক্তগণ। রমুপতি-কুপাবলে মম মজি যেইমত। যোগ যাগ অপ তপ কি ব্ৰত কি পূজা হোম। এই কলিয়ুগে আর সাধন নাহিক কোন। কেবল স্মরণ তাঁরে কীর্ত্তন গুণগ্রাম। শুধু এক কাল হাঁ'র পতিত দাদেরে ত্রাণ। রে মন তাঁহারে ভঙ্গ কুটিলভা ভ্যাগ করি'।

স্তুখের নিদান আর শমন সব বিধাদ। ভকত-বিমোহন সঞ্জন-ভোষক ॥ ১ রাম-কথা সম প্রিয় না গণে কিছু এমন ॥ এ পুত রচিত-কথা করিলাম কীব্তিত। ২ শ্রীরাম-চরিত কথা ওনা ভরি' ছই কাণ ॥ ৩ বেদেতে এ কথা গায় সাধু কবিগণে গা'ন ॥ কে না পায় পরাগতি শ্রীরাম-ভব্দনা করি'॥ ৪

| ছ—কেবা ভৱে নাই       |
|----------------------|
| ८ ८२१। ७८४ मार       |
| অঞ্চামিশ ব্যাধ-      |
| আভীর যবন             |
| শু ও কবার            |
| রভুকুলমণি-           |
| কি কলির কিবা         |
| বেশী ৰি যদি বা       |
| ভবু <b>অবি</b> ন্তা- |
| স্থান স্থলর          |
| সে কেবল রাম          |
| যাঁ'র করুণার         |
| পরমা শাস্তি          |
|                      |

ভারিলা সহজে আপন নামে॥ আদি কত খলে গেল ভব-পার শ্বরিয়া রাম। পাপরূপ যত মুখে নাম ল'য়ে সে রাম-চরণে করি প্রণাম ॥ ১ লীলা-সুধা এই (य शांट (य अटन (यक्न वटन) विनाग्रारम भू'रम अधारम गरण ॥ মন-মলিনতা क्'ठांत कविका मातरण बार्**ष**। क्वानि' मरनाश्त्र নাশি' রখুনাথ চরণে রাথে ॥ ২ জনিত বিকার व्यमार्थ मनग्र इ:४-जाका। করুণা-মাকর কে তাঁ'র সমান মোক্ষদাতা ॥ কুপালু অকাম কৃটমন্ডি এই তুলদীদাস। পরমাণু পেয়ে

## जुननोपारमञ्ज मीमका ও मनक्षां

(का-मम मम मोन এ विठाति' मत्न नीटन नग्रामग्र হর' প্রভু মম

निक्रिन পরাণে

ভোমা সব কেবা আর।় माद्रेश करवद छात्र ॥ ১৩० (क)

সে রাম সমান কে ত্রাডা ত্রাস ॥ ৩

| কামীর কামিনী  | লোভীর কনক  | যেমন প্রিয় হে রাম।  |
|---|--|--|
| ভেমনি হে প্রভু  | অবিশ্লল তুমি   | হও,মম প্রাণারাম ॥ ১৩০ (৩)  |
| শ্রোক—যে প্রথম-প্রকাশিত শ্রীরাম-পদারবিদ্দে মানিয়া তাহায় দদা চরিত্ত-মানস রূপে পুণ্যময় পাপহর মায়া মোহ মলহারী শ্রীমদ জানকী-পতি সে জন সংসাররূপী | প্রস্কৃ কবি-শিরোরত্ব<br>অনস্থ-ভক্তি কাগে<br>রখুনাথ-নাম-রত<br>ইহারে তুলসীদাস<br>সতত মঙ্গলকর<br>স্থবিমল প্রেমবারি-<br>চরিত-মানস-সরে<br>মার্ডণু-কিরণ ঘোর- | শ্রীশস্ত্-প্রশীত গুত্ত্র্গম  এমন পাবন রামারণ।  নিজ-স্থাদি-ডম: শাস্তি-ডরে  প্রচলিড-ভাষাবন্ধ করে॥ ১  শস্ত্ভব-জ্ঞান ভক্তিপ্রাদ পরিপূর্ণ সর্ব্বাদ শুভদ। ভক্তিভরে যেবা করে স্নান দহন গইতে পায় ব্রাণ॥ ২ |

কলিযুগের সমস্ত পাপধ্বংসকারী জ্রীরামচরিত-মানদের এই সপ্তম সোপান সমাপ্ত হইল॥

( छेखत्रकाक नमाक )